

विक्रय्य पुस्तकें-वैद्यक ग्रन्थ ।

	नाम.	कि०	रु० आ०
	चक्रदत्त-भापाटीका सहित । इसमें और चिकित्साओंके अलावां तैल साधनादि प्रकार बहुत अच्छा लिखा है	...	२-०
	चरकसंहिता-ठकसाल निवासी वैद्यपञ्चानन पं० रामप्रसाद वैद्योपाध्यायकृत प्रसादनी भापाटीकासहित । चरकके आठोंस्थान एकसे एक अपूर्व होनेपर भी "चिकित्सास्थान"		
	तो आद्वितीय है वैद्यमात्रको यह ग्रन्थ अवश्य संप्रह करना चाहिये	९-०	
	तिव्वअकवर-हकम अकवर अलीख़ाँ लिखित तथा देवीप्रसाद-कृत हिन्दी भाषामें अनुवादित । इसमें-सब्वीस अध्यायोंमें सम्पूर्ण रोगोंका लक्षण और यूनान मतसे एक २ रोगोंपर सैकड़ों औषधोंका उपचार वर्णित है	७-०
	त्रिशती-पं० वैद्यवल्लभभट्टविरचित संस्कृतटीका-तथा भापाटीकासहित	$\frac{28-2}{26-2}$ ३-८
	बृहन्निघण्टुरत्नाकर-प्रथम भाग ३) तथा द्वितीय भाग....		३-८
	बृहन्निघण्टुरत्नाकर-तृतीय भाग । (विविध रोगोंकी चिकित्साका संप्रह)	३-८
	बृहन्निघण्टुरत्नाकर-चौथा भाग । (चिकित्साखण्ड)	२-८
	बृहन्निघण्टुरत्नाकर-पञ्चम भाग । (रोगोंका कर्मविपाक)...		१-८
	बृहन्निघण्टुरत्नाकर-षष्ठभाग । (रोगोंका चिकित्साभाग)		४-८
	बृहन्निघण्टुरत्नाकर-सप्तम अष्टम भाग । संस्कृत, हिन्दी, बँगला, मराठी गौर्जरी, द्राविडी, आदि भाषाओंमें सर्व औषधोंके नाम और गुणोंका वर्णन औषधियोंके चित्रोंसमेत.		८-०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-३०-४

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीचिह्नेश्वर" स्टीम्-प्रेस-मुंबई.

॥ श्रीः ॥

भूमिका.

कोटिशः धन्यवाद हैं, उस सर्व शक्तिमान् पूर्णब्रह्म अविनाशी श्रीकृष्णचंद्र देवकीनंदनको कि जिनकी अतुल कृपासे भावप्रकाश निघण्टु सटिप्पणी छपकर तय्यार होगया है। आज कल आयुर्वेदिक चिकित्साकी अल्पज्ञता तथा समयके प्रभावसे चिकित्साशास्त्रमें बड़ी २ कठिनाइयें प्राप्त होगई हैं, जिनका यदि पूर्ण रूपसे वर्णन किया जाय तो एक इतना ही पुस्तक और लिखा जासकता है। उन कठिनाइयोंमेंसे सबसे बड़ी और आयुर्वेदिक चिकित्सासे सर्व साधारणको घृणाजनक कारणरूप कठिनाई एक मात्र शास्त्रोक्त औषधियोंका समझमें न आना, और भ्रममें पड़जाना है, क्योंकि हर एक औषधिका पहिले तो यथार्थ रूपसे पहिचानना कठिन होगया है, दूसरा यह भिन्न २ स्थानोंमें भिन्न २ नामोंसे पुकारी जाती हैं, जिससे सर्व साधारण तो क्या सामान्य वैद्य भी चकरा जाते हैं। और कई वैद्य भी विहित औषधिके स्थानमें विपरीत औषधि वस्तु लेते हैं, जिससे लाभके स्थानमें परम हानि होती है, और हानि होनेसे लोगोंका विश्वास उठता जाता है। इस त्रुटिको देख, चिरंजीव पं० बखशीराम वैद्य मैनेजर आयुर्वेदिक औषधालय सूत्रमंडी लाहोरने प्रार्थना की; कि कोई ऐसा उपाय कृपा करके निकालें कि जिससे औषधियोंका विज्ञान हो जाय।

उक्त वैद्यजीकी प्रार्थनाको स्वीकार कर अतीव परिश्रमद्वारा इस पुस्तकमें प्रत्येक औषधिके भिन्न २ नाम, जो भिन्न २ देशोंमें पुकारे जाते हैं २५ वर्ष के तजुरबेके अनंतर लिखे हैं, इस पुस्तकमें टिप्पणीके रूपमें प्रत्येक पृष्ठके नीचे हर एक औषधिका अंक देकर उसका हिन्दी नाम (जो पश्चिमोत्तर प्रदेशमें पुकारा जाता है,) पंजाबी नाम, (जो पंजावप्रांतमें कहलाता है) फारसी नाम, (यूनानियोंने जो नाम नियत किया है) बङ्गाली नाम,

(जो वज्जालप्रान्तमें प्रसिद्ध है) लिखा है । और यथा लाभ खंगरजी नाम भी लिख दिये हैं । और मूलमें भी यथाशक्ति न्यूनता पूर्ति की गई है । इसके अतिरिक्त एक परिशिष्टमें उन औषधियोंकी नामावली दी है, जो निघण्टुके मूलमें नहीं आईं । यह परिशिष्ट पहिले संस्कृत फिर भाषाके रूपमें है और फिर भाषा नामोंका संस्कृतमें अनुवाद किया है जिससे यह पुस्तक ३०० पृष्ठोंसे भी अधिक होगई है । और हमारी सम्मतिसे निस्संदेह अब पूर्वोक्त त्रुटियोंको पूर्ण करनेके योग्य है ।

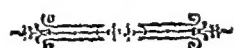
इस पुस्तक के छापनेमें मेरे परम मित्र श्रीयुत विचारत्न पण्डित भानुदत्तजी बी० एम, परमोदार सर्वविद्या विभूषित पण्डितवर गवर्नमेण्टपेनशनर, संस्कृताध्यापक, एचीसन चीफ्स कालिज लाहौरने परोपकार दृष्टिसे प्रकाशित करनेका भार अपने ऊपर लेकर उत्तम, मोटे, और चिकने कागज पर निजव्ययसे छपवाया है, और सर्व साधारणके सुभीतेके लिए ३०० पृष्ठसे भी बड़ी पुस्तकका मूल्य केवल १॥) रुपया रक्खा है और पूर्ण संशोधन करनेमें भी सहायता प्रदान की है जिससे मैं उनका अतीव कृतज्ञ हूँ ।

अंतमें विद्वज्जन मंडलीकी सेवामें सविनय निवेदन है, कि इसके प्रचार, और विशेष करके आयुर्वेदिक विद्यार्थियोंको इसके पढ़नेका उद्योग दिलाकर ग्रंथकर्त्ताके उत्साहको वर्धन करें ।

आपका—

पं० गंगाविष्णु शास्त्री वैद्यराज.

द्वितीयावृत्तिकी भूमिका !



अथर्ववेदमें देव ग्रहादिपूजन, प्रायश्चित्त, उपवास आदिके अनन्तर देहको आरोग्य रखनेके लिये चिकित्साका उपदेश किया है। द्रव्य, गुण, कर्मके विचार करनेसे आरोग्य लाभ होता है। किस द्रव्यमें क्या गुण है उसकी इतिकर्तव्यता किस प्रकारसे है इतना जानलेना सभीको आवश्यक है। वात पित्त कफ अथवा इनके संयोगसे हुई प्रकृतियोंके अनुकूल पदार्थोंके सेवन करनेसे देहमें रोग नहीं होसकते कदाचित् विरुद्ध पदार्थोंके सेवनसे रोग हो भी जावे तो सुचिकित्सासे शीघ्र नष्ट होसकते हैं। यही सब विचार करके आयुर्वेदतत्त्वज्ञ भावमिश्रने अपने निर्मित भावप्रकाशमें नाना प्रकारके अन्न, शाक, फल, मूल, जल, दही, दूध, शर्करा आदि नित्यके उपयोगी प्रायः सभी पदार्थोंके गुण अवगुण कहे हैं। उसी भावप्रकाशमेंसे संग्रहकर यह भावप्रकाशनिघण्टु बनाया गया है। यह ऐसा उत्तम निघण्टु बना है कि वैद्य तथा अन्य आयुर्वेदप्रेमी मनुष्योंने इसको अत्यन्त आदरसे पठन पाठन आदिकार्यमें ग्रहण किया है। इसके द्वारा देशवासियोंका जो उपकार हुआ है इसके लिये उक्तवैद्यराजके लोग अत्यन्त उपकृत और ऋणी हैं। ऐसे सर्व प्रिय-सर्वमान्य निघण्टुका सर्वत्र सुलभ प्रचार हो इस इच्छासे हमने इसकी यह द्वितीयावृत्ति अपने “श्रीवेङ्कटेश्वर” स्टीम प्रेसमें मुद्रित की है पूर्वावृत्तिमें जो दोष मुद्रण होते समय होगये थे वह सब पण्डितों द्वारा शुद्ध कराकर यह द्वितीयावृत्ति प्रकाशित की है। आशा है कि आरोग्यको सबसे अधिक लाभ समझनेवाले नीतिज्ञ पुरुष तथा आयुर्वेदविद्याप्रेमी इसका संग्रह कर लाभ उठावेंगे।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” यन्त्रालयाध्यक्ष,

बम्बई.

अथ भावप्रकाशनिघण्टुस्थ वर्गोंकी सूची ।

पृष्ठ	वर्ग	पृष्ठ	वर्ग ।
१	हरीतक्यादिवर्ग ।	१८३	दधिवर्ग ।
३४	कर्पूरादिवर्ग ।	१८५	तक्रवर्ग ।
४९	गुडूच्यादिवर्ग ।	१८७	नवनीत वर्ग ।
८७	पुष्पवर्ग ।	१८७	वृत्तवर्ग ।
९५	फलवर्ग ।	१८९	मूत्रवर्ग ।
११३	वटादि वर्ग ।	१९०	तैलवर्ग ।
१२२	धातुवर्ग ।	१९२	मधुवर्ग ।
१४५	धान्यवर्ग ।	१९५	इक्षुवर्ग ।
१५५	शाकवर्ग ।	१९८	संधानवर्ग ।
१६९	वास्विवर्ग ।	२०१	द्रव्यपरीक्षावर्ग ।
१७८	दुग्धवर्ग ।		

अथ भावप्रकाशनिघण्टुस्थ सर्व औषधियोंकी अकारादिसूची

पृष्ठ	नाम औषधी.	पृष्ठ	नाम औषधी.
५७	अकरकरा ।	१०	अजवायन ।
५७	अक्रदोनों ।	१५२	अतसी ।
११०	अखरोट ।	२७	अतिविषा ।
९३	अगस्तपुष्प ।	६६	अतिबला ।
१६१	अगस्तशाक ।	६	अदरक ।
३६	अगुरु ।	७५	अस्थिसंहारी ।
५२	अग्निमंथ ।	१०७	अनार ।
१०	अजमोदा ।	७७	अनन्तमूल ।

पृष्ठ	नाम औषधी.	पृष्ठ	नाम औषधी.
६२	अपराजिता दोनों ।	१६६	आलु ।
७५	अपामार्ग ।	११८	इंगुदी ।
३०	अफीम ।	६५	इज्जल ।
१३३	अभ्रक ।	७६	इटसिट ।
११०	अमृतफल ।	१९५	इक्षु ।
११७	अरिष्टक ।	११७	इरिमेद ।
२०६	अनेकार्थ वर्ग ।	४१	इलाची दोनों ।
११२	अम्लवेतस ।	२१	इंद्रयव ।
८२	अर्कपुष्पी ।	१११	इंवली ।
११६	अर्जुन ।	११४	उदुंबर ।
८२	अलंबुषा ।	१४९	उडद (मांह)
२४	अश्मभेद ।	१७३	उद्भिद जल ।
९२	अशोक ।	१४२	उपरत्न ।
११३	अश्वत्थ ।	१४५	उपविष ।
११४	अश्वत्थभेद ।	१३२	उपरस ।
७१	अश्वगंध ।	४४	उशीर ।
१६	अष्टवर्ग ।	१८०	ऊँटनी का दूध ।
६६	अंकोटवृक्ष ।	१८	ऋद्धि ।
१९	अम्लतास ।	१७	ऋषभ ।
९२	अम्लतास पुष्प ।	४५	एकांगी ।
९७	अंबकी गुठली ।	५६	एरंड
८०	अमरवेल ।	६८	एरका ।
९७	अंबाडा ।	४८	एलवालुक ।
५	आमला ।	७३	ऐन्द्रवारुणी ।
९५	आम्रफल ।	३२	औद्भिदलवण ।
		१३८	कूपर्दिका ।

पृष्ठ	नाम औषधी	पृष्ठ	नाम औषधी
२३	ककडासिंगी ।	१२०	करीर ।
८४	ककौडे ।	१६३	करेला ।
१६५	ककोडेशाक ।	१०४	करौंदी ।
६१	कचनार ।	६३	करंजुवा ।
४५	कचूर ।	१६२	ककड़ी (तर) ।
२६	कचूर हलदी ।	१५१	कलाय ।
६९	कटतृण ।	११	कलेंजी ।
२१	कटभी ।	१६८	कसेर ।
९२	कटसरैया ।	१६०	कसौंदी ।
९७	कटहड ।	१५४	कसुंभबीज ।
१०५	कटाई ।	३४	कस्तूरी ।
२०	कटुकी ।	१३९	कंकुष्ठ ।
१६२	कटुतुंबी ।	४७	कंकोल ।
१०८	कतकफल ।	१६६	कंटकारीशाक ।
९०	कदंबपुष्प ।	१५३	कंगनी ।
१६७	कदलीकंद ।	३५	कस्तूरिदाना ।
१६२	कदलीपुष्प ।	५४	कंटकारिद्रव्य ।
५९	कनेर ।	१६६	कंदशाक ।
६४	कपिकच्छु ।	१६४	कंदूरी ।
१०२	कपित्थ ।	१९	कंवीला ।
३४	कपूर ।	७९	काकजंघा ।
१११	कमरख ।	७९	काकनासा ।
८७	कमलपुष्प ।	७९	काकमाची ।
१५७	करमशाक ।	१७	काकोली ।
५९	करिहारी ।		

पृष्ठ	नाम औषधी	पृष्ठ	नाम औषधी
६७	कार्पास ।	१०६	कुमुदबीज ।
१५७	कालशाक ।	८८	कुमुदिनी ।
१४४	कालकूट विष ।	१५१	कुलंथ ।
११	काला जीरा ।	१४	कुलंजन
१३८	काली मृत्तिका ।	६८	कुशा ।
९९	कालिंद ।	२५	कुसुंभा ।
६८	काश ।	८६	कुकुंदर ।
१९६	काष्ठेशु ।	४२	कुंकुम ।
५१	काश्मरी ।	९२	कुंदपुष्प ।-
१२९	कांसी ।	४०	कुंदरु ।
१३८	कासीस ।	१२०	कूटशाल्मली ।
१९८	कांजी ।	१७४	कूपजल ।
२४	कायफल ।	१६१	कूष्मांड ।
१२७	कांतलोह ।	१६२	कूष्मांडी ।
२०	किरायता ।	७७	कृष्णसारिवा ।
११७	किक्कर ।	९१	केउडा ।
१२७	किड्ड (मंडूर) ।	४८	केउटीमोथा ।
९१	किंकरात ।	१७५	केदार जल ।
११०	किंव ।	१६८	केरुभाकंद ।
१०८	किशमिश ।	९८	केला ।
७६	कुआर गन्दल ।	१५४	कोदों ।
६३	कुटज ।	१०८	खर्जूर ।
२३	कुठ ।	१११	खट्टियां जंभीरी ।
१०२	कुपीलु ।	१३८	खपरियां ।
९१	कुब्जक ।	१००	खरबूजा ।

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
३१ खसखास ।	१३७ गेरी ।
१९७ खंड ।	१६० गोभी ।
१०५ खिरनी ।	४३ गोरोचन ।
१०० खीरा ।	१५२ गोरीसरो ।
१४ खुरासानी वच ।	५५ गोक्षुर ।
११ खुरासानी जवायन ।	४६ ग्रन्थिपर्ण ।
१८१ खोया ।	८४ घगरवेळ ।
१९६ गन्ने का रस ।	१६३ घीया ।
९ गजपिप्पली ।	१८७ घृत ।
५० गिलो ।	१८० घोडीका दुग्ध ।
१६० गिलोशाक ।	२७ चक्रमर्द ।
१५४ गवेधुक ।	३२ चणकाम्लक ।
७० गंडदूर्वा ।	१५० चणे ।
१३२ गंधक ।	१६० चणेका शाक ।
३५ गंधमार्जार ।	४२ चतुर्जात ।
१६७ गाजर ।	२११ चतुरर्थक ।
३८ गुग्गुल ।	११२ चतुराम्ळ ।
१९७ गुड ।	९ चतुराण ।
९३ गुलटुपहरिया ।	१३७ चुंवक ।
९३ गुलतुरी ।	९ चवक ।
१४२ गुलियां (मुंगा)	१५८ चंचुशाक ।
६४ गुंजा (रतियां)	३५ चन्दन तीनों ।
६८ गुंड्रा ।	१३ चंद्रशूर ।
११४ गुलर ।	९० चंवा ।
८३ गुमा ।	१५८ चांगेरी ।

पृष्ठ	नाम औषधी	पृष्ठ	नाम औषधी
१२३	चांदी ।	१६९	जलवर्ग ।
१६	चारदाना ।	६९	जल वेतस ।
१६३	चिचिडा ।	१२१	जलशिरीह ।
११	चिटाजीरा ।	७४	जवांह ।
८	चिटी मिरच ।	१२९	जस्त ।
९९	चिमड ।	१२१	जंडी ।
१०४	चिरौंजी ।	१०३	जंवूफल ।
९	चित्रा ।	४०	जायफल ।
३४	चीनिया कपूर ।	४०	जावित्री ।
१९३	चीना ।	१६६	जिमीकन्द ।
६९	चील्ह वृक्ष ।	११८	जंगनी ।
३३	चुक्र ।	१७	जीवक ।
१९८	चुक्रिका ।	९६	जीवनीयगण ।
१९७	चुलाईशाक ।	११८	जीयोपोता ।
२३	चोक ।	९०	जूही ।
१४	चोबचीनी ।	३३	जौखार ।
१७४	चोहेका पानी ।	१६९	टिण्डे ।
१११	चौहार निम्बू ।	३७	तैगर ।
४४	छलीरा ।	४१	तज ।
१८९	छाछ ।	१७४	तडागजल ।
१८०	छागी दुग्ध ।	१७६	तप्तजल ।
१०८	छुहारा ।	४२	तमालपत्र ।
१६७	छोटी मूली ।	१६	तवाशीर ।
१७८	जलदोष निवारण ।	१७९	तंडुलोदक ।
१७९	जलपानविधि ।	१०१	तालवृक्षफल ।

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
१२८ तारमाखी ।	१८३ दुधिवर्ग ।
७९ तालमखाना ।	४२ दालचीनी ।
१२४ तांबा ।	२६ दारु हलदी ।
९० तांबूल ।	१७८ दुग्धवर्ग ।
१२२ तिनिसावृक्ष ।	७४ दुरालना ।
७२ तिरीची ।	८२ दोधक ।
१९२ तिल ।	६९ दुर्वा ।
६ त्रिफला ।	३७ देवदारु ।
११८ तुणीवृक्ष ।	२०१ द्रव्य परीक्षा ।
१९२ तुवरी ।	९९ धतूरा ।
९४ तुलसी ।	१२ धनियां ।
१७१ तुपारजल ।	१२० धन्वंग ।
१९ तुंवरुफल ।	६१ धरेक ।
१०७ तूत ।	१४९ धान्यवर्ग ।
२२ तेजवल ।	१२० धामन ।
१९० तैलवर्ग ।	१७० धाराजल ।
१६३ तोरी बडी । (कड़वी)	१८० धारोष्ण दुग्ध ।
८ त्रिकटु ।	२४ धात्रेके पुष्प ।
२०९ त्र्यर्थक ।	८९ नकलिकनी ।
४२ त्रिजात ।	४२ नख ।
७८ त्रायमाण ।	६७ नलः ।
२८ थोम (रसोन) ।	१७३ नदीका जल ।
१९१ दडौ ।	९९ नरेल ।
९४ दमनक ।	१९९ नवीन धान्य ।
९९ दशमूल ।	१८७ नवनीत ।

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
४९ नलिका ।	४९ पर्पटी ।
२२ नाकुली ।	१६० पित्तपापडेका शाक ।
४२ नागकेसर ।	११४ मृक्ष ।
८९ नागदमनी ।	११९ पलाश ।
१२९ नाग । (सिक्का)	७१ पाठा ।
७९ नागपुष्पी ।	११२ पंचाम्ल ।
६६ नागबला ।	१० पंचकोल ।
१०२ नारंगी ।	९९ पंचमूल ।
१११ निम्बू ।	९२ पाटल ।
१७३ निर्झरजल ।	८० पातालगरुडी ।
६० निम्ब ।	१६९ पानीयवर्ग ।
७३ नीली ।	११३ पारसपिप्पल ।
६९ नीलदूर्वा ।	१३१ पारा ।
१९४ नीवार ।	१०६ पालेवत ।
४३ नेत्रवाला ।	६१ पारिभद्र ।
२१३ परिशिष्ट ।	१९७ पालक शाक ।
४९ पलाशी ।	१२९ पित्तल ।
१९७ पटुशाक ।	१६९ पिण्डार ।
१६० पटौल ।	८ पिप्पली मूल ।
३६ पतङ्ग ।	७ पिप्पली ।
३७ पद्मवृक्ष ।	१०८ पिण्डखर्जूर ।
८७ पद्मिनी ।	११० पीलु ।
१४१ पन्ना ।	१४१ पुखराज ।
१०६ परुषक ।	४९ पुदीना ।
२९ पलांडु ।	२३ पुष्कर मूल ।

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
१६१ पुष्पशाक ।	८६ वर्बरी ।
८७ पुष्पवर्गः ।	६६ बला ।
५३ पृश्निपर्णी ।	१०७ बहुआर ।
१६१ पेठा ।	२१२ बहर्थ शब्द ।
१५६ पोई शाक ।	५ बहेडा ।
३० पोस्त ।	१०३ वदर ।
७७ प्रसारणी ।	१४३ वत्सनाभ ।
२०३ प्रतिनिधि ।	१०९ बादाम ।
१४३ प्रदीपन ।	८० बन्दा ।
४९ प्रपौंडरोक ।	९३ बंधूक पुष्प ।
१७७ प्रशस्त जल ।	१५६ वाथूशाक ।
४६ प्रियंगू ।	९२ वाणपुष्प ।
११४ फगवाड़ा ।	१३७ वालु ।
१३६ फटकडी ।	११० विजौरा ।
१६१ फलशाकानि ।	१०१ विल्वफल ।
१०५ फूलमखाना ।	५१ विल्ववृक्ष ।
९० वकपुष्प ।	४४ वीरण ।
६१ वकायण ।	७४ वृद्धदारुक ।
९० वकुल ।	५३ वृहत्पंचमूल ।
११३ वट वृक्ष ।	११२ वृक्षाम्ल ।
८१ वटपत्री ।	१८ वृद्धी ।
९८ वडहर ।	१३९ वोळ ।
१६४ वैंगन ।	१४४ ब्रह्मपुत्र ।
१२१ वरना ।	८३ ब्रह्मंडूकी ।
	८३ ब्राह्मी ।

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
१४६ त्रीदिवान्य ।	९४ मरुवकः ।
२४ भांडंगी ।	९१ मल्लिका पुष्प ।
२९ भल्लातक ।	१९० मसर ।
३० भंग ।	६१ महार्निव ।
७८ भंगरा ।	६६ महाबला ।
२१८ भाषा परिशिष्ट ।	१४ महाभरी वचा ।
१२२ भूमीसहा ।	१७ महाभेदा ।
८२ भूम्यामलकी ।	१७९ महिषीदुग्ध ।
६९ भूस्तृण ।	२२ माचिका ।
२०३ भेषजसंकेत ।	९१ माधवी लता ।
१८० भेडीदुग्ध ।	१६७ मानकंद ।
११९ भोजपत्र ।	८४ मार्कंडिका ।
१८२ भोजनांते दुग्धपान ।	२२ मालकंगुनी ।
८१ भोयेमुरक (शंखपुष्पी) ।	९६ माषपर्णी ।
१७३ भौमजल ।	१६२ मिष्टतुंबी ।
२५ भंजीठ ।	८ मिरच ।
८१ मत्स्याक्षी ।	१९८ मिशरी ।
२१ मयनफल ।	९६ मुद्गपर्णी ।
२०० मद्य ।	७४ मुण्डी दोनों ।
१९ मुलठी ।	४९ मुस्तक ।
१९२ मधुवर्गः ।	१४९ मुंगी
१४१ मधूक ।	१०८ मुनक्का ।
१३५ मनशिल ।	६८ मुंज ।
८६ मयूरशिखा ।	९३ मुचकुंद ।

पृष्ठ नाम औषधी	पृष्ठ नाम औषधी
३९ मुष्क दाना ।	१९६ रात्र ।
१९० मकुष्ट ।	१८४ रात्रौ दधि निषेध ।
४३ मुष्क वाला ।	३२ राल ।
७८ मूर्वा ।	२१ रास्ना ।
१८९ मूत्रवर्ग ।	६५ रोहिणी ।
१६६ मूलकनाल ।	१३९ रत्न ।
१९९ मूली ।	४६ रेणुका ।
७० मूखली ।	११७ रोहेडा ।
८६ मूसाकर्णी ।	४१ लवंग ।
१६८ मृणालशाक ।	१०४ लवली ।
१३ मेथी ।	६६ लक्ष्मणा ।
१७ मेदा ।	२९ लाख ।
७९ मेढासिंगी ।	१३७ लाजवर्द ।
११९ मोचरस ।	१४० लाल ।
१४१ मोती ।	८२ लाजवंती ।
१९९ यवानीशाक ।	४८ लामज्जक ।
३६ रक्तचंदन ।	२८ लोभ्र ।
१४६ रक्त धान्य ।	१९८ लोनीशाक ।
१९२ रक्त सरसों ।	१२६ लोहा ।
१६६ रतालु ।	१४ वचा ।
१९० स्वांह ।	१७० वर्षाजल ।
२६ रसांत ।	१२९ वंग ।
१९३ राई ।	८१ वंशपत्री ।
९३ राजात्र ।	

पृष्ठ	नाम औषधी	पृष्ठ	नाम औषधी
६७	वंशबीज ।	१५९	शितिवार ।
६७	वंशांकुर ।	११४	शिराष ।
२७	वाकुची ।	१३०	शिलाजीत ।
१७४	वापीजल ।	४०	शिलारस ।
१५	वायविडंग ।	१३३	शिंगरफ ।
७०	वाराही कंद ।	११४	शिशपा ।
८९	वार्षिकी फूल ।	७७	शुक्ल कृष्ण सारिवा ।
६०	वांसा ।	१४३	शृंगक विष ।
१४३	विष ।	८९	शैवाल ।
८५	वेष्टंतरु ।	१५४	श्यामाक ।
१०५	विकंकतफल ।	५४	श्वेतकंटकारी ।
११६	विजयसार ।	६९	श्वेत दूर्वा ।
३१	विडलवण ।	१०	षडूषण ।
७०	विदारीकंद ।	१४७	षष्टिका ।
१५८	वृहत्तोनीशाक ।	१४३	सक्तुक विष ।
१४१	वैदूर्य ।	३२	सजी ।
७०	शतावरी ।	१२१	सप्तपर्ण ।
७८	शगपुष्पी ।	१६	समुद्रझाग ।
१९२	राहत ।	७६	सरना ।
१३९	शंख ।	१२८	सप्तोपधातु ।
३९	श्रीवास ।	१६१	सर्पपशाक ।
१२०	शाखोट ।	१२०	सहोडा ।
१५५	शाकवर्ग ।	२०३	संयोग विरुद्ध ।
११८	शालभेद ।	१६९	संस्वेदज ।
१०१	शाल ।	६६	सहदेवी ।
१४५	शालिधान्य ।	१९८	संधान वर्ग ।
५३	शालपर्णी ।	६२	संभालु ।
११९	शालमली ।	३१	सामरनमक ।

(१६) भावप्रकाशनिघण्टुस्थ-औ० अकारादिसूची ।

पृष्ठ नाम औषधी ।	पृष्ठ नाम औषधी
१०५ सिंघाड़ा ।	८९ स्वर्ण जातिका ।
१४२ सिष्णी ।	६७ स्वर्णवल्ली ।
१५६ सील ।	१३५ हड़ताल ।
१३० सिन्दूर ।	४३ हीवेर ।
९३ सिंदूरी ।	१५० हरहरकी दाल ।
८६ सुदर्शना ।	१८० हरणीदुग्ध ।
१३६ सुरमा ।	१६८ हस्तिकर्णी ।
१२२ स्वर्ण ।	२ हरीड ।
३७ सुहागा ।	२५ हलदी ।
६ सुंड ।	१ हरीतक्यादिवर्ग ।
३१ सेंधा नमक ।	१ हस्तिनीदुग्ध ।
४८ स्पृका ।	८० हंसपदी ।
१०९ सेव ।	१५ हाऊवेर ।
८९ सेवती ।	१४३ हारिद्रविष ।
३२ सौंचल नमक ।	१७२ हिमजल ।
१२८ सोनामखी ।	१३ हिंगु ।
८० सोमलता ।	८१ हिंगुपत्री ।
१६१ सौभांजनपुष्पशाक ।	१४० हीरा ।
१६४ सौभांजन फल ।	१३८ हीराकसीस ।
१४३ सौराष्ट्रिकविष ।	१४४ हालाहल ।
१३८ सौराष्ट्री ।	१५९ डुलडुल ।
१२ सोये ।	३३ क्षारद्रव्यं, त्रयंच ।
१२ सौंफ ।	३३ क्षाराष्टक ।
८८ स्थलकमल ।	१७ क्षीरकाकोली ।
५२ स्योनाक ।	११५ क्षीरवृक्षपंचक ।
२०२ स्वभावसे हित अहित ।	१५३ क्षुद्रधान्य ।
९१ स्वर्ण केतकी ।	

इत्यकारादिसूची समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

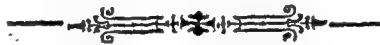
अथ

भावप्रकाशनिघण्टुः ।

टिप्पणीसहितः ।



भिषजामुपकाराय निघण्टोरुपरि कृता ॥
टिप्पणी वैद्यराजेन गंगापूर्वकविष्णुना ॥



अथ प्रथमं हरीतक्या उत्पत्तिर्नाम लक्षणं गुणाश्च ।
दक्षं प्रजापतिं स्वस्थमश्विनौ वाक्यभूचतुः ।
कुतो हरीतकी जाता तस्यास्तु कति जातयः ॥ १ ॥
रसाः कति समाख्याताः कति चोपरसाः स्मृताः ।
नामानि कति चोक्तानि किंवा तासां च लक्षणम् ॥ २ ॥
के च वर्णा गुणाः के च का च कुत्र प्रयुज्यते ।
केन द्रव्येण संयुक्ता कांश्च रोगान्व्यपोहति ॥ ३ ॥
प्रश्नमेतं यथा पृष्ठं भगवन्वक्तुमर्हसि ।
अश्विनोर्वचनं श्रुत्वा दक्षो वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥
उत्पात्तिः ।

पपात बिन्दुर्मेदिन्यां शक्रस्य पिबतोऽमृतम् ।
ततो दिव्या समुत्पन्ना सप्तजातिर्हरीतकी ॥ ५ ॥

-
- १ रसाः मुख्यरसाः तुवरादयः । २ उपरसाः गौणरसाः कट्वादयः ।
३ वर्णाः पीतादयः जीवन्ती स्वर्णवर्णिनीत्यादि । ४ लवणेन कफमित्यादि ।
५ अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रमित्यादि । ६ दिव्या हरीतकी ।

नाम ।

हरीतक्यभया पथ्या कायस्था पूतनामृता ।
हैमवत्यव्यथा चापि चेतकी श्रेयसी शिवा ॥
वयस्या विजया चापि जीवन्ती रोहिणीति च ॥ ६ ॥

जातयः ।

विजया रोहिणी चैव पूतना चामृताभया ।
जीवन्ती चेतकी चेति पथ्यायाः सप्त जातयः ॥ ७ ॥

लक्षणम् ।

अलाबुवृत्ता विजया वृत्ता सा रोहिणी स्मृता ।
पूतनास्थिमती सूक्ष्मा कथिता मांसलामृता ॥ ८ ॥
पंचरेखाभया प्रोक्ता जीवन्ती स्वर्णवर्णिनी ।
त्रिरेखा चेतकी ज्ञेया सप्तानामियमाकृतिः ॥ ९ ॥

गुणाः ।

विजया सर्वरोगेषु रोहिणी व्रणरोपणी ।
प्रलेपे पूतना योज्या शोधनार्थेऽमृता हिता ॥ १० ॥
अक्षिरोगेऽभया शस्ता जीवन्ती सर्वरोगहृत् ।
चूर्णार्थे चेतकी शस्ता यथायुक्तं प्रयोजयेत् ॥ ११ ॥
चेतकी द्विविधा प्रोक्ता श्वेता कृष्णा च वर्णतः ।
षडंगुलायता श्वेता कृष्णा त्वेकांगुला स्मृता ॥ १२ ॥
काचिदास्वादमात्रेण काचिद् गंधेन भेदयेत् ।
काचित्स्पर्शेन दृष्ट्या न्या चतुर्धा भेदयेच्छिव ॥ १३ ॥
चेतकी पादपच्छायामुपसर्पति ये नराः ।
भिद्यन्ते तत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः ॥ १४ ॥
चेतकी तु धृता हस्ते यावत्तिष्ठति देहिनः ।

१ देश भाषा हरड फारसी हडेला जर्द । अङ्ग्रेजी मिरोवेलेन्स balloons ।

२ कृष्णा जङ्ग हरड ।

तावत् भिद्येत वैगैस्तु प्रभावान्नात्र संशयः ॥ १५ ॥

नृपादिसुकुमाराणां कृशानाम्भेषजद्विषाम् ।

चेतकी परमा शस्ता हिता सुखविरेचनी ॥ १६ ॥

संतानामपि जातीनाम्प्रधानं विजया स्मृता ।

सुखप्रयोगा सुलभा सर्वरोगेषु शस्यते ॥ १७ ॥

हरीतकी पञ्चरसाऽलवणा तुवरा परम् ।

रूक्षोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी ॥ १८ ॥

चक्षुष्या लघुरायुष्या बृंहणी चानुलोमनी ।

श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोथोदरकृमीन् ॥ १९ ॥

वैसर्प्यग्रहणीरोगविवन्धविषमज्वरान् ।

गुल्माध्मानव्रणच्छर्दिहिक्काकंठहृदामयान् ॥ २० ॥

कामलां शूलमानाहं प्लीहानं च यकृद्गदम् ।

अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राघातं च नाशयेत् ॥ २१ ॥

स्वादुतिक्तकषायत्वात् पित्तहृत्कफहृत्तु सा ।

कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा ॥ २२ ॥

पित्तकृत्कटुकाम्लत्वात् वातकृन्न कथं शिवा ।

प्रभावादोषहंतृत्वं सिद्धं यत्तत्प्रकाशयते ॥ २३ ॥

१ उत्पत्तिस्थानं—विंध्यादौ विजया हिमाचलमवा स्याच्चेतकी धूतना सिंधौ स्या-
दथ रोहिणी तु विजया जाता प्रतिष्ठानके । चंपाग्राममृताऽभया च जनिता देशे
सुराष्ट्राह्वये जीवन्तीति हरीतकी निगदिता सप्तप्रमेदा बुधैः ॥ १ ॥ अम्लभावा-
ज्जयेद् वातं पित्तं मधुरतिक्ता । कफरूक्षकषायत्वात्त्रिदोषघ्नी ततोऽभया ॥ २ ॥
हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी । कदाचित्कुप्यते माता नोदरस्था हरी-
तकी ॥ ३ ॥ हरस्य भवने जाता हरिता तु स्वभावतः । हेरेतु सर्वरोगांश्च तेन
प्रोक्ता हरीतकी ॥ ४ ॥ हरीतक्याः स्मृतं बीजं चक्षुष्यं गुरु वातनुत् । पित्तनाश-
करं चैव मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ ५ ॥

हेतुभिः शिष्यबोधार्थं पूर्वं तु क्रियतेऽधुना ।

कस्मान्न्यत्वं गुणैः साम्यन्दष्टमाश्रयभेदतः ॥ २४ ॥

यतस्ततो नेति चिंत्यं धात्रीलंकुचयोर्यथा ।

पथ्याया मज्ज निस्वादु स्नायावम्लो व्यवस्थितः ॥ २५ ॥

वृंते तित्तस्त्वचि कटुरस्थिस्थः तुवरो रसः ।

नवा स्निग्धा घना वृत्ता गुर्वी क्षिता च यांभसि ॥ २६ ॥

निमज्जेत्सा सुप्रशस्ता कथितातिगुणप्रदा ।

नवादिगुणयुक्तत्वं तथैवात्र द्विकर्षता ।

हरीतक्याः फले यत्र द्वयं तच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥ २७ ॥

चर्विता वर्द्धयत्यग्निं पेषिता मलशोधनी ॥

स्विन्ना संप्राहिणी पथ्या भृष्टा प्रोक्ता त्रिदोषनुत् ॥ २८ ॥

उन्मीलिनी बुद्धिबलेन्द्रियाणां

निर्मूलिनी पित्तकफानिलानाम् ।

विलसिनी मूत्रशकृन्मलानां

हरीतकी स्यात्सह भोजनेन ॥ २९ ॥

अन्नपानकृतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान् ।

हरीतकी हरत्याशु भुक्तस्योपरि योजिता ॥ ३० ॥

लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा ।

वृतेन वातजात्रोगान्सर्वरोगान्गुडान्विता ॥ ३१ ॥

सिंधू*त्यशर्करा शुंठी कणा मधुगुडैः क्रमात् ।

वर्षादिष्वभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा ॥ ३२ ॥

अध्वातिखिन्नो बलवर्जितश्च रुक्षः कृशो लघ्वनकर्षितश्च ।

पित्ताधिकोगर्भवतीचनारीविमुक्तरक्तस्त्वभयान्नखादेत् ३३

१ अधुना पूर्वं द्वित्रिपत्रेषु प्रभाववर्णनं कृतं क्रियते वर्तमानसमीपे वर्तमान-
वत् । २ लकुचं, वटहल वाडेऊ इति प्रसिद्धम् । ३ स्नायी मध्यतन्तौ ।

४ वृंतं प्रसवबंधनमित्यमरः । * सिंधूत्यं, सिंधवं लवणम् । वर्षादिषु षट् ऋतुषु
हरीतकीप्रयोगः ।

विभीतकः ।

विभीतकस्त्रिलिङ्गः स्यादक्षः कर्षफलस्तथा ।

कलिद्रुमो भूतवासस्तथा कलियुगालयः ॥ ३४ ॥

विभीतकं स्वादुपाकं कषायं कफपित्तनुत् ।

उष्णवीर्यं हिमस्पर्श भेदनं कासनाशनम् ॥ ३५ ॥

रूक्षं नेत्रहितं केश्यं कृमिवैस्वर्यनाशनम् ।

विभीतमज्जातृच्छर्दिक्कफवातहरी लघुः ॥ ३६ ॥

कषाया मदकृच्चाथ धात्रीमज्जापि तदगुणा ।

औमलकी ।

वयस्यामलकी वृष्या जातीफलरसं शिवम् ॥ ३७ ॥

धात्रीफलं श्रीफलं च तथामृतफलं स्मृतम् ।

त्रिष्वामलकमाख्यातं धात्री तिष्यफलामृता ॥ ३८ ॥

हरीतकीसमं धात्री फलं किन्तु विशेषतः ।

रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परं वृष्यं रसायनम् ॥ ३९ ॥

हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्य्यशैत्यतः ।

कफं रूक्षकषायत्वात्फलं धात्र्याः त्रिदोषजित् ॥ ४० ॥

यस्ययस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।

तस्यतस्यैव वीर्येण मज्जानामपि निर्दिशेत् ॥ ४१ ॥

१ देशभाषा वहेडा । फारसी बलेले । अङ्गरेजी मेरोवेलन् बेलिरिक ।

Myrevallan BelliriRi । २ देशभाषा आमला फारसी अम्लिङ्ग । अङ्गरेजी

ऐविलक मिरो वेलन् । Emblic Myropalan आमलस्य फलं शुष्कं तिक्त-

मम्लं कटु स्मृतम् । मधुरं तुवरं केश्यं भग्नसंघातकारकम् ॥ १ ॥ धातुवृद्धिकरं

रोध्यं लेपनात्कातिकारकम् । पित्तकफं तृषां वर्म मेदोरोगं विषं तथा । त्रिदोषं

नाशयत्येव पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् ॥ २ ॥ तन्मज्जा प्रदरच्छर्दिवातपित्तज्वरापहा ।

कषायमधुरा वृष्या श्वासकासनिवर्हणा ॥ ३ ॥

त्रिफला ।

पथ्या विभीतधात्रीणां फलैः स्यात्त्रिफला समैः ।
 फलत्रिकं च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्तिता ॥ ४२ ॥
 त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठहरा सरा ।
 चक्षुष्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी ॥ ४३ ॥

शुंठी ।

शुंठी विश्वा च विश्वं च नागरं विश्वभेषजम् ।
 ऊषणं कटु भद्रं च शृंगवेरं महौषधम् ॥ ४४ ॥
 शुंठी रुच्यामवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः ।
 स्निग्धोष्णा मधुरा पाककफवातविवंधनुत् ॥ ४५ ॥
 वृष्या स्वय्या वमिश्वासशूलकासहृदामयान् ।
 हन्ति श्लेपदशोफार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ ४६ ॥
 आग्नेयगुणभूयिष्ठं तोयांशं परिशोषयेत् ।
 संगृह्णाति मलं तत्तु ग्राहि शुंठ्यादयो यथा ॥ ४७ ॥
 विवंधभेदनी या तु सा कथं ग्राहिणी भवेत् ।
 शक्तिविवंधभेदेऽस्या यतो न मलपातने ॥ ४८ ॥

आर्द्रकम् ।

आर्द्रकं शृंगवेरं स्यात्कटु भद्रं तथाद्रिका ।

आद्रिका भेदनी गुर्वी तीक्ष्णोष्णा दीपनी मता ॥ ४९ ॥

१ त्रिफला द्विविधा—लब्धी, महती च, खजूर, फालसा, जिरिङ्क, छोटी ।
 पथ्या विभीतकं धात्री महती त्रिफला मता । स्वल्पा काश्मीरखजूरपरूपकफलै-
 र्भवेत् ॥ १ ॥ २ देशभाषा सुंड, फारसी जंजवील, अङ्गरेजी डाईजङ्जर
 Dyginger ३ देश भाषा अदरक । फारसी जिंजिविलिरतवा । अङ्गरेजी
 जिंजरुट् Gingerroot, वातपित्तकफेमानां शरीरं वनचारिणाम् । एक एव नि-
 हंत्यत्र लवणार्द्रककेसरी ॥ १ ॥

कटुका मधुरा पाके रूक्षा वातकफापहा ।

ये गुणाः कथिताः शृंठ्यां तेपि संत्यार्द्रकेखिलाः ॥ ५० ॥

भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकमक्षणम् ।

अग्निसंदीपनं रुच्यं जिह्वाकंठविशोधनम् ॥ ५१ ॥

कुष्ठे पाण्ड्वामये कृच्छ्रे रक्तपित्ते व्रणे ज्वरे ।

दाहे निदाघशरदोर्नैव पूजितमार्द्रकम् ॥ ५२ ॥

पिप्पली ।

पिप्पली मागधी कृष्णा वैदेही चपला कणा ।

उपकुल्योषणा शौण्डी कोला स्यात्तीक्ष्णतंडुला ॥ ५३ ॥

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुपाका रसायनी ।

अनुष्णा कटुका स्निग्धा वातश्लेष्महरी लघुः ॥ ५४ ॥

पिप्पली रेचनी हन्ति श्वासकासोदरज्वरान् ।

कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ॥ ५५ ॥

आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरुः ।

पित्तप्रशमनी सा तु शुष्का पित्तप्रकोपनी ॥ ५६ ॥

पिप्पली मधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशिनी ।

श्वासकासज्वरहरी वृष्या मेध्याग्निवर्द्धनी ॥ ५७ ॥

—(केवदेवीये) अंकुरं शृंगवेरस्य रक्तजिच्छेष्मवातहृत् । अव्यक्तरसवीर्यत्वात्तत्परं तु कफापहम् ॥ २ ॥ कांजिकार्द्रं सलवणं दीपनं पाचनं परम् । वातश्लेष्मबिबंघन् विशेषादामवातनुत् ॥ ३ ॥ वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं पाचनं परलकुचस्य रसे क्षिप्तमार्द्रकं मुखशोधनम् ॥ ४ ॥

१ देशभाषा मध, फारसी पिल्पिलादराज, अङ्गरेजी लांग पीप्पर Pepper Long पिप्पली त्रिविधा, १ गजपिप्पली, २ जलपिप्पली, ३ पिप्पली च । कटूष्णं लघुं तच्छुष्कमवृष्यं कफवातजित् । नात्युष्णं नातिशीतं च वीर्यतो मरिचं सितम् ॥ १ ॥ गुणवन्मरिचैभ्यश्च चक्षुष्यं च विशेषतः । २ अनुष्णा, ईषदुष्णा दे० मा० छोटी पीपल ।

जीर्णज्वरेग्निमांघ्रे च शस्यते गुडपिप्पली ।

कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ ५८ ॥

द्विगुणः पिप्पलीचूर्णाद्गुडोत्र भिषजां मतः ॥

मरिचम् ।

मरिचं * वेल्लजं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् । * वह्निजमित्यपपाठः

मरिचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफवातजित् ॥ ५९ ॥

उष्णं पित्तकरं रूक्षं, श्वासशूलकृमीन् हरेत् ।

तदाद्रिं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु ॥ ६० ॥

किञ्चित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ।

त्रिकटु ।

विश्वोपकुल्या मरिचं त्रयं त्रिकटु कथ्यते ॥ ६१ ॥

कटुत्रिकं तु त्रिकटु व्यूषणं व्योषमुच्यते ।

व्यूषणं दीपनं हन्ति श्वासकासत्वगामयान् ॥ ६२ ॥

गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान् ।

पिप्पलीमूलम् ।

अधिकं पिप्पलीमूलमूषणं चटकाशिरः ॥ ६३ ॥

दीपनं पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु ।

रूक्षं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम् ॥ ६४ ॥

आनाहप्लीहगुल्मघ्नं कृमिश्वासकफापहम् ।

१ दे० भा० काली मरिच फा० पिल पिले अस्वद हलपिले गिर्दि इ०
 = लाक् पेपर BlacrrTpper । शोभांजनबीजं श्वेतमरिचं केचिद्वदन्ति । कटूष्णं
 श्वेतमरिचं विषघ्नं भूतनाशनम् । अवृष्यं दृष्टिरोगघ्नं युक्तं चैव रसायनम् ॥ १ ॥
 राजनिवटु । २ अपित्तलम् ईपपित्तलम् ईपदर्थे नञ् । ३ दे० भा० पिपला-
 मूल फा० फिलफिल मोया इ० पाइपरल्ट् Piper root. ।

चतुरूषणम् ।

ऽयूषणं सकणामूलं कथितं चतुरूषणम् ॥ ६५ ॥

व्योषस्यैव गुणाः प्रोक्ता अधिकाश्चतुरूषणे ।

चव्यम् ।

भवेच्चव्यन्तु चविका कथिता सा तथोषणा ॥ ६६ ॥

कणामूलगुणं चव्यं विशेषाद्गुदजापहम् ।

गजपिप्पली ।

चविकायाः फलं प्राज्ञैः कथिता गजपिप्पली ॥ ६७ ॥

कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरश्च सा ।

गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्महृद्गृह्णिवर्धिनी ॥ ६८ ॥

उष्णा निहत्यतीसारं श्वासकण्ठामयकृमीन् ।

चित्रकः ।

चित्रकोऽनलनामा च पाठी व्यालस्तथोषणः ॥ ६९ ॥

१ दे, भा, चवक । बंग, भा, चईगछ । चव्यपुष्पं गरश्वासकासक्षयविनाशनम् ।
(मदनपाल) तंत्रांतरे—चव्यं तु चविका चाथ विंबीगुंजे तु कृष्णला । चविका
कटु तिक्तोष्णा दीपनी पाचनी लघुः ॥ १ ॥ कफपित्तहरी चैव किंचिद्वात
प्रकोपनी । अस्य शाकं श्लेष्मपित्तजित् । लैटनभा, एक्स वर्धी आईपाइपर
चव । *Chavica Elzwhraiaye piper chava*. २ दे० भा० गजपीपल,
वडीपीपल । सैहली, पिप्पली, वनपिप्पली, मरकिटपिप्पलीत्यादयः पृथग्गु-
णाः । वं० भा० गजपिपुल लै० भा० प्लेटेगोएंगुक्सिको लिससिन्डाप्सन्
जोफिसिनेलिम् । *Pluntago amplexcaulis scanpans officinalis*.
३ दे० भा० चित्रा फा० वेखबरंदा इ० पलं विगो कौरुलेऐसो । चित्रको द्विविधः
कृष्णरक्तभेदात् (रक्त चित्रक नाम) कालो व्यालः कालमूलीति दीप्यो मार्जारो
सिर्दाहकः पावकश्च । चित्रांगोप्यारक्तचित्रो महांगाः स्याद्गुद्राहश्चिलकोन्यो
गुणाढयः । तच्छाकं लघु संग्राहि कफपित्तविनाशनम् ॥ केवदेवीये ।

चित्रकः कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः ।
 रुक्षोष्णो ग्रहणीकुष्ठशोथार्शःकृमिकासनुत् ॥ ७० ॥
 वातश्लेष्महरो ग्राही वातार्शःश्लेष्मपित्तहृत् ॥

पंचकोलम् ।

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः ॥ ७१ ॥
 पंचभिः कोलमात्रं यत्पंचकोलं तदुच्यते ।
 पंचकोलं रसे पाके कटुकं रुचिकृन्मतम् ॥ ७२ ॥
 तीक्ष्णोष्णं पाचनं श्रेष्ठं दीपनं कफवातनुत् ।
 गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नं पित्तकोपनम् ॥ ७३ ॥

षडूषणम् ।

पंचकोलं समरिचं षडूषणमुदाहृतम् ।
 पंचकोलगुणं तत्तु रुक्षमुष्णं विषापहम् ॥ ७४ ॥

यवानिका ।

यवानिकोग्रगंधा च ब्रह्मदर्भाजिमोदिका ।
 सैवोक्ता दीप्यका दीप्या तथा स्याद्यवसाह्वया ॥ ७५ ॥
 यवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः ।
 दीपनी च तथा तिक्ता पित्तला शुक्रशूलहृत् ॥ ७६ ॥
 वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् ।

अजमोदा ।

अजमोदा खराश्वा च मायूरो दीप्यकस्तथा ॥ ७७ ॥
 तथा ब्रह्मकुशा प्रोक्ता कारवी लोचमस्तका ।

अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत् ॥ ७८ ॥

उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या बलकरी लघुः ।

नेत्रामयकफच्छर्दिहिकाबस्तिरुजो हरेत् ॥ ७९ ॥

पारसीकयवानी ।

पारसीकयवानी तु यवानीसदृशा गुणैः ।

विशेषात्पाचनी रुच्या ग्राहिणी मादिनी गुरुः ॥ ८० ॥

शुक्रजीरकं कृष्णजीरकमुपकुञ्चिका ।

जीरको जरणोजाजी कणा स्यादीर्घजीरकः ।

कृष्णजीरः सुगंधिश्च तथैवोद्गारशोधनः ॥ ८१ ॥

कालाजाजी तु सुषवी कालिका चोपकालिका ।

पृथ्वीका कारवी पृथ्वी पृथुः कृष्णोपकुञ्चिका ॥ ८२ ॥

उपकुञ्ची च कुञ्ची च बृहज्जीरकमित्यपि ।

जीरकत्रितयं रुक्षं कटूष्णं दीपनं लघु ॥ ८३ ॥

संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

पारसीका यवानी स्याच्चौहारो जंतुनाशनः । पारसी यावनी गंधच्छारश्च
खरपुष्पका । (खुरासानी) यवानी यावनी तीव्रा तुरुष्का मदकारिणी । दीप्या
श्यामकुवेराख्यो मादको मदकारकः । दे० भा० खुरासानी अजवाइन फा०
तुख्यइस् । इ० आर्टिमिसिया मेरिटिमा, *Artimisia maritima* । २ दे०
भा० सुफेद जीरा । फा० जीरा । इ० कूट्यमिन् सीड CumminSeed ३ दे०
भा० काला जीरा । फा० जीराश्याह । इ० ब्लैक कारवेसीड Black Caraway
Seed । ४ दे० भा० कलौजी, मगरैला । फा० शोनिझ, श्याहदाने । इ०
स्माल फेनल फलावर Small Fenel filower । कलौजी तु बृहज्जीरकस्य
जीरीनामकस्य भेद एव नतु पलांडुबीजानि ।

ज्वरघ्नं पाचनं वृष्यं बल्यं रुच्यं कफापहम् ॥ ८४ ॥
चक्षुष्यं पवनान्वातगुल्मच्छर्द्यतिसारहृत् ।

धान्यकम् ।

धान्यकं धानकं धान्यं धाना धानेयकं तथा ॥ ८५ ॥

कुनटी धेतुका छत्रा कुस्तुंबुरुवितुन्नकम् ।

धान्यकन्तुवरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु ॥ ८६ ॥

तिक्तं कटूष्णवीर्यं च दीपनं पाचनं स्मृतम् ।

ज्वरघ्नं रोचनं ग्राहि स्वादु पाकि त्रिदोषनुत् ॥ ८७ ॥

तृष्णादाहवमिश्रवासकासामार्शःकृमिप्रणुत् ।

आर्द्रं तु तद्गुणं स्वादु विशेषात्पित्तनाशि तत् ॥ ८८ ॥

शतपुष्पा मिश्रेया ।

शतपुष्पा शताह्वाच मधुरा कारवी मिसिः ।

अतिलंबी सितच्छत्रा संहितच्छत्रकापि च ॥ ८९ ॥

छत्रा शालेयशालीनौ मिश्रेया मधुरा मिसिः ।

शतपुष्पा लघुस्तीक्ष्णा पित्तकृदीपनी कटुः ॥ ९० ॥

लृष्णा ज्वरानिलश्लेष्मत्रणशूलाक्षिरोगहृत् ।

मिश्रेया तद्गुणाः प्रोक्ता विशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ ९१ ॥

अग्निमांद्यहरी हृद्या बद्धविट्कृमिशुक्रहृत् ।

रूक्षोष्णा पाचनी कासवमिश्लेष्मानिलान् हरेत् ॥ ९२ ॥

१ दे० भा० धनियां, फा० तुल्लमेकस्तीझई, कोरिएण्डिरसीड। Corian derSeed

२ दे० भा० सौंफाफा० वादियान । ई० फेनिल्सीड । Fenalseed सिता मधु-
रिका चापि माधुरी तापसप्रिया । गंधाधिका घोषवती सुगंधा च तृषाहरा ।

३ दे० भा० सोये, सोये के बीज । फा० शुत-तुल्लमेशूता । ई० डिलसीड
Dillseed । तज्जलं शीतलं रुच्यं कटुदीपनपाचनम् । मधुरं तृट् हृद्वाति पित्त-
दाहं च नाशयेत् ।

मेथिका वनमेथिका ।

मेथिका मेथनी मेथी दीपनी बहुपत्रिका ।

बोधनी बहुबीजा च जातीगंधफला तथा ॥ ९३ ॥

वल्लरी चंद्रिका मंथा मिश्रपुष्पा च कैरवी ।

कुंचिका बहुपर्णी च पीतबीजा मुनिच्छदा ॥ ९४ ॥

मेथिका वातशमनी श्लेष्मघ्नी ज्वरनाशिनी ।

ततः स्वल्पगुणा वन्या वाजिनां सा तु पूजिता ॥ ९५ ॥

चंद्रशूरम् ।

चंद्रिका चर्महंत्री च पशुमेहनकारकः ।

नंदनी कारवी भद्रा वासपुष्पा सुवासरा ॥ ९६ ॥

चंद्रशूरं हितं हिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ।

असृग्वातगदद्रेषि बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ९७ ॥

चतुर्वीजम् ।

मेथिका चंद्रशूरश्च कालजाजी यैवानिका ।

एतच्चतुष्टयं युक्तं चतुर्वीजमिति स्मृतम् ॥ ९८ ॥

तच्चूर्णं भक्षितं नित्यं निहन्ति पवनामयम् ।

अजीर्णशूलमाध्मानं पार्श्वशूलं कटिव्यथाम् ॥ ९९ ॥

हिंणुं ।

सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिंणु रामठम् ।

१ दे० भा० मेथी । फा० तुल्मे शमपीत । इ० फेनरीक Fennyreek ।
 २ दे० भा० हाली, हालिम् । फा० हालम तुल्मतरातेजक । इ० कामन क्रेस,
 Common cress. । ३ दे० भा० चारदाना । फा० चारतुल्म । ४ दे०
 भा० हींग । फा० अंगुश दखंते अगञ्जुखालीस । इ० आस्साफो टीड (हिंणु
 शोधनं) अंगारस्थे लोहपात्रे सघृते रामठं क्षिपेत् ॥ १ ॥ चालयेत् किंचिदा-
 रक्तवर्णं योगेषु योजयेत् ॥ २ ॥ नाडीहिंणु पलाशाख्या जंतुका रामठी च सा ।
 वंशपत्री च पिंडाहा सुवीर्या हिंणु नाडिका ॥ ३ ॥

हिङ्गुणं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णं वातवलासहत ॥ १०० ॥
शूलगुल्मोदरानाहक्रिमिघ्नं पित्तवर्धनम् ।

वचा ।

वचोग्रगंधा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०१ ॥
क्षुद्रपत्री च मंगल्या जटिलोग्रा च लोमशा ।
वचोग्रगंधा कटुका तिक्तोष्णा वांतिवह्निकृत् ॥ १०२ ॥
विवंधाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधनी ।
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्तवनिलान् हरेत् ॥ १०३ ॥

पारसी-कवचा ।

पारसीकवचा शुक्ला प्रोक्ता हैमवतीति सा ।
हैमवत्युदिता तद्वद्रातं हन्ति विशेषतः ॥ १०४ ॥

महाभरी-वचा ।

सुगंधाप्युग्रगंधा च विशेषात्कफकासनुत् ।
सुस्वरत्वकरी रुच्या हृत्कंठमुखशोधनी ॥ १०५ ॥
अपरा सुगंधा स्थूलग्रन्थिः यस्या लोके महाभरीति नाम
स्थूलग्रन्थिः सुगंधा स्यात्ततो हीनगुणा स्मृता ॥ १०६ ॥

द्वीपांतरवचा ।

द्वीपांतरवचा किञ्चित् तिक्तोष्णा वह्निदीतिकृत् ।

१ दे० भा० खुरासानी वच । फा० सोसन जर्द, अंगरतुरकी । इ० स्वीट्

फ्लारुट् Sweet Floyroot. । २ दे० भा० कुलिजन । फा० खिरदासा

इ० ग्रेटर्गलंगल Greatgalungal । ३ दे० भा० चोवचीनी । फा०

एवन । इ० चक्का । फिरंगदेशसंभूता चीनदेशेथ विश्रुता । नामतश्चोपचीनी

स्यादध्वगंधसमा भवेद् ॥ १ ॥ अध्वगंधा समं पत्रमोषधिप्रथिसंयुता ॥ वर्णतः

पाटला सा च दृढा च मधुरा रसे ॥ २ ॥ शिवनिघंटुः ॥ मद्यन्यजेत्तथा तैलं

कांजिकं शाकमेव च । क्षारमम्भरसं चैव लवणं भोजनं तथा ॥ ३ ॥

विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधनी ॥ १०७ ॥

वातव्याधीनपस्मारमुन्मादं तनुवेदनाम् ।

व्यपोहति विशेषेण फिरंगामयनाशिनी ॥ १०८ ॥

हृषुषा ।

तन्मध्ये प्रथमफलं मत्स्यवद्विस्त्रगन्धकम् ।

द्वितीयमश्वत्थफलसदृशं मत्स्यगन्धि च ॥ १०९ ॥

हृषुषा हृषुषा विस्त्रा पराश्वत्थफला मता ।

मत्स्यगन्धा प्लीहहन्त्री विषघ्नी ध्वाक्षनाशिनी ॥ ११० ॥

हृषुषा दीपनी तिक्ता मृदूष्णा तुवरा गुरुः ।

पित्तोदरसमीराशोऽग्रहणीगुल्मशूलहृत् ॥ १११ ॥

पराप्येतद्गुणा प्रोक्ता रूपभेदो द्वयोरपि ॥

विडंगम् ।

पुंसि क्लीबे विडंगः स्यात्कृमिघ्नो जंतुनाशनः ।

तंडुलश्च तथा वेष्टममोघा चित्रतंडुलः ॥ ११२ ॥

विडंगं कटु तीक्ष्णोष्णं रूक्षं वह्निकरं लघु ।

शूलाध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातनिबन्धनुत् ॥ ११३ ॥

तुंबरुः ।

तुंबरुः सौरभः सौरो वनजः *सोऽणुजोऽधकः ।

तुंबरु कथितं तिक्तं कटु पाकेपि तत्कटु ॥ ११४ ॥

रूक्षोष्णं दीपनं तीक्ष्णं रुच्यं लघु विदाहि च ।

१ दे० भा० हाऊबेरालै० भा० थेवेटिया नेरिफोलिखां Thevetianerifolia.

२ दे० भा० वायविडंग । फा० वरंग काबली । इ० वेवेंग । Bubreng. तुंबरुः

सौरभः सौरो वनजः सानुजोनजः । तक्षवर्णस्तीक्ष्णवर्णो वर्तुलश्च महामुनिः ॥ १॥

धन्वन्तरिनिघटौ । ३ दे० भा० कवावे नैपाली धनियां । *सानुज इत्यपि पाठः ।

वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताकृमीन् ॥ ११५ ॥
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणि नाशयेत् ।

वंशरोचना ।

स्याद्वंशरोचना वंशी तुगाक्षीरी तुगाशुभा ॥ ११६ ॥
त्वक्क्षीरी वंशजा शुभ्रा वंशक्षीरी च वैष्णवी ।
वंशजा वृंहणी वृण्या बल्या स्वाद्री च शीतला ॥ ११७ ॥
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः ।
हरेत्कुष्ठं व्रणं पांडुं कषाया वातकृच्छ्रजित् ॥ ११८ ॥

समुद्रफेनः ।

समुद्रफेनः फेनश्च हिंडीरोब्धिकफस्तथा ।
समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शीतलश्च सः ॥ ११९ ॥
कषायो विषपित्तघ्नः कर्णरुग्ग कफहल्लघुः ।

अष्टवर्गः ।

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्वा ऋद्विवृद्धिके ॥ १२० ॥
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः ।
अष्टवर्गो हिमः स्वादुः वृंहणः शुक्रलो गुरुः ॥ १२१ ॥
भग्नसन्धानकृत्कामवलसंबलवर्द्धनः ।
वातपित्तास्रतृद्दाहज्वरमेहक्षयापहः ॥ १२२ ॥

१ दे० भा० तवाशीर, वंशलोचन । फा० तवाशीर । इ० थी

क्रिशन । The siliceous concretion. तवक्षीरं पयः क्षीरं यवजंगवयोद्धवमि-
त्यादि (तवक्षीर नाम) दे० भा० तवाखीर, इ० आरारोट । Arrowroot.

२ दे० भा० समुद्रझग । फा— कफेदरिया । इ० कटल फीशबोन । Cattle
fishbone.

जीवकर्षभयोरुत्पत्तिर्लक्षणं नाम गुणाः ।

जीवकर्षभकौ ज्ञेयौ हिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।

रसोनकंदवत्कंदौ निस्सारौ सूक्ष्मपत्रकौ ॥ १२३ ॥

जीवकः कूर्चिकाकारः ऋषभो वृषशृंगवत् ।

जीवको मधुरः शृंगी ह्रस्वांगो कूर्चशीर्षिकः ॥ १२४ ॥

ऋषभो वृषभो धीरो विषाणीद्राक्ष इत्यपि ।

जीवकर्षभकौ बल्यौ शीतौ शुक्रकफप्रदौ ॥ १२५ ॥

मधुरौ पित्तदाहास्रकाश्यवातक्षयापहौ ।

मेदामहामेदयोः ।

महामेदाभिधः कंदो मोरंगादौ प्रजायते ॥ १२६ ॥

महामेदावनीमेदा स्यादित्युक्तं मुनीश्वरैः ।

शुष्कार्द्रकनिभः कंदो लताजातः सपांडुरः ॥ १२७ ॥

महामेदाभिधो ज्ञेयो मेदालक्षणमुच्यते ।

*शुक्लकंदो नखच्छेद्यो मेदोधातुमिव स्रवेत् ॥ १२८ ॥

यः स मेदेति विज्ञेयो जिज्ञासातत्परैर्जनैः ।

स्वल्पपर्णी मणिच्छिद्रा मेदा मेदोभवाधरा ॥ १२९ ॥

महामेदा वसुच्छिद्रा त्रिदंती देवतामणिः ।

मेदायुगं गुरु स्वादु वृष्यं स्तन्यकफावहम् ॥ १३० ॥

बृंहणं शीतलं पित्तरक्तवातज्वरप्रणुत् ।

काकोल्योः ।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले ॥ १३१ ॥

यत्र स्यात्क्षीरकाकोली काकोली तत्र जायते ।

पीवरीसदृशः कंदः क्षीरं स्रवति गंधवान् ॥ १३२ ॥

—(योगतर्गिणी)—कर्णसावरुजागूथहरः पाचनदीपनः । अशुद्धः स करो-
त्यंगभंगं तस्माद्विशोधयेत् । समुद्रफेनः संपिष्टो निम्बुतोयेन शुध्यति । समुद्र-
फेनस्य समुद्रजलोपरि विद्यमानत्वात् । समुद्रफेन इति संज्ञा । वस्तुतः मत्स्यास्येय ।
जीवको ह्रस्ववित्पः कूर्चशीर्षश्च दक्षिणे । देशे संजायते कंदो निस्सारः सूक्ष्म-
पत्रकः * शुष्केति पाठांतरम् । १ क्षीरप्रियगंधवान् इति पाठांतरम् ।

सा प्रोक्ता क्षीरकाकोली काकोलीलिंगमुच्यते ।

यथा स्यात्क्षीरकाकोली काकोल्यपि तथा भवेत् ॥ १३३ ॥

एषा किञ्चिद्भवेत्कृष्णा भेदोयमुभयोरपि ।

काकोली वायसोली च वीरा कायस्थिका तथा ॥ १३४ ॥

सा शुक्ला क्षीरकाकोली वयःस्था क्षीरवल्लिका ।

कथिता क्षीरिणी धारी क्षीरशुक्ला पयस्विनी ॥ १३५ ॥

काकोलीयुगलं शीतं शुक्लं मधुरं गुरु ।

वृंहणं वातदाहास्रपित्तशोथज्वरापहम् ॥ १३६ ॥

ऋद्धिवृद्धयोः ।

ऋद्धिर्वृद्धिश्च कंदौ द्वौ भवतः कोशयामले ।

श्वेतलोमान्वितौ कंदौ लताजातौ सरंध्रकौ ॥ १३७ ॥

तावेव वृद्धिर्ऋद्धिश्च भेदमप्येतयोर्बुधे ।

तूलग्रंथिसमा ऋद्धिः वामावर्त्तफला च सा ॥ १३८ ॥

वृद्धिस्तु दक्षिणावर्त्तफला प्रोक्ता महर्षिभिः ।

ऋद्धियुग्मं सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ १३९ ॥

ऋद्धिर्वल्या त्रिदोषघ्नी शुक्ला मधुरा गुरुः ।

प्राणैश्वर्य्यकरी मूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ १४० ॥

वृद्धिर्गर्भप्रदा शीता वृंहणी मधुरा स्मृता ।

वृण्या पित्तास्रशमनी क्षतकासक्षयापहा ॥ १४१ ॥

राज्ञामप्यष्टवर्गस्तु यतोऽयमतिदुर्लभः ।

तस्मादस्य प्रतिनिधिं गृह्णीयात्तद्गुणं भिषक् ॥ १४२ ॥

१ कई आधुनिक वैद्य ऐसे कहते हैं । जीवक, ऋषभक के अभावमें सुफेद सुख त्रैहान । मेदा महामेदा के अभावमें सालव शकाकल । क्षीरकाकोली काकोली के अभावमें सुफेद सियाह मूसली । ऋद्धिवृद्धिके अभावमें उटंकन-बीज, बीजवन्द ।

मुख्यसदृशः प्रतिनिधिः ।

मेदाजीवककाकोलीवृद्धिद्वंद्वेपि चासति ।

वरी विदार्यश्वगंधा वाराहीश्च क्रमात्क्षिपेत् ॥ १४३ ॥

मेदामहामेदास्थाने शतावरीमूलम् ।

जीवकर्षभकस्थाने शतावरीमूलम् ॥ १४४ ॥

काकोलीक्षीरकाकोलीस्थाने अश्वगंधामूलम् ।

ऋद्धिवृद्धिस्थाने वाराहीकंदं गुणैस्तत्तुल्यं क्षिपेत् ॥ १४५ ॥

यष्टीमधु ।

यष्टीमधु तथा यष्टी मधुकं क्लीतकं तथा ।

अन्यत्क्लीतनकं तत्तु भवेत्तोयमधूलिका ॥ १४६ ॥

यष्टी हिमा गुरुः स्वाद्री चक्षुष्या बलवर्णकृत् ।

सुस्निग्धा शुक्रला केश्या स्वय्या पित्तानिलास्रजित् १४७ ॥

व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा ।

कांपिलः ।

कांपिल्यः (ल्ल) कर्कशश्चन्द्रो रक्तांगो रेचनोपि च ॥ १४८ ॥

कांपिल्यः कफपित्तास्रकृमिशुल्मोदरव्रणान् ।

हन्ति रेची कटूष्णश्च मेहानाहविषाश्मलुत् ॥ १४९ ॥

आरग्वधः ।

आरग्वधो राजवृक्षः शंपाकश्चतुरंगुलः ।

आरेवतो व्याधिघाती कृतमालः सुवर्णकः ॥ १५० ॥

१ दे० मा० मुलठी । फा० बेख मेहेकूमझ । इ० लिक्कारिसूखट । Lignoric
Roor यष्टी द्विधा । जलजा स्थलजा । जलयष्टीगुणाः । जलयष्टी विषच्छ-
र्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा । २ दे० मा० कमीला । फा० कन्चिलाम । इ० केमि-
लारोटलीरा । Kamila Roettlera तच्छाकं शीतलं तिक्तं वातसंग्राहि दीपनम् ।
३ दे० मा० अमलतास । पत्रपुष्पमज्जमूलानां गुणाः पृथगन्यत्र द्रष्टव्याः
कर्णिकारोप्यस्यैव भेदः । इ० पुडिंगणईपट्टी पजिङ्ग काश्या काश्यापल्प ।
Puddiny Pipetree Puring Cassia, Cassia palp cassia fistula

कर्णकारो दीर्घफलः स्वर्णांगः स्वर्णभूषणः ।

आरग्वथो गुरुः स्वादुः शीतलः संसनो मृदुः ॥ १५१ ॥

ज्वरहृद्गोपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत् ।

तत्फलं संसनं रुच्यं कोष्ठपित्तकफापहम् ॥ १५२ ॥

ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ।

कट्वी ।

कट्वी तु कटुका तिक्ता कृष्णभेदा कटुभरा ॥ १५३ ॥

अशोका मत्स्यशकला चक्रांगी शकुलादनी ।

मत्स्यपित्ता कांडरूहा रोहिणी कटुरोहिणी ॥ १५४ ॥

कटुका कटुका पाके तिक्ता रूक्षा हिमा लघुः ।

भेदनी दीपनी हृद्या कफपित्तज्वरापहा ॥ १५५ ॥

प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

किरातः ।

किराततिक्तः केरातो कटुतिक्तः किरातकः ॥ १५६ ॥

कांडतिक्तोऽनार्य्यतिक्तो भूनिंबो रामसेनकः ।

किरातकोऽन्यो नैपालः सोर्द्धतिक्तो ज्वरांतकः ॥ १५७ ॥

किरातः सारको रूक्षः शीतलस्तिक्तको लघुः ।

सन्निपातज्वरश्वासकफपित्तास्रदाहनुत् ॥ १५८ ॥

कासशोथतृषाकुष्ठज्वरत्रणकृमिप्रणुत् ।

१ दे० भा० कौड । फा० खर्तकसियाह । इ० ब्लाक् हेल्लोवरैलीस ।

Black Helllore, शुद्धिः ॥ कटुर्कामुष्णदुग्धेन प्रक्षाल्य ग्राहयेदपि । २ दे०

भा० चिरायता । फा० नेनिहाद । इ० चिरेटा Chirata । नैपाल-

गुणाः—नैपालः सन्निपातारिर्ज्वरनिद्रापहरतथा ।

इन्द्रयवम् ।

उक्तं कुटजबीजं तु यवमिन्द्रयवं तथा ॥ १५९ ॥

कलिंगं चापि कालिंगं तथा भद्रयवं स्मृतम् ।

इति क्लीबे अमरः प्राह ।

क्वचिदिन्द्रस्य नामैव भवेत्तदभिधायकम् ॥ १६० ॥

फलानीन्द्रयवास्तस्य तथा भद्रयवा अपि इति धन्वंतरीः ।

इन्द्रयवं त्रिदोषघ्नं संग्राहि कटु शीतलम् ॥ १६१ ॥

ज्वरातीसाररक्तार्शःकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।

दीपनं गुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित् ॥ १६२ ॥

मदनः ।

मदनश्छर्दनः पिंडीराठः पिंडीतकस्तथा ।

करहाटो मरुबकः शल्यको विषपुष्पकः ॥ १६३ ॥

मदनो मधुरास्तिको वीर्योष्णो लेखनो लघुः ।

वांतिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तकः ॥ १६४ ॥

रूक्षः कुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः ।

रास्ना ।

रास्ना युक्तरसा रस्या सुवहा रसना रसा ॥ १६५ ॥

१ दे० भा० इन्द्रजौ । फा० जवानकुञ्चिस्क । इ० ओबल्लिग्रडेरोंसवे ।

Ovalleaved Rosebay, कुटजस्य त्वचा तिक्ता सर्वातीसारनाशिनी ॥ श्वेत-
कुटजपुष्पगुणाः—पुष्पं तु वत्सकस्योक्तं तुवरं चामिदीपकम् । तिक्तं शीतं
वातलं च लघु पित्तातिसारनुत् । २ दे० भा० मैनफल राडा । इ० बुशीगार्डि-
नीया Bushy Gardenia. कृष्णः श्वेतश्च मदनः शीतलो मधुरः स्मृतः । कटुस्ति-
क्तश्च तुवरो वांतिकृत्कफनाशनः । पक्वमाशयशुद्धेश्च कारकः पित्तनाशकः । हृदो-
गनाशकश्चैव पूर्वस्मादुत्तमो गुणैः ॥ ३ दे० भा० जंतर । रहसन् झिजन फा०
रासुन । रास्ना तु त्रिविधा प्रोक्ता मूलं पत्रं तृणं तथा । त्रैयौ मूलदलौ श्रेष्ठौ
तृणरास्ना तु मध्यमा ॥

एलापर्णी च सुरसा सुगंधा श्रेयसी तथा ।

रास्नामपाचनी तिक्ता गुरूष्णा कफवातजित् ॥ १६६ ॥

शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ।

कासज्वरविषाशीतिवातकामयहिध्महत् ॥ १६७ ॥

नाकुली ।

नाकुली सुरसा नागसुगंधा गंधनाकुली ।

नकुलेष्टा भुजंगाक्षी सर्पाक्षी विषनाशनी ॥ १६८ ॥

नाकुली तुवरा तिक्ता कटुकोष्णा विनाशयेत् ।

भोगिलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिघ्नान् ॥ १६९ ॥

माचिका ।

माचिका प्रस्थकांबष्ठा तथाबांबालिकांबिका ।

मसूरविदला केशी सहस्रा बालमूलिका ॥ १७० ॥

माचिकाम्ला रसे पाके कषाया शीतला लघुः ।

पक्वातीसारपित्तास्रकफकंड्वामयापहा ॥ १७१ ॥

तेजवती ।

तेजस्विनी तेजवती तेजोह्वा तेजनी तथा ।

तेजस्विनी कफश्वासकासास्यामयवातहत् ॥ १७२ ॥

पाचन्युष्णा कटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ।

ज्योतिष्मती ।

ज्योतिष्मती स्यात्कटभी ज्योतिष्का कंगुनीति च ॥ १७३ ॥

बारावतपदी पण्या लता ओक्ता ककुंदनी ।

१ दे० भा० नाई, हरकाई । चन्दा । फा० छोटा चांदा । नाकुची द्विधा, नाकुली, सुगंधनाकुली । २ पश्चिमदेशे माई इति वृक्षविशेषे मोईया इति लोके ।

३ दे० भा० तेजवल । इ० दुयण्कट्टी । Toothache tree, ४ दे० भा० उमजिनी । मालकंगुनी । द्विधा, ज्योतिष्मती, महाज्योतिष्मती । फा० काल । इ० स्टाफ्टी । Staff tree.

ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित् ॥ १७४ ॥
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ।

कुष्ठम् ।

कुष्ठं रोगाह्वयं वाप्यं परिभाव्यं तथोत्पलम् ॥ १७५ ॥

कुष्ठमुष्णं कटु स्वादु शुक्रलं तिक्तकं लघु ।

हन्ति वातास्रवीसर्पकासकुष्ठमरुत्कफान् ॥ १७६ ॥

पुष्करमूलम् ।

उक्तं पुष्करमूलं तु पौष्करं पुष्करं च तत् ।

पद्मपत्रं च काश्मीरं कुष्ठभेदमिमं जगुः ॥ १७७ ॥

पौष्करं कटुकं तिक्तमुक्तं वातकफज्वरान् ।

हन्ति श्वासारुचिशोथान् विशेषात्पार्श्वशूलानुत ॥ १७८ ॥

हेमाढा ।

पटुपर्णी हैमवती हैमक्षीरी हिमावती ।

हेमाढा पीतदुग्धा च तन्मूलं चोकमुच्यते ॥ १७९ ॥

हेमाढा रेचनी तिक्ता भेदन्युत्क्लेशकारिणी ।

कृमिकण्डुविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत ॥ १८० ॥

शृंगी ।

शृंगी कर्कटशृंगी च स्यात्कुलीरविषाणिका ।

अजशृंगी च वक्रा च कर्कटाख्या च कीर्तिता ॥ १८१ ॥

शृंगी कषाया तिक्तोष्णा कफवातक्षयज्वरान् ।

श्वासोर्ध्ववाततृट्कासहिक्कारुचिवमीर्हरेत् ॥ १८२ ॥

१ दे० मा० कुष्ठ ॥ फा० २ दे० मा० पोहकर मूल । ३ दे० मा० चोक ।
इ० गेंवोज्जथिसृल् gamboje-thistle, तस्याः क्षीरं बिंदुमात्रं नेत्रक्षितं घृत्तप्लु-
तम् ॥ शुक्रं च ह्यधिमांसं च नेत्राण्यं चैव नाशयेत् । ४ दे० मा० ककडसिंगी ।

कटुफलः ।

कटुफलः सोमवलकश्च कैटर्यः कुंभिकापि च ।

श्रीपर्णिका कुमुदिका भद्रा भद्रवतीति च ॥ १८३ ॥

कटुफलस्तुवरस्तिक्तः कटुर्वातकफज्वरान् ।

हन्ति श्वासप्रमेहार्शःकासकण्ड्वामयारुचीः ॥ १८४ ॥

भाङ्गी ।

भाङ्गी भृगुभवा पद्मा फंजी ब्राह्मणयष्टिका ।

ब्राह्मण्यंगारवल्ली च खरशाकश्च हंजिका ॥ १८५ ॥

भाङ्गी रुक्षा कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी लघुः ।

दीपनी तुवरा गुल्मरक्तजित्राशयेद्ध्युवम् ॥ १८६ ॥

शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अश्मभेदः ।

पाषाणभेदकोशमघ्नो गिरभिद्वित्रयोजनी ॥ १८७ ॥

अश्मभेदो हिमस्तिक्तः कषायो बस्तिशोधनः ।

भेदनो हन्ति दोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृजः ॥ १८८ ॥

योनिरोगान्प्रमेहांश्च स्त्रीहृशूलव्रणानि च ।

धातकी ।

धातकी धातुपुष्पी च वह्निज्वाला च सा स्मृता ॥ १८९ ॥

धातकी कटुका शीता मदकृत्तुवरा लघुः ।

तृष्णातीसारपित्ताम्रविषकृभिविसर्पजित् ॥ १९० ॥

१ दे० मा० कायफलं फा० उदुल्वकं । २ दे० मा० भाङ्गी । वमने-
टी, ब्रह्मदंडी । अस्याः पत्रगुणाः—पर्णमस्या ज्वरं हन्ति दाहं हिकां त्रिदोषकम् ।
३ दे० मा० पाषाणभेद । फा० गोशाद । इं० आर्शरिसस्प । *Irisp* क्षुद्रपा-
षाणभेदश्च त्रगकृच्छ्राश्मरीहरः । ४ दे० मा० धातुके फूल । इं० ग्रीसली
आटो मेन्टोजा ।

मंजिष्ठा ।

मंजिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका ।
मंडूकपर्णी मंडीरी भंडी योजनवल्यापि ॥ १९१ ॥
रसायन्यरुणा काला रक्ताङ्गी रक्तयष्टिका ।
मंडीतकी च गंडीरी मंजूषा वस्त्ररंजनी ॥ १९२ ॥
मंजिष्ठा मधुरा तिक्ता कषाया स्वरवर्णकृत् ।
गुरुगुणा विषश्लेष्मशोथयोन्याक्षिकर्णरुक् ॥ १९३ ॥
रक्तातीसारकुष्ठास्त्रवीसर्पव्रणमेहनुत् ।

कुसुंभम् ।

स्यात्कुसुंभं वह्निशिखं वस्त्ररंजकमित्यपि ॥ १९४ ॥
कुसुंभं वातलं कृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ।

लाक्षा ।

लाक्षा पलंकषालक्तो यावो वृक्षामयो जतु ॥ १९५ ॥
लाक्षा वर्णा हिमा बल्या स्निग्धा च तुवरा लघुः ।
अनुष्णा कफपितास्रहिक्राकासज्वरप्रणुत् ॥ १९६ ॥
व्रणोरक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठगदापहा ।
अलक्तको गुणैस्तद्वद्विशेषाद् व्यङ्गनाशनः ॥ १९७ ॥

हरिद्रा ।

हरिद्रा कांचनी पीता निशाख्या वरवर्णिनी ।

१ दे० भा० मंजीठ । फा० रुनास् । इ० मेडरूट् । Maaar root.
मस्याः शाकगुणाः—शाके स्यान्मधुरा लघ्वी स्निग्धा दीप्तिकरी मता वातपित्तहरी
प्रोक्ता ऋषिभिः सत्यवादिभिः ॥ फलमपि यकृदोषहरम् । २ दे० भा० कुसुंभा ।
फा० गुलेमारकर तुख्मकाशा । इ० आफिसिनल् कार्थेमस् । Official
arthamus.कुसुंभपुष्पं सुस्वादु त्रिदोषघ्नं च भेदकम् । रूक्षमुष्णं पित्तलं
च केशरंजककारकम् ॥ कफनाशकरं चैव लघु प्रोक्तं मनीषिभिः । ३ दे० भा०
शेख । फा० लाक् । इ० शेललाक् ॥ Shell lac. ४ दे० भा० हलदी ।
फा० जरद चोव । इ० टर्मेरिक । Turmeric

कृमिघ्ना हलदी योषित्प्रियाहट्टविलासिनी ॥ १९८ ॥

हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा कफपित्तनुत् ।

वर्ण्या त्वग्दोषमेहास्त्रशोषपाण्डुव्रणापहा ॥ १९९ ॥

आम्रगन्धिहरिद्रा ।

दार्वीभेदा सुगंधा च दार्वी दारुकदारु च ।

कर्पूरा पद्मपत्रा स्यात्सुरभी सुरनायका ॥ २०० ॥

आम्रगंधिहरिद्रा या सा शीता वातला मता ।

पित्तहन्मधुरा तिक्ता सर्वकंडूविनाशिनी ॥ २०१ ॥

अरण्यहरिद्रा ।

अरण्यहलदीकंदः कुष्ठवातास्त्रनाशनः ।

दारुहरिद्रा ।

दार्वी दारुहरिद्रा च पर्जन्या पर्जनीति च ॥ २०२ ॥

कटकटेरी पीता च भवेत्सैव पचंपचा ।

सैव कालीयकः प्रोक्तस्तथा कालेयकोपि च ॥ २०३ ॥

पीतद्रुश्च हरिद्रुश्च पीतदारुश्च पीतकम् ।

दार्वी निशागुणा किन्तु नेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥ २०४ ॥

रसांजनम् ।

दार्वीक्वाथसमं क्षीरं पादं पक्त्वा यदा धनम् ।

तदा रसांजनं ख्यातं नेत्रयोः परमं हितम् ॥ २०५ ॥

१ दे० मा० चवां हलदी । अंविया हलदी । इ० मेंगोजिंजर ।
Mungojinger. २ दे० मा० वनहलदी । जंगली हलदी । ३ दे० मा०
दारुहलदी । फा० दारचोत्र । ४ दे० मा० रसौत । शोधनम्-तोयेत्युष्णे परि-
क्षिप्य द्रवीकुर्याद्रसांजनम् । वाससा स्नायित्वा च शोधनं मादुरश्मिना ॥ १ ॥
एवं विशोधितं तच्च सर्वकर्मसु योजयेत् । विशुद्धं नाशयेद् व्याधीन् नाविशुद्धं
कदाचन ॥ २ ॥ इंडियन बर्बरी Extract of Indian Berbery.

रसांजनं ताक्ष्यशैलं रसगर्भं च ताक्ष्यजम् ।
रसांजनं कटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ॥ २०६ ॥
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषहृत् ।

वाकुची ।

अवलगुजा वाकुची स्यात्सोमराजी सुपर्णिका ॥ २०७ ॥
शशिलेखा कृष्णफला सोमा पूतिफलीति च ।
सोमवल्ली कालमेषी कुष्ठघ्नी च प्रकीर्तिता ॥ २०८ ॥
वाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी ।
विष्टंभहृदिमा रुच्या सरा श्लेष्मास्त्रपित्तनुत् ॥ २०९ ॥
रूक्षा हृद्या श्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणुत् ।
तत्फलं पित्तलं कुष्ठकफानिलहरं कटु ॥ २१० ॥
केश्यं त्वच्यं वमिश्वासकासशोथामपांडुनुत् ।

चक्रमर्दः ।

चक्रमर्दः प्रपुत्राटो दद्रुघ्नो मेषलोचनः ॥ २११ ॥
पन्नाटः स्यादेडगजः चक्री पुत्राट इत्यपि ।
चक्रमर्दो लघुः स्वादुरूक्षः पित्तानिलापहः ॥ २१२ ॥
हृद्यो हिमः कफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन् हरेत् ।
हंत्युष्मं तत्फलं कुष्ठकंडुदद्रुविषानिलान् ॥ २१३ ॥
गुल्मकासकृमिश्वासनाशनं कटुकं स्मृतम् ।

अतिविषा ।

विषा त्वतिविषा विश्वा शृंगी प्रतिविषारुणा ॥ २१४ ॥
शुक्लकंदा चोपविषा भंगुरा घृणवल्लभा ।

१ दे० भा० बावची । श्वित्रारिवाकुचीभेदाः इ० एसक्यूलंटल्फाकुर्शा ॥
Esculent flacourtia. २ दे० भा० पवाड । फा० संजीस बोया । प०
भा० रालों । इ० ओवललीवूड केशिया ovalleaved cussia. ३ दे० भा०
अतीस । ब० भा० आतइच । अतिविषा त्रिधा ज्ञेया शुक्ला कृष्णा तथाऽरुणा ।
रसवीर्य्यविषाकेषु निर्विषेव गुणात्रिका ॥ १ ॥

विषा सोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत् ॥ २१५ ॥
कफपित्तातिसारामविषकासवमिकृमीन् ।

सावरलोधः । पटियालोधः ।

लोध्रस्तिष्ठस्तिरीटश्च सावरो गालवस्तथा ॥ २१६ ॥

द्वितीयः पट्टिकालोधः क्रमुकः स्थूलवल्कलः ।

जीर्णपत्रो बृहत्पक्षः पट्टीलाक्षा प्रसादनः ॥ २१७ ॥

लोध्रो ग्राही लघुः शीतः चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ।

कषायो रक्तपित्तासृग्ज्वरातीसारशोथहन् ॥ २१८ ॥

रसोनः ।

लशुनस्तु रसोनः स्यादुग्रगंधो महौषधम् ।

अरिष्टो म्लेच्छकंदश्च यवनेष्टो रसोनकः ॥ २१९ ॥

यदामृतं वैनतेयो जहार सुरसत्तमात् ।

तदा ततोऽपतद्विंदुः स रसोनोभवद्भुवि ॥ २२० ॥

पंचभिश्च रसैर्युक्तो रसेनाम्लेन वर्जितः ।

तस्माद्रसोन इत्युक्तो द्रव्याणां गुणवेदिभिः ॥ २२१ ॥

कटुकश्चापि मूलेषु तिक्तः पत्रेषु संस्थितः ॥

नाले कषाय उद्दिष्टो नालाग्रे लवणः स्मृतः ॥ २२२ ॥

बीजे तु मधुरः प्रोक्तो रसस्तद्गुणवेदिभिः ।

रसोनो बृंहणो वृण्यः स्निग्धोष्णः पाचनः सरः ॥ २२३ ॥

रसे पाके च कटुकस्तीक्ष्णो मधुरको मतः ।

बलवर्णकरो मेधाहितो नेत्र्यो रसायनः ॥ २२४ ॥

हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूलविबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ।

दुर्नामिकुष्ठानलसादजंतुसमीरणाश्वासकफांश्च हन्ति ॥ २२५ ॥

१ दे० भा० लोध्र, पठानीलोध । अरवी सुगाम । २ दे० भा० थोम ।

मद्यं मांसं तथा नलं च हितं लशुनसेविनाम् । व्यायाममातपं रोपमतिनीरं पयो-
गुडम् ॥ १ ॥ रसोनमश्नन् पुरुषस्य जेदेतन्निरंतरम् ।

पलांडुः ।

पलांडुर्यवनेष्टश्च दुर्गंधो मुखदूषकः ।

पलांडुस्तु गुणैर्ज्ञेयो रसोनसदृशो बुधैः ॥ २२६ ॥

स्वादुः पाके रसेनोष्णः कफकृत्रातिपित्तलः ।

हरते केवलं वातं बलवीर्यकरो गुरुः ॥ २२७ ॥

भल्लातकम् ।

भल्लातकं त्रिषु प्रोक्तमरुष्कोरुष्करोऽग्निकः ।

तथैवाग्निमुखी भल्ली वीरवृक्षश्च शोफकृत् ॥ २२८ ॥

भल्लातकफलं पक्वं स्वादु पाकरसं लघु ।

कषायं पाचनं स्निग्धं तीक्ष्णोष्णं छेदिभेदनम् ॥ २२९ ॥

मेध्यं वह्निकरं हन्ति कफवातव्रणोदरम् ।

कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोथानाहज्वरकृमीन् ॥ २३० ॥

तन्मज्जा मधुरा वृष्या बृंहणी वातपित्तहा ।

वृंतमारुष्करं स्वादुपित्तघ्नं केश्यमाग्निकृत् ॥ २३१ ॥

भल्लातकः कषायोष्णः शुक्रलो मधुरो लघुः ।

वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान् ॥ २३२ ॥

हन्ति गुल्मज्वरश्चित्रवह्निमांघकृमिव्रणान् ।

+ गंधाकाररसैस्तुल्यो गुंजनस्तु पलांडुना । सूक्ष्मनालाग्रपत्रत्वाद्विद्यतेसौ पलांडुतः ॥ १ ॥ सच स्वेदनमोजने च प्रयुक्तः कफवातजान्यर्शांसि हन्ति पित्तवतां नराणामपथ्यः ॥ १ दे० भा० भिलावे । नदीभल्लातकः वृषांकः । अस्य वृंतगुणाः—भल्लातकवृंतं मधुरं ॥ फा० विलादुर । कषायं वातकोपनम् ॥ इं मार्किगुन्द ॥ Markingnut ॥ भल्लातकशुद्धिः । भल्लातकानां पवनोद्धतानां वृंताच्युतानां च यदाढकं स्यात् । तच्चेष्टका चूर्णकणैर्विघृष्य प्रक्षालयित्वा त्रिसृजेत्प्रवाते ॥ १ ॥ शुष्कं पुनस्तद्विदलीकृतं च ततः पचेदप्सु चतुर्गुणामु । तत्पादशेषं परिपूतशीतं क्षीरेण तुल्येन पुनः पचेत्तु ॥ २ ॥

भंगा ।

भंगा गंजा मातुलानी मादनी विजया जया ॥ २३३ ॥

भंगा कफहरी तित्ता ग्राहणी पाचनी लघुः ।

तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमदवाग्बह्विबर्द्धनी ॥ २३४ ॥

खसतिलः ।

तिलभेदः खसतिलः खाखसश्चापि संस्मृतः ।

स्यात्खाखसफलोद्भूतं बल्कलं शीतलं लघु ॥ २३५ ॥

ग्राहि तित्कं कषायं च वातकृत्कफकासहृत् ।

धातूनां शोषकं रुक्षं मदकृद्वाग्विवर्द्धनम् ॥ २३६ ॥

सुहुर्मोहकरं रुच्यं सेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ।

अहिफेनकम् ।

उक्तं खसफलं क्षीरमाफूकमाहिफेनकम् ॥ २३७ ॥

आफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम् ।

तथा खसफलोद्भूतबल्कलप्रायमित्यपि ॥ २३८ ॥

१ दे० भा० भांग-सा. चतुर्धा सितारक्तपीतनीलप्रसूनकैः । शंक्राशनं तु विजया त्रैलोक्यविजया जयेति १ तंत्रांतरे । फा० किनाविष, वरकुलख्याल, शवनवंग । इ० इंडियनहेम्प । Indian Hemp. । २ दे० भा० पोस्त । फा० कोकनार इ० पोपिकाप्स्युलस Pop. py capsules. ३ दे० भा० अफीम । फा० तिर्याकअफ्यून । इ० ओपियम् opium अहिफेनशुद्धिः । योगतरंगिण्याम्-अहिफेनं शृङ्गवेरसैर्भाव्यं त्रिसप्तधा । शुद्धवत्युक्तेषु योगेषु योजयेत् विधानतः ॥ १ ॥ अहिफेनश्चतुर्धा १ जारणे-श्वेतवर्णः २, मारणे कृष्णवर्णः ३, धारणे-पीतवर्णः ४, सारणे-चित्रवर्णः ५, विजयावीजचूर्णस्य भक्षणं विधिना प्रिये । सर्वोपकारकं तत्तु सर्वरोगापहारकम् ॥ १ ॥ परिपक्वानि बीजानि वृक्षादानीय यत्नतः । छायायां पातयेद्रक्षेद्रक्षयेत्कर्षमात्रकम् ॥ २ ॥ कपिलपयसा सार्द्धं मांसमात्रं वरानने । धातुवृद्धिर्भवेत्तस्य चांत्रवृद्धिर्धिनश्यति ॥ ३ ॥ मांसदाढ्यं वसादाढ्यं देहदाढ्यं भवेत् प्रिये । अग्निदीप्तिर्मनो-दीप्तिः कामदीप्तिस्तथैव च ॥ प्रज्ञादीर्तिर्दृष्टिदीप्तिर्दीप्तीनां पंचकं भवेत् ॥ ४ ॥

खसबीजानि ।

उच्यते खसबीजानि ते खाखसतिला अपि ।

खसबीजानि बल्यानि वृष्याणि सुगुरूणि च ॥ २३९ ॥

शमयन्ति कफं तानि जनयन्ति समीरणम् ।

सैन्धवम् ।

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं पाणिमथं च सिंधुजम् ॥ २४० ॥

सैन्धवं लवणं स्वादु दीपनं पाचनं लघु ।

स्निग्धं रुच्यं हिमं वृष्यं सूक्ष्मं नेत्र्यं विदोषहृत् ॥ २४१ ॥

गडाख्यम् ।

शाकंभरीयं कथितं गडाख्यं रोमकं तथा ।

गडाख्यं लघु वातघ्नमत्युष्णं भेदि पित्तलम् ॥ २४२ ॥

तीक्ष्णोष्णं चापि सूक्ष्मं चाभिष्यन्दि कटुपाकि च ।

सामुद्रम् ।

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ २४३ ॥

सामुद्रजं सागरजं लवणोदधिसंभवम् ।

सामुद्रं मधुरं पाके सत्तिकं मधुरं गुरु ॥ २४४ ॥

नात्युष्णं दीपनं भेदि सक्षारमविदाहि च ।

श्लेष्मलं वातनुत्तिकमरूक्षं नातिशीतलम् ॥ २४५ ॥

विडम् ।

विडं पाक्यं च कतकं तथा द्राविडमासुरम् ।

विडं सक्षारमूर्द्धाधः कफवातानुलोमनम् ॥ २४६ ॥

१ दे० मा० खसखास । फा० तुखमे कोकनार । इ० पोपीसीड्स
Poppy seeds. २ दे० मा० सैधानमक । फा० नमके संग । विलोरी
नमके सेंध इ० काराइड आफ् सोथिय । Chloride of Sodium ३ दे० मा०
सांक नमक । फा० मिलहे अवकीर । ४ दे० फा० समुद्र नमक । फा०
नमक । इ० साल्ट । salt । ५ दे० मा० मनिआरी नमक । काचलक्षण-
मन्यत्र दर्शनीयम् । रोमकं, द्रोणी अन्यत्र दर्शनीयम् ।

ऊर्द्धं कफमधो वातं संचारयेदित्यर्थः ।

दीपनं लघु तीक्ष्णोष्णं रुक्ष्यं रुच्यं व्यवायि च ॥ २४७ ॥
विवंधानाहविष्टंभोदर्दगौरवशूलनुत् ।

सौवर्चलम् ।

सौवर्चलं स्याद्रुचकमक्षपाकं च धातुमत ॥ २४८ ॥

रुचकं रोचनं भेदि दीपनं पाचनं परम् ।

सस्नेहं वातनुन्नातिपित्तलं विशदं लघु ॥ २४९ ॥

औद्भिदम् ।

औद्भिदं पांशु लवणं यज्जातं भूमितः स्वयम् ।

क्षारं गुरु कटु स्निग्धं शीतलं वातनाशनम् ॥ २५० ॥

चणकाम्लकम् ।

चणकाम्लकमत्युष्णं दीपनं दंतहर्षणम् ।

लवणाम्लरसं रुच्यं शूलार्जीर्णविवंधनुत् ॥ २५१ ॥

यवक्षारौ स्वर्जिका सुवर्चिकाश्च ।

पाकयः क्षारो यवक्षारो यावशुको यवाग्रजः ।

स्वर्जिकापि स्मृतः क्षारः कापोतः सुखवर्चका ॥ २५२ ॥

१ दे० भा० सौचल नमक । कालानमक । फा० नमक सियाह, इ० अनाक्या सोडिअं क्लोराइड् । Unadua Sodium Chloride. भूमिमुद्भिद्यो-
त्पन्नस्य धारोदकस्य सूर्यरश्मिभिर्वा वह्निना क्वथनाद्यल्लुप्यं तदौद्भिदम् । पांशु
लवणं पृथक् । २ दे० भा० औपर नमक । रेहग । फा० बोरे अर्मनी । इ०
कार्बोनेट ऑफसोडा । Carbonate of Soda नवसादरः । नवसादरकस्तीक्ष्णः
सरोत्रणविदारणः । रसजारणकारी स्यादत्युष्णश्चैव गुल्मनुत् ॥ १ ॥ मलस्तंभं
चोदरं च प्लीहं शूलं च नाशयेत् । अस्य शुद्धिः । नवसारो भवेच्छुष्कश्चूर्णतोदे
दिपाचितः । दोलायत्रेण यन्त्रेण भिषगिर्योगसिद्धये ॥ २ ॥ ३ दे० भा० सजी ।
फा० संजार कलिया । इ० कार्बोनिट ऑफसोडा । Carponate of Soda.

कथितः स्वर्जिकाभेदो विशेषज्ञैः सुवर्चका ।

निहन्ति शूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥ २५३ ॥

पाण्डुवर्णोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान् ।

स्वर्जिकाल्पगुणा तस्माद्विशेषाद्गुल्मशूलहृत् ॥ २५४ ॥

सुवर्चका स्वर्जिकावद्वोद्धव्या गुणतो जनैः ।

सौभाग्यम् ।

सौभाग्यं टंकणं क्षारं धातुद्रावकमुच्यते ॥ २५५ ॥

टंकणं वह्निक्लृद्रूक्षं कफहृद्रातपित्तकृत् ।

क्षारद्वयं क्षारत्रयं च ।

स्वर्जिका यावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम् ॥ २५६ ॥

टंकणेन युतं तच्च क्षारत्रयमुदीरितम् ।

मिलितस्तूक्तगुणवद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥ २५७ ॥

क्षाराष्टकम् ।

पलाशवज्जिशिखरिचिचार्कतिलनालजः ।

यवजः स्वर्जिका चेति क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥ २५८ ॥

क्षारा एतेऽग्निना तुल्या गुल्मशूलहरा भृशम् ।

चुक्रम् ।

चुक्रं सहस्रवेधि स्याद्रसाम्लं शुक्तमित्यपि ॥ २५९ ॥

चुक्रमत्यम्लमुष्णं च दीपनं पाचनं परम् ।

शूलगुल्मविबन्धामवातश्लेष्महरं परम् ॥ २६० ॥

वमितृष्णास्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमाच्यहृत् ।

इति हरीतक्यादिवर्गः ।

१ दे० मा० सुहागा । फा० लीगार । इ० बोराक्स वाबोरेट् ऑफ सोडा ।

Borax Baborate of Soda. २ दे० मा० चुक्र । आदौ टंकणमादाय कांजिकाम्ले विनिक्षिपेत् । एकरात्रात्समुद्धृत्य रौद्रयन्त्रे विभावयेत् ॥ १ ॥ नर-
मूत्रगतं टंकं गवां मूत्रगतं तथा । दिनांते तत्समुद्धृत्य जम्बीराम्लगतं कुरु ॥ २ ॥

कर्पूरादिवर्गः ।

कर्पूरः ।

पुंसि क्लीबे च कर्पूरो हिमाहो हिमबालकः ।
 धनसारश्चन्द्रसंज्ञो हिमनामापि स स्मृतः ॥ १ ॥
 कर्पूरः शीतलो वृण्यः चक्षुष्यो लेखनो लघुः ।
 सुरभिर्मधुरस्तिक्तः कफपित्तविषापहः ॥ २ ॥
 दाहतृष्णास्यवैरस्यभेदोदोर्गन्ध्यनाशनः ।
 कर्पूरो द्विविधः प्रोक्तः पक्वापक्वभेदतः ॥ ३ ॥
 पक्वात्कर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्परम् ।

चीनसंज्ञा ।

चीनसंज्ञस्तु कर्पूरः कफक्षयकरः स्मृतः ॥ ४ ॥
 कुष्ठकंडूवमिहरस्तथा तिक्तरसश्च सः ।

कस्तूरी ।

मृगनाभिर्मृगमदः कथितस्तु सहस्रभित ॥ ५ ॥
 कस्तूरिका च कस्तूरी वैधमुख्या च सा स्मृता ।

—जम्बीरास्लात्समुद्भूत्य नारिकेलस्य पात्रके । मरीचं चूर्णसंयुक्तं क्षालयेच्छीत-
 लाम्बुना ॥ ३ ॥ एवं टंकणमादाय सर्वयोगेष्टु योजयेत् । टंकणं वह्नियोगेन
 स्फुटितं शुद्धतां व्रजेत् ॥ ४ ॥ (श्वेतटंकणगुणाः) सुश्वेतं टंकणं स्निग्धं कटूष्णं
 कफघातनुत् । आमक्षयापहच्छ्वासविषकासमलापहम् ॥ १ ॥

१ कपूर भीमसेनी । मिसरी बीकानेरी १ तो० इलायची छोटी १ तो०
 कापूर १ तो० खरल करना १ पहिर । शिरोमध्यं तलं चेति कर्पूरत्रिविधः
 स्मृतः । फा० काफूर । इ० केम्फर । Camphor. २ चीनिया कपूर आ-
 रती । ३ कस्तूरी, फा० मुष्क इ० मस्क Musk. (दुष्टपरीक्षा)—करतलजलमध्ये
 स्थापनीया महद्भिः पुनरपि तदवस्थां चिन्तनीयं मुहूर्तम् । यदि भवति च रक्तं
 तज्जलं पीतवर्णं न भवति मृगनाभिः कृत्रिमोऽयं विकारः ॥ १ ॥ कस्तूरीपंच
 मेदा अन्यत्र द्रष्टव्याः ।

कामरूपोद्भवा कृष्णा नैपाली नीलवर्णयुक् ॥ ६ ॥

काश्मीरे कपिलच्छाया कस्तूरी त्रिविधा स्मृता ।

कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा नैपाली मध्यमा भवेत् ॥ ७ ॥

काश्मीरदेशसंभूता कस्तूरी ह्यधमा स्मृता ।

कस्तूरिका कटुस्तिक्ता क्षारोष्णा शुक्रला गुरुः ॥ ८ ॥

कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्ध्यदोषहृत् ।

लता कस्तूरिका ।

लता कस्तूरिका तिक्ता स्वाद्वी वृष्या हिमा लघुः ॥ ९ ॥

चक्षुष्या छेदनी श्लेष्मटृष्णावस्त्यास्यरोगहृत् ।

गन्धमार्जारवीर्यम् ।

गन्धमार्जारवीर्यन्तु वीर्यकृत्कफवातहृत् ॥ १० ॥

कण्डुकुष्ठहरं नेत्र्यं सुगन्धं स्वेदगन्धनुत् ।

चन्दनम् ।

श्रीखण्डं चन्दनं न स्त्री भद्रश्रीस्तैलपर्णिका ॥ ११ ॥

गन्धसारो मलयजस्तथा चन्द्रद्युतिश्च सः ।

स्वादे तिक्तं कषे पीतं छेदे रक्तं तनौ सितम् ॥ १२ ॥

ग्रन्थिकोटरसंयुक्तं चन्दनं श्रेष्ठमुच्यते ।

चन्दनं शीतलं रुक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ॥ १३ ॥

श्रमशोषविषश्लेष्मटृष्णापित्तास्रदाहलुत् ।

हरिचन्दनम् ।

कलंबकं तु कालीयं पीताभं हरिचन्दनम् ॥ १४ ॥

१ परीक्षा—स्वादे तिक्ता पिजरा केतकीनां गन्धं धत्ते लाघवं तोलकेन । याप्सु न्यस्ता नैव वैवर्ण्यमीयात् कस्तूरी सा राजभोग्या प्रशस्ता ॥ १ ॥ सुसक-
दाना । २ गौरासार, वेद अंजीर । मुष्कविलाई । खट्वाशी धोडा करंज ।
३ सुपेद चन्दन—चन्दनं द्विविधमन्यत्र द्रष्टव्यम् । कैरातं शंवरं च । फा०
सुपेद सन्दल इ० सेंडलवुड Sandal wood. ४ पीतचन्दन ।

हरिप्रियं कालसारं तथा कालानुसार्यकम् ।
कालीयकं रक्तगुणं विशेषाद्द्व्यंगनाशनम् ॥ १५ ॥

रक्तचन्दनम् ।

रक्तचन्दनमाख्यातं रक्तांगं क्षुद्रचन्दनम् ।
तिलपर्णी रक्तसारं तत्प्रवालफलं स्मृतम् ॥ १६ ॥
रक्तं शीतं गुरु स्वादु च्छर्दितृष्णास्त्रपित्तहृत् ।
तिक्तं नेत्रहितं वृण्यं ज्वरव्रणविषापहम् ॥ १७ ॥
पतंगम् ।

पतंगं रक्तसारं च सुरंगं रंजनं तथा ।
पटरंजकमाख्यातं पत्तूरं च कुचन्दनम् ॥ १८ ॥
पतंगं मधुरं शीतं पित्तश्लेष्मव्रणास्त्रहृत् ।
हरिचन्दनवद्वेद्यं विशेषादाहनाशनम् ॥ १९ ॥
चन्दनानि तु सर्वाणि सदृशानि रसादिभिः ।
गन्धेन तु विशेषोऽस्ति पूर्वं श्रेष्ठतमं गुणैः ॥ २० ॥

अगुरुं । कृष्णागुरु । अगुरु सत्त्वं च ।

अगुरु प्रवरं लोहं राजार्हं योगजं तथा ।
वशिकं कृमिजं चापि कृमिजग्धमनार्यकम् ॥ २१ ॥
अगुरुष्णं कटुत्वच्यं तिक्तं तीक्ष्णं च पित्तलम् ।
लघुकर्णाक्षिरोगघ्नं शीतवातकफप्रणुत् ॥ २२ ॥
कृष्णं गुणाधिकं तच्च लोहवद्वारि मज्जाति ।
अगुरुप्रभवः स्नेहः कृष्णागुरुसमः स्मृतः ॥ २३ ॥

१ लालचन्दन फा० सन्दले सुरख इ० रेड सांडल वुड् Red Sental wood. २ वकम, फा० वकम् इ० सेपन वुड् Sappan wood, वर्वरोत्थं वर्वरकं श्वेतवर्वरकं तथा । शीतं सुगन्धि पित्तारिः सुरभिश्चेति सप्तधा ॥ १ ॥ वर्वरकं शीतलं तिक्तं कफमारुतपित्तजित् । कुष्ठकंदुव्रणान् हन्ति विशेषाद्रक्तदोषजित् ॥ २ ॥ ३ अगुरु । काला अगुर । अगुरसत । काष्ठागुरु । दाहागुरु । मंगलागुरु । मेदाः इ० इगलवुड् Eagle wood.

देवदारु ।

देवदारु स्मृतं दारु भद्रदाविद्रदारु च ।

मस्तदारु द्रुक्किलिमं किलिमं सुरभूरुहः ॥ २४ ॥

देवदारु लघु स्निग्धं तिक्तोष्णं कटुपाकि च ।

विबन्धाधमानशोथामतंद्राहिकाज्वरास्रजित् ॥ २५ ॥

प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकंदुसमीरनुत् ।

सरलः ।

सरलः पीतवृक्षः स्यात्तथा सुरभिदारुकः ॥ २६ ॥

सरलो मधुरस्तिक्तः कटुपाकरसो लघुः ।

स्निग्धोष्णः कर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरः स्मृतः ॥ २७ ॥

कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छात्रिणापहः ।

तगरम् ।

कालानुसार्यं तगरं कुटिलं नहुषं नतम् ॥ २८ ॥

अपरं पिण्डतगरं दण्डहस्तं च बर्हिणम् ।

तगरद्वयमुष्णं स्यात् स्वादु स्निग्धं लघु स्मृतम् ॥ २९ ॥

विषापस्मारशूलाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ।

पद्मकम् ।

पद्मकं पद्मगन्धि स्यात्तथा पद्माह्वयं स्मृतम् ॥ ३० ॥

पद्मकं तुवरं तिक्तं शीतलं वातलं लघु ।

विसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तनुत् ॥ ३१ ॥

गर्भसंस्थापनं वृष्यं वमित्रणतृषापणुत् ।

१ दि. आर. फा० देवदारु । इं० पाइन सडीपोदर । स्निग्धदारु काष्ठदारु ।
चीडा । दड्डेदाः । २. धूप वृक्ष । इं० लौग लिंबु पाईन ३ तगर वं० तगर
पाटुका अर० अशारुन । ४ पद्मकाष्ठ ।

गुग्गुलः ।

गुग्गुलुर्देवधूपश्च जटायुः कौशिकः पुरः ॥ ३२ ॥

कुम्भोल्लखलकं क्लीबे महिषाक्षः पलंकषः ।

महिषाक्षो महानीलः कुमुदः पद्म इत्यपि ॥ ३३ ॥

हिरण्यः पञ्चमो ज्ञेयो गुग्गुलोः पञ्चजातयः ।

मृगांजनसवर्णस्तु महिषाक्ष इति स्मृतः ॥ ३४ ॥

महानीलस्तु विज्ञेयः स्वनामसमलक्षणः ।

कुमुदः कुमुदाभः स्यात् पद्मो माणिक्यसन्निभः ॥ ३५ ॥

हिरण्याख्यस्तु हेमाभः पञ्चानां लिङ्गमीरितम् ।

महिषाक्षो महानीलो गजेंद्राणां हिताबुधौ ॥ ३६ ॥

हयानां कुमुदः पद्मः स्वस्त्यारोग्यकरौ परौ ।

विशेषेण मनुष्याणां कनकः परिकीर्तितः ॥ ३७ ॥

कदाचिन्महिषाक्षश्च मतः कैश्चिन्नृणामपि ।

गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तो वीर्य्योष्णः पित्तलः सरः ॥ ३८ ॥

कषायः कटुकः पाके कटुरूक्षो लघुः परः ।

भग्नसन्धानकृद्वृण्यः सूक्ष्मस्तप्यो रसायनः ॥ ३९ ॥

दीपनः पिच्छिलो बल्यः कफवातव्रणापचीः ।

मेदोमेहाश्मवातांश्च क्लेदकुष्ठाममारुतान् ॥ ४० ॥

पिण्डकाग्रंथिशोफाशौ गण्डमालाकृमीञ्जयेत् ।

माधुर्य्याच्छमयेद्वातं कषायत्वाच्च पित्तहा ॥ ४१ ॥

तिक्तत्वात्कफजित्तेन गुग्गुलः सर्वदोषहा ।

स नवो बृंहणो वृण्यः पुराणस्त्वतिलेस्वनः ॥ ४२ ॥

१ गुग्गुल, गन्धराज गुग्गुल, भूमिजगुग्गुल । फा० वीराजहृदान इ० इण्डियन् डेलियम् । शुद्धिः—दुग्धेन त्रिफलाक्वाथे दोलायंत्रे विपाचितः । वाससा गालितो ग्राह्यः सर्वकर्मसु गुग्गुलः ॥ १ ॥

स्निग्धः कांचनसंकाशः पक्वजंबूफलोपमः ।

नूतनो गुग्गुलुः प्रोक्तः सुगंधिर्यस्तु पिच्छिलः ॥ ४३ ॥

शुष्को दुर्गंधकश्चैव त्यक्तप्रकृतिवर्णकः ।

पुराणः स तु विज्ञेयो गुग्गुलुर्वीर्यवर्जितः ॥ ४४ ॥

अम्लं तीक्ष्णमजीर्णं च व्यवायं भ्रममातपम् ।

मद्यं रोषं त्यजेत्सम्यक् गुणार्थी पुरसेवकः ॥ ४५ ॥

श्रीवासः ।

श्रीवासः सरलस्नावः श्रीवेष्टो यक्षधूपकः ।

श्रीवासो मधुरस्तिक्तः स्निग्धोष्णस्तुवरः सरः ॥ ४६ ॥

पित्तलो वातमूर्धाक्षिस्वररोगक्षयापहः ।

रक्षोघ्नः स्वेददौर्गन्ध्यकाकंडूव्रणप्रणुत ॥ ४७ ॥

रालः ।

रालस्तु शालनिर्यासः तथा सर्जरसः स्मृतः ।

देवधूपो यक्षधूपस्तथा सर्वरसश्च सः ॥ ४८ ॥

रालो हिमो गुरुस्तिक्तः कषायो ग्राहको हरेत् ।

दोषास्त्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः ॥ ४९ ॥

ग्रहभग्रास्थिदग्धामशूलातीसारनाशनः ।

—अस्योत्पत्तिः—जायंते पुरपादपा मरुभुवि ग्रीष्मेकसंतापिताः शीततौ

शिशिरेपि गुग्गुलुरसं मुंचति ते पंचधा । हेमामं महिषाक्षितुल्यमपरं सत्पद्मरागो-
पमं भृंगाभं कुमुदद्युतिं च विधिना ग्राह्या परीक्षा ततः ॥ १ ॥—परीक्षाः ॥

वह्नौ ज्वलंति तपने विलयं प्रयांति क्लियंति कोष्णसलिले पयसः समानाः ।

ग्राह्याः शुभाः परिहरेच्चिरकालजातान्सक्षारवर्णसमपूयविगन्धवर्णान् ॥ २ ॥

१ गन्धविरोजा फा० संदरुस-काईरुवा वं० नवनीतखोटी इं० गमओपल

सण्डरेक । (सतविरोजा) Gomeopal Sandaryack श्रीवाससारः कफनु-

न्मूत्रलो ज्वरसंहरः । शोफविम्लापनो लेपात्कृमिहृद्देदनापहः ॥ १ ॥ २ राल फा०

रालमगरेवी इं० नारुसम् Vellow Risin तैलं-तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रण-

नाशनम् । कुष्ठपामाकृमिहरं घातश्लेष्मामयापहम् ॥ १ ॥

कुन्दैरुः ।

कुन्दैरुस्तु मुकुन्दः स्यात् सुगन्धः कुन्द इत्यपि ॥ ५० ॥

कुन्दरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यः कटुर्हरेत् ।

ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफानलान् ॥ ५१ ॥

सिंहकः ।

सिंहकस्तु तुरुष्कः स्याद्यतो यवनदेशजः ।

कपितैलं स चाख्यातं तथा च कपिनामकः ॥ ५२ ॥

सिंहकः कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः शुक्रकांतिकृत् ।

वृष्यः कण्ठघ्नः स्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः ॥ ५३ ॥

जातीफलम् ।

जातीफलं जातिकोषं मालतीफलमित्यपि ।

जातीफलं रसे तिक्तं तिक्तोष्णं रोचनं लघु ॥ ५४ ॥

कटुकं दीपनं ग्राहि स्वयं श्लेष्मानिलापहम् ।

निहन्ति मुखवैरस्यं मद्यदोर्गध्यकृष्णताः ॥ ५५ ॥

कृमिकासे वमिश्वासशोषपीनसहद्रुजः ।

जातिपत्री ।

जातीफलस्य त्वक् प्रोक्ता जातिपत्री भिषग्वरैः ॥ ५६ ॥

जातिपत्री लघुः स्वादुः कटूष्णा रुचिवर्णकृत् ।

कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा ॥ ५७ ॥

- १ गुन्दवरोसा । फा० रूमीखोटी मस्तकी । इ० ओलिबेनम् Olibanum.
 २ मीआसाइला फा० सिलारस इ० लिक्विडएम्बर Lipuid amber. ३ जाय-
 फल--जातीफलं सशब्दं च स्निग्धं गुरु च शस्यते । तैलं जातिफलोद्भूतं समु-
 त्तेजनमग्निदम् ॥ १ ॥ जीर्णातिसारशमनमाध्मानाक्षेपशूलहृत् । आमवातहरं वलयं
 दंतवेष्टनार्तिनुत् ॥ २ ॥ फा० जोमोबुवा इ० नट्मेग Nutmeg. ४ जावित्री ।
 फा० वजवार इ० मेस Mace.

लवंगम् ।

लवंगं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं श्रीप्रसूनकम् ।

लवंगं कटुकं तिक्तं लघु नेत्रहितं हिमम् ॥ ५८ ॥

दीपनं पाचनं रुच्यं कफपित्तास्रनाशनम् ।

तृष्णां छर्दिं तथाध्मानं शूलमाशु विनाशयेत् ॥ ५९ ॥

कासं श्वासं च हिक्कां च क्षयं क्षययति ध्रुवम् ।

बहुला ।

एला स्थूला च बहुला पृथ्वीका त्रिपुटापि च ॥ ६० ॥

भद्रैला बृहदेला च चन्द्रबाला च निष्कृटिः ।

स्थूला च कटुका पाके रसे चानिलकृच्छ्रः ॥ ६१ ॥

रुक्षोष्णा श्लेष्मपित्तास्रकण्डुश्वासतृषापहा ।

हृत्तासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्गमिकासनुत् ॥ ६२ ॥

उपकुंचिका ।

सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरंगी द्राविडी त्रुटिः ।

एला सूक्ष्मा कफश्वासकासाशौभूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ ६३ ॥

रसे तु कटुका शीता लघ्वी वातहरी मता ।

त्वक् ।

त्वक्पत्रं च वरांगं स्याद् भृगं चोचं तथोत्कटम् ॥ ६४ ॥

त्वचं लघूष्णं कटुकं स्वादु तिक्तं च रुक्षकम् ।

पित्तलं कफवातघ्नं कण्डूभारुचिनाशनम् ॥ ६५ ॥

हृद्गस्तिरोगवातार्शःकृमिपीनसशुक्रहृत् ।

१ लौंग फा० मेहक् । इ० क्लोव Cloves. २ इलायची बड़ी फा० हैल-
कलं । इ० लार्ज कार्डामोम् । Large Cardamum. देवपुष्पोद्भवं तैलमसि-
कृद्वातनाशनम् । दन्तवेष्टकफार्तिघ्नं गर्भिण्या वमनापहम् ॥ १ ॥ ३ इलायची
छोटी फा० हैल० हिल इ० शिलिसर कार्डामोम Sheleser Cardamum.
४ तज्ज इ० सिन्नामन्वार्क Cinnamon Bark.

दारुसिता ।

त्वक्स्वाद्गी तनुत्वक् सा स्यात्तथा दारुसिता मता ॥६६॥

उक्ता दारुसिता स्वाद्गी तित्ता चानिलपित्तहृत् ।

सुरभिः शुक्रला वर्ण्या मुखशोषतृषापहा ॥ ६७ ॥

तमालपत्रम् ।

पत्रं तमालपत्रं च तथा स्यात्पत्रनामकम् ।

पत्रकं मधुरं किञ्चित्तीक्ष्णोष्णं पिच्छिलं लघु ॥ ६८ ॥

निहन्ति कफवाताशौहल्लासारुचिपीनसान् ।

नागपुष्पः ।

नागपुष्पः स्मृतो नागः केसरो नागकेसरः ॥ ६९ ॥

चापेयो नागकिञ्जल्कः कथितः काञ्चनाह्वयः ।

नागपुष्पं कषायोष्णं रूक्षं लघ्वामपाचनम् ॥ ७० ॥

खुडकंडू तृषास्वेदच्छर्दिहल्लासनाशनम् ।

दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ ७१ ॥

त्रिजातं चतुर्जातम् ।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैः त्रिसुगन्धि त्रिजातकम् ।

नागकेसरसंयुक्तं चतुर्जातकमुच्यते ॥ ७२ ॥

तद्द्रव्यं रोचनं रूक्षं तीक्ष्णोष्णं मुखगन्धहृत् ।

लघुपित्ताग्निक्वृद्घर्ण्यं कफवातविषापहम् ॥ ७३ ॥

कुंकुमम् ।

कुंकुमं द्युसृणं रक्तं काश्मीरं पीतकंवरम् ।

संकोचं पिशुनं धीरं बाह्मिकं शोणिताभिधम् ॥ ७४ ॥

१ देश० दालचीनी फा० दार्चीनी । २ तेजपात फा० सादरम्ह इ० फोलियामालावार्थी Folia Malabathy. तेल । वह्निमांद्यानिलहराध्मानाक्षेप-
विनाशनम् । वांत्युत्क्लेशप्रशमनं संग्राहि दशनार्तिहृत् ॥ १ ॥ त्वाचं तैलं रजः-
स्रावि तोये क्षिप्तं निमज्जति । ३ नागकेसर वं० नागेश्वर अर० नागरमुष्क
केसर फा० लरकीमास इ० सैफन् Saffron. ४ तृणाकुंकुम । ईरानी कुंकुम ।

काश्मीरदेशजे क्षेत्रे कुंकुमं यद्भवेद्वितम् ।
सूक्ष्मकेसरमारक्तं पद्मगन्धि तदुत्तमम् ॥ ७५ ॥
बाह्यीकदेशसंजातं कुंकुमं पांडुरं मतम् ।
केतकीगन्धयुक्तं तन्मध्यमं सूक्ष्मकेसरम् ॥ ७६ ॥
कुंकुमं पारसीकं यन्मधुगन्धि तदीरितम् ।
ईषत्पांडुरवर्णं तत् ह्यधमं स्थूलकेसरम् ॥ ७७ ॥
कुंकुमं कटुकं स्निग्धं शिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
तिक्तं वमिहरं वर्णं व्यंगदोषत्रयापहम् ॥ ७८ ॥
गोरोचना ।

गोरोचना तु मांगल्या बन्धा गौरी च रोचना ।
गोरोचना हिमा तित्ता वश्या मंगलकांतिदा ॥ ७९ ॥
विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्त्रावक्षताञ्जित् ।
नखम् ।

नखं व्याघ्रनखं व्याघ्रायुधं तच्चक्रकारकम् ॥ ८० ॥
नखं स्वल्पं नखी प्रोक्ता हनुर्हृद्विलासिनी ।
नखद्वयं ग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठनुत् ॥ ८१ ॥
लघूष्णं शुक्लं वर्णं स्वादुव्रणविषापहम् ।
अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोः कटु ॥ ८२ ॥
हीवरम् ।

बालं ह्रीविरबहिष्ठोदीच्यं केशांबुनाम च ।

१ गोलोचन फा० गायरोहन इ० गोलस्टोन बिजोर Gollstone Bijoor,

२ नख । नख । नखी । फा० नाखुन पर्याग्राहकसर इ० शेल Shall

नखशुद्धिः—(चण्डी) खण्डागोमयतोयेन यदि वा तितिणीजलैः । नखं
संकाथयेदेभिः मांडे तु मृण्मये तथा ॥ १ ॥ पुनरुद्धृत्य प्रक्षाल्य भर्जयित्वा
निषेचयेत् । गुडपथ्यांबुना ह्येवं शुद्ध्यति नात्र संशयः ॥ २ ॥ पंचपल्लवतोयेन
गन्धानां क्षालनं तथा ॥ ३ सुरनाली । खात्र सुगंधवाला फा० असारं मुष्क-
वाला, नेत्रवाला । अस्य प्रतिनिधिः कसेरु जटा इ० म्यूरिकेट्स Muricatus

बालकं शीतलं रूक्षं लघुदीपनपाचनम् ॥ ८३ ॥

हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगमातिसारजित् ।

वीरणम् ।

स्याद्वीरणं वीरतरं वीरं च बहुमूलकम् ॥ ८४ ॥

वीरणं पाचनं शीतं स्तंभनं लघु तिक्तकम् ।

मधुरं ज्वरनुद्वांतिमदजित्कफपित्तहृत् ॥ ८५ ॥

तृण्णास्रविषवीसर्पकृच्छ्रदाहव्रणापहम् ।

उशीरम् ।

वीरणस्य तु मूलं स्यादुशीरं नलदं च तत् ॥ ८६ ॥

अमृणालं च सेव्यं च समगन्धकमित्यपि ।

उशीरं पाचनं शात स्तंभनं लघु तिक्तकम् ॥ ८७ ॥

मधुरं ज्वरहृद्वांतिमदलुत्कफपित्तहृत् ।

तृण्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् ॥ ८८ ॥

जटामांसी ।

जटामांसी भूतजटा जटिला च तपस्विनी ।

मांसी तिक्ता कषाया च मेध्या कांतिबलप्रदा ॥ ८९ ॥

स्वाद्वी हिमा त्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठलुत् ।

शिलापुष्पम् ।

शैलेयं तु शिलापुष्पं वृद्धं कालालुसार्यकम् ॥ ९० ॥

शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ।

कण्डुकुष्ठाश्मरीदाहविषहृल्लासरक्तजित् ॥ ९१ ॥

१ वेरन् पन्ही । २ खसस व० व्याणार मूल अस्य प्रतिनिधिः कालावाडा ।
३ बालछड, बिल्लीलोटन । फा० सुबूल । गंधमांसी अभ्रमासी इ० स्पिकनार्ड
Spikenard ४ छैल चळारा, पत्थरफूल फा० दहाल ।

मुस्तकं (नागरमुस्तकम्) ।

मुस्तकं न स्त्रिया मुस्तं त्रिषु वारिदनामकम् ॥

कुरुविन्दो परो भद्रमुस्तो नागरमुस्तकः ॥ ९२ ॥

मुस्तं हिमं कटु ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम् ।

कषायकफपित्तास्रतृट्ज्वरारुचिजंतुजित् ॥ ९३ ॥

अनूपदेशे यज्जातं मुस्तकं तत् प्रशस्यते ।

तत्रापि मुनिभिः प्रोक्तं वरं नागरमुस्तकम् ॥ ९४ ॥

कैचूरः ।

कैचूरो वैधमुख्यश्च द्राविडः काल्पिकः शटी ।

कैचूरो दीपनो रुच्यः कटुकस्तिक्त एव च ॥ ९५ ॥

सुगन्धिः कटुपाकः स्यात्कुष्ठाशौव्रणकासनुत् ।

उष्णो लघुर्हरैच्छ्वासगुल्मवातकफक्रिमीन् ॥ ९६ ॥

मुरा

मुरा गन्धकुटी दैत्या सुरभिस्तालपर्णिका ।

मुरा तिक्ता हिमा स्वाद्वी लघ्वी पित्तानिलापहा ॥ ९७ ॥

ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नी कुष्ठकासविनाशिनी ।

पलाशी ।

शटी पलाशी षट्प्रन्था सुव्रता गन्धमूलका ॥ ९८ ॥

१ मोथा । नागरमोथा । फा० शादकफी । भद्रमुस्तक । कैवर्त्तीमु-

स्तक । वामुस्तक । डोलेंकी जड । तन्त्रान्तरे--जटामांसी जटी पेवी लोमशा

जटिला मिसिः । मांसी तपस्विनी हिंसा मिषिका चक्रवर्त्तिनी ॥ १ ॥ अनुलेपनं

ज्वरहृत् रुक्षतां चैव नाशयेत् । मुस्तकशुद्धिः--मुस्तकं तु मनाक् क्षुण्णकांजिके

त्रिदिनोषितम् । पंचपल्लवतोयेन स्विन्नमातपशोषितम् ॥ १ ॥ गुण्डांबुना

सिच्यमानं भर्जयेच्चूर्णयेत्ततः ॥ आजशोभांजनजलैर्भावयेच्चेति शुद्ध्यति ॥ २ ॥

२ नरकचूर । फा० जरंबाद, इ० लौगशैडआरी ३ कचूरभेदः एकाङ्गी ।

४ कपूर कचूरी वं० आदा, गन्धशटी ।

गन्धारिका गन्धवपुर्वधूः पृथुपलाशिका ।

भवेद् गन्धपलाशी तु कषाया ग्राहणी लघुः ॥ ९९ ॥

तिक्ता तीक्ष्णा च कटुका उष्णास्यमलनाशिनी ।

शोथकासत्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा ॥ १०० ॥

प्रियंगुः ।

प्रियंगुः फालनी कांता लता च महिलाह्वया ।

गुन्द्रा गन्धफली श्यामा विष्वक्सेनांगनाप्रिया ॥ १ ॥

प्रियंगुः शीतला तिक्ता तुवरानिलपित्तहृत् ।

रक्तातीसारदौर्गन्ध्यस्वेददाहज्वरापहा ॥ २ ॥

गुल्मवृद्धविषमेहघ्नी तद्वद्गन्धप्रियंगुका ।

तत्फलं मधुरं रूक्षं कषायं शीतलं गुरु ॥ ३ ॥

विवन्धाध्मानबलकृत् संग्राहि कफपित्तजित् ।

रेणुका ।

रेणुका राजपुत्री च नन्दनी कपिला द्विजा ॥ ४ ॥

भस्मगन्धा पाण्डुपुत्री स्मृता कौंती हरेणुका ।

रेणुका कटुका पाके तिक्तालुष्णा कटुर्लघुः ॥ ५ ॥

पित्तला दीपनी मेध्या पाचनी गर्भपातिनी ।

बलासवातकृच्चैव तृक्कण्डुविषदाहलुत् ॥ ६ ॥

अन्थिपर्णम् ।

अन्थिपर्णं अन्थिकं च काकपुच्छं च गुत्थकम् ।

नीलपुष्पं सुगन्धञ्च कथितं तैलपर्णिकम् ॥ ७ ॥

अन्थिपर्णं तिक्ततीक्ष्णं कटुष्णं दीपनं लघु ।

कफवातविषश्वासकण्डुदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥ ८ ॥

१ फुल फिरंग, गुलफिरंग, वं० गन्धप्रियंगु हरिद्वारे, गुन्दनी इसके अभाव में मैहदी । २ वं० रेणुक इसके अभाव में संमालु बीज । ३ चौर नाम गन्धद्रव्य गठीवन, गण्डीवल, टेकन ।

स्थौणेयकम् ।

स्थौणेयकं बर्हिबर्हं शुकबर्हं च कुक्कुरम् ।
शीर्णं रोमं शुकं चापि शुकपुष्पं शुकच्छदम् ॥ ९ ॥
स्थौणेयकं कटुं स्वादु तित्तं स्निग्धं त्रिदोषनुत् ।
मेधाशुक्रकरं रुच्यं रक्षोऽश्रीज्वरजंतुजित् ॥ १० ॥
हन्ति कुष्ठस्रवृद्धाहदौर्गन्ध्यतिलकालकान् ।

निशाचरः ।

निशाचरो धनहरः कितवो गणहासकः ॥ ११ ॥
रोचकः शंकितश्चण्डो दुष्पत्रः क्षेमको रिपुः ।
रोचको मधुरस्तित्तो कटुः पाके कटुर्लघुः ॥ १२ ॥
तीक्ष्णो हृद्यो हिमो हन्ति कुष्ठकंडूकफानिलान् ।
रक्षोऽश्रीस्वेदमेदोस्त्रज्वरगन्धविषव्रणान् ॥ १३ ॥

तालीसपत्रम् ।

तालीसमुक्तं पत्राढ्यं धात्रीपत्रं च तत्स्मृतम् ।
तालीसं लघु तीक्ष्णोष्णं श्वासकासकफानिलान् ॥ १४ ॥
निहन्त्यरुचिगुल्मामवह्निमाद्यक्षयामयान् ।

कक्कोलम् ।

कक्कोलं कोलकं प्रोक्तं तथा कोशफलं स्मृतम् ॥ १५ ॥
कक्कोलं लघु तीक्ष्णोष्णं तित्तं हृद्यं रुचिप्रदम् ।
आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयाध्यहत् ॥ १६ ॥

गन्धकोकिला गन्धमालती ।

स्निग्धोष्णा कफहत्तिता सुगन्धा गन्धकोकिला ।
गन्धकोकिलया तुल्या विज्ञेया गन्धमालती ॥ १७ ॥

१ ग्रन्थिपर्ण मेदं धुनेर । २ ग्रन्थिपर्ण मेदं भटीटर । भटीरा । ३ ताली-
सपत्र । भूम्यामलकी । फा० जरनवा । ४ कक्कोल मिरच वं० कांकला । फल-
कपूर । गदूला इ० क्यूबेब पेपर Cubeb Pepper

भावप्रकाशनिघण्टुः-

लामज्जकम् ।

लामज्जकं सुनालं स्यादमृणालं लयं लघु ।
 इष्टकावथकं सेव्यं नलदं चावदातकम् ॥ १८ ॥
 लामज्जकं हिमं तिक्तं लघु दोषत्रयास्रजित् ।
 त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ॥ १९ ॥

एलावालकम् ।

एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।
 ऐलवालुकमैलालुकपित्थफलमीरितम् ॥ २० ॥
 एलवालुं कटुकं पाके कषायं शीतलं लघु ।
 हांति कंडुव्रणच्छर्दिदृक्कासारुचिहृद्भुजः ॥ २१ ॥
 बलासविषपित्तास्रकुष्ठभूत्रगदक्रिमीन् ।

कुटन्नटम् ।

कुटन्नटं दासपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥ २२ ॥
 लवगोपुरगोनर्दं कैवर्ती मुस्तकानि च ।
 मुस्त्रावत्पेलवपुटं शुकाह्वं स्याद्वितुन्नकम् ॥ २३ ॥
 वितुन्नकं हिमं तिक्तं कषायं कटुकांतिदम् ।
 कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकंडूविषप्रणुत् ॥ २४ ॥

स्पृक्का ।

स्पृक्कास्रक् ब्राह्मणी देवी भरुन्माला लता लघुः ।
 ससुद्रांता बधूकोटिवर्षालं कौपकैत्यपि ॥ २५ ॥
 स्पृक्का स्वाद्री हिमा वृष्या तिक्ता निखिलदोषनुत् ।
 कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहाढ्यज्वररक्तहत ॥ २६ ॥

१ उशीरवत् पीतच्छवितृणविशेषः वं० गन्धवेण । २ लालुका । पक्व
 कपित्थफल वं० राल बाहुका । ३ केवटी मोथा । गुडतज्जी । इयंतितन्नकवृक्षस्य
 त्वक् मस्ताकृतिः । ४ असवरग, आसारक । वं० पिडिशाक ।

पर्पटी ।

पर्पटी रंजनी कृष्णा जतुका जमनी जनिः ।

जतुकृष्णाग्निसंस्पर्शा जतुकृच्चक्रवर्त्तनी ॥ २७ ॥

पर्पटी तुवरा तिक्ता शिशिरा वर्णकृल्लघुः ।

विषव्रणहरी कण्डुकफपित्तास्रकुष्ठतुत् ॥ २८ ॥

नलिका ।

नलिका विद्रुमलता कपोतचरणा नटी ।

धमन्यंजनकेशी च निर्मथ्या सुषिरा नली ॥ २९ ॥

नलिका शीतला लघ्वी चक्षुष्या कफपित्तहृत् ।

कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डुज्वरापहा ॥ ३० ॥

प्रपौण्डरीकम् ।

प्रपौण्डरीकं पौंडर्यं चक्षुष्यं पौण्डरीयकम् ।

पौंडर्यं मधुरं तिक्तं कषायं शुक्रलं हिमम् ॥ ३१ ॥

चक्षुष्यं मधुरं पाके वर्ण्यं पित्तकफप्रणुत् ।

व्यंजनो वांतिहारी च रुचिशयः शोकशोभनः ।

इति कर्पूरादिवर्गः ।

गुडूच्यादि वर्गः ।

पुदीना ।

तत्रादौ गुडूच्या उत्पत्तिर्नाम गुणाश्च ।

अथ लंकेश्वरो मानी रावणो राक्षसाधिपः ।

रामपत्नीं वनात्सीतां जहार मदनातुरः ॥ १ ॥

१. चकवत् पद्मावती पापडी । २. सुगन्धा, प्रवालाकृति । पंठारी । ३. पुण्डे-
रिआ बं० पुण्डेरिआ अस्य प्रतिनिधिः स्थल-कमलम् । ४. फा० नोवना इ०
टोलरेड मिंट Tallredment पुदीना प्राचीन नहीं है, और किसी ग्रन्थ में
नहीं देखा जाता ।

ततस्तं बलवान् रामो रिपुञ्जायापहारिणम् ।

वृत्तो वानरसैन्येन जघान रणमूर्ध्नि ॥ २ ॥

हते तस्मिन् सुरारातौ रावणे बलगर्विते ।

देवराजः सहस्राक्षः परितुष्टो हि रावणे ॥ ३ ॥

तत्र ये वानराः केचित् राक्षसैर्निहता रणे ।

तानिद्रो जीवयामासः संसिच्यामृतवृष्टिभिः ॥ ४ ॥

ततो येषु प्रदेशेषु कपिगात्रात्परिच्युताः ।

श्रीयूषविन्दवः पेतुस्तेभ्यो जाता गुडूचिका ॥ ५ ॥

गुडूची ।

गुडूची मधुपर्णी स्यादमृतामृतवल्लरी ।

छिन्ना छिन्नरुहा छिन्नोद्भवा वत्सादिनीति च ॥ ६ ॥

जीवन्ती तंत्रिका सोमा सोमवल्ली च कुण्डली ।

चक्रलक्षणिका धारा विशल्या च रसायनी ॥ ७ ॥

चन्द्रहासा वयस्या च मंडली देवनिर्मिता ।

गुडूची कटुका तिक्ता स्वादुपाका रसायनी ॥ ८ ॥

संग्राहणी कषायोष्णा लघ्वी बल्याग्निदीपनी ।

दोषत्रयामृतदाहमेहकासांश्च पांडुताम् ॥ ९ ॥

कामलाकुष्ठवातास्रज्वरकृमिवमीहरेत् ॥

तांबूलम् ।

तांबूलवल्ली तांबूली नागिनी नागवल्लरी ॥ १० ॥

तांबूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ।

वश्यं तिक्तं कटु क्षारं रक्तपित्तकरं लघु ॥ ११ ॥

चल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् ।

१ दे० भा० गिलो । फा० गिलाई । इ० गुलांचा । गुडूचिसत्त्वं सुस्वादु
रुच्यं लघु च दीपनम् । चक्षुष्यं धातुकृन्मेध्यं वयःस्थापनकारकम् ॥ (मदनविनोदे)
वृत्तेन घातं सगुडा विवन्धं पित्तं सिताढ्या मधुना कफं च । वातास्रमुग्रं रुबुतै-
रुमिश्रं शुठ्यामघातं शमयेद्गुडूची ॥ २ दे० भा० पान नागर वेल फा०-

बिल्वः ।

बिल्वः शांडिल्यशैलूषो मालूरश्रीफलावपि ॥ १२ ॥

गंधगर्भः शलाटुश्च कंटकी च सदाफलः ।

श्रीफलस्तु वरस्तिको ग्राही रूक्षोऽग्निपित्तकृत् ॥ १३ ॥

वातश्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः ।

गंभारी ।

गंभारी भद्रपर्णी च श्रीपर्णी मधुपर्णिका ॥ १४ ॥

काश्मरी काश्मरी हीरा काश्मर्यः पीतरोहिणी ।

कृष्णवृन्ता मधुरसा महाकुसुमकापि च ॥ १५ ॥

काश्मरी तुवरा तिका वीर्य्योष्णा मधुरा गुरुः ।

दीपनी पाचनी मेध्या भेदनी भ्रमशोथजित् ॥ १६ ॥

दोषतृष्णामशूलाशौविषदाहज्वरापहा ।

तत्फलं बृंहणं वृष्यं गुरु केश्यं रसायनम् ॥ १७ ॥

—वर्ग तंबूल । इ० बिटल लीफ Betel Leaf. श्रीवाटी, अम्लवाटी, सातसी-
पर्ण, इत्यादि नाना भेदाः नागवल्लीफलं—हृद्यं सुगन्धि कफवातजित् । आयुरग्रे
यशो मूले लक्ष्मीर्मध्ये व्यवस्थिता । तस्मादग्रं तथा मूलं मध्यं पर्णस्य वर्जयेत् ॥ १ ॥
तांबूलं न हितं दन्तदुर्बलेश्वरोगिणाप् । विषमूर्छामर्दार्तानां क्षतिनां रक्तपित्तिनाम्
॥ २ ॥ कुण्डजनम् । तांबूलवल्लीमूलं तु रूक्षोष्णं कफनाशनम् । तीक्ष्णं बल्यं च
वातघ्नं पौष्टिकं दीपनं सरम् ॥ ३ ॥ श्लेष्मघ्नं पित्तजनकं वृद्धानां चापि शक्यते ॥

१ दे० भा० बिल, वेल । इ० वेगालंकिन्स ॥ तत्पत्रं कफवातामशूलघ्नं
ग्राहि रोचनम् । हन्याद्विबिल्वजं पुष्पमतीसारं तृषां वमिम् ॥ १ ॥ बिल्वका
सूखा गूदा ॥ कफवात(मशूलघ्नी ग्राहिणी बिल्वपेशिका । २ दे० भा० खंभारी,
कुम्भरेन । धुमार । वं० भा० गामार । अस्य फलं जिरेष्क० तत्पुष्पं मधुरं शीतं
तित्तं संग्राहि वातलम् । कषायं मधुरं पाके पित्तास्रासृग्गदापहम् ॥ गंभारीमूल-
मत्युष्णमहितं सानुषेषु तत् ।

वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धनुत् ।

स्वादु पाके हिमं स्निग्धं तुवराम्लं विशुद्धिकृत ॥ १८ ॥

हन्याद्वाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ।

पाटला ।

पाटली पाटला मोघा मधुदूती फलेरुहा ॥ १९ ॥

कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी काचस्थाल्यलिवल्लभा ।

ताम्रपुष्पी च कथिता परा स्यात्पाटला सिता ॥ २० ॥

मुष्कको मोक्षको घंटा पाटलिः काष्ठपाटला ।

पाटला तुवरा तित्तानुष्णा दोषत्रयापहा ॥ २१ ॥

अरुचिश्वासशोथार्शश्छर्दिहिक्रातृषाहरी ।

पुष्पं कषायं मधुरं हिमं हृद्यं कफास्रनुत् ॥ २२ ॥

पित्तातीसारहृत्कंजं फलं हिक्रास्रपित्तहृत् ।

अग्निमंथः ।

अग्निमंथो जया स स्यात् श्रीपर्णी गणकारिका ॥ २३ ॥

जया जयंती तर्कारी नाद्वयी वैजयंतिका ।

अग्निमंथः श्वयधुनुद्वीर्योष्णः कफवातहृत् ॥ २४ ॥

पांडुनुत् कटुकस्तिक्तस्तुवरो मधुरोऽग्निदः ।

स्योनाकः ।

स्योनाकः शोषणश्च स्यान्नटकट्वंगठुटुकः ॥ २५ ॥

१ दे० भा० पाटल, वं० भा० घंटा पारुल । गौ० भा० पारुलगाछश्वेत,
रक्त, भूमिपाटला । क्षुद्रपाटला । बल्लीपाटला । २ दे० भा० अगेथु गनियार ।
वं० भा० आगंगत । लव्वग्निमंथस्य गुणाः प्रोक्ता वृद्धाग्निमंथवत् । विशेषालेपने
चोपनाहे शोफे च कीर्तिताः ॥ १ ॥ तेजोमंथगुणाः प्रोक्ताश्चाग्निमंथसमा
बुधैः । विशेषाद्वातशोफे च प्रोक्तः पूर्वैश्च सूरभिः ॥ ३ दे० भा० अरुल, टेंडु ।
युगलं । वं० भा० सोनालु । स्योनाकयुगले तित्तं शीतलं च त्रिदोषजित् ।
पित्तश्लेष्मातिसारघ्नं सन्निपातज्वरापहम् ॥

मंडूकपर्णपत्रोर्णशुकनाशकटुनटाः ।

दीर्घवृन्तोरलुश्चापि पृथुशिवः कटुभरः ॥ २६ ॥

स्योनाको दीपनः पाके कटुकस्तुवरो हिमः ।

ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासामनाशनः ॥ २७ ॥

टुटुकस्य फलं बालं रूक्षं वातकफापहम् ।

हृद्यं कषायं मधुरं रोचनं लघुदीपनम् ॥ २८ ॥

गुल्मार्शः कृमिहृत्प्रौढं गुरुवातप्रकोपनम् ।

वृद्धपञ्चमूलम् ।

श्रीफलः सर्वतोभद्रा पाटला गणिकारिका ।

स्योनाकः पञ्चभिश्चैतैः पञ्चमूलं महन्मतम् ॥ २९ ॥

पञ्चमूलं महत्तित्तं कषायं कफवातनुत् ।

मधुरं श्वासकासघ्नमुष्णं लघ्वग्निदीपनम् ॥ ३० ॥

शालपर्णी ।

शालपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा ।

विदारिगंधा दीर्घाग्निदीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥ ३१ ॥

शालपर्णी गुरुश्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ।

शोषदोषत्रयहरी बृंहण्युक्ता रसायनी ॥ ३२ ॥

तिक्ता विषहरी स्वादुः क्षतकासकृमिप्रणुत् ।

पृश्निपर्णी ।

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्याग्निपर्णिका ॥ ३३ ॥

क्रोष्टुवित्रा सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।

पृश्निपर्णी त्रिदोषघ्नी वृष्णोष्णा मधुरा सरा ॥ ३४ ॥

हन्ति दाहज्वरश्वासरक्तातिसारतृट्वमीः ।

१ दे० भा० सरिवन, कवरी, नौली । ब० भा० शालपान । २ दे० भा० पिठौनी, कवरा । ब० भा० चाकुलिया ।

बृहती ।

वार्ताकी क्षुद्रभंटाकी महती बृहती कुली ॥ ३५ ॥

हिंणुली राष्ट्रिका सिंही महोटी दुःप्रधर्षणी ।

बृहती ग्राहणी हृद्या पाचनी कफवातहत ॥ ३६ ॥

कटुतिक्तास्यवैरस्यभलारोचकनाशनी ।

उष्णा कुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमांद्यजित् ॥ ३७ ॥

कंटकारी ।

कंटकारी तु दुःस्पर्शा क्षुद्रा व्याघ्री निदिग्धिका ।

कंटारिका कंटकिनी धावनी बृहती तथा ॥ ३८ ॥

उभे च बृहत्यौ यत आह सुश्रुतः ।

क्षुद्रायां क्षुद्रघंटाक्यां बृहतीति निगद्यते ।

श्वेता क्षुद्रा चंद्रहासा लक्ष्मणा क्षुद्रदूतिका ॥ ३९ ॥

गर्भदा चंद्रभा चंद्रा चंद्रपुष्पा प्रियंकरी ।

कंटकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ॥ ४० ॥

रूक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ।

निहंति पीनसं पार्श्वपीडाकृमिहृदामयान् ॥ ४१ ॥

तयोः फलं कटु रसे पाके च कटुकं भवेत् ।

शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताग्निकृच्छ्र ॥ ४२ ॥

१ दे० भा० ब्रह्मंटा, ममोली बड़ी । वं० व्याकुड । फा० उस्तरगार,

वादं जान जंगली । (फल) फलानि बृहतीनां च कटुतिक्तलघूनि च ।

कंडुकुष्ठकृमिघ्नानि कफवातहराणि च ॥ १ ॥ श्वेत । श्वेता बृहतिका रुच्या

कफवातविनाशनी । अंजनान्नेत्ररोगघ्नी गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत् ॥ २ ॥ २ दे० भा०

ममोली, कटेरी, वं मा० कंटकारी । प० भा० मोकडी । फलं तस्याः कटु

पाके रसे च कटुकं भवेत् । शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताग्निकृच्छ्र ॥ लक्ष्मणा

कटुका चोष्णा चक्षुष्या चाग्निदीपनी । गर्भस्थापनकर्त्री च पारदस्य नियामिका ॥

रुचिकृत्कफवातानां नाशिनी परमा मता । शेषाश्चास्या गुणाः प्रोक्ताः फल-

स्यापि च पूर्ववत् ॥

हन्यात्कफमरुत्कंडूकासमेदःकृमिज्वरान् ।

तद्वत्प्रोक्ता सिता क्षुद्रा विशेषाद्भकारिणी ॥ ४३ ॥

गोक्षुरः ।

गोक्षुरः क्षुरकोऽपि स्यात् त्रिकंटःस्वादुकंटकः ।

गोकंटको भक्षटंको वनशृंगाट इत्यपि ॥ ४४ ॥

पलंकषाश्वदंष्ट्रा च तथा स्यादिक्षुगंधिकः ।

गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृद्रस्तिशोधनः ॥ ४५ ॥

मधुरो दीपनो वृष्यः पुष्टिदश्चाश्मरीहरः ।

प्रमेहश्वासकासार्षःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥ ४६ ॥

लघुपंचमूलम् ।

शालपर्णी पृश्निपर्णी वार्ताकी कंटकारिका ।

गोक्षुरः पंचभिश्चैतैः कनिष्ठं पंचमूलकम् ॥ ४७ ॥

पंचमूलं लघु स्वादु बल्यं पित्तानिलापहम् ।

नात्युष्णं बृंहणं ग्राहि ज्वरश्वासश्मरीप्रणुत् ॥ ४८ ॥

दशमूलम् ।

उभाभ्यां पंचमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।

दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः ॥ ४९ ॥

तंद्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ।

जीवन्ती ।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ॥ ५० ॥

१ दे० भा० भखडा, गोखरु । वं० भा० गोखरि । फा० तुखमे खारखस्क ।
क्षुद्रवृहत् । (वीज) बीजं गोक्षुरकं शीतं मूत्रलं शोथवारणम् । वृष्यमायुष्करं
शुक्रमेहनुत्कृच्छ्रनाशनम् ॥ १ ॥ (क्षार) क्षारस्तु गोक्षुराणां तु मधुरः शीतलो
मतः । स्रोतोविशोधनश्चैव वातघ्नो वृष्य एव च ॥ २ ॥ (शाक) तिक्तं
गोक्षुरकं शाकं वृष्यं स्रोतोविशोधनम् ॥ २ दे० भा० डोडी । वं० भा० जीवई
इ० शाशा प्रेरला । वृहती क्षुद्रा तिक्तजीवन्ती स्वर्णजीवन्ती । अर्कवत् मधुर-
पुष्पा व्रततिः । हिरण्यवेला स्वर्णवर्णपत्रमूलनालादिका ।

मांगल्यनामधेया च शाकश्रेष्ठा पयस्विनी ।

जीवन्ती शिञ्जिला स्वादुः स्निग्धा दोषत्रयापहा ॥ ५१ ॥

रसायनी बलकरी चक्षुष्या ग्राहणी लघुः ।

मुद्गपर्णी ।

मुद्गपर्णी काकपर्णी शूर्पपर्ण्यल्पिका सहा ॥ ५२ ॥

काकमुद्गा च सा प्रोक्ता तथा मार्जारगंधिका ।

मुद्गपर्णी हिमा रूक्षा तिक्ता स्वाद्वी च शुक्रला ॥ ५३ ॥

चक्षुष्या क्षतशोथघ्नी ग्राहणीज्वरदाहनुत् ।

दोषत्रयहरी लघ्वी ग्रहण्यशोतिसारजित् ॥ ५४ ॥

माषपर्णी ।

माषपर्णी सूर्यपर्णी कांबोजी हयपुच्छिका ।

पांडुलोमशपर्णी च कृष्णवृन्ता महासहा ॥ ५५ ॥

माषपर्णी हिमा तिक्ता रूक्षा शुक्रबलासकृत् ।

मधुरा ग्राहणी शोथवातपित्तज्वरास्त्रजित् ॥ ५६ ॥

जीवनीयगणः ।

अष्टवर्गः सयष्टीको जीवन्ती मुद्गपर्णिका ।

माषपर्णीगणोऽयं तु जीवनीय इति स्मृतः ॥ ५७ ॥

जीवनो मधुरश्चापि नाम्ना स परिकीर्तितः ।

जीवनीयगणः प्रोक्तः शुक्रकृत् बृंहणो हिमः ॥ ५८ ॥

शुरूर्गर्भप्रदः स्तन्यकफकृत्पित्तरक्तहृत् ।

तृष्णां शोषं ज्वरं दाहं रक्तपित्तं व्यपोहति ॥ ५९ ॥

शुक्ररत्नैरंडौ ।

शुक्र एरंड आमंडश्चित्रो गंधर्वहस्तकः ।

पंचांगुलो वर्धमानो दीघदंडो व्यडंबकः ॥ ६० ॥

रक्तोऽपरोरुबूकः स्यादुरुबूको रुबुस्तथा ।

व्याघ्रपुच्छश्च वातारिश्चंचुरुत्तानपत्रकः ॥ ६१ ॥

एरण्डयुग्मं मधुरमुष्णं गुरु विनाशयेत् ।

शूलशोथकटीवस्तिशिरःपीडोदरज्वरान् ॥ ६२ ॥

ब्रध्नश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।

एरंडपत्रं वातघ्नं कफकृमिविनाशनम् ॥ ६३ ॥

मूत्रकृच्छ्रहरं चापि पित्तरक्तप्रकोपनम् ।

वातार्य्यग्रदलं गुल्मवस्तिशूलहरं परम् ॥ ६४ ॥

कफवातकृमीन् हन्ति वृद्धिं सप्तविधामपि ।

एरंडफलमत्युष्णं गुल्मशूलानिलापहम् ॥ ६५ ॥

यकृतप्लीहोदराशोघ्नं कटुकं दीपनं परम् ।

तद्वन्मज्जा च विड्भेदी वातश्लेष्मोदरापहा ॥ ६६ ॥

आकारकरभः ।

आकारकरभश्चैवाकल्लकोथ ह्यकल्लकः ।

अकल्लकोष्णो वीर्य्येण बलकृतकटुको मतः ॥ ६७ ॥

प्रतिश्यायं च शोथं च वातं चैव विनाशयेत् ।

शुक्लरक्तार्को ।

श्वेतार्को गणरूपः स्यान्मंदारो वसुकोऽपि च ॥ ६८ ॥

श्वेतपुष्पः सदापुष्पः स बालार्कः प्रतापसः ।

रक्ताऽपरोर्कनामा स्यादर्कपर्णो विकीरणः ॥ ६९ ॥

—seed. एरंडतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्द्धनम् । वातासृगुल्महृद्भोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ रक्तोऽपरो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रकरो रुबुः । त्रिवीजश्च रुबूकश्च चारु-रुत्तानपत्रकः (तंत्रांतरम्) ।

१ दे० भा० अकरकरा । वं० भा० अकोरकोश । इ० पेलेटरवूट ।
२ दे० भा० लाल आक, सुफेद आक, मंदार फा० खुर्क, दूध वं० भा० आकंद । इ० जार्जिऑटिक्स्वोलोवर्ट । Gigantic sivalallowwart.

रक्तपुष्पः शुक्लफलस्तथा स्फोटः प्रकीर्तितः ।
 अर्कद्वयं सरं वातकुष्ठकंदुविषव्रणान् ॥ ७० ॥
 निहन्ति प्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरशकृत्कृमीन् ।
 अलर्ककुसुमं वृष्यं लघुदीपनपाचनम् ॥ ७१ ॥
 अरोचकप्रसेकार्शः कासश्वासनिवारणम् ।
 रक्तार्कपुष्पं मधुरं सतिक्तं कुष्ठकृमिघ्नं कफनाशनं च ॥ ७२ ॥
 अशौविषं हन्ति च रक्तपित्तं ।
 संग्राहि गुल्मे श्वयथौ हितं तत् ॥ ७३ ॥
 क्षीरमर्कस्य तिक्तोष्णं स्निग्धं सलवणं लघु ।
 कुष्ठगुल्मोदरहरं श्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ ७४ ॥
 सेहुंडः ।

सेहुंडः सिंहतुंडः स्याद्वज्री वज्रद्रुमोऽपि च ।
 सुधासमंतदुग्धा च स्नुक्स्त्रियां स्यात्स्नुही गुडा ॥ ७५ ॥
 सेहुंडो रेचनस्तीक्ष्णो दीपनः कटुको गुरुः ।
 शूलामष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान् ॥ ७६ ॥
 उन्मादमेहकुष्ठार्शःशोथमेदोश्मपांडुताः ।
 व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषं हरेत् ॥ ७७ ॥
 उष्णवीर्यं स्नुहीक्षीरं स्निग्धं च कटुकं लघु ।
 गुल्मिनां कुष्ठिनां चापि तथैवोदररोगिणाम् ॥ ७८ ॥
 हितमेतद्विरेकार्थं ये चान्ये दीर्घरोगिणः ।

सेहुंडभेदशातला ।

शातला सतला सारविमला विदला च सा ॥ ७९ ॥
 तथा निगदिता भूरिफेना कर्मकषेत्यपि ।
 शातला कटुका पाके वातला शीतला लघुः ॥ ८० ॥

तिक्ता शोथकफानाहपित्तोदावर्तरक्तजित् ।

कलिहारी ।

कलिहारी तु हलिनी लांगली शुक्लपुष्प्यपि ॥ ८१ ॥

विशल्याग्निशिखानंता वह्निवक्त्रा च गर्भनुत् ।

कलिहारी सरा कुष्ठशोफाशोत्रणशूलजित् ॥ ८२ ॥

सक्षारा श्लेष्मजित्तिक्ता कटुका तुवरापि च ।

तीक्ष्णोष्णकृमिहल्लघ्वी पित्तला गर्भपातिनी ॥ ८३ ॥

श्वेतरक्तकरवीरौ ।

करवीरःश्वेतपुष्पः शतकुम्भोश्वमारकः ।

द्वितीयो रक्तपुष्पश्च चंडांतो लगुडस्तथा ॥ ८४ ॥

करवीरद्वयं तिक्तं कषायं कटुकं च तत् ।

व्रणलाघवकृन्नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम् ॥ ८५ ॥

वर्योष्णं कृमिकंडुघ्नं भक्षितं विषवन्मतम् ।

धत्तूरः ।

धत्तूरधूर्तधुस्तूरा उन्मत्तः कनकाह्वयः ॥ ८६ ॥

देवताकितवस्तूरी महामोही शिवप्रियः ।

१ दे० भा० कलिहारी, कलेसर, वं० भा० विषलांगला, ईशलांगला,
प० भा० मराडी, महासती । अस्याः कंदं वत्सनाभविषम् । इ० बुल्फसवेन ।
Walfsbaue. (तंत्रांतरे) कलिकारी लांगलिकी दीप्ता च गर्भवातिनी ।
अग्निजिह्वा वह्निशिखा वह्निवक्त्रा च लांगली ॥ वृद्धयोगतरंगिण्याम्—लांगली
शुद्धिमायाति दिनं गोमूत्रसंस्थिता । २ दे० भा० कनेर । वं० भा० करवी ।
फा० खरजेहरा । सफेद कनेर, लाल पीली नीली इ० स्वीटसेटे, डऔलियंडर ।
Sweet scruted oleander. ३ दे० भा० धत्तूरा । सित, नील, कृष्ण । वं०
भा० धुतूरा । लोहित पीतपुष्पः । इ० थोर्न आपलम्टामोनियं । Thorna
pplesmraonium. कृष्णधत्तूरकः सिद्धः कनकः सचिवः शिवः । कृष्णपुष्पो
विषारातिः क्रूरधूर्तश्च कीर्तितः । (वृद्धयोगतरंगिणी) धत्तूरबीजं गोमूत्रे चतुर्था-
प्रोषितं पुनः । कडितं निस्तुपं कृत्वा योगेषु विनियोजयेत् ।

मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रकः ॥ ८७ ॥

धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।

कषायो मधुरस्तित्तो यूकालिक्षाविनाशनः ॥ ८८ ॥

उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकंदुकृमिविषापहः ।

वासकः ।

वासको वासिका वासा भिषङ्माता च सिंहिका ॥ ८९ ॥

सिंहास्यो वाजिदंतः स्यादाटरूषक इत्यपि ।

अटरूषो वृषनामा सिंहपर्णश्च स स्मृतः ॥ ९० ॥

वासको वातकृत्स्वर्यः कफपित्तास्रनाशनः ।

तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुः शीतस्तृडर्तिहृत् ॥ ९१ ॥

श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ।

पर्पटः ।

पर्पटो वरतिक्तश्च स्मृतः पर्पटकश्च सः ॥ ९२ ॥

कथितः पांशुपर्यायः तथा कवचनामकः ।

पर्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृण्णाकफज्वरान् ॥ ९३ ॥

संग्राही शीतलस्तित्तो दाहनुद्रातलो लघुः ।

निंबः ।

निंबः स्यात्पिचुमर्दश्च पिचुमंदश्च तित्तकः ॥ ९४ ॥

अरिष्टः पारिभद्रश्च हिंगुनिर्यास इत्यपि ।

निंबः शीतो लघुर्ग्राही कटुपाकोऽग्निवातनुत् ॥ ९५ ॥

१ दे० भा० वासा । प० भा० विहकड, विसूटी । इ० वाकस । २ दे० भा० पापडा, दवन । वं० भा० खेत पापडा । फा० शाहतरा । इ० जस्टि-
सयाप्रोकरवेन्स । Justici Procarabens. ३ दे० भा० निम, नीम, वं० भा० निमगाच्छ । फा० नेनव । इ० निंबट्टी । Nunbtrec. निंबतिलं तु कुष्ठं
तिक्तं कृमिहरं परम् । (तंत्रांतरे) कैटर्यो महानिंबो रामणो रमणस्तथा । गिरि-
निंबो महारिष्टः शुद्धसारोऽलकाह्वयः ॥ इ० सजंदकरखीकुनाह । दे० भा०
मीडानीप । वं० भा० वोडानिमिश्रं ।

अहद्यः श्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत् ।

व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत् ॥ ९६ ॥

निंबपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् ।

वातलं कटुपाकं च सर्वारोचककुष्ठनुत् ॥ ९७ ॥

नैवं फलं रसे तित्तं पाके तु कटुभेदनम् ।

स्निग्धं लघूष्णं कुष्ठघ्नं गुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥ ९८ ॥

महानिंबः ।

महानिंबः स्मृतोद्रेको रम्यको विषमुष्टिकः ।

केशमुष्टिर्निबरकः कार्मुको क्षीव इत्यपि ॥ ९९ ॥

महानिंबो हिमो रुक्षः तित्तो ग्राही कषायकः ।

कफपित्तभ्रमच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् ॥ १०० ॥

प्रमेहश्वासगुल्मार्शोभूषिकाविषनाशनः ।

पारिभद्रः ।

पारिभद्रो निंबतरुर्मदारः पारिजातकः ॥ १०१ ॥

पारिभद्रोनिलश्लेष्मशोथमेदःकृमिप्रणुत् ।

तत्पुष्पं पित्तरोगघ्नं कर्णव्याधिविनाशनम् ॥ १०२ ॥

कांचनारः कोविदारश्च ।

कांचनारः कांचनको गंडारिः शोणपुष्पकः ।

कोविदारश्चमरिकः कुदालो युगपत्रकः ॥ १०३ ॥

कुण्डली ताम्रपुष्पश्चाश्मंतकः स्वल्पकेसरी ।

कांचनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तहृत् ॥ १०४ ॥

कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगंडमालाव्रणापहा ।

कोविदारोपि तद्वत्स्यात्तयोः पुष्पं लघु स्मृतम् ॥ १०५ ॥

रुक्षं संग्राहि पित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत् ।

१ दे० भा० घ्रेक, बं० भा० बोडानिम, महानिम । फा० आजाद
दखत । २ दे० भा० वकायनदेक । बं० भा० पालते मांदार । द्रा० भा०
पंजीर ३ दे० भा० कचनार, कुलाड । बं० भा० कांचन ।

श्याम, श्वेत, रक्त शिशुः ।

शोभांजनः शिशुस्तीक्ष्णगंधकाऽक्षीवमोचकाः ॥ १०६ ॥

तद्वीजं श्वेतमरिचं मधुशिशुस्तु लोहितः ।

शिशुः सरः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो मधुरो लघुः ॥ १०७ ॥

दीपनो रोचनो रुक्षः क्षारस्तित्तो विदाहकृत् ।

संग्राही शुक्रलो हृद्यो पित्तरक्तप्रकोपनः ॥ १०८ ॥

चक्षुष्यः कफवातघ्नो विद्रधिश्चयथुकृमीन् ।

मेदोपचीविषहृहगुल्मगंडव्रणान् हरेत् ॥ १०९ ॥

श्वेतः प्रोक्तगुणो ज्ञेयो विशेषादीपनः सरः ।

प्लीहानं विद्रधिं हन्ति व्रणघ्नः पित्तरक्तकृत् ॥ ११० ॥

मधुशिशुः प्रोक्तगुणो विशेषादीपनः सरः ।

शिशुवल्कलपत्राणां स्वरसः परमातिहृत् ॥ १११ ॥

चक्षुष्यं शिशुजं बीजं तीक्ष्णोष्णं विषनाशनम् ।

अवृष्यं कफवातघ्नं तन्नस्येन शिरोतिहृत् ॥ ११२ ॥

श्वेतनीलपुष्पा अपराजिता ।

आस्फोता गिरिकर्णी स्यात् विष्णुक्रांतापराजिता ।

अपराजिते कटुमध्ये शीते कंठ्ये सुदृष्टिदे ॥ ११३ ॥

कुष्ठमूत्रविदोषामशोथव्रणविषापहे ।

कषाये कटुके पाके तिक्ते च स्मृतिबुद्धिदे ॥ ११४ ॥

सिंदुवारः ।

सिंदुवारः श्वेतपुष्पः सिंदुकः सिंदुवारकः ।

१ दे० भा० सुहांजना । वं० भा० सजिनेहना । इ० होर्सेरेडीशट्री Horse

Rudishtree. पीतस्तु कांचनो ग्राही दीपनो व्रणरोपणः । तुवरो मूत्रकृच्छस्य

कफवायोर्विनाशनः ॥ कांचन्युक्ता शीर्षरुजं त्रिदोषं च विनाशयेत् । स्तन्यस्य वर्द्धनकरी

कथिता सूक्ष्मदर्शिभिः । २ दे० भा० सुफेदनीलकोयल । वं० भा० अपराजिता ।

इ० मजीरयुतराहिंदी । ३ दे० भा० संभाळ, मेडडी, मंडूआ, माल्टा, वं० भा०

निर्शिदा । फा० परंगुष्टुखमेपझंगुष्टु मिसवान कर्तरीवन्या । इ० फाईवलीवूडचेष्टरी

Five leaved chustree (तंत्रांतरे) इत्याणिकेंदसरसा निर्गण्डी सिंधवारकः ।

नीलपुष्पी तु निर्गुडी शेफाली सुवहा च सा ॥ ११५ ॥

सिंदुकः स्मृतिदस्तिकः कषायः कटुको लघुः ।

केश्यो नेत्रहितो हन्ति शूलशोथाममारुतान् ॥ ११६ ॥

कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मव्रणान्नीला हि तद्विधा ।

सिंदुवारदलं जंतुवातश्लेष्महरं लघु ॥ ११७ ॥

कुटजः ।

कुटजः कुटिजः कूटो वत्सको गिरिमल्लिका ।

कालिंगश्चक्रशाखी च मल्लिकापुष्प इत्यपि ॥ ११८ ॥

इंद्रयवफलः प्रोक्तो वृष्यकः पांडुरद्रुमः ।

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो हिमः ॥ ११९ ॥

अशोतिसारपित्तास्रकफवृणामकुष्ठजित् ।

करंजो ह्रस्वकरंजः ।

करंजो नक्तमालश्च करजश्चिरबिल्वकः ॥ १२० ॥

घृतपूर्णः करंजोऽन्यः प्रकीर्यः पूतिकोऽपि च ।

स चोक्तः पूतिकारंजः सोमवल्कश्च स स्मृतः ॥ १२१ ॥

करंजः कटुकस्तीण्णो वीर्य्योष्णो योनिदोषहृत् ।

कुष्ठोदावर्तगुल्मार्शोव्रणक्रिमिकफापहा ॥ १२२ ॥

तत्पत्रं कफवातार्शःकृमिशोथहरं परम् ।

भेदनं कटुकं पाके वीर्य्योष्णं पित्तलं लघु ॥ १२३ ॥

तत्फलं कफवातघ्नं मेहार्शःकृमिकुष्ठजित् ।

घृतपूर्णकरंजोऽपि करंजसदृशो गुणैः ॥ १२४ ॥

१ दे० भा० कुडासक, बं० भा० कुरचि । इ० ओवल्लिब्रूरोझवे,
Ovalleaved rose bay. २ दे० भा० करंजुआ । बं० भा० डहरकरंज ।
इ० स्मूथलीव्ड पोन् गेमिया । Smooth leaved pongamia, फा० इबलीस,
रवाय, ई० बौडनडकट् । Banducut. करंजतैलं तीक्ष्णोष्णं कृमिहृद्रक्तपित्तकृत् ।
नयनामयवातार्तिकुष्ठकंडुव्रणप्रणुत् । वातनुत् पित्तकृत्किंचिल्लेपनाच्चर्मदोषनुत् ॥

तृतीयः करंजः ।

उदकीर्यस्तृतीयोन्यः षडग्रंथो हस्तिवारुणी ।

कर्कटी वायसी चापि करंजी करभंजिका ॥ १२५ ॥

करंजी स्तंभनी तित्ता तुवरा कटुपाकिनी ।

वीर्य्योष्णा वमिपित्तार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित् ॥ १२६ ॥

श्वेतरक्तगुंजे ।

श्वेता गुंजोच्चटा प्रोक्ता कृष्णला चापि सा स्मृता ।

रक्ता सा काकचिंची स्यात्काकणंती च रक्तिका ॥ १२७ ॥

काकादनी काकपीलुः सा स्मृतांगारवल्लरी ।

गुंजाद्वयं तु केश्यं स्यात् वातपित्तज्वरापहम् ॥ १२८ ॥

मुखशोषभ्रमश्वासतृष्णामदविनाशिनी ।

नेत्रामयहरं वृष्यं बल्यं कंडुव्रणापहम् ॥ १२९ ॥

कृमींद्रलुतकुष्ठानि रक्ताबद्धबलापि च ।

कपिकच्छुः ।

कपिकच्छुरात्मगुप्ता रिण्यप्रोक्ता च मर्कटी ॥ १३० ॥

अजहा कंडुराध्यंडा दुःस्पर्शा प्रावृषायणी ।

लांगूली शूकशिंवी च सैव प्रोक्ता महर्षिभिः ॥ १३१ ॥

कपिकच्छुर्भृशं वृष्या मधुरा बृंहणी गुरुः ।

तित्ता वातहरी बल्या कफपित्तास्रनाशिनी ॥ १३२ ॥

तद्वीजं वातशमनं स्मृतं वाजीकरं परम् ।

१ दे० भा० रती मुफेद, वा लाल, चिर्मटी, वुंधुची । वं० भा० कुंच ।

श्वेतगुंजा, तृणज्योतिः । फा० चश्मेखरस । इ० वीड्ट्री । Beadtree.

(वृद्धयोगतरंगिणी) गुंजा च कांजिके स्विना प्रहरं शुद्धयति ध्रुवम् ॥

२ दे० भा० कौंचवीज, कौंचकिवांच, वृहती लघ्वी । वं० भा० आलकुशी ।

इ० कौहेज् । Cowhage.

रोहिणी ।

मांसरोहिण्यतिविषा वृत्ता चर्मकषा कृशा ॥ १३३ ॥

प्रहारवल्ली विकसा वीरवत्यपि कथ्यते ।

स्यान्मांसरोहिणी वृष्या सरा दोषत्रयापहा ॥ १३४ ॥

चिलकः ।

चिलको वातनिर्हारी श्लेष्मघ्नो धातुपुष्टिकृत् ।

आग्नेयो विषवद्यस्य फलं मत्स्यनिबूदनम् ॥ १३५ ॥

टंकारी ।

टंकारी वाताजित्तिक्ता श्लेष्मघ्नी दीपनी लघुः ।

शोथोदरव्यथाहन्त्री हिता पीठविसर्पिणाम् ॥ १३६ ॥

वेतसः ।

वेतसो नम्रकः प्रोक्तो वानीरो वंजुलस्तथा ।

अभ्रपुष्पश्च विदलो रथः शीतश्च कीर्तितः ॥ १३७ ॥

वेतसः शीतलो दाहशोथार्शोयोनिरुक्प्रणुतः ।

हन्ति वीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥ १३८ ॥

जलवेतसः ।

नकुंचकः परीव्याधो नादेयी जलवेतसः ।

जलजो वेतसः शीतः संग्राही वातकोपनः ॥ १३९ ॥

इज्जलः ।

इज्जलो हिज्जलश्चापि निचुलश्चांबुजस्तथा ।

जलवेतसवद्वेद्यो हिज्जलोऽयं विषापहा ॥ १४० ॥

१ दे० मा० रोहिणी, दो प्रकार, इ० रेडवुडट्री । Redwoodtree. यह वृक्ष जंगल में अधिक होता है । पत्ते खिरनीके सदृश । सात सात, फल अत्यन्त सूक्ष्म । २ दे० मा० वैत, वं० मा० वयसा, फा० वेत, इ० रोटा केन Cane. जलवेतस, मजनू, पंजाबी स्थलवेतस ।

अंकोटः ।

अंकोटो दीर्घकीलः स्यादंकोलश्च निकोचकः ।

अंकोटकः कटुस्तीक्ष्णः स्निग्धोष्णस्तुवरो लघुः ॥ १४१ ॥

रेचनः कृमिशूलामशोफग्रहविषापहा ।

विसर्पकफपित्तास्त्रमूषिकाहिबेषापहा ॥ १४२ ॥

तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेष्मघ्नं बृंहणं गुरु ।

बल्यं विरेचनं वातपित्तदाहक्षयास्त्रजित् ॥ १४३ ॥

बैला, महाबला, अतिबला, नागबला ।

बला बाढ्यालिका बाढ्या सैव बाढ्यालकापि च ।

महाबला पीतपुष्पा सहदेवी च सा स्मृता ॥ १४४ ॥

ततोऽन्यातिबला रिण्यप्रोक्ता कंकतिका सहा ।

गांगेरुकी नागबला झषा ह्रस्वा गवेधुका ॥ १४५ ॥

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकांतिकृत् ।

स्निग्धं ग्राहि संमीरास्त्रातिस्त्रक्षतनाशनम् ॥ १४६ ॥

लक्ष्मणा ।

पुत्रकाकाररक्तालपविंडुभिर्लाञ्छिता सदा ।

लक्ष्मणा पुत्रजननी वस्तगंयाकृतिर्भवेत् ॥ १४७ ॥

कथिता पुत्रदा वश्या लक्ष्मणा मुनिपुंगवैः ।

१ दे० भा० ठेरा, ठेरा, वं० भा० आंकड । इ० टोलीवडसल्युरिटीस् ।

यह वृक्ष वन में अधिक होता है । पत्ता एक अंगुल चौड़ा ५ वा ६ अंगुल

लंबा कच्चा फल नीला, पक्का लाल । २ दे० भा० खरैटी । वं० भा० घेडेला,

प० भा० द्रडिआ । इ० हार्टलीवडसिडा । Heart leaved sida. मही-

बला=सहदेई । अतिबल=कंघी, इ० इंडयनमेओ । Indian Malow. नाग-

बला=गांगेरन, वं० भा० गोरखाचाकुळे । गांगेरुकीफलं रूक्षं कषायं स्वादुवा-

तलम् । लेखनं स्तंभनं शीतं विवंग्राधानकटुहृ ॥ बलामूलत्वचश्चूर्णं सक्षीरं च

सशर्करम् । मूत्रातिसारं हरति दृष्टमेतन्न संशयः ।

स्वर्णवल्ली ।

स्वर्णवल्ली रक्तफला काकायुः काकवल्लरी ॥ १४८ ॥

स्वर्णवल्ली शिरःपीडां त्रिदोषं हन्ति दुग्धदा ।

कर्पासी ।

कर्पासी तुंडकेशी च समुद्रांता च कथ्यते ॥ १४९ ॥

कर्पासको लघुः कोष्णो मधुरो वातनाशनः ।

तत्पलाशं समीरघ्नं रक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम् ॥ १५० ॥

तत्कर्णपिडकानादपूयास्त्रावविनाशनम् ।

तद्धीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफकरं गुरु ॥ १५१ ॥

वंशः ।

वंशस्त्वक्सारकर्मारित्वचिसारतृणध्वजाः ।

शतपर्वायवफलोवेणुमस्करतेजनाः ॥ १५२ ॥

वंशः सरो हिमः स्वादुः कषायो वस्तिशोधनः ।

छेदनः कफपित्तघ्नः कुष्ठास्त्रघ्नशोथजित् ॥ १५३ ॥

तत्करीरः कटुः पाके रसे रूक्षो गुरुः सरः ।

कषायः कफकृत्स्वादुर्विदाही वातपित्तलः ॥ १५४ ॥

तद्यवास्तु सरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।

वातपित्तकरा उष्णा बद्धमूत्राः कफापहाः ॥ १५५ ॥

नलः ।

नलः पोटगलः शून्यमध्यश्च धमनस्तथा ।

नलस्तु मधुरस्तिक्तः कषायः कफरक्तजित् ॥ १५६ ॥

१ स्वर्णवल्ली=सोनली जीवन्ती भेद । २ दे० भा० कपास, रुई, वं० भा० कर्पास । फा० कुतन, पुबेदाना । इ० काटन् Cotton. ३ दे० भा० बांस, सरंध्रबांस । वं० भा० बांश । फा० कसब । इ० ब्रैवूकेन । Bamboo cane. ४ दे० भा० नरसल, नल, महानल, देवनल, वं० भा० नल । इ० इंडियन टोबैको ॥ Indian tobacco.

मुंजः ।

भद्रमुंजः शरो बाणस्तेजनश्चक्षुमंडनः ।

मुंजो मुंजातको बाणः स्थूलदर्भः सुमेखलः ॥ १५७ ॥

मुंजद्वयं तु मधुरं तुवरं शिशिरं तथा ।

दाहवृण्णाविसर्पास्त्रिमूत्रकृच्छ्राक्षिरोगहतं ॥ १५८ ॥

दोषत्रयहरं वृष्यं मेखलासूपयुज्यते ।

कासः ।

कासः कासेक्षुरुद्विष्टः स स्यादिक्षुरकस्तथा ॥ १५९ ॥

इक्ष्वालिकेक्षुगंधा च तथा पोटगलः स्मृतः ।

कासः स्यान्मधुरस्तिक्तः स्वादुपाको हिमः सरः ॥ १६० ॥

मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्रक्षयपित्ताक्षिरोगजित् ।

गुंद्रः ।

गुंद्रः पटेरको गुत्थः शृंगवेराभमूलकः ॥ १६१ ॥

गुंद्रः कषायो मधुरः शिशिरः पित्तरक्तजित् ।

स्तन्यः शुक्ररजोमूत्रशोधनो मूत्रकृच्छ्रहतः ॥ १६२ ॥

एरका ।

एरका गुंद्रमूला च शिवगुंद्रा शरीति च ।

एरका शिशिरा वृष्या चक्षुष्या वातकोपिनी ॥ १६३ ॥

मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ।

कुशः ।

कुशो दर्भस्तथा बर्हिः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ॥ १६४ ॥

ततोऽन्यो दीर्घपत्रः स्यात्क्षुरपत्रस्तथैव च ।

१ दे० मा० मुंज, सरकंडा, वं० मा० सरपत । २ दे० मा० काही, कास ।
 वं० मा० केशेवास । ३ दे० मा० डिम, एरका, गोसपटेर । इ० एलिफेंटग्रास ।
 Elephant grass, ४ दे० मा० दाम, डाम, कुशा । वं० मा० कुश ।

दर्भद्वयं त्रिदोषघ्नं मधुरं तुवरं हिमम् ॥ १६५ ॥

मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णा वस्तिरुक्प्रदराल्लजित् ।

कतृणं ।

कतृणं रोहिषं देवजग्धं सौगंधिकं तथा ॥ १६६ ॥

भूतीकं ध्याम पौरं च श्यामकं धूपगंधिकम् ।

रोहिषं तुवरं तित्तं कटुपाकं व्यपोहति ॥ १६७ ॥

हृत्कंठव्याधिपित्तास्त्रशूलकासकफज्वरान् ।

भूस्तृणम् ।

भूतीकं गुह्यबीजं च सुगंधं गोमयप्रियम् ॥ १६८ ॥

भूस्तृणं तु भवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि ।

भूस्तृणं कटुकं तित्तं तीक्ष्णौष्णं रेचनं लघु ॥ १६९ ॥

विदाहि दीपनं रुक्षमनेत्र्यं मुखशोधनम् ।

अवृण्यं बहुविट्कं च पित्तरक्तप्रदूषणम् ॥ १७० ॥

नीलदूर्वा ।

नीलदूर्वारुहानंता भार्गवी शतपर्बिका ।

शण्ड्या सहस्रवीर्या च शतवल्ली च कीर्तिता ॥ १७१ ॥

नीलदूर्वा हिमा तित्ता मधुरा तुवरा हरेत् ।

कफपित्तास्त्रवीसर्पतृष्णादाहत्वगामयान् ॥ १७२ ॥

श्वेतदूर्वा ।

दूर्वा शुक्ला तु गोलोमी शतवीर्या च कथ्यते ।

श्वेतदूर्वा कषाया स्यात्स्वाद्वी व्रण्या च दीपनी ॥ १७३ ॥

तित्ता हिमा विसर्पास्त्रतृपित्तकफदाहहृत् ।

१ दे० भा० खवीघास, असखर, मिर्चियागंध, रोहिष, दीर्घ रोहिष ।

ब० भा० रामकपूर । फा० खवाल० मामून । २ दे० भा० खुंव, ढाल, सांप

की छत्री । ३ दे० भा० दूव नीलदूव, सुफेददूव । व० भा० गेटेदूव ।

इ० क्रापिण् साईनोडन् ।

*गंडदूर्वा ।

गंडदूर्वा तु गंडीरी मत्स्याक्षी शकुलादनी ॥ १७४ ॥

गंडदूर्वा हिमा लोहद्रावणी ग्राहणी लघुः ।

तिक्ता कषाया मधुरा वातकृत्कटुपाकिनी ॥ १७५ ॥

दाहवृष्णाबलासास्त्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ।

विदारीकंद । वाराहीकंद ।

वाराहीकंदएवान्यश्चर्मकारालुको मतः ॥ १७६ ॥

अनूपे स भवेदेशे वाराह इव लोमवान् ।

विदारी स्वादुकंदो च सा तु क्रोधी सिता मता ॥ १७७ ॥

इक्षुगंधा क्षीरवल्ली क्षीरशुक्ला पयस्विनी ।

वाराही वरदा वृष्टिर्वदरेत्यभिधीयते ॥ १७८ ॥

विदारी मधुरा स्निग्धा बृंहणी स्तन्यशुक्रदा ।

शीता स्वय्या मूत्रला च जीवनी बलवर्णदा ॥ १७९ ॥

गुरुः पित्तास्रपवनदाहान्हांति रसायनी ।

मूषली ।

तालमूली तु विद्वद्भिर्मूषली परिकीर्तिता ॥ १८० ॥

मूषली मधुरा वृष्णा वीर्योष्णा बृंहणी गुरुः ।

तिक्ता रसायनी हंति गुदजान्यनिलं तथा ॥ १८१ ॥

शतावरी ।

शतावरी बहुसुता भीरुरिंदीवरी वरी ।

नारायणी शतपदी शतवीर्या च पीवरी ॥ १८२ ॥

* गंडदूर्वा=पंजाबमें प्रसिद्ध है । १ दे० मा० विलैयाकंद । प० मा० सियाली । वं० मा० मूईकुमडा २ दे० मा० चमार, आलू । प० मा० कित्था । पश्चिम मा० गेठी । ३ दे० मा० मूसलीसुफेद, स्याहमूसली । वं० मा० तालमूली । ४ दे० मा० सहंसपाखों वं० मा० शतमूली । फा० गुर्जदस्ति । इ० रामये-
रेगम् रेसिन्यौसम् । क्रोष्टिका तु रसे स्वाद्री पाकेऽपि मधुरैवसा । पित्तघ्नी
शीतवीर्या च वातश्लेष्मकरी गुरुः । वाराही तु रसे स्वाद्री तिक्ता पाके पुनः
कटुः । शुक्रायुःस्वरवर्णामवलपित्तविवर्द्धिनी । कफकुष्ठमरुन्मेहकृमिहृच्च रसायनी ।

महाशतावरी चान्या शतमूल्यूर्द्ध्वकंटिका ।

सहस्रवीर्या हेतुश्च रिष्यप्रोक्ता महोदरी ॥ १८३ ॥

शतावरी गुरुः शीता तिक्ता स्वाद्री रसायनी ।

मेधाग्निपुष्टिदा स्निग्धा नेत्र्या गुल्मातिसारजित् ॥ १८४ ॥

शुक्रस्तन्यकरी बल्या वातपित्तास्रशोथजित् ।

महाशतावरी मेध्या हृद्या वृष्या रसायनी ॥ १८५ ॥

शीतवीर्या निहत्यशोऽग्रहणीनयनामयान् ।

अंकुरः ।

तदंकुरस्त्रिदोषघ्नो लघुरर्शःक्षयापहा ॥ १८६ ॥

अश्वगंधा ।

गंधांता वाजिनामादिरश्वगंधा हयाह्वया ।

वाराहकर्णी वरदा वदरा कुष्ठगंधिनी ॥ १८७ ॥

अश्वगंधानिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा ।

बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णातिशुक्रला ॥ १८८ ॥

पाठा ।

पाठांबष्टांबष्टकी च प्राचीना पापचेलिका ।

एकाष्टीला रसा प्रोक्ता पाठिका वरतिक्तिका ॥ १८९ ॥

पाठोष्णा कटुका तीक्ष्णा वातश्लेष्महरी लघुः ।

हन्ति शूलज्वरच्छर्दि कुष्ठातीसारहृद्भ्रजः ॥ १९० ॥

दाहकंडुविषथासकृभिगुल्मगरव्रणान् ।

श्वेता निशोथा ।

श्वेता त्रिवृत् त्रिभंडी स्यात् त्रिवृता त्रिपुटापि च ॥ १९१ ॥

१ दे० मा० असगंध । बं० मा० अश्वगंधा । फा० मेहेमन्वररी इ०
विंटरचैरी Winter cherry, अश्वगंधापत्रलेपो ग्रंथिगंडापचीर्हरेत् । २ दे० मा०
घोडसूंबी । प० मा० बटांडु । बं० मा० अकनादि, निमुक । इ० पुरेराष्ट ।
फा० दनुजअकवरी । पलाहजडी, जलजमनीलध्वीवृहती । ३ दे० मा०
निसोत, पनिलर, त्रिवी, श्याम, श्वेत, रक्त । बं० मा० तेडडी । फा० निसोथ ।
इ० टरवीथरुट् । Turbith root

सर्वानुभूतिः सरलो निशोथो रेचनीति च ।

श्वेता त्रिवृद्रेचनी स्यात् स्वादुरुष्णा समीरहत ॥ १९२ ॥

रूक्षा पित्तज्वरक्षेप्मपित्तशोथोदरापहा ।

श्यामात्रिवृत् ।

त्रिवृच्छ्यामार्द्धचंद्रा च पालिंदी च सुषेणिका ॥ १९३ ॥

श्यामा त्रिवृत्ततो हीनगुणा तीव्रविरेचनी ।

मूर्च्छादाहमदभ्रांतिकंठोत्कर्षणकारिणी ॥ १९४ ॥

लघ्वीदंती ।

लघ्वी दंती विशल्या च स्यादुदुंबरपर्यपि ।

तथैरंडफला शीघ्रा श्येनघंटा घृणप्रिया ॥ १९५ ॥

वाराहांगी च कथिता निकुंभश्च मुकूलकः ।

वृहदंती ।

वृहदंती शंबरी चित्रा प्रत्यक्पर्याखुपर्यपि ॥ १९६ ॥

चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी सुतश्रेणी तथा वृषा ।

दंतीद्वयं सरं पाके रसे च कटुदीपनम् ॥ १९७ ॥

गुदांकुराश्मशूलार्शःकंडुकुष्ठविदाहलुत् ।

तीक्ष्णोष्णं हंति पित्तास्रकफशोथोदराक्रिमीन् ॥ १९८ ॥

लघुदंतीफलम् ।

क्षुद्रदंतीफलं तु स्यान्मधुरं रसपाकयोः ।

शीतलं सृष्टविष्मूत्रं गरशोथकफापहम् ॥ १९९ ॥

वृहदंतीफलम् ।

जयपालो दंतिबीजं विख्यातं तित्तीफलम् ।

जयपालो गुरुः स्निग्धो रेचनः पित्तकफापहा ॥ २०० ॥

१ दे० भा० दंदनदाना, तिरिफल । वं० भा० दंती छाछ । फा० दंद ।

इं० क्रोटन्सीडस । Croten seeds, २ दे० भा० मुगलाई अंड । फा०

शकारहुडुव । इं० दीफिझिकनद् The physicient. ३ दे० भा० जमाल-

गोटा, जप्पोलोटा, वं० भा० जैपाल फा० तुखमेवेदंजीरखताई । इं० पार्जिंग-

क्रोटन् । Parging Broton

ऐंद्रवारुणी ।

ऐंद्रींद्रवारुणी चित्रा गवाक्षी च गवादनी ।

वारुणी च परा शुक्ला सा विशाला महाफला ॥ २०१ ॥

श्वेतपुष्पा मृगाक्षी च मृगैर्वारुर्मृगादनी ॥

गवादनीद्वयं तिक्तं पाके कटुसरं लघु ॥ २०२ ॥

वीर्य्योष्णं कामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् ।

श्वासकासापहं कुष्ठगुल्मग्रंथिव्रणप्रणुत ॥ २०३ ॥

प्रमेहमूढगर्भामगंडामयविषापहम् ।

नीली ।

नीली तु नीलिनी तूणी काला दोला च नीलिका ॥ २०४ ॥

रंजनी श्रीफली तुत्था ग्रामीणा मधुपर्णिका ।

क्लीतिका कालकेशी च नीलपुष्पा च सा स्मृतौ ॥ २०५ ॥

नीलनी रेचनी तिक्ता केश्या मोहभ्रमापहा ।

उष्णा हंत्युदरप्लीहवातरक्तकफानिलान् ॥ २०६ ॥

आमवातमुदावर्तं मदं च विषमुद्धतम् ।

शरपुंखा ।

शरपुंखा प्लीहशत्रुनीलवृक्षाकृतिश्च सा ॥ २०७ ॥

१. दे० भा० तुम्मा, फरफेंदु, बृहती, लघ्वी, बं० भा० कुंदुरुकी, फा० खुर्च्या जातलख, इ० कोलोसिथ, Colocynth. (शुद्धि) स्विन्नं गोमयतोये वा दुग्धे वा जयपालकम् । खर्परे मृदुघृष्टं तन्निस्नेहं शुद्धिमृच्छति ॥ २ दे० भा० नील, नीलबुन्हा, बृहती, लघ्वी, कालादाना । बं० भा० नीलगुच्छी, इ० इंडिगो । Indigo. ३ दे० भा० ज्ञाणा, झोजर । बं० भा० वननील, इ० परपलटेप्रोझिया । PurPletephrosia. श्वेतशरपुंख, सितसायका, सित-पुंखा, श्वेतपुंखा, शुभ्रपुंखा, कंठपुंखा ।

शरपुंखो यकृतप्लीहगुल्मव्रणविषापहा ।

तिक्तः कषायः कासाम्नासज्वरहरो लघुः ॥ २०८ ॥

वृद्धदारकः ।

वृद्धदारक आवेगी छागांत्री रिण्यगंधिका ।

वृद्धदारकः कषायोष्णः कटुतिक्तो रसायनः ॥ २०९ ॥

वृण्यो वातामवातार्शःशोथमेहकफप्रणुत् ।

शुक्रायुर्बलमेधाग्निस्वरकांतिकरः सरः ॥ २१० ॥

यवासा दुरालभा ।

यासो यवासो दुःस्पर्शः धन्वयासः कुनाशकः ।

दुरालभा दुरालभा समुद्रांता च रोदनी ॥ २११ ॥

गांधारी कच्छुरानंता कषाया दुरभा ग्रहा ।

यासः स्वादुःसरस्तिक्तस्तुवरः शीतलो लघुः ॥ २१२ ॥

कफमेदोमदभ्रांतिपित्तास्रकुष्ठकासजित् ।

तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरः स्मृतः ॥ २१३ ॥

यवासस्य गुणैस्तुल्या बुधैरुक्ता दुरालभा ।

मुंडी ।

मुंडी भिक्षुरपि प्रोक्ता श्रावणी च तपोधना ॥ २१४ ॥

श्रावणाद्वा मुंडितिका तथा श्रवणशीर्षिका ।

महाश्रावणिका त्वन्या सा स्मृता भूकदंबिका ॥ २१५ ॥

कदंबपुष्पिका च स्यादव्यथालितपस्विनी ।

मुंडितिका कटुः पाके वीर्य्योष्णा मधुरा लघुः ॥ २१६ ॥

मेध्या गंडापचीकुष्ठकृमियोन्यर्तिपांडुलुत् ।

१ दे० भा० मिधरा । श्वेत कृष्ण, वं० भा० वितारक । २ दे० भा० जवांह । जवांसा । वं० भा० यवासा । फा० फराक्नुन ३ दे० भा० धमांह । रक्तपुष्प होता है । वं० भा० दुरालभा । फा० वादावर्द । ४ दे० भा० मुंडी, गोरखमुंडी । वं० भा० मुंडीरी, थुलकुडी ।

श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदातिहत् ॥ २१७ ॥
महामुंडी च तुल्या हि गुणैरुक्ता महर्षिभिः ।

अपामार्गः ।

अपामार्गस्तु शिखरी ह्यधःशल्यो मयूरकः ॥ २१८ ॥
मर्कटी दुर्ग्रहा चापि किण्वी खरमंजरी ॥ २१९ ॥
अपामार्गः सरस्तीक्ष्णः दीपनस्तिक्तकः कटुः ।
पाचनो नावनश्छर्दिकफमेदोनिलापहा ॥ २२० ॥
निहंति हृद्रुजाध्मानार्शःकंडुशूलोदरापचीः ।

रक्तापामार्गः ।

रक्तोऽन्यो वशिरो वृन्तफलो धामार्गवोपि च ॥ २२१ ॥
प्रत्यक्षपर्णी केशपर्णी कथिता कपिपिप्पला ।
अपामार्गोरुणो वातविष्टंभी कफहृद्भिः ॥ २२२ ॥
रूक्षः पूर्वगुणैरन्यूनः कथितो गुणवेदिभिः ।
अपामार्गफलं स्वादु रसे पाके च दुर्जरम् ॥ २२३ ॥
विष्टंभि वातलं रूक्षं रक्तपित्तप्रसादनम् ।

कोकिलाक्षः ।

कोकिलाक्षस्तु काकेशुरिक्षुरः क्षुरिकः क्षुरः ॥ २२४ ॥
भिक्षुः कांडेशुरप्युक्तः इक्षुगंधेषुवालिका ।
क्षुरकः शीतलो वृष्यः स्वाद्वम्लः पिच्छलस्तथा ॥ २२५ ॥
तिक्तो वातामशोथाश्मत्तृष्णादृष्टचनिलास्रजित् ।

अस्थिसंहारी ।

ग्रंथिमानस्थिसंहारी वज्रांगी चास्थिशृङ्खला ॥ २२६ ॥

१ दे० भा० अपुठकंडा, लटजीरा। ओंगा । वं० भा० आपांडग । फा० खार-
वासगोता । इं० रफ्चेफ्टी । तंत्रांतरे। मयूरचूलिका चेति नततंडुकश्च सः । २ दे०
भा० लालपुठकंडा । लालचिरचिटा । वं० भा० रांगाआपांग ३ दे० भा० ताल-
मखाना । कैल्या । वृद्ध, हस्वा । वं० भा० कुलेकांटा । इं० लांगलिवुवालैरिया ।
Longiliwowerleiria. ४ दे० भा० हाडजोड । कुही वं० भा० हाडभांगा ।

अस्थिसंहारिकः प्रोक्तो वातश्लेष्महरोस्थियुक् ।
 उष्णः सरः कृमिघ्नश्च दुर्नामा चाक्षिरोगहत ॥ २२७ ॥
 रूक्षः स्वादुर्लघुर्वृष्यः पाचनः पित्तलः स्मृतः ।
 भिषग्वरैर्यथानाम फलश्चापि प्रकीर्तितम् ॥ २२८ ॥
 क्रांडं त्वग्विरहितमस्थिशृङ्खलाया
 माषार्द्रं द्विदलमकंचुकं तदर्द्धम् ।
 संपिष्टं तदनु ततस्तिलस्य तैले
 संपक्वं वटकमतीव वातहारि ॥ २२९ ॥

महाजालनी ।

महाजालनिका चर्मरंगः स्यान्न्रीलपुष्पिका ।
 आवर्तकी तिंडुकिनी त्रिभांडी रक्तपुष्पिका ॥ २३० ॥
 महाजालनिका तिक्ता रेचनी कफपित्तजित् ।
 हन्ति दाहोदरानाहशोफकुष्ठकफज्वरान् ॥ २३१ ॥

कुमारी ।

कुमारी गृहकन्या च कन्या घृतकुमारिका ।
 कुमारी भेदनी शीता तिक्ता नेत्र्या रसायनी ॥ २३२ ॥
 मधुरा बृंहणी बल्या वृष्या वातविषप्रणुत् ।
 गुल्मप्लीहयकृद्बृद्धिकफज्वरहरी भवेत् ॥ २३३ ॥
 ग्रंथ्यग्निदग्धविस्फोटपीतरक्तत्वगामयान् ।

श्वेतपुनर्नवा ।

पुनर्नवा श्वेतमूला शोथघ्नी दीर्घपत्रिका ॥ २३४ ॥

१ दे० भा० सरना, सरनामकी । वं० भा० सोनामुखी । इ० टिनेवे-
 लीसिना । २ दे० भा० कुआरगंदल, ग्वारपाठा । वं० भा० घृतकुमारी ।
 फा० द्रखतेसिन । ई० वार्वेडोज् आलोइ । Barbadoesaloes. ३ दे० भा०
 इटसिट, विसखपरा, श्वेत, रक्त, नील । वं० भा० गादापुण्या, इ० स्प्रेडिंग्-
 होंगविड् । Spreading Hond?

कटुः कषायातुरसा पांडुघ्नी दीपनी सरा ।

शोफानिलगरश्लेष्महरी व्रणयोदरप्रणुत ॥ २३५ ॥

रक्तपुनर्नवा ।

पुनर्नवापरा रक्ता रक्तपुष्पा शिवाटिका ।

शोथघ्नी क्षुद्रवर्षाभूर्वृषकेतुः कठिल्लिका ॥ २३६ ॥

पुनर्नवारुणा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः ।

वातला ग्राहिणी श्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥ २३७ ॥

एलायकः ।

एलायकः कृष्णबालः कुमारी सारतोद्भवः ।

प्रसारणी ।

प्रसारणी राजबला भद्रपर्णी प्रतानिनी ॥ २३८ ॥

सरणी सारणी भद्रबला चापि कटुभरा ।

प्रसारणी गुरुवृष्या बलसंधानकृत्सरा ॥ २३९ ॥

वीर्योष्णा वातहृत्तिक्ता वातरक्तकफापहा ।

* कृष्णसारिवा ।

कृष्णा तु सारिवा श्यामा गोपी गोपवधूश्च सा ॥ २४० ॥

धवला सारिवा गोपी गोपकन्या च शारदी ।

स्फोटा श्यामा गोपवल्ली लता स्फोता च चंदना ॥ २४१ ॥

सारिवा ।

सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ।

१ दे० भा० एलुवा । फा० मुसवीर । इ० सैकोटनआलाइन । secotrine
aloes. २ दे० भा० खीप, पसरन, सरहटी, चांदवेल वं० गंधमादुलिया ।
तंत्रांतरे—कल्याणी हेमपत्री च रेचनी स्वर्णपुत्रिका । * हेमेडिसरुट जामुन खुंव ।
प० भा० टेरनी । ३ दे० भा० साई, करिष्याससांज । वं० भा० अनंतमूल, इ०
इंडिअन्सारिसापरेला । Indian sarsaparilla, इसकी जटा, सालसापरेला
इयमपि जंघुवत्पत्रा दुग्धगर्भाव्रततिः ।

अग्निमांद्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम् ॥ २४२ ॥
दोषत्रयास्त्रप्रदरज्वरातिसारनाशनम् ।

भृंगराजः ।

भृंगराजो भृंगरजो मार्कवो भृंग एव च ॥ २४३ ॥

अंगारकः केशराजो भृंगारः केशरंजनः ।

भृंगारः कटुकस्तिक्तो रूक्षोष्णः कफवातनुत् ॥ २४४ ॥

केश्यस्त्वच्यः कृमिश्वासकासशोथामपांडुनुत् ।

दंत्यो रसायनो बल्यः कुष्ठनेत्रशिरोर्तिनुत् ॥ २४५ ॥

शणपुष्पी ।

शणपुष्पी स्मृता घंटा रवा शणसमाकृतिः ।

शणपुष्पी कटुस्तिक्ता वामनी कफपित्तजित् ॥ २४६ ॥

त्रायमाणा ।

बलभद्रा त्रायमाणा त्रायंती गिरिसानुजा ।

त्रायंती तुवरा तिक्ता सरा पित्तकफापहा ॥ २४७ ॥

ज्वरहृद्भोगुल्माशोभ्रमशूलविषप्रणुत् ।

मूर्वा ।

मूर्वा मधुरसा देवी मोरटा तेजनी सुवा ॥ २४८ ॥

मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।

मूर्वा सरा गुरुः स्वादुस्तिक्ता पित्तास्रमेहनुत् ॥ २४९ ॥

त्रिदोषतृष्णाहृद्भोगकुष्ठज्वरापहा ।

१ दे० भा० भंगरा श्वेत, पीत, कृष्ण, वं० भा० भीमराज, फा० जमर्दर, इ० ट्रेलिंग इक्लिप्टा । Traling Eclipta. २ दे० भा० ज्ञनज्ञनिया, वन-
चाण, छोटीशण, श्वेतण । वं० भा० ज्ञनज्ञने । फा० लादना । इ० फलाक्स-
हेंप । Flax Hemp. ३ दे० भा० देववला, वं० भा० बहुला, फा० अस्-
प्रक्त । ४ दे० भा० चूरनहार, मोड, वं० भा० मुर्गा,

काकमाची ।

काकमाची ध्वांक्षमाची काकाद्वा चैव वायसी ॥ २५० ॥

काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ।

तिक्ता रसायनी शोथकुष्ठाशोर्ज्वरमेहजित् ॥ २५१ ॥

कटुर्नेत्रहिता हिक्काछर्दिहृद्रोगनाशनी ।

काकनासा ।

काकनासा तु काकांगी काकतुंडफला च सा ॥ २५२ ॥

काकनासा कषायोष्णा कटुका रसपाकयोः ।

कफघ्नी वामनी तिक्ता शोथार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ॥ २५३ ॥

काकजंघा ।

काकजंघा नदीकांता काकतिक्ता सुलोमशा ।

पारावतपदी दासी काका चापि मंकीर्तिता ॥ २५४ ॥

काकजंघा हिमा तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ।

निहंति ज्वरकुष्ठास्त्रिक्रिमिकंडुविषप्रणुत् ॥ २५५ ॥

नागपुष्पी ।

नागपुष्पी श्वेतपुष्पा नागरी रामदूतिका ।

नागरी रोचनी तिक्ता तीक्ष्णोष्णा कफपित्तनुत् ॥ २५६ ॥

विनिहंति विषं शूलं योनिदोषवमिक्रिमीन् ।

मेषशृंगी ।

मेषशृंगी विषाणी स्यान्मेषवल्लयाजशृंगिका ॥ २५७ ॥

मेषशृंगी रसे तिक्ता वातला श्वासकासहृत् ।

रूक्षा पाके कटुस्तिक्ता व्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत् ॥ २५८ ॥

१ दे० भा० कैचमैच, मकोय । फा० रोवातरीखा इ० नाइट् सेड त्राय-
माण, बं० वलाडुसुर । सिलहड आदिग्राम हिमालय प्रांतमें असफाकनाभ इसके
फूलोंसे वस्त्र रंजन किये जाते हैं । २ दे० भा० कोआडोडी । बं० भा० केड-
पाटंटी । ३ दे० भा० मसी । बं० भा० कांटा गुडकाडली । ४ दे० भा०
मेढासिंही, ककडसिंगी । बं० भा० छागलबेटे । फा० किस्त, इ० रूडटी ।

मेषशृंगीफलं तिक्तं कुष्ठमेहकफप्रणुत् ।

दीपनं स्रंसनं कासकृमित्रणविषापहम् ॥ २५९ ॥

हंसपदी ।

हंसपादी हंसपदी कीटमाता त्रिपादिका ।

हंसपादी गुरुः शीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ॥ २६० ॥

विसर्पदाहातीसारलताभूतादिरोगनुत् ।

सोमलता ।

सोमवल्ली सोमलता सोमक्षीरी द्विजप्रिया ॥ २६१ ॥

सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुतिक्ता रसायनी ।

आकाशवल्ली ।

आकाशवल्ली तु बुधैः कथितामरवल्ली ॥ २६२ ॥

खवल्ली ग्राहणी तिक्ता पिच्छिलाक्ष्यामयापहा ।

तुवराग्निकरी हृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ २६३ ॥

पातालगरुडी ।

छिलहिंडो महामूलः पातालगरुडाह्वयः ।

छिलहिंडः परं वृष्यः कफघ्नः पवनापहा ॥ २६४ ॥

वंदा ।

वंदा वृक्षादनी वृक्षभक्ष्या वृक्षरुहापि च ।

वंदाकः स्याद्विमस्तिक्तः कषायो मधुरो रसे ॥ २६५ ॥

मांगल्यः कफवातास्त्ररक्षोत्रणविषापहा ।

१ दे० भा० कीटमारिका, वं० भा० गोपालेलता फा० परस्या उशान
इ० मेडनूहेर । २ दे० भा० सोमलता । वं० भा० सोमलता । ३ दे० भा०
निराधार, आकाशवेल । वं० भा० आलोकलता । ४ दे० भा० छिरेटा
प० भा० तरड । वं० भा० शिल्दिदा । ५ दे० भा० वांदा । वं०
भा० मांदा ।

वटपत्री ।

वटपत्री तु कथिता मोहनी रेवती^१ बुधैः ॥ २६६ ॥

वटपत्री कषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा ।

हिंशुपत्री ।

हिंशुपत्री तु कवरी पृथ्वीका पृथुका पृथुः ॥ २६७ ॥

हिंशुपत्री भवेद्द्रुच्या तीक्ष्णोष्णा पाचनी कटुः ।

हृद्रस्तिरुग्विवंधार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ २६८ ॥

वंशपत्री ।

वंशपत्री वेणुपत्री पिंगा हिंशुशिवाटिका ।

हिंशुपत्रीगुणा विज्ञैर्वंशपत्रीव कीर्तिता ॥ २६९ ॥

मत्स्याक्षी ।

मत्स्याक्षी बाह्विकी मत्स्यगंधा मत्स्यादनीति च ।

मत्स्याक्षी ग्राहणी सीता कुष्ठपित्तकफास्रजित् ॥ २७० ॥

लघुस्तित्ता कषाया च स्वाद्री कटुविषाकिनी ।

सर्पाक्षी ।

सर्पाक्षी स्यात्तु गंडाली तथा नाडीकलायका ॥ २७१ ॥

सर्पाक्षी कटुका तिक्ता सोष्णा कृमिनिवृन्तनी ।

वृश्चिकोदुरुसर्पाणां विषघ्नी व्रणरोपणी ॥ २७२ ॥

शंखपुष्पी ।

शंखपुष्पी तु शंखाद्वा मांगल्यकुसुमापि च ।

शंखपुष्पी सरा मेध्या वृष्या मानसरोगहृत् ॥ २७३ ॥

रसायनी कषायोष्णा स्मृतिकांतिबलाग्निदा ।

दोषापस्मारभूतादिकुष्ठक्रिमिविषप्रणुत् ॥ २७४ ॥

१ दे० भा० वटपत्री । वं० भा० वटपाथरकुचि । इ० लेकोपेडियम् ।

२ मरहटी बाफली । ३ दे० भा० मछेली, गोरखापान, गोरखतंबोल, तरक-
लासाग । वं० भा० शालिचवाशमठ । ४ मरहटी, गिनी, जैजैवंती, नेडरीबेल,
सहचरी । ५ दे० भा० शंखाहुली, कौडिपाली, भोयमुडक । वं० भा० डान-
कुनी । दुपहरियाफूल, सुफैदफूल ।

अर्कपुष्पी ।

अर्कपुष्पी क्रूरकर्मा पयस्या जलकामुका ।

अर्कपुष्पी कृमिश्लेष्ममेहपित्तविकाराजित ॥ २७५ ॥

लज्जालुः ।

लज्जालुर्हि शमीपत्रा समंगा जलकर्णिका ।

रक्तपादी नमस्कारी नाम्ना खदिरकेत्यपि ॥ २७६ ॥

लज्जालुः शीतला तित्ता कषाया कफपित्तजित् ।

रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान्विनाशयेत् ॥ २७७ ॥

तद्भेदः अलंबुषा ।

अलंबुषा खरत्वक् च तथा मेदो गला स्मृता ।

अलंबुषा लघुः स्वादुः कृमिपित्तकफापहा ॥ २७८ ॥

दुग्धिका ।

दुग्धिका स्वादुपर्णी स्यात्क्षीरावी क्षीरिवी तथा ।

दुग्धिकोष्णा गुरू रुक्षा वातला गर्भकारिणी ॥ २७९ ॥

स्वादुक्षीरा कटुस्तित्ता सृष्टमूत्रमलापहा ।

स्वादुर्विष्टंभनी वृण्या कफकोष्ठकृमिप्रणुत ॥ २८० ॥

भूम्यामलकी ।

भूम्यामलकिका प्रोक्ता शिवा तामलकीति च ।

बहुपत्रा बहुफला बहुवीर्या जटापि च ॥ २८१ ॥

भूधात्री वातकृत्तित्ता कषाया मधुरा हिमा ।

पिपासाकासपित्तास्रकफपांडुक्षतापहा ॥ २८२ ॥

१ दे० भा० अंधाहुली । २ दे० भा० लजवंती, लुईमुई । वं० भा० लाजुक । लज्जालु विपरीतलज्जालु अलंबुषा । ३ दे० भा० दूधी, दोधक । तंत्रांतरे । नागार्जुनी पयोवर्षा योगिनी लघुदुग्धिका । वं० भा० दुदूले । फा० निशाशत । ४ दे० भा० पाताल आंवला । वं० भा० भूई आमला ।

ब्राह्मी ।

ब्राह्मी कपोतवंका च सोमवल्ली सरस्वती ।

* ब्रह्ममंडूकी ।

मंडूकपर्णी मांडूकी त्वाष्ट्री दिव्या महौषधी ॥ २८३ ॥

ब्राह्मी हिमा सरा तिक्ता लघुर्मेध्या च शीतला ।

कषाया मधुरा स्वादुपाका पुष्पा रसायनी ॥ २८४ ॥

स्वय्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपांडुमेहास्त्रकासजित् ।

विषशोथज्वरहरी तद्वन्मंडूकपर्णिका ॥ २८५ ॥

द्रोणपुष्पी ।

द्रोणा च द्रोणपुष्पी च फलपुष्पा च कीर्तिता ।

द्रोणपुष्पी गुरुः स्वादुः रूक्षोष्णा वातपित्तकृत् ॥ २८६ ॥

सतीक्ष्णा लवणा स्वादुपाका कट्वी च भेदनी ।

कफामकामलाशोथतमकश्वासजंतुजित् ॥ २८७ ॥

सुवर्चला ।

सुवर्चला सूर्यभक्ता वरदा वदरापि च ।

सूर्यावर्ता रविप्रीता परा ब्रह्मसुवर्चला ॥ २८८ ॥

सुवर्चला हिमा रूक्षा स्वादुपाका सरा गुरुः ।

अपित्तला कटुः क्षारा विष्टंभकफवातजित् ॥ २८९ ॥

अन्या तिक्ता कषायोष्णा सरा रूक्षा लघुः कटुः ।

निहन्ति कफपित्तास्त्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥ २९० ॥

विस्फोटकुष्ठमेहास्त्रयोनिरुक्कृमिपांडुताः ।

१. दे० भा० ब्रह्मी । अस्या भेदः ब्रह्ममंडूकी । वं० भा० थुलकुडि ।
फा० जरनव । इ० इंडियन् पेनीवर्ट । * प० भा० मीडकी । २ दे० भा०
गुमा, मल्लडोडा । वं० भा० घञ्घसे । पत्र । द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रूक्षं गुरु च
पित्तकृत् । भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु । ३ दे० भा० हुलहुल वं०
भा० वशनलते । फा० गुले आफताब परस्त । इ० संप्लावर । Samplawar.

बंध्याककोटका ।

बंध्याककोटकी देवी कन्या योगेश्वरीति च ॥ २९१ ॥

नागारिर्नागदमनी विषकंटकिनी तथा ।

बंध्या ककोटकी लब्धी कफनुद्व्रणशोधनी ॥ २९२ ॥

सर्पदर्पहरी तीक्ष्णा विसर्पविषहारिणी ।

मार्कंडिका ।

मार्कंडिका भूमिचरी मार्कंडी मृदुरेचनी ॥ २९३ ॥

मार्कंडिका कुष्ठहरी ऊर्ध्वाधःकायशोधनी ।

विषदुर्गंधकासघ्नी गुल्मोदरविनाशनी ॥ २९४ ॥

देवदाली ।

देवदाली तु वेणी स्यात्ककोटी च गरागरी ।

देवताडोवृत्तकोषस्तथा जीमूत इत्यपि ॥ २९५ ॥

पीतापरा खरस्पर्शा विषघ्नी गरनाशनी ।

देवदाली रसे तिक्ता कफार्शःशोफपांडुताः ॥ २९६ ॥

नाशयेद्दामनी तिक्ता क्षयहिक्काकृमिज्वरान् ।

देवदालीफलं तिक्तं कृमिश्लेष्मविनाशनम् ॥ २९७ ॥

संसर्गं गुल्मशूलघ्नमर्शोघ्नं वातजित्परम् ।

जलपिप्पली ।

जलपिप्पल्यभिहिता शारदी शकुलादनी ॥ २९८ ॥

मत्स्यादनी मत्स्यगंधा लांगलीत्यपि कीर्तिता ।

१ दे० मा० बांझखाखसा । अकलकौडा । वं० मा० तिक्तांकंडी ।

(कंद) बंध्याककोटकीकंदो हन्ति श्लेष्मविषद्वयम् । २ दे० मा० बहुगुणी,
भूर्झखाखसा । वं० मा० कांकरोलमेद । इं० आलेकजांडियन् । ३ दे० मा०
सौनैया । ववरवेळ, वंदाळडोडा । ३ मेदवं० मा० देयाताडा । ५० त्रिस्टा-
ल्ल्युफा । देवदालीकपायेन शौचमाचरतां नृणाम् । किंवा तद्रूमसेकाद्विः कुतः
स्युर्गुदजांकुराः । ४ दे० मा० जलपीपल, बुक्कन । वं० मा० पनसिगा । फा०
पनसिगा । इं० परपल्लिण्या ।

जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः ॥ २९९ ॥

संग्राहणी हिमा रुक्षा रक्तदाहव्रणापहा ।

कटुपाकरसा रुच्या कषाया वह्निवर्द्धनी ॥ ३०० ॥

गोजिह्वा ।

गोजिह्वा गोजिका गोजी दार्विका खरपर्णिनी ।

गोजिह्वा वातला शीता ग्राहणी कफपित्तनुत् ॥ ३०१ ॥

हृद्या प्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरी लघुः ।

कोमला तुवरा तिक्ता स्वादुपाकरसा स्मृता ॥ ३०२ ॥

नागदमनी ।

विज्ञेया नागदमनी बला मोटा विषापहा ।

नागपुष्पी नागपत्री महायोगेश्वरीति च ॥ ३०३ ॥

बला मोटा कटुस्तिक्ता लघुः पित्तकफापहा ।

सूत्रकृच्छ्रव्रणान् रक्षो नाशयेज्जालगर्दभम् ॥ ३०४ ॥

सर्वग्रहप्रशमनी विशेषविषनाशनी ।

जयं सर्वत्र कुरुते धनदा सुमतिप्रदा ॥ ३०५ ॥

वेलंतरी ।

वेलंतरो जगति वीरतरुः प्रसिद्धः ।

श्वेतासितारुण विलोहितनीलपुष्पः ।

स्याज्जातितुल्यकुसुमः शमिसूक्ष्मपत्रः ।

स्यात्कण्टकी सजलदेशज एष वृक्षः ॥ ३०६ ॥

वेलंतरो रसे पाके तिक्तस्तृष्णाकफापहा ।

मूत्रावाताश्मजिद्ग्राही योनिमूत्रानिलार्तिजित् ॥ ३०७ ॥

छिक्नी ।

छिक्नी क्षवकृत्तीक्ष्णा छिक्निका घ्राणदुःखदा ।

१ दे० भा० गाजुबान, गोभी, वं० भा० दाडियाशाक । फा० कमलमरुभी ।

२ दे० भा० नागदौन । वं० भा० नागदना । विजलदेशज इत्यपि पाठः ।

३ दे० भा० नकछिक्नी । वं० भा० हांचुटी । फा० बेरगाउजवां ।

छिकनी कटुका रुच्या तीक्ष्णोष्णा वह्निपित्तकृत् ॥ ३०८ ॥

वातरक्तहरीकुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ ३०९ ॥

वर्वरी ।

वर्वरी कवरी तुंगी खरपुष्पाजगंधिका ।

वर्वरी तु लघू रुच्या हृद्या च कफवातहृत् ॥ ३१० ॥

ककुंदरः ।

ककुंदरस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः ।

ककुंदरः कटुस्तिक्तो ज्वररक्तकफापहा ॥ ३११ ॥

तन्मूलमार्द्रं निक्षिप्तं वदने मुखशोषहृत् ।

सुदर्शना ।

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राह्वा मधुपर्णिका ॥ ३१२ ॥

सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोफास्रवातजित् ।

आखुकर्णी ।

आखुकर्णी त्वाखुकर्णपर्णिका भूदरीभवा ॥ ३१३ ॥

आखुकर्णी कटुस्तिक्ता कषाया शीतला लघुः ।

विषाके कटुका मूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥ ३१४ ॥

मयूरशिखा ।

मयूराह्वशिखा प्रोक्ता सहस्रांघ्रिर्मधुच्छदा ।

नीलकंठशिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥ ३१५ ॥

इति गुडूच्यादिर्वर्गः ।

१ ब्रह्म-तुलसी । देशांतरभाषा । निगंधवावरी । कान फोडी । इसका बीज तुखमरेंहा । २ दे० भा० कुरुरोंदा । वं० भा० कुरुरशीका । फा० कमाकिसस । कुकुडछिडी । कूकरमंगरा । ३ सुदर्शन दे० भा० वं० भा० सुदर्शनगुलंच । पद्मगुलंच । ४ दे० भा० मूसाकनी । वृहती, लघ्वी च । वं० भा० इंदुरकानी । फा० गोरोमुखसतर । ५ दे० भा० मोरवेल । लालमुर्गी, मोरशिखा । वं० भा० मयूरशिखा । फा० ससनाने, असलान ।

पुष्पवर्गः ।

तत्रादौ कमलस्य नामानि गुणाश्च ।

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविंदं महोत्पलम् ।

सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥ १ ॥

पंकेरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ।

विसप्रसूनराजीवपुष्करांभोरुहाणि च ॥ २ ॥

कमलं शीतलं वर्ण्यं मधुरं कफपित्तजित् ।

तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥ ३ ॥

विशेषतः सितं पद्मं पुंडरीकमिति स्मृतम् ।

रक्तं कोकनदं ज्ञेयं नीलमिंदीवरं स्मृतम् ॥ ४ ॥

धवलं कमलं शीतं मधुरं कफपित्तजित् ।

तस्मादल्पगुणं किञ्चिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥ ५—६ ॥

पद्मिनी ।

मूलनालदलोत्फुल्लफलैः समुदिता पुनः ।

पद्मिनी प्रोच्यते प्राज्ञैर्विसिन्यादिश्च सा स्मृता ॥ ७ ॥

आदिशब्दात् नलिनीकमलिनीत्यादिः ।

पद्मिनी शीतला गुर्वी मधुरा लवणा च सा ।

पित्तसृक्कफनुद्रूक्षा वातविष्टंभकारिणी ॥ ८ ॥

नवपत्रादि ।

संवर्तिका नवदलं बीजकोशोब्जकर्णिका ।

किञ्जल्कः केसरः प्रोक्तः मकरंदो रसः स्मृतः ॥ ९ ॥

१ वं० भा० नीलशुंदि । फा० नीलोपर । इ० लोटस । Lotus. (कम-
लगट्टा) पद्मबीजं तु पद्माक्षं कलोपं पद्मकर्कटी । २ अरविंदहतः शीतो मकरंदो-
तिबृंहणः । त्रिदोषशमनः सर्वनेत्रामयनिषूदनः ॥ १ ॥ (पद्मकंदः) पद्मादिकंदः
शालकं करहाटश्च कथ्यते । मृणालमूलं भिस्साडं लाजलकं च कथ्यते ॥ २ ॥
दे० भा० मसीडा । वं० भा० पद्मेरगेंडे ।

पद्मनालं मृणालं स्यात् तथा विसमिति स्मृतम् ।

संवर्तिका हिमा तिक्ता कषाया दाहवृष्टप्रणुत् ॥ १० ॥

मूत्रकृच्छ्रगदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी ।

पद्मस्य कर्णिका तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ॥ ११ ॥

सुखवैशद्यकृच्छ्रघ्नी तृष्णास्रकफपित्तनुत् ।

किंजल्कः शीतलो वृष्यः कषायो ग्राहकोऽपि सः ॥ १२ ॥

कफपित्ततृषादाहरत्ताशोविषशोथजित् ।

मृणालं शीतलं वृष्यं पित्तदाहास्रजिदगुरुः ॥ १३ ॥

दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलकफप्रदम् ।

संग्राहि मधुरं रुक्षं शालूकमपि तद्गुणम् ॥ १४ ॥

स्थलकमलिनी ।

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथा पद्मा च शारदी ।

पद्मालुण्णा कटुस्तिक्ता कषाया कफवातजित् ॥ १५ ॥

मूत्रकृच्छ्राश्मशूलघ्नी श्वासकासविषापहा ।

कुमुदम् ।

श्वेतं कुवलयं प्रोक्तं कुमुदं कैरवन्तथा ॥ १६ ॥

कुमुदं पिच्छिलं स्निग्धं मधुरं ह्लादि शीतलम् ।

कुमुदिनी ।

कुमुद्वती कैरविका तथा कुमुदिनीति च ॥ १७ ॥

सा तु मूलादिसर्वांगैरुदिता समुदिता बुधैः ।

यन्निन्या ये गुणाः प्रोक्ताः कुमुदिन्यामपि ते स्मृताः ॥ १८ ॥

१ दे० भा० कमलकी डंडी । सूक्ष्म, मृणाल । वं० भा० स्थूलाविस ।
 (राजनिवट्ट) शालूकं कटु विष्टंभि रुक्षं रुच्यं कफापहम् । कषायं कासपित्तघ्नं
 तृष्णादाहनिवारणम् ॥ १ ॥ २ दे० भा० सुफेदकमल । ३ दे० भा० भभूल ।
 कोईवाववूला । भवेत्कुमुद्वतीवीजं स्वादु रुक्षं हिमं गुरु । वं० भा० श्वेतशुंदी ।

जलकुंभी सेवालम् ।

वारिपर्णी कुंभिका स्याच्छेवालं शैवलं च तत् ।

वारिपर्णी हिमा तिक्ता लघ्वी स्वाद्वी सरा कटुः ॥ १९ ॥

दोषत्रयहरी रूक्षा शोणितज्वरशोषकृत् ।

शैवालं तुवरं तिक्तं मधुरं शीतलं लघु ॥ २० ॥

स्निग्धं दाहतृषापित्तरक्तज्वरहरं परम् ।

शतपत्री ।

शतपत्री तरुण्युक्ता कर्णिका चारुकेसरा ॥ २१ ॥

सहाकुमारी गंधाढ्या लाक्षापुष्पातिमंजुला ।

शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघुः ॥ २२ ॥

दोषत्रयास्त्रजिद्वर्ण्या तिक्ता कट्वी च पाचनी ।

वासंती ।

नैपाली कथिता तज्ज्ञैः सप्तला नवमालिका ॥ २३ ॥

वासंती शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयास्त्रजित् ।

वार्षिकी ।

श्रीपदी षट्पदा नन्दा वार्षिकी मुक्तबन्धना ॥ २४ ॥

वार्षिकी शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयापहा ।

कर्णाक्षिमुखरोगघ्नी तत्तैलं तद्रुणं स्मृतम् ॥ २५ ॥

स्वर्णजातिका ।

जातिर्जाती च लुनना मालती राजपुत्रिका ।

चेतकी हृद्यगंधा च सा पीता स्वर्णजातिका ॥ २६ ॥

जातीयुगं तिक्तमुष्णं तुवरं लघु दोषजित् ।

शिरोक्षिमुखदन्तार्तिविषकुष्ठव्रणास्त्रजित् ॥ २७ ॥

१ दे० भा० गुलाब । मौसमी गुलाब । वं० भा० सेवती । फा० गुले
सुखे । इ० केवेजरोज । २ दे० भा० नेवारी । वं० भा० नेओयार । ३ दे०
भा० मोतिया । खेल । वं० भा० वेलकुलगाछ । ४ दे० भा० जाई, पीली
जाई । चवेली । वं० भा० चामिनी । इ० स्नेनिश आस्सीन् ।

यूथिका ।

यूथिका गणकांबष्टा सा पीता हेमपुष्पिका ।

यूथीयुगं हिमं तिक्तं कटुपाकरसं लघु ॥ २८ ॥

मधुरं तुवरं हृद्यं पित्तघ्नं कफवातलम् ।

व्रणास्त्रमुखदंताक्षिशिरोरोगविषापहम् ॥ २९ ॥

चांपेयः ।

चांपेयश्चंपकः प्रोक्तो हेमपुष्पश्च स स्मृतः ।

एतस्य कलिका गंधफलोति कथिता बुधेः ॥ ३० ॥

चंपकः कटुकास्तित्तः कषायो मधुरो हिमः ।

विषक्रिमिहरः कृच्छ्रकफवातास्त्रपित्तजित् ॥ ३१ ॥

वकुलः ।

वकुलो मधुगंधश्च सिंहकेसरकस्तथा ।

वकुलस्तुवरोऽनुष्णः कटुपाकरसो गुरुः ॥ ३२ ॥

कफपित्तविषश्चित्रकृमिदंतगदापहा ।

वैकः ।

शिवमल्ली पाशुपतराकाष्ठीलो वको वसुः ॥ ३३ ॥

वकोऽनुष्णः कटुकास्तित्तः कफपित्तविषापहा ।

योनिदोषतृषादाहकुष्ठशोथास्त्रनाशनः ॥ ३४ ॥

कंदंवः ।

कंदंवः प्रियको नीपो वृत्तपुष्पो हलिप्रियः ।

१ वं० मा० जूही, स्वर्णजूही । २ दे० मा० चम्पा । वं० मा० चांपा ।

सुफेद चंपा, नीली चंपा सुलतानचंपा । इस के फूलके बीज को नागकेशर

कहते हैं । भूमिचंपा । ३ दे० मा० मौलसरी । वं० मा० वकुलगाल । इं०

सुरीनाममेडलर ४ दे० मा० बड़ी मौलसरी । इं० सुरीनाममेडलर । ५ दे० मा०

कदम्ब । वं० कदमगाल । कंदंव । धाराकंदंव । भूमिकंदंव । राजकंदंव ।

(पुष्पगुण) पुष्पं कषायं मधुरं शीतं पित्तकफास्त्रजित् । (फल) तत्फलं मधुरं

स्निग्धं कषायं विशदं हिमम् । कफपित्तहरं दंत्यं त्रिविधाध्मानवातकृत् ॥

कदंबो मधुरः शीतः कषायो लवणो गुरुः ॥ ३५ ॥

सरोऽवष्टंभकद्रूक्षः कफस्तन्यानि लप्रदः ।

कुब्जकः ।

कुब्जको भद्रतरुणी बृहत्पुष्पोऽतिकेसरः ॥ ३६ ॥

महासहा कंटकाढ्या नीलाऽलिकुलसंकुला ।

कुब्जकः सुरभिः स्वादुः कषायानुरसः सरः ॥ ३७ ॥

त्रिदोषशमनो वृष्यः शीतहर्ता च स स्मृतः ।

मल्लिका ।

मल्लिका मदयंती च शीतभीरुश्च भूपदी ॥ ३८ ॥

मल्लिकोष्णा लघुवृष्या तिक्ता च कटुका हरेत् ।

वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ॥ ३९ ॥

माधवी ।

माधवी स्यात्तु वासंती पुंड्रिको मंडकोऽपि च ।

अतिमुक्तश्चाविमुक्तः कामुको भ्रमरोत्सवः ॥ ४० ॥

माधवी मधुरा शीता लघ्वी दोषत्रयापहा ।

केतकी । स्वर्णकेतकी ।

केतकः सूचिकापुष्पो जंबूकः क्रकचच्छदः ॥ ४१ ॥

सुवर्णकेतकी त्वन्या लघुपुष्पा सुगंधिनी ।

केतकः कटुकः स्वादुर्लघुस्तिक्तः कफापहः ॥ ४२ ॥

उष्णस्तिक्तरसो ज्ञेयः चक्षुष्या हेमकेतकी ।

किंकिरातः ।

किंकिरातो हेमगौरः पीतकः पीतभद्रकः ॥ ४३ ॥

१ दे० मा० सेवतीगुलाब । सदा गुलाब । २ दे० मा० मोतियाभेद
मल्लिकासंभवं पुष्पं तिक्तं जयति मारुतम् । ३ दे० मा० माधवी । ब० मा०
माधवीलता । इ० क्लिप्तुर्दहिपटेज । ४ दे० मा० केउडा । ब० मा० केयागाच
फा० करज । केतकी वातला वृष्या तद्वानिद्राकरी मता । ५ दे० मा० किंकर
भेद ब० मा० देवबावूला । फा० मधिलान ।

किंकिरातो हिमस्तित्तः कषायश्च हरेदसौ ।

कफपित्तपिपासास्रदाहशोषवमिक्रिमीन् ॥ ४४ ॥

कर्णिकारः ।

कर्णिकारः कटुस्तित्तस्तुवरः शोधनो लघुः ॥ ४५ ॥

रंजनः सुखदः शोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ।

अशोकः ।

अशोको हेमपुष्पश्च वंजुलस्ताम्रपल्लवः ॥ ४६ ॥

कंकेलिः पिंडपुष्पश्च गंधपुष्पो नटस्तथा ।

अशोकः शीतलस्तित्तो ग्राही वर्ण्यः कषायकः ॥ ४७ ॥

दोषापचीतृषादाहकृमिशोथविषास्रजित् ।

वाणपुष्पः ।

अम्लातो म्लादनः प्रोक्तस्तथाम्लातक इत्यपि ॥ ४८ ॥

कुरंटको वाणपुष्पः सरावोक्ता महासहा ।

अम्लादनः कषायोष्णः स्निग्धः स्वादुश्च तित्तकः ॥ ४९ ॥

सैरेयकः ।

सैरेयकः श्वेतपुष्पः सैरेया कटिसारिका ।

सहाचरः सहचरः स च भिद्यपि कथ्यते ॥ ५० ॥

कुरंटकोऽत्र पीतः स्याद्रक्तः कुरबकः स्मृतः ।

नीलो वाणो द्वयोरुक्तो दासी चार्तगलश्च सः ॥ ५१ ॥

सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकंडूविषापहः ।

तित्तोष्णो मधुरो दंत्यः सुस्निग्धः केशरंजनः ॥ ५२ ॥

कुंदम् ।

कुंदं तु कथितं माध्यं सदापुष्पं च तत्स्मृतम् ।

कुंदं शीतं लघु श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तहत ॥ ५३ ॥

१ दे० भा० अमलतास । २ रक्ताम्लानो रक्तपुष्पो रामालिगनकामुकः ।
रंगप्रसवकश्चैव सुमगः शोणझिटिका ॥ ३ दे० भा० पीला वांसा । वं० भा०
झांति । कुलझांति । पीतझांति । नीलझांति । लालझांति ।

मुचुकुन्दः ।

मुचुकुन्दः क्षत्रवृक्षश्चित्रकः प्रतिविष्णुकः ।

मुचुकुन्दः शिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः ॥ ५४ ॥

तिलकः ।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् पुरुषश्छत्रपुष्पकः ।

तिलकः कटुकः पाके रसे चोष्णो रसायनः ॥ ५५ ॥

कफकुष्ठकृमीन् वस्तिमुखदन्तगदान् हरेत् ।

बन्धूकः ।

बन्धूको बन्धुजीवश्च रक्तो माध्याह्निको मतः ॥ ५६ ॥

बन्धूकः कफकृद् ग्राही वातपित्तहरो लघुः ।

औण्डूपुष्पम् ।

औण्डूपुष्पं जपा चाथ त्रिसंध्या सारुणा मता ॥ ५७ ॥

जपा संग्राहिणी केश्या त्रिसंध्या कफवातहत् ।

सिंदूरी ।

सिंदूरी रक्तबीजा च रक्तपुष्पा सुकोमला ॥ ५८ ॥

सिंदूरी विषपित्तास्रतृष्णावांतिहरी हिमा ।

अगस्त्यः ।

अगस्त्याह्वो वंगसेनो मुनिपुष्पो मुनिद्रुमः ॥ ५९ ॥

अगस्त्यः पित्तकफजिच्चातुर्थिकहरो हिमः ।

रूक्षो वातकरस्तित्तः प्रतिश्यायनिवारणः ॥ ६० ॥

१ तिलक वृक्षका फूल तिलोंके समान होता है उसमें गंध आती है फल पीपल के समान मधुर होता है । २ दे० भा० गुलदुपहरिया । गेजुनिआ । मंचनिआ । वं० भा० बांधुलि फुलेर गाछ । ३ दे० भा० गुडहल, गुलतुररा, ओडहुल । वं० भा० जवाफुलेर गाछ । इ० शुफलावर । ४ दे० भा० लटकण, जाफर इ० आरनाटो । Arnato ५ दे० भा० हथिया, हदगा । वं० भा० वक । इ० लार्जफलावर्डेगोटी ॥

तुलसी शुक्ला कृष्णा च ।

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमंजरी ।

अपेतराक्षसी गौरी शूलघ्नी देवदुन्दुभिः ॥ ६१ ॥

तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत् ।

दीपनी कुष्ठकृच्छास्त्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥ ६२ ॥

शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्तिता ।

मरुवकः ।

मारुतको मरुवको मरुन्मरुरपि स्मृतः ॥ ६३ ॥

फणी फणिज्जकश्चापि प्रस्थपुष्पः समीरणः ।

मरुदाग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः ॥ ६४ ॥

वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

कटुपाकरसो रुच्यास्तित्तो रुक्षः सुगंधिकः ॥ ६५ ॥

दमनकः ।

उक्तो दमनको दांतो मुनिपुत्रस्तपोधनः ।

गंधोत्कटो ब्रह्मजटो विनीतः कुलपुत्रकः ॥ ६६ ॥

दमनस्तुवरस्तित्तो हृद्यो वृष्यः सुगंधिकः ।

ग्रहणीविषकुष्टास्त्रक्केदकंडुत्रिदोषजित् ॥ ६७ ॥

वर्वरी ।

वर्वरी कवरी तुंगी खरपुष्पाजगंधिका ।

पर्णासस्तत्र कृष्णे तु कठिलककुठेरकौ ॥ ६८ ॥

तत्र शुक्लो*र्जकः प्रोक्तो वटपत्रस्ततोऽपरः ।

वर्वरीत्रितयं रुक्षं शीतं कटु विदाहि च ॥ ६९ ॥

१ दे० भा० तुलसी । फा० रोहान् । इ० हार्ट वेजिल । २ दे० भा० मरुआ ।

वं० भा० मरुपा । फा० मर्जगुम् । इ० स्वीट मार्जोरन् । Sweet marjoran.

३ दे० भा० दौना । वं० भा० दवना । वनदमनक, अग्निदमनक इ० चर्मबुड ॥

१ दे० भा० वनतुलसी । इसके बीजको तुलामरेह कहते हैं । वं० भा०

चातुर्दुलसी । फा० पलंगमुष्क । * अर्जकः क्षुद्रतुलसी, श्वेतः कृष्णः ।

लीक्षणं रुचिकरं हृद्यं दीपनं लघुपाकि च ।
पित्तलं कफवातास्रकण्डुक्रिमिविषापहम् ॥ ७० ॥

इति पुष्पवर्गः ।

फलवर्गः ।

तैत्रादावाम्रस्य नाम गुणाः ।

आम्रश्वृतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ।
कामांगो मधुदूतश्च माकंदः पिकवल्लभः ॥ १ ॥
आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ।
असृग्दरहरं शीतं रुचिकृद् ग्राहि वातलम् ॥ २ ॥
आम्रं बालं कषायाम्ले रुच्यं मारुतपित्तकृत् ।
तरुणं तु तदत्यम्लं रुक्षं दोषत्रयास्रकृत् ॥ ३ ॥
आम्रमामं त्वचाहीनमातपेऽतिविशोषितम् ।
अम्लं स्वादु कषायं स्याद्देदनं कफवातजित् ॥ ४ ॥
पक्वं तु मधुरं वृष्यं स्निग्धं बलसुखप्रदम् ।
गुरुवातहरं हृद्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम् ॥ ५ ॥
कषायानुरसं वह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् ।
तदेव वृक्षसंपक्वं गुरुवातहरं परम् ॥ ६ ॥
मधुराम्लरसं किञ्चिद्भवेत्तत्पित्तनाशनम् ।
आम्रं कृत्रिमपक्वं चेत्तद्भवेत्पित्तनाशनम् ॥ ७ ॥
रसस्याम्लस्य हानेस्तु माधुर्याच्च विशेषतः ।
चूषितं तत्परं रुच्यं बल्यं वीर्यकरं लघु ॥ ८ ॥

शीतलं शीघ्रपाकि स्याद्वातपित्तहरं सरम् ।

तैद्रसो गालितो बल्यो गुरुर्वातहरः सरः ॥ ९ ॥

अहृद्यस्तर्पणोऽतीव बृंहणः कफवर्द्धनः ।

* तस्य खंडं गुरुपरं रोचनं चिरपाकि च ॥ १० ॥

मधुरं बृंहणं बल्यं शीतलं वातनाशनम् ।

वातपित्तहरं रुच्यं बृंहणं बलवर्द्धनम् ॥ ११ ॥

वृष्यं वर्णकरं स्वादु दुग्धाम्रं गुरुशीतलम् ॥ १२ ॥

मंदानलत्वं विषमज्वरं च रक्तामयं बद्धगुदोदरं च ।

आम्रातियोगो नयनामयं च ।

करोति तस्मादति तानि नाद्यात् ॥ १३ ॥

एतदम्लाम्रविषयं मधुराम्रपरं न तु ।

मधुरस्य परं नेत्रहितत्वाद्या गुणा यतः ॥ १४ ॥

शुग्धंभसोऽनुपानं स्यादाम्राणामतिभक्षणे ।

जीरकं वा प्रयोक्तव्यं सह सौवर्चलेन च ॥ १५ ॥

अथाम्रावर्तस्य लक्षणं गुणाश्च ।

पक्वस्य सहकारस्य पटे विस्तारितो रसः ।

घर्मशुष्को मुहुर्दत्त आम्रावर्त इति स्मृतः ॥ १६ ॥

आम्रावर्तस्तृषाछर्दिवात्तपित्तहरः सरः ।

रुच्यः सूर्याशुभिः पाकाल्लघुश्च स हि कीर्तितः ॥ १७ ॥

१ दे० भा० अम्बरस । स वै दुग्धेन संयुक्तः कांतिदः स्वादुदः स्मृतः ।
वृष्यश्चान्ये गुणाश्चोक्ता रसेन सदृशः स्मृतः ॥ (उत्तमानि फलानि) दाढि
मामलकं द्राक्षा खर्जूरं सपरुषकम् । राजादनं मातुलुगं फलवर्गे प्रशस्यते ॥
* मुरच्चा । १ दे० भा० आंवट । आम्रतैल । आम्रतैलं तु तुवरं स्वादु
रुक्षं च तिक्तकम् । सुगंधि मुखरोगस्य नाशनं कफवातनुत् ।

आम्रबीजम् ।

आम्रबीजं कषायं स्याच्छर्द्यतीसारनाशनम् ।

ईषदम्लं च मधुरं तथा हृदयदाहनुत् ॥ १८ ॥

नवपल्लवम् ।

आम्रस्य पल्लवं रुच्यं कफपित्तविनाशनम् ।

आम्रातम् ।

आम्रातकः पीतनश्च मर्कटाश्रः कपीतनः ॥ १९ ॥

आम्रातमम्लं वातघ्नं गुरुष्णं रुचिकृत्सरम् ।

पक्वं तु तुवरं स्वादु रसे पाके हिमं स्मृतम् ॥ २० ॥

तर्पणं श्लेष्मलं स्निग्धं वृष्यं विष्टंभि बृंहणम् ।

गुरु बल्यं मरुत्पित्तक्षतदाहक्षयाश्रजित् ॥ २१ ॥

राजाश्रम् ।

राजाश्रष्टंग आम्रातः कामाह्वो राजपुत्रकः ।

राजाश्रं तुवरं स्वादु विशदं शीतलं गुरु ॥ २२ ॥

ग्राहि रुक्षं विबन्धाध्मानवातकृत्कफपित्तनुत् ॥

कोशाश्रम् ।

कोशाश्र उक्तः क्षुद्राश्रः कृमिवृक्षः सुकोशकः ॥ २३ ॥

कोशाश्रः कुष्ठशोथारूपित्तव्रणकफापहः ।

तत्फलं ग्राहि वातघ्नमम्लोष्णं गुरु पित्तलम् ॥ २४ ॥

पक्वं तु दीपनं रुच्यं लघूष्णं कफवातनुत् ।

पनसः ।

पनसः कंटकिफलः पनसोऽतिबृहत्फलः ॥ २५ ॥

१ दे० भा० अमरा, अंबडा । वं० भा० आमडा इ० स्योन्डि । आसमिनट्ट ।
(मज्जा) स्वादुपाकोऽश्विलकृस्निग्धः पित्तानिलापहः । २ दे० भा० कोशाम ।
वं० भा० केओडा । जलपाई । ३ दे० भा० कटहल, कटहड । वं० भा० कां-
टाला । (पनसबीज) पनसोद्भूतबीजानि वृष्याणि मधुराणि च । गुरुणि-

पनसं शीतलं पक्वं स्निग्धं पित्तानिलापहम् ।
 तर्पणं बृंहणं स्वादु मांसलं श्लेष्मलं भृशम् ॥ २६ ॥
 बल्यं शुक्रप्रदं हन्ति रक्तपित्तक्षतव्रणान् ।
 आमं तदेव विष्टंभि वातलं तुवरं गुरु ॥ २७ ॥
 दाहहन्मधुरं बल्यं कफमेदोविवर्द्धनम् ।

लकुचम् ।

लकुचः क्षुद्रपनसो लिङ्गुचोडहुरित्यपि ॥ २८ ॥
 आमं लकुचमुष्णं च गुरु विष्टंभकृतथा ।
 मधुरं च तथाम्लं च दोषत्रयरक्तकृत् ॥ २९ ॥
 शुक्राग्निनाशनं वापि नेत्रयोरहितं स्मृतम् ।
 सुपक्वं तत्तु मधुरमम्लं चानिलपित्तहृत् ॥ ३० ॥
 कफवह्निकरं रुच्यं वृष्यं विष्टंभकं च तत् ।

मोचाफलम् ।

कदली वारणबुसा रंभा मोचांशुमत्फलाः ॥ ३१ ॥
 मोचाफलं स्वादु शीतं विष्टंभि कफनुद् गुरु ।
 स्निग्धं पित्तास्रतृद्दाहक्षतक्षयसमीरजित् ॥ ३२ ॥
 पक्वं स्वादु हिमं पाकं स्वादु वृष्यं च बृंहणम् ।
 क्षुत्तृष्णानेत्रगदहरंमेहघ्नं रुचिमांसकृत् ॥ ३३ ॥
 माणिक्यमर्त्यामृतचंपकाद्या
 भेदाः कदल्या बहवोऽपि संति ॥
 उक्ता गुणास्तेष्वधिका भवन्ति ।
 निर्दोषता स्याल्लघुता च तेषाम् ॥ ३४ ॥

—वद्वष्टिकानि सृष्टमूत्राणि संवदेत् ॥ मज्जा पनसजा वृष्या वातपित्तकफापहा ।
 विशेषात्पनसं वर्ज्यं गुल्मिभिर्मदवह्निभिः

१ दे० भा० वडहल । वं० भा० डेओ, मादार । पं० भा० टऊ । २ दे०
 भा० कैला । वं० भा० कला । फा० मावज् वोज्ज । इं० प्लेटेन् । Plain.

चिर्मटम् ।

चिर्मटं धेनुदुग्धं च तथा गोरक्षकर्कटी ।

चिर्मटं मधुरं रुक्षं गुरु पित्तकफापहम् ॥ ३५ ॥

अनुष्णं ग्राहि विष्टंभि बालं चानिलकोपनम् ।

कफपित्तकरं स्यंदि पक्वं तूष्णं च पित्तलम् ॥ ३६ ॥

नारिकेलम् ।

नारिकेलो दृढफलो लांगली कूर्चशीर्षिकः ।

तुंगः स्कंधफलश्चोच्चस्तृणराजःसदाफलः ॥ ३७ ॥

नारिकेलफलं शीतं दुर्जरं वस्तिशोधनम् ।

विष्टंभि बृहणं बल्यं वातपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३८ ॥

विशेषतः कोमलनारिकेलं निहंति पित्तज्वरपित्तदोषान् ।

तदेव जीर्णं गुरु पित्तकारि विदाहि विष्टंभि मतं भिषग्भिः ॥

तस्यांभः शीतलं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ।

पिपासापित्तजित्स्वादु वस्तिशुद्धिकरं परम् ॥ ४० ॥

नारिकेलस्य तालस्य खर्जूरस्य शिरांसि च ।

कषायस्निग्धमधुरबृंहणानि गुरूणि च ॥ ४१ ॥

कालिन्दम् ।

कालिन्दं कृष्णबीजं स्यात्कालिङ्गञ्च सुवर्तुलम् ।

१ दे० भा० चिन्मड, कचरी, सेंध, फूट, गोरखककडी । वं० भा० काकुड,

गोमुक, फुटी । इ० पुविसैठक्योक्वर । (चिर्मटपुष्प) पुष्पं च चिर्मटं चैव

दोषत्रयकरं स्मृतम् । अपक्वं जीर्णकफकृत्पक्वं किञ्चिद्विशिष्यते ॥ २ दे० भा०

नारियल, नरेल । वं० भा० नारकोल । फा० जोज । हिंदी नारीयल । इ० कोको-

नट् पाम । Cocoa-nut palm. मृगाक्षीगुणाः—मृगाक्षी कटुका तिक्ता पा-

केऽम्ला वातनाशिनी । पित्तकृत्पीनसहरा दीपनी रुचिकृत्परा ॥ ३ शिरांसि=

वृन्तानि । ४ दे० भा० तरबूज । वं० भा० तरबूजा । चेलना । फा० हदवा-

ना । इ० वाटरमेलन् । Water malin.

कैलिन्दं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलं गुरु ॥ ४२ ॥
पक्वन्तु सौष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातजित् ॥

दशांगुलम् ।

दशांगुलं तु खर्वूजं कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥ ४३ ॥

खर्वूजं मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु ।

स्निग्धं स्वादुतरं शीतं वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ ४४ ॥

तेषु यच्चाग्न्यमधुरं सक्षारं च रसाद्भवेत् ।

रक्तपित्तकरं तत्तु मूत्रकृच्छहरं परम् ॥ ४५ ॥

त्रपुसम् ।

त्रपुसं कंटकिफलं सुधावासः सुशीतलम् ।

त्रपुसं लघु शीतं च नवं तृष्णमदाहजित् ॥ ४६ ॥

स्वादुपित्तापहं शीतं तिक्तं कृच्छहरं परम् ।

तत्पक्वमम्लमुष्णं स्यात्पित्तलं कफवातनुत् ॥ ४७ ॥

तद्वीजं मूत्रलं शीतं रुक्षं पित्तास्रकृच्छजित् ।

कैमुकम् ।

घोंटा पूगी च पूगश्च गुवाकः क्रमुकस्य तु ॥ ४८ ॥

फलं पूगीफलं प्रोक्तमुद्वेगं च तदीरितम् ।

पूगं गुरु हिमं रुक्षं कषायं कफपित्तजित् ॥ ४९ ॥

१ दे० भा० खरवृजा । वं० भा० खरमुजा खरवृजा । फा० खरवृजा ।

इ० मेलन् । Malon । (नारकेलपुष्प) नारिकेलस्य पुष्पं तु शीतं रक्ताति—

सारहृत् । रक्तपित्तप्रमेहं च सोमरोगं च नाशयेत् । मलस्तम्भकरं चापि प्रोक्तं

पूर्वमनीषिभिः । २ दे० भा० खीरा । वं० भा० शंशा । फा० शियारखुर्द ।

इ० कुकंबर । kukamber, ३ दे० भा० सुपारी । वं० भा० शुपारी । फा०

पोपिल इ० बिटल नट्पाम । Bitelnut palm, पूगवृक्षस्य निर्यासो मोहनः

शीतलो गुरुः । पाके चोष्णः पित्तलश्च पटुश्चान्लः प्रकीर्तितः । वातनाशकरश्चैव

मुनिभिः परिकीर्तितः ।

मोहनं दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ।

आर्द्रं तद्गुर्वाभिष्यंदि वह्निदृष्टिहरं स्मृतम् ॥ ५० ॥

स्विन्नं दोषत्रयच्छेदि दृढमध्यं तदुत्तमम् ।

तालम् ।

तालस्तु लेखपत्रः स्यात्तृणराजो भहोन्नतः ॥ ५१ ॥

पक्वन्तालफलं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ।

दुर्जरं बहुमूत्रं च तंद्राभिष्यंदशुक्रदम् ॥ ५२ ॥

तालमज्जा तु तरुणा किञ्चिन्मदकरो लघुः ।

श्लेष्मलो वातपित्तघ्नः सस्नेहो मधुरः सरः ॥ ५३ ॥

ताडी ।

तालजं तरुणं तोयमतीव मदकृन्मतम् ।

अम्लीभूतं यदा तु स्यात्पित्तकृद्वातदोषहत ॥ ५४ ॥

शालफलम् ।

शालं फलं रूक्षशीतं मधुरं स्तंभनं गुरु ।

कषायं लेखनं स्तन्यवाताध्मानविवंधकृत् ॥ ५५ ॥

पित्तदाहतृषाकासक्षतक्षयविषास्रनुत् ।

विल्वः ।

विल्वः शांडिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ॥ ५६ ॥

बालं विल्वफलं विल्वकर्कटी विल्वपेशिका ।

ग्राहणी कफवातामशूलघ्नी विल्वपेशिका ॥ ५७ ॥

बालं विल्वफलं ग्राहि दीपनं पाचनं कटु ।

कषायोष्णं लघु स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम् ॥ ५८ ॥

१ दे० मा० ताड, तद्देद हिंताळ । वं० मा० श्रीताळ । हिंताळ । फा०
ताळ । इ० पालमाईपाम । palmy palm. २ दे० मा० साल, सखया ।
वं० मा० शालगाच्छ । लताशाल । इ० सालट्टी । Saltree. ३ दे० मा०
विल, (Bill) वं० मा० वेल, विल्व । इ० वेगालंकिन्स । Begalam kinc.
तत्पत्रं कफवातामशूलघ्नं ग्राहि रोचनम् । निहन्त्याद्विल्वजं पुष्पमतिसारं तृषां वमिम् ।

पक्वं गुरु त्रिदोषं स्यादुर्जरं पूतिमारुतम् ।

विदाहि विष्टंभकरं मधुरं वह्निमाद्यकृत् ॥ ५९ ॥

कपित्थम् ।

कपित्थस्तु दधित्थः स्यात्तथा पुष्पफलः स्मृतः ।

कपिप्रियो दधिफलः तथा दंतशठोऽपि च ॥ ६० ॥

कपित्थमामं संग्राहि कषायं लेखनं लघु ।

पक्वं गुरु तृषाहिक्काशमनं वातपित्तजित् ॥ ६१ ॥

स्वाद्वम्लं तुवरं कंठशोधनं ग्राहि दुर्जरम् ।

नारंगम् ।

नारंगो नारंगः स्यात्त्वक्सुगंधो मुखप्रियः ॥ ६२ ॥

नारंगं मधुराम्लं स्याद्रोचनं वातनाशनम् ।

अपरं त्वम्लमत्युष्णं दुर्जरं वातहृत्सरम् ॥ ६३ ॥

तिंदुकम् ।

तिंदुकः स्फूर्जकः कालस्कंधश्च शितिसारकः ।

स्यादामं तिंदुकं ग्राहि वातलं शीतलं लघु ॥ ६४ ॥

पक्वं पित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नं मधुरं गुरु ।

कुपीलः ।

तिंदुकः कथितो यस्तु जलजो दीर्घपत्रकः ॥ ६५ ॥

कुपीलः कुलकः काकतिंदुकः कालपीलुकः ।

कार्केंदुर्विषतिंदुश्च तथा मर्कटतिंदुकः ॥ ६६ ॥

१. दे० भा० कैथ । वं० भा० कपेद्राछ । इं० बुडण्यल । एडिफंटण्यल ।

२. दे० भा० नारंगी । वं० भा० नारंगालेबु । फा० नारज । इं० औरेंज ।

Orange. । ३. तेंदु । वं० भा० गावतेंद । फा० अनुवसु इं० एबनी Elbony.

४. दे० भा० काकतेंदु । अस्य फलं कुचला इति लोके । वं० भा० माकडा-

गाल । दे० भा० कुचले । वं० भा० कुंचले । फा० इफाराकी । इं० पाईचन-

नट ॥ कुचला शुद्धि (रसरत्नप्रदीपे) ॥ त्रिदिनं कांजिके क्षितः शुद्धः स्या-

दिषतिंदुकः (वृद्धयोगतरंगिण्याम्) किंचिदाज्येन भृष्टो वै विषमुष्टिर्विशुध्यति ।

कुपीलु शीतलं तिक्तं वातलं मदकृच्छ्रु ।

पादव्यथाहरं ग्राहि कफपित्तविनाशनम् ॥ ६७ ॥

फलेंद्रः ।

फलेंद्रः कथिता नन्दी राजजंबूर्महाफला ।

तथा सुरभिपत्रा च महाजंबूरपि स्मृता ॥ ६८ ॥

राजजंबूफलं स्वादु विष्टंभि गुरु रोचनम् ।

क्षुद्रजंबूः सूक्ष्मपत्रो नादेयी जलजंबुकः ॥ ६९ ॥

जंबूः संग्राहणी रूक्षा कफपित्तास्रदाहजित् ।

बेदरम् ।

पुंसि स्त्रियां च कर्कधूर्बदरी कोलमित्यपि ॥ ७० ॥

फेनिलं कुवलं घोंटा सौवीरं बदरं महत् ।

अजाप्रियः कुहाकोलिर्विषमो भयकंटकः ॥ ७१ ॥

बदराविशेषाणां लक्षणगुणाश्च ।

पच्यमानन्तु मधुरं सौवीरं बदरं महत् ।

सौवीरं बदरं शीतं भेदनं गुरु शुक्लम् ॥ ७२ ॥

बृंहणं पित्तदाहास्रक्षयतृणानिवारणम् ।

सौवीरं लघु संपक्वं मधुरं कोलमुच्यते ॥ ७३ ॥

कोलं तु बदरं ग्राहि रुच्यमुष्णं च वातलम् ।

कफपित्तकरं चापि गुरु सारकमीरितम् ॥ ७४ ॥

कर्कधुः क्षुद्रबदरं कथितं पूर्वसूरिभिः ।

अम्लं स्यात्क्षुद्रबदरं कषायं मधुरं मनाक् ॥ ७५ ॥

स्निग्धं गुरु च तिक्तं च वातपित्तापहं स्मृतम् ।

शुष्कं भेद्यग्निकृत्सर्वं लघुतृणाक्लमास्रजित् ॥ ७६ ॥

१ दे० भा० बडी जामुन, छोटी जामुन, वं० भा० जामगाछ, इं० जांबडालट्टी । Jambdal tree. २ दे० भा० बेर बडा, बेर छोटा । कर्कधु कोकनबेर, झाडी बेर । वं० भा० क्षुलगाछ । फा० कुनार, सौवीर=उनाव इं० जुजब, Jojab,

प्राचीनामलकम् ।

प्राचीनामलकं लोके पानीयामलकं स्मृतम् ।

प्राचीनामलकं दोषत्रयजिज्जरघाति च ॥ ७७ ॥

लवली ।

सुगंधमूला लवली पांडुकोमलवल्कला ।

लवलीफलमश्मार्शः कफपित्तहरं गुरु ॥ ७८ ॥

विशदं रोचनं रूक्षं स्वाद्वम्लं तुवरं रसे ।

कैरमर्दः करमर्दका ।

करमर्दः सुषेणः स्यात्कृष्णपाकफलस्तथा ॥ ७९ ॥

तस्माल्लघुफला या तु सा ज्ञेया करमर्दिका ।

करमर्दद्वयं त्वाममम्लं गुरुतृषापहम् ॥ ८० ॥

उष्णं रुचिकरं त्रोक्तं रक्तपित्तकफप्रदम् ।

तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघुपित्तसमीरजित् ॥ ८१ ॥

प्रियालम् ।

प्रियालस्तु खरस्कंधश्चारी बहुलवल्कलः ।

राजादनं तापसेष्टः सन्नकद्रुर्धनुःपटः ॥ ८२ ॥

चारस्तु पित्तकासघ्नः तत्फलं मधुरं गुरु ।

स्निग्धं सरं मरुत्पित्तदाहज्वरतृषापहम् ॥ ८३ ॥

१ दे० भा० पानी आमला । वं० भा० पानी आमला । इ० फला कुर्या-
काटा प्राक्टा । २ दे० भा० हरफारेवडी । वं० भा० नौपाड, नोपाल । वदरी-
फलमज्जा—वदरीफलमज्जा तु तुवरा मधुरा मता । शुक्रदा बलदा वृष्या कासश्वास-
तृषापहा । वातघ्नी छर्दिदाहघ्नी पित्तहा मुनिभिर्मता । पत्रगुणाः—दरस्य पत्रलेपो-
ऽयं ज्वरदाहविनाशनः । त्वचा विस्फोटशमनी वीजं नेत्रामयापहम् । ३ दे०
भा० करोंदा, करोंदी । वं० भा० करमुचा । पं० भा० गरना गरनी, इ०
जास्मिन् फलावर्धकेरिसा । ४ दे० भा० चिरौजी चिरोली । वं० भा० पियाला
फा० बुकलेखाजा ।

प्रियालमज्जा मधुरा वृष्या पित्तानलापहा ।

हृद्योऽतिदुर्जरः स्निग्धो विष्टंभी चामवर्द्धनः ॥ ८४ ॥

राजादनम् ।

राजादनः फलाध्यक्षो राजन्या क्षीरिकापि च ।

क्षीरिकायाः फलं वृष्यं बल्यं स्निग्धं हिमं गुरु ॥ ८५ ॥

तृणामूर्च्छामदभ्रांतिक्षयदोषत्रयास्त्रजित् ।

विकंकतम् ।

विकंकतः सुवावृक्षो ग्रंथिलः स्वादुकंटकः ॥ ८६ ॥

सरावयजवृक्षश्च कंटकी व्याघ्रपादपि ।

विकंकतफलं पक्वं मधुरं सर्वदोषजित् ॥ ८७ ॥

पद्मबीजम् ।

पद्मबीजं तु पद्माक्षं गालोढ्यं पद्मकर्कटी ।

पद्मबीजं हिमं स्वादु कषायं तिक्तकं गुरु ॥ ८८ ॥

विष्टंभि वृष्यं रुक्षं च गर्भस्थापनकं परम् ।

कफवातहरं बल्यं ग्राहि पित्तास्रदाहनुत् ॥ ८९ ॥

मखाणम् ।

मखाणं पद्मबीजाभं पानीयफलमित्यपि ।

मखाणं पद्मबीजस्य गुणैस्तुल्यं विनिर्दिशेत् ॥ ९० ॥

शृंगाटकम् ।

शृंगाटकं जलफलं त्रिकोणफलमित्यपि ।

शृंगाटकं हिमं स्वादु गुरु वृष्यं कषायकम् ॥ ९१ ॥

१ दे० मा० खिरनी, खिन्नी । वं० मा० राजनी । इ० ओवट्गुस्
लांगुमाईसुसोप्स । २ दे० मा० कुकोया कंटाई बंज । किकणी । वं० मा०
वइंचगाल । ३ दे० मा० कमलगठा । पद्मबीजं । वं० मा० पद्मबीचि । ४ दे०
मा० मखाना । फूल मखाना । वं० मा० मखान । ५ दे० मा० सिंघाडा ।
वं० मा० पाणिफल । फा० सुरंजान । इ० वाटर कैलिअम । Water Kaliam.

ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मप्रदं दाहास्रपित्तनुत् ।

उक्तं कुमुदबीजं तु बुधैः कैरविणीफलम् ॥ ९२ ॥

कुमुदबीजम् ।

भवेत्कुमुदबीजं स्वादु रुक्षं हिमं गुरु ।

मधूकं, जलमधूकम् ।

मधूको गुडपुष्पः स्यान्मधुपुष्पो मधुस्रवः ॥ ९३ ॥

वानप्रस्थो मधुष्ठीलो जलजोऽत्र मधूलकः ।

मधूकपुष्पं मधुरं शीतलं गुरु बृंहणम् ॥ ९४ ॥

बलशुक्रकरं प्रोक्तं वातपित्तविनाशनम् ।

फलं शीतं गुरु स्वादु शुक्रलं वातपित्तनुत् ॥ ९५ ॥

अहद्यं हन्ति तृष्णास्रदाहश्वासक्षतक्षयान् ।

पालेवतम् ।

पालेवतांसतं पुष्पैस्तिदुकाभं फलं मतम् ॥ ९६ ॥

अन्यन्माणवकं ज्ञेयं महापालेवतं तथा ।

स्वाद्वम्लं शीतमुष्णं च द्विधा पालेवतं गुरु ॥ ९७ ॥

यत् स्वादु मधुरं तच्छीतं यदम्लं तदुष्णकम् ।

उभयमपि गुरु इति हेमाद्रिः ।

परूषकम् ।

परूषकं परूषकमल्पास्थि च परापरम् ॥ ९८ ॥

परूषकं कषायाम्लमामं पित्तकरं लघु ।

१ नीलोत्तर । २ दे० भा० महुआ, जलमहुआ । वं० भा० मौल मौया ।
फा० चकां । इ० इक्षया ट्री Eloya tree. ३ दे० भा० फालसा । वं० भा०
फलसा । फा० पालसा । इ० एश्याटिक ग्रेविया (मधूकस्य तैलम्) मधूकतैलं
मधुरं पिच्छिलं तुवरं मतम् । कफपित्तज्वरं चैव दाहपित्तं च नाशयेत् ।
(अस्य त्वचा) परूषकत्वक् प्रमेहघ्नी योनिमेहप्रदाहनुत् । मूत्रदोषप्रशमनी
शीतपित्तानिलायहा ॥ १ ॥

तत्पक्वं मधुरं पाके शीतं विष्टंभि बृंहणम् ॥ ९९ ॥
हृद्यं तु पित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरजित् ।

तूतम् ।

तूदस्तूतं च यूषश्च क्रमुको ब्रह्मदारु च ॥ १०० ॥
तूतं पक्वं गुरु स्वादु हिमं पित्तानिलापहम् ।
तदेवामं गुरु सरमम्लोष्णं रक्तपित्तकृत् ॥ १०१ ॥

दाडिमम् ।

दाडिमः करको दंतबीजो लोहितपुष्पकः ।
तत्फलं त्रिविधं स्वादु स्वाद्वम्लं केवलाम्लकम् ॥ १०२ ॥
तत्तु स्वादु त्रिदोषघ्नं तूट्दाहज्वरनाशनम् ।
हृत्कंठमुखरोगघ्नं तर्पणं शुक्रलं लघु ॥ १०३ ॥
कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धं मेधाबलावहम् ।
स्वाद्वम्लं दीपनं रुच्यं किंचित्पित्तकरं लघु ॥ १०४ ॥
अम्लं तु पित्तजनकमामवातकफापहम् ।

बहुवारः ।

बहुवारस्तु शीतः स्यादुद्दालो बहुवारकः ॥ १०५ ॥
शेलुः श्लेष्मातकश्चापि पिच्छिलो भूतवृक्षकः ।
बहुवारो विषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ १०६ ॥
मधुरस्तुवरस्तिक्तः केश्यश्च कफपित्तहृत् ।
फलमामं तु विष्टंभि रुक्षं पित्तकफास्रजित् ॥ १०७ ॥

१ दे० भा० शहतूत । तत । बं० भा० तूत । पलाशपिपुल । फा० शहतूत
तुर्श । इ० मलबेरिज । Mulberries. २ दे० भा० अनार बं० भा०
लिम । फा० अनार तुरिश, अनारशीरी । इ० पोंग्रानट । Pomgra nut.
अस्य पुष्पं) तत्पुष्पं च पुनर्ज्ञेयं नासासृगतिर्नावनात् । दाडिमत्वक् कृमिघ्ना
ग्राहिरक्तातिसारहा । ३ दे० भा० लिसूडा । लिसोडा । बं० भा० बहुवार,
लतागाछ । फा० सिपिस्तान । इ० नेरोलिब्डसेपिस्टन । Narrow leaved
pistun.

तत्पक्वं मधुरं स्निग्धं श्लेष्मलं शीतलं गुरु ।

कृतकम् ।

पयःप्रसादि कतकं कतकं तत्फलं च तत् ॥ १०८ ॥

कतकस्य फलं नेत्र्यं जलनिर्मलताकरम् ।

वातश्लेष्महरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ १०९ ॥

द्राक्षा ।

द्राक्षा स्वादुफला प्रोक्ता तथा मधुरसापि च ।

मृद्रीका हारहूरा च गोस्तनी चापि कीर्तिता ॥ ११० ॥

द्राक्षा पक्वा सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः ।

स्वादुपाकरसा स्वय्या तुवरा सृष्टमूत्रविट् ॥ १११ ॥

कोष्ठमारुतहृद् वृष्या कफपुष्टिरुचिप्रदा ।

हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामलाः ॥ ११२ ॥

कृच्छ्रास्रपित्तसम्मोहदाहशोषमदात्ययान् ।

आमा स्वल्पगुरुर्गुवी सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ॥ ११३ ॥

वृष्या स्याद्गोस्तनी द्राक्षा गुवी च कफपित्तनुत् ।

अबीजाऽन्या स्वल्पतरा गोस्तनी सदृशा गुणैः ॥ ११४ ॥

द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साम्ला श्लेष्माम्लपित्तकृत् ।

द्राक्षा पर्वतजा यादृक् तादृशी करमर्दिका ॥ ११५ ॥

क्षुद्रखजूरं पिंडखजूरं च ।

भूमिखजूरिका स्वाद्री दुरारोहा मृदुच्छदा ।

तथा स्कंधफला काककर्कटी स्वादुमस्तका ॥ ११६ ॥

१ दे० भा० निर्मली । वं० भा० निर्मलफल । इ० आनट् विच क्लिअर्स
वाटर । Ant which clears water. २ दे० भा० दाख, किसमिस,
मुनक्का । वं० भा० किसमिस, मनेका । फा० अंगर, मुनका । इ० ग्रेप, रोझिस
Grape roisins. ३ दे० भा० खजूर, पिंडखजूर, छुहारे । वं० भा०
खजूर, पिंडखजूर छोहारे । फा० तमररुतक । इ० डेट् पाम । Date palm.
(खजूरी । ताडी) खजूरी तोयमित्यादि ॥

पिंडखर्जूरिका त्वन्या सा देशे पश्चिमे भवेत् ।

खर्जूरी गोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ॥ ११७ ॥

जायते पश्चिमे देशे सा छोहारेति कीर्तिता ।

खर्जूरीत्रितयं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥ ११८ ॥

स्निग्धं रुचिकरं हृद्यं क्षतक्षयहरं गुरु ।

तर्पणं रक्तपित्तघ्नं पुष्टिविष्टम्भशुक्रदम् ॥ ११९ ॥

कोष्ठमारुतहृद्बल्यं वांतिवातकफापहम् ।

ज्वरातिसारक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम् ॥ १२० ॥

मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्धूतगदांत्यकृत् ।

महतीभ्यां गुणैरल्पा स्वल्पा खर्जूरिका स्मृता ॥ १२१ ॥

खर्जूरितरुतोयं तु मदपित्तकरं भवेत् ।

वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं बलशुक्रकृत् ॥ १२२ ॥

पिंडखर्जूरभेदः । सुलेमानी ।

सुनेपाली तु मृदुला दलहीनफला च सा ।

सुनेपाली श्रमभ्रांतिदाहमूर्च्छास्वपित्तहृत् ॥ १२३ ॥

वातादः ।

वातादो वातवैरी स्यान्नेत्रोपमफलस्तथा ।

वाताद उष्णः सुस्निग्धो वातघ्नः शुक्रकृद्गुरुः ॥ १२४ ॥

वातादमज्जा मधुरो वृष्यः पित्तानिलापहः ।

स्निग्धोष्णः कफकृन्नेष्टो रक्तपित्तविकारिणाम् ॥ १२५ ॥

सेवम् ।

मुष्टिप्रमाणं बंदरं सेवं शिंबितिकाफलम् ।

१ दे० भा० बादाम कडवे । बादाम मीठे । बं० भा० बादाम । फा० बादाम शीरी बादाम तलख । इ० स्वीट् अलमंड । Sweet almond. वाताद-
तैलं मृदु रेचनं स्याद्वाजीकरं मूर्द्धगदं प्रहण्यात् । पित्तानिलघ्नं लघु दाहनाशि
लावण्यदं मेहकरं सुशीतम् ॥ २ इति आत्रेयसंहिता । ३ दे० भा० सेव बं०
सेउ फा० सेव इ० एपल Apple.

सेवं समीरपित्तघ्नं बृंहणं कफकृद् गुरु ॥ १२६ ॥

रसे पाके च मधुरं शिशिरं रुचिशुक्रकृत् ।

अमृतफलम् ।

अमृतफलं लघु वृण्यं सुस्वादु त्रीन् हरेदोषान् ॥ १२७ ॥

देशेषु मृदुगलानां बहुलं तल्लभ्यते लोकैः ।

पीलुः ।

पीलुर्गुडफलः स्रंसी तथा शीतफलोऽपि च ॥ १२८ ॥

पीलु श्लेष्मसमीरघ्नं पित्तलं भेदि गुल्मनुत् ।

स्वादु तिक्तं च यत्पीलु तन्नात्युष्णं त्रिदोषहृत् ॥ १२९ ॥

अक्षोटः ।

पीलुः शैलभवोऽक्षोटः कंदरालश्च कीर्तितः ।

अक्षोटकोऽपि वातादसदृशः कफपित्तकृत् ॥ १३० ॥

बीजपूरम् ।

बीजपूरो मातुलुंगो रुचकः फलपूरकः ।

बीजपूरफलं स्वादु रसेऽम्लं दीपनं लघु ॥ १३१ ॥

रक्तपित्तहरं कंठाजिह्वाहृदयशोधनम् ।

श्वासकासारुचिहरं हृद्यं तृष्णाहरं स्मृतम् ॥ १३२ ॥

बीजपूरभेदः ।

बीजपूरोऽपरः प्रोक्तो मधुरो मधुकर्कटी ।

मधुकर्कटिका स्वाद्वी रोचनी शीतला गुरुः ॥ १३३ ॥

रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ।

१ दे० मा० नासपाती नाख । गर्भदोषहरं स्त्रीणां मृतवत्सत्त्वनाशनम् ।

गर्भस्त्रावं गर्भपातं नाशयेन्नियतं त्विदम् ॥ १ ॥ २ दे० मा० पीलु बड़ी पीलु वं०

पीलुगाल । फा० दखते मिस्त्राक ई० मस्टर्डट्री आफ स्क्वीपचर । Mustard

tree of scripture. ३ दे० मा० अखरोट । वं० मा० आक्रोट । फा०

चार्तगज । ई० वालनट् Walnut. ४ दे० मा० किंव । विजौरानीवू । वं०

भा० टावालेवु । फा० तुरंज । ई० साईट्रस Sitres. ५ दे० मा० चकोतरा ।

जंबीरद्वयम् ।

स्याज्जंबीरो दंतशठो जंभजंभीरजंभलाः ॥ १३४ ॥

जंबीरमुष्णं गुर्वम्लं वातश्लेष्मविबंधनुत् ।

शूलकासकफोत्क्लेशच्छर्दिनृष्णामदोषजित् ॥ १३५ ॥

आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमाद्यकृमीन्हरेत् ।

स्वल्पजंबीरिका तद्रूचृष्णाच्छर्दिनिवारणी ॥ १३६ ॥

निंबुकम् ।

निंबूः स्त्री निंबुकं क्लीबे निंपाकमपि कीर्तितम् ।

निंबुकमम्लं वातघ्नं दीपनं पाचनं लघु ॥ १३७ ॥

मिष्टनिंबुकम् ।

मिष्टनिंबुकलं स्वादु गुरु मारुतपित्तनुत् ।

गलरोगविषध्वंसि कफोत्क्लेशि च रक्तहृत् ॥ १३८ ॥

शोषारुचितृषाच्छर्दिहरं बल्यं च बृंहणम् ।

कर्मरंगम् ।

कर्मरंगं हिमं ग्राहि स्वाद्वम्लं कफघातहृत् ॥ १३९ ॥

अम्लिका ।

अम्लिका चुक्रिकाऽम्ली च चुक्रा दंतशठापि च ।

अम्ला च चिंचिका चिंचा तित्तिडीका च तित्तिडी ॥ १४० ॥

अम्लिकाम्ला गुरुर्वातहरी पित्तकफालूकृत् ।

पक्वा तु दीपनी रूक्षा सरोष्णा कफघातनुत् ॥ १४१ ॥

१ दे० भा० खट्टा खट्टी जंभीरी । ब० भा० कागजी लेबु । जामीरी
लेबु । फा० लिमुने तुर्श । लिमुने शीरी । इ० लेमंस । Lemons, निंबुकं
क्रिमिसमूहनाशनं तीक्ष्णमम्लमुदरग्रहापहं ॥ वातपित्तकफशूलिने हितं कष्टनष्टरुचिरो-
चनं परम् ॥ १ ॥ त्रिदोषवह्निक्षयवायुरोगनिपीडितानां विषविह्वलानाम् ।
मलग्रहे वद्धगुदे प्रदेयं विसूचिकायां मुनयो वदन्ति ॥ २ ॥ २ दे० भा० कमरख ।
ब० भा० कामरांगा इ० करमबोला Carmbola, ३ दे० भा० इम्बली । ब०
भा० तैतुल । इ० टेमेरिड्डी Tamerined tree.

अम्लवेतसम् ।

स्यादम्लवेतसं चुक्रं शतवेधि सहस्रमित् ।

अम्लवेतसमत्यम्लं भेदनं लघु दीपनम् ॥ १४२ ॥

हृद्रोगशूलगुल्मघ्नं पित्तलं लोमहर्षणम् ।

रूक्षं विण्मूत्रदोषघ्नं प्लीहोदावर्तनाशनम् ॥ १४३ ॥

हिकानाहारुचिश्वासकासाज्जीर्णविमिषणुत् ।

कफवातामयध्वंसि छागमांसद्रवत्वकृत् ॥ १४४ ॥

चणकाम्लगुणं ज्ञेयं लोहसूचीद्रवत्वकृत् ।

वृक्षाम्लम् ।

वृक्षाम्लं तित्तिडीकं च चुक्रं स्यादम्लवृक्षकम् ॥ १४५ ॥

वृक्षाम्लमाममम्लोष्णं वातघ्नं कफपित्तलम् ।

पक्वं तु गुरु संग्राहि कटुकं तुवरं लघु ॥ १४६ ॥

अम्लोष्णं रोचनं रूक्षं दीपनं कफवातहृत् ।

चतुरम्लं पंचाम्लम् ।

अम्लवेतसवृक्षाम्लबृहज्ज्वीरनिंबुकैः ॥ १४७ ॥

चतुरम्लं हि पंचाम्लं बीजपूरयुतैर्भवेत् ।

परिभाषा ।

फलेषु परिपक्वं यद्गुणवत्तदुदाहृतम् ॥ १४८ ॥

बिल्वादन्यत्र विज्ञेयमामं तद्वि गुणाधिकम् ।

फलेषु सरसं यत्स्याद्गुणवत्तदुदाहृतम् ॥ १४९ ॥

द्राक्षाबिल्वशिवादीनां फलं शुष्कं गुणाधिकम् ।

फलतुल्यगुणं सर्वं मज्जानामपि निर्दिशेत् ॥ १५० ॥

१ दे० भा० अम्लवेद । वं० भा० थैकड़ । प० भा० गलगल फा० तुर्पक ।
 इ० कामनूसौरेल । Coman sorail. चिंचापुष्पं तु तुवरं स्वादम्लं च रुचि-
 प्रदम् । विशदं चाग्निजनकं लघुवातकफापहम् ॥ १ ॥ प्रमेहघ्नं समुद्दिष्टं पर्णं शोथहरं
 मतम् । चिंचाक्षारश्चाग्निमांशशूलनाशकरो मतः ॥ २ दे० भा० समाकदानाडांसरा ।
 वं० भा० महादा । अम्लकुटा इ० कौकंबटर टी । Cocambatar tree.

फलं हिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ।
अकालजं कुभूमीजं पाकातीतं न भक्षयेत् ॥ १५१ ॥
इति फलवर्गः ।

वटादिवर्गः ।

तेत्रादौ वटस्य नामानि गुणाश्च ।

वटो रक्तफलः शुंगी न्यग्रोधः स्कन्धजो ध्रुवः ।
क्षीरी वैश्रवणावासो बहुपादो वनस्पतिः ॥ १ ॥
वटः शीतो गुरुग्राही कफपित्तव्रणापहः ।
वर्ण्यो विसर्पदाहघ्नः कषायो योनिदोषहत ॥ २ ॥
अश्वत्थः ।

बोधिद्रुः पिप्पलोऽश्वत्थः चलपत्रो गजाशनः ।
पिप्पलो दुर्जरः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणालजित् ॥ ३ ॥
गुरुस्तुवरको रूक्षो वर्ण्यो योनिविशोधनः ।

पिप्पलभेदः ।

पारिशोन्यः पलाशश्च फलीशश्च कमण्डलुः ॥ ४ ॥
गर्दभाण्डः कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः ॥
पारिषो दुर्जरः स्निग्धः कृमिशुक्रकफप्रदः ॥ ५ ॥
फलेऽम्लो मधुरो मूले कषायः स्वादुमज्जकः ।

१ देश भाषां बोहड । बड । बं० मा० बट । फारसी बडवाई । इं० वन-
नद्री Banian tree । २ दे० मा० पीपल । पिपल । बं० मा०
अश्वत्थ । फा० दरखतलरजां । इं० प्लोलीवड फिगट्री । Ploleaved phigt-
ee. ३ दे० मा० पारिस पिपल । बं० मा० गजशुण्डी । फा० यलासबेल्य ।
० हिइस्कम् ।

अश्वत्थभेदः *

नन्दावृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः ॥ ६ ॥

स्थालीवृक्षः क्षीरितरुः क्षीरी च स्याद्वनस्पतिः ।

नन्दीवृक्षो लघुः स्वादुस्तिक्तस्तुवर उष्णकः ॥ ७ ॥

कटुपाकरसो ग्राही विषपित्तकफास्त्रजित्

उदुम्बरः ।

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञांगो हेमदुग्धकः ॥ ८ ॥

उदुम्बरो हिमो रूक्षो गुरुः पित्तकफास्त्रजित् ।

मधुरस्तुवरो वण्यो व्रणशोधनरोपणः ॥ ९ ॥

मलयूः ।

काकोदुम्बरिका फलगुर्मलयूर्जधनेफला ।

मलयूस्तम्भकृत्तिक्ता शीतला तुवरा जयेत् ॥ १० ॥

कफपित्तव्रणश्चित्रपाण्ड्वर्शःकुष्ठकामलाः ।

प्लक्षः ।

प्लक्षो जटी पर्पटी च कर्पटी च स्त्रियामपि ॥ ११ ॥

प्लक्षः कषायः शिशिरो व्रणयोनिगदापहः ।

दाहपित्तकफास्त्रघ्नः शोथहा रक्तपित्तहत ॥ १२ ॥

शिरिषः ।

शिरिषो भंडिलो भंडी भंडीरश्च कपीतनः ।

शुकपुष्पः शुकतरुर्मृदुपुष्पः शुकप्रियः ॥ १३ ॥

शिरिषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघुः ।

दोषशोथविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः ॥ १४ ॥

* वेलिया पिप्पल । दे० मा० गूलर । वं० मा० यज्ञदुमुर । फा० अंजीरे
 आदम । नवदुंदुवरिकागुणैः किञ्चिन्न्यूना । इ० किगट्टी Kigtree. ॥ २ दे०
 मा० फगवाडा । कठूमर । वं० मा० काकडूमर । फा० अंजीरे दस्ती । इ०
 किगट्टी । Kigtree । ३ दे० मा० पिलखन । वं० मा० पाकुडगाछ । ४ दे०
 मा० शिरीह । सिरस । वं० मा० शिरिषगाछ । फा० दरखतेजकरिया ।

क्षीरिवृक्षाः, पंचवल्कलाः ।

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थपारिषप्लक्षपादपाः ।

पंचैते क्षीरिणो वृक्षास्तेषां त्वक् पंचवल्कलम् ॥ १५ ॥

केचित्तु पारिषस्थाने शिरीषं वेतसं परे ।

क्षीरिवृक्षा हिमा वर्णा योनिरोगव्रणापहाः ॥ १६ ॥

रूक्षाः कषाया मेदोव्रा विसर्पामयनाशनाः ।

शोथपित्तकफास्त्राः स्तन्या भग्नास्थियोजकाः ॥ १७ ॥

त्वक्पंचकं हिमं ग्राहि व्रणशोथविसर्पजित् ।

तेषां पत्रं हिमं ग्राहि कफवातास्त्रुल्लघु ॥ १८ ॥

विष्टंभाध्मानजित्तिकं कषायं लघुलेखनम् ।

शालः ।

शालस्तु सर्जकार्ण्याश्वकर्णकाः सस्यसंबरः ॥ १९ ॥

अश्वकर्णः कषायः स्याद्व्रणस्वेदकफक्रिमीन् ।

ब्रध्नविद्रधिवाधिर्ययोनिर्कर्णगदान्हरेत् ॥ २० ॥

शालभेदः ।

सर्जकोऽन्योजकर्णः स्याच्छालो मरिचपत्रकः ।

अजकर्णः कटुस्तिक्तः कषायोष्णो व्यपोहति ॥ २१ ॥

कफपांडुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान् ।

शल्लकी ।

शल्लकी गजभक्षा च सुवहा सुरभी रसा ।

महेरुणा कुंदुरुकी वल्लकी च बहुस्रवा ॥ २२ ॥

शल्लकी तुवरा शीता पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥

रक्तपित्तव्रणहरी पुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ २३ ॥

१ दे० भा० शाल । सखुया । सांखु । बं० भा० शालगाछ । लताशील ।
इ० सालट्टी । Sal tree. २ दे० भा० सलई, सकी, सिलहक, सालें ।
बं० भा० शलई । प० भा० मैदासक ।

शिशिपा ।

शिशिपा पिच्छिला श्यामा कृष्णसारा च सा गुरुः ।

कपिला सैव मुनिभिर्भस्मगर्भेति कीर्तिता ॥ २४ ॥

शिशिपा कटुका तिक्ता कषाया शोथहारिणी ।

उष्णवीर्या हरन्मेदःकुष्ठश्वित्रवमिक्रिमीन् ॥ २५ ॥

वस्तिरुग्रणदाहास्रबलासान् गर्भपातिनी ।

ककुभः ।

ककुभोऽर्जुननामा स्यान्नदीसर्जश्च कीर्तितः ॥ २६ ॥

इंद्रद्रुवीरवृक्षश्च वीरश्च धवलः स्मृतः ।

ककुभो शीतलो हृद्यः क्षतक्षयविषास्रजित् ॥ २७ ॥

मेदोमेहव्रणान् हन्ति तुवरः कफपित्तहृत् ।

असनः ।

बीजकः पीतसारश्च पीतशालक इत्यपि ॥ २८ ॥

बन्धूकपुष्पः प्रियकः सर्जकश्चासनः स्मृतः ।

बीजकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगदक्रिमीन् ॥ २९ ॥

हन्ति श्लेष्मास्रपित्तं च त्वच्यः केश्यो रसायनः ।

खदिरः ।

खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दंतधावनः ॥ ३० ॥

कंटकी बालपत्रश्च बहुशल्यश्च यज्ञियः ।

खदिरः शीतलो दन्त्यः कंडुकासारुचिप्रणुत् ॥ ३१ ॥

१ दे० मा० टाहली । सीसम । श्वेता, कपिला । कृष्णा । वं० मा० शिशुगाच्छे । इ० ब्लाकवुडस ट्री । Black woodes tree. दे० २ मा० कौ । कौह । वं० मा० अर्जुन गाच्छ । ३ दे० मा० विजयसार । वं० मा० पियाशाल । ५० मा० अलसन । फा० कमरकस् । इ० इंडियनकिन्सट्री Indian kinstree, असनस्य तु पुष्पाणि विपाके मधुराणि च । तिक्तानि पाचनीयानि वातलानि भवंति हि ॥ ४ दे० मा० खैर । श्वेत, रक्त, वं० मा० खैर गाच्छ ।

तिक्तः कषायो मेदोघ्नः कृमिमेहज्वरघ्नान् ।

श्वित्रशोथामपित्तास्रपांडुकुष्ठकफान् हरेत् ॥ ३२ ॥

श्वेतखदिरः ।

खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कदरः सोमबल्कलः ।

खदिरो विशदो वण्यो मुखरोगकफास्रजित् ॥ ३३ ॥

इरिमेदः ।

इरिमेदो विट्खदिरः कालस्कंधोऽरिमेदकः ।

इरिमेदः कषायोष्णो मुखदंतगदास्रजित् ॥ ३४ ॥

हन्ति कंडूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषघ्नान् ।

रोहीतकः ।

रोहीतको रोहितको रोही दाडिमपुष्पकः ॥ ३५ ॥

रोहीतकः प्लीहघाती रुच्यो रक्तप्रसादनः ।

किंकिरातः ।

बबूलः किंकिरातः स्यात्किंकराटः सपीतकः ॥ ३६ ॥

स एव कथितस्तज्जैराभाषट्पदमोदनी ।

बबूलः कफनुद्ग्राही कुष्ठकृमिविषापहः ॥ ३७ ॥

अरिष्टकः ।

अरिष्टकस्तु मांगल्यः कृष्णवर्णोऽर्थसाधनः ।

१ दे० भा० कल्या । बं० भा० खैर । फा० कात । इ० केटेच्य Catechu.

२ दे० भा० दुर्गधि खैर । बं० भा० विग् खैर । इ० स्पंज ट्री । Sapanj tree.

(खैरगोंद) निर्यासस्तस्य मधुरो बल्यः शुक्रविवर्द्धनः । (खदिरसार) ख-

दिरः खदिरोद्भूतस्तत्सारो रंगदः स्मृतः ॥ सारस्तु विशदो वण्यो मुखरोगक-

फास्रजित् ॥ १ ॥ ३ दे० भा० रुहेडा । श्वेत, रक्त । बं० भा० रोडा । कडार

४ दे० भा० किकार । बं० भा० बबूल गाछ । फा० मुगिला । इ० एकसिया ट्री

Ecasia tree. ५ दे० भा० रेठा । बं० भा० रिठे गाछ । फा० फिदकु हिन्दी ।

इ० सोमबेरी सोपन ट्री । Sombari sopan tree. (अस्य निर्यासः)-

रक्तबीजः पीतफेनः फेनिलो गर्भपातनः ॥ ३८ ॥

अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नो ग्रहजिह्वर्भपातनः ।

पुत्रजीवः ।

पुत्रजीवो गर्भकरो यष्टी पुष्पोर्थसाधकः ॥ ३९ ॥

पुत्रजीवो गुरुर्वृष्यो गर्भदः श्लेष्मवातहृत् ।

सृष्टमूत्रमलो रूक्षो हिमः स्वादुः पटुः कटुः ॥ ४० ॥

इंगुदः ।

इंगुदोंगारवृक्षश्च तिक्तकस्तापसद्गुमः ।

इंगुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ॥ ४१ ॥

हंत्युष्णः धित्रशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान् ।

जिंगिनी ।

जिंगिनी जिंगिणी जिंगी सनिर्य्यासा प्रमोदिनी ॥ ४२ ॥

जिंगिनी मधुरा सोष्णा कषाया योनिशोधनी ।

कटुका व्रणहृद्गवातातीसारहृत्पटुः ॥ ४३ ॥

तमालः ।

तमालः शालवद्वेद्यो दाहविस्फोटहृत्पुनः ।

तुणी ।

तुणी तुन्नक आपीतः तुणिकः कच्छपस्तथा ॥ ४४ ॥

कुठेरकः कांतलको नंदीवृक्षश्च नंदकः ।

—ववूलस्य तु निर्यासो ग्राही पित्तानिलापहा । रक्तातिसारपित्तास्रमेहप्रदरनाशनः ।
भग्नसंधानकः शीतः शोणितस्रुतिवारणः ॥ १ ॥ १ दे० भा० जियोपोता ।
२ दे० भा० इंगोट । इ० डेलील Daleil । ३ दे० भा० काली सिंवल ।
निर्यासवती । मोदनी जातनिर्यासो नस्याद्रातव्यथापहः । तत्पुष्पं वातलं ग्राहि
पित्तासृक्प्रदरापहम् ॥ १ ॥ फलं रसायनं केश्यं वृंहणं शुक्रलं गुरु । मूत्रक्षयहरं
चृष्णारक्तमूत्रविवंधकृत् ॥ २ ॥ इंगुदाः फलमजको जलयुतो लेपान्मुखे कां-
तिदः । ४ दे० भा० तमाल ।

तुणीरुक्तः कटुः पाके कषायो मधुरो लघुः ॥ ४५ ॥
तिक्तो ग्राही हिमो वृष्यो व्रणकुष्ठास्रपित्तजित् ।

भूर्जपत्रः ।

भूर्जपत्रः स्मृतो भूर्जश्चर्मी बहुलवल्कलः ॥ ४६ ॥
भूर्जो भूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ।
कषायो राक्षसघ्नश्च मेदोविषहरः परः ॥ ४७ ॥

पलाशः ।

पलाशः किंशुकः पर्णो याज्ञिको रक्तपुष्पकः ।
क्षारश्रेष्ठो वातहरो ब्रह्मवृक्षः समिद्धरः ॥ ४८ ॥
पलाशो दीपनो वृष्यः सरोष्णो व्रणगुल्मजित् ।
कषायः कटुकस्तिक्तः स्निग्धो गुदजरोगजित् ॥ ४९ ॥
भग्नसंधानकृदोषग्रहण्यर्शः कृमीन् हरेत् ।

शाल्मली ।

शाल्मलिस्तु भवेन्मोचा पिच्छिला पूरणीति च ॥ ५० ॥
रक्तपुष्पा स्थिरायुश्च कंटकाढ्या च तूलिनी ।
शाल्मलिः शीतला स्वाद्वी रसे पाके रसायनी ॥ ५१ ॥
श्लेष्मला पित्तवातास्रहारिणी रक्तपित्तजित् ।

मोचरसः ।

निर्यासः शाल्मलेः पिच्छाशाल्मलिर्वेष्टकोऽपि च ॥ ५२ ॥
मोचास्रावो मोचरसो मोचनिर्यास इत्यपि ।

१ दे० भा० भोजपत्र, भूर्जपत्र । बं० भा० भूजि पत्र । इ० जकमोटी
Jakimoti. २ दे० भा० छिछरा । ढाक । टेसू । केसू । बं० भा० पला-
शगाछ । इ० डोडनीब्रांचव्युटिपा । पलाशमूलस्वरसो नेत्रच्छायाधपुष्पजित् ।
तद्वीजं कृमिविध्वंसि कांडो रसायने हितः ॥ १ ॥ पलाशभवनिर्यासो ग्राही
च क्षपयेद्भुवम् । ग्रहणीं मुखजान् कासान् जयेत्वेदातिनिर्गमम् ॥ २ ॥
३ दे० भा० सेमरका गूद । बं० भा० शिमुलेर आटा । इ० सिल्ककाटन ट्री ।
Silk cotton tree.

मोचास्त्रावो हिमो ग्राही स्निग्धो वृष्यः कषायकः ॥५३॥
प्रवाहिकातीसारामकफपित्तास्रदाहनुत् ।

कूटशाल्मलिः ।

कुत्सिता शाल्मलिः प्रोक्ता रोचना कूटशाल्मलिः ॥५४॥

कूटशाल्मलिका तिक्ता कटुका कफवातनुत् ।

भेद्युष्णा लीहजठरयकृद्गुल्मविषापहा ॥ ५५ ॥

भूतानाहविवन्धास्रमेदःशूलकफापहा ।

धवः ।

धवो धटो नन्दितरुः स्थिरो गौरो धुरंधरः ॥ ५६ ॥

धवः शीतः प्रमेहार्शःपांडुपित्तकफापहः ।

मधुरस्तुवरस्तस्य फलं च मधुरं मनाक ॥ ५७ ॥

धन्वंगः ।

धन्वंगस्तु धनुर्वृक्षो गोत्रवृक्षस्तु तेजनः ।

धन्वंगः कफपित्तास्रकासहृत्तुवरो लघुः ॥ ५८ ॥

वृंहणो बलकृद्रूक्षः संधिकृद्रणरोपणः ।

करीरः ।

करीरः क्रकरो पत्रो ग्रंथिलो मरुभूरुहः ॥ ५९ ॥

करीरः कटुकस्तिक्तः स्वेद्युष्णो भेदनः स्मृतः ।

दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ ६० ॥

शाखोटः ।

शाखोटः पीतफलको भूर्तावासः खरच्छदः ।

शाखोटो रक्तपित्ताशोवातश्लेष्मातिसारजित् ॥ ६१ ॥

१ दे० मा० कौडी सिबल । २ दे० मा० धौ । कहुवा । वं० मा०
वाज्यागाल । ३ घामन । ४ दे० मा० करीर । कचडा । टीट । वं० मा० करील ।
फा० कवार । इ० केपर kaper. 'मूलं कटुकषायञ्च पित्तकृद्दीपनं परम् ।' इसके
फलको डेले कहते हैं । ५ दे० मा० दैह्या । सहोडा । वं० मा० शेओडा ।

वरुणः ।

वरुणो वरणः सेतुस्तिक्तशाकः कुमारकः ।
कषायो मधुरस्तिक्तः कटुको रूक्षको लघुः ॥ ६२ ॥
कटभी ।

कटभी स्वादुपुष्पा च मधुरेणुः कटभरा ।
कटभी तु प्रमेहाशौनाडीव्रणविषक्रिमीन् ॥ ६३ ॥
अत्युष्णा कफकुष्ठघ्नी कटू रूक्षा च कीर्तिता ।
तत्फलं तुवरं ज्ञेयं विशेषात्कफशुक्रहृत् ॥ ६४ ॥
गौलीढः ।

मोक्षस्तु मोक्षकोऽपि स्याद्गौलीढो गोलिहस्तथा ।
क्षारश्रेष्ठः क्षारवृक्षो द्विविधः श्वेतकृष्णकः ॥ ६५ ॥
मोक्षकः कटुकस्तिक्तो ग्राबुष्णः कफवातहृत् ।
विषमेदोगुल्मकंडूवस्तिरूक्क्रिमिशुक्रनुत् ॥ ६६ ॥
अंबुशिरीषिका ।

शिरीषिका ठिंठिणिका दुर्बलांबुशिरीषिका ।
त्रिदोषविषकुष्ठार्शोहरी वारिशिरीषिका ॥ ६७ ॥
शमी ।

शमी सक्तुफला तुंगा केशहंतृफला शिवा ।
मंगल्या च तथा लक्ष्मीः शमी रासालिषिका स्मृता ॥ ६८ ॥
शमी तिक्ता कटुः शीता कषाया रेचनी लघुः ।
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःक्रिमिजित्स्मृता ॥ ६९ ॥
सप्तपर्णः ।

सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।

१ दे० भा० वरुणा । वं भा० वरुक्षा गाच्छ । २ दे० भा० कांटीवाला
सिरस । श्वेत । श्याम । इ० केरिस ट्री cares tree । ३ दे० भा० घंटापा-
टलि । वं० भा० घंटा पारुल । प० भा० पाडल । ४ दे० भा० डिढाना ।
डिढैन । ५ दे० भा० जंडी । जंड । वं० भा० शई । इ० स्पंज ट्री ।
panjtree. ६ दे० भा० सतोना । सातपुडा । वं० भा० छातिम गाच्छ ।

सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्त्रजंतुजित् ॥ ७० ॥

दीपनः श्वासगुल्मघ्नः स्निग्धोष्णस्तुवरः सरः ।

तिनिशः ।

तिनिशः स्यंदनो नेमी रथद्रुर्वजुलस्तथा ॥ ७१ ॥

तिनिशः श्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित् ।

तुवरः श्वित्रदाहघ्नो व्रणपांडुक्रिमिप्रणुत् ॥ ७२ ॥

भूमिसहा ।

भूमिसहो द्वारदा तु शरद्धानुः खरच्छदः ।

भूमिसहस्तु शिशिरो रक्तपित्तप्रसादनः ॥ ७३ ॥

इति वटादिवर्गः ।

धातुवर्गः ।

तत्र धातूनां लक्षणानि गुणाश्च ।

स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च वंगं यसदमेव च ।

सीसं लोहं च सप्तैते धातवो गिरिसंभवाः ॥ १ ॥

वलीपलितखालित्यं काश्चर्याऽवलयजरामयान् ।

निवार्य्य देहं दधति नृणां तद्धातवो मताः ॥ २ ॥

सुवर्णोत्पत्तिनामलक्षणगुणाः ।

पुरा निजाश्रमस्थानां सप्तर्षीणां जितात्मनाम् ।

पत्नीर्विलोक्य लावण्यलक्ष्मीसंपन्नयौवनाः ॥ ३ ॥

१ दे० भा० तिनासवा । तिरिछा । वं० भा० तिनाश । सासना ।
२ दे० भा० भूर्ई सहदेई । उलखड । औखड । ३ दे० भा० सोना । वं०
भा० सोना । फा० तिला । इ० गोल्ड । gold. कनकं सेवयेन्नित्यं जरामृत्यु-
विनाशनम् । कायाग्निपुष्टिजननं वाजीकरणमुत्तमम् ॥ आयुष्यं बलमारोग्यं वज्रे
स्वर्णे स्ते स्थितम् ॥ १ ॥ २ मरीचिरंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ।
वसिष्ठश्चेति सप्तैते कीर्तिताः सप्तर्षयः ॥ २ ॥

कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसो जातवेदसः ।

पतितं यद्धरापृष्ठे रेतस्तद्धेमतामगात् ॥ ४ ॥

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।

तपनीयं च गांगेयं कलधौतं भर्मकांचनम् ॥ ५ ॥

चामीकरं शातकुंभं तथा कार्तस्वरं च तत् ।

जांबूनदं जातरूपं महारजतमित्यपि ॥ ६ ॥

रुक्मं लोहवरं चाग्निबीजं चापेयकर्बुरे ।

अष्टापदं च रसजं तैजसं चापि कीर्तितम् ॥ ७ ॥

प्राकृतं सहजं वह्निसंभूतं खनिसंभवम् ।

रसेन्द्रवेधसं जातं स्वर्णं पंचविधं स्मृतम् ॥ ८ ॥

दाहे रक्तं सितं छेदे निकषे कुंकुमप्रभम् ।

तारशुल्बोज्झितं स्निग्धं कोमलं गुरु हेमसत् ॥ ९ ॥

तच्छ्वेतं कठिनं रुक्षं विवर्णं समलं दलम् ।

दाहे छेदे सितं श्वेतं कषे त्याज्यं लघु स्फुटम् ॥ १० ॥

सुवर्णं शीतलं वृष्यं बल्यं गुरु रसायनम् ।

स्वादु तिक्तं च तुवरं पाके तु स्वादु पिच्छिलम् ॥ ११ ॥

पावित्रं बृंहणं नेत्र्यं मेधास्मृतिमतिप्रदम् ।

हृद्यमायुष्करं कांतिवाग्बिशुद्धिस्थिरत्वकृत् ॥ १२ ॥

विषद्वयं क्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ॥ १३ ॥

बलं सवीर्यं हरते नराणां रोगत्रजान् पोषयतीह कार्ये ॥

असौख्यकार्येव सदा सुवर्णमशुद्धमेतन्मरणं च कुर्यात् ॥ १४ ॥

असम्यङ्मारितं स्वर्णं बलं वीर्यं च नाशयेत् ।

करोति रोगान् मृत्युं च तद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥ १५ ॥

रजतम् ।

त्रिपुरस्य वधार्थाय निनिमेषैर्विलोचनैः ।

१ दलं, जोरत इति । २ यद्धनाहतं स्फुटति । सितया हंति दाहाद्यं वात-
पित्तं फलत्रिकात् । त्रिसुगंध्या प्रमेहादित्रजं तं हंत्यसंशयम् ॥ १ ॥ ३ दे० भा०
चांदी । वं० भा० रूप फा० नुकरा इ० सिल्वर silver.

निरीक्षयामास शिवः क्रोधेन परिपूरितः ।
 अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात् ॥ १६ ॥
 ततो रुद्रः समभवद्वैश्वानर इव ज्वलन् ।
 द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिंदुस्तु वामकात् ॥ १७ ॥
 तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्मसु योजयेत् ।
 रजतं त्रिविधं प्रोक्तं सहजं खनिजकृत्रिमे ॥ १८ ॥
 कृत्रिमं च भवेत्तद्वि वंगादिरसयोगतः ।
 रूप्यं तु रजतं तारं चंद्रकांतिसितप्रभम् ॥ १९ ॥
 वसूतमं च कुप्यं च खर्जूरं रंगबीजकम् ।
 गुरु स्निग्धं मृदु श्वेतं दाहे छेदे घनक्षमम् ॥ २० ॥
 वर्णाढ्यं चंद्रवत्स्वच्छं रूप्यं नवगुणं शुभम् ।
 कठिनं कृत्रिमं रूक्षं रक्तं पीतदलं लघु ॥ २१ ॥
 दाहच्छेदघनैर्नष्टं रूप्यं दुष्टं प्रकीर्तितम् ।
 रूप्यं तिक्तं कषायाम्लं स्वादु पाकरसं सरम् ॥ २२ ॥
 वयसः स्थापनं स्निग्धं लेखनं वातपित्तजित् ।
 प्रमेहादिकरोगांश्च नाशयत्यचिराद्भुवम् ॥ २३ ॥
 तारं शरीरस्य करोति तापं विड्बन्धनं यच्छति शुक्रनाशम् ।
 वीर्यं बलं हन्ति तनोस्तु पुष्टिं महागदान्पोषयति ह्यशुद्धम् २४
 ताम्रम् ।

शुक्रं यत्कार्तिकेयस्य पतितं धरणीतले ।
 तस्मात्ताम्रं समुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः ॥ २५ ॥
 ताम्रमौडुंवरं शुल्बमुडुंवरमपि स्मृतम् ।
 रविप्रियं म्लेच्छमुखं सूर्य्यपर्यायनामकम् ॥ २६ ॥
 जपाकुसुमसंकाशं स्निग्धं मृदु घनक्षमम् ।
 लोहं नागोज्झितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥ २७ ॥

कृष्णं रूक्षमतिस्तब्धं श्वेतं चापि यनासहम् ।
लोहनागयुतं चेति शुल्बं दुष्टं प्रकीर्तितम् ॥ २८ ॥
ताम्रं कषायं मधुरं च तिक्तमम्लं च पाके कटु सारकं च ।
पित्तापहं श्लेष्महरं च शीतं तद्रोपणं स्याल्लघु लेखनं च २९ ॥
पाण्डुराशौज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् ।
शोथं कृमिं शूलमपाकरोति प्राहुः परे बृंहणमल्पमेतत् ३०
न विषं विषमित्याहुस्ताम्रं तु विषमुच्यते ।
एको दोषो विषे ताम्रे त्वष्टौ दोषाः प्रकीर्तिताः ॥ ३१ ॥
दाहः स्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छा क्लेदो रेको वमिर्भ्रमः ।

वंगम् ।

रंगं वंगं त्रपु प्रोक्तं तथा पिचटमित्यपि ॥ ३२ ॥
खुरकं मिश्रकं चापि द्विविधं वंगमुच्यते ।
उत्तमं खुरकं तत्र मिश्रकं त्ववरं मतम् ॥ ३३ ॥
रंगं लघु सरं रूक्षमुष्णं मेहकफक्रिमीन् ।
निहन्ति पाण्डुं सश्वासं चक्षुष्यं पित्तलं मनाक् ॥ ३४ ॥
सिंहो यथा हस्तिगणं निहन्ति तथैव वंगोऽखिलमेहवर्गम् ।
देहस्य सौख्यं प्रबलेंद्रियत्वं नरस्य पुष्टिं विदधाति नूनम् ३५
यसदं ।

यसदं रंगसदृशं रीतिहेतुश्च तन्मतम् ।
यसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् ॥ ३६ ॥
चक्षुष्यं परमं मेहान्पाण्डुं श्वासं च नाशयेत् ।
सीसिकम् ।

दृष्ट्वा भोगिसुतां रम्यां वासुकिस्तु सुमोच यत् ॥ ३७ ॥

१ दे० मा० कली । कलई । रांग । वं० मा० रांग वंग । फा० अर-
जीज । ई० टीन् । tin. २ दे० मा० जिस्त, जसद । वं० मा० दस्ता । फा०
फरातूतिया । ई० जिक् । zinc. २ दे० मा० सिका सीसा । वं० मा० सीसे ।
फा० सुव । ई० लेड् Lead

वीर्यं जातस्ततो नागः सर्वरोगापहो नृणाम् ।

सीसं वर्धं च वप्रं च योगेष्टं नागनामकम् ।

सीसं वंगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ ३८ ॥

नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति

व्याधिं विनाशयति जीवनभातनोति ॥

वह्निं प्रदीपयति कामबलं करोति

मृत्युं च नाशयति सन्ततसेवितस्सः ॥ ३९ ॥

पाकेन हीनौ किल वंगनागौ

कुष्ठानि गुल्मांश्च तथातिकृष्टान् ।

पांडुप्रमेहानलसादशोथ-

भगंदरादीन् कुरुतः प्रभुक्तौ ॥ ४० ॥

लोहम् ।

पुरा लोमिनदैत्यानां निहतानां सुरैर्युधि ।

उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहानि विविधानि च ॥ ४१ ॥

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिंडं कालायसायसी ।

शुरुता दृढतोत्प्लेदकश्मलं दाहकारिता ॥ ४२ ॥

अश्मदोषः सुदुर्गंधो दोषाः सप्तायसस्य तु ।

लोहं तिक्तं सरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ ४३ ॥

रूक्षं वयस्यं चक्षुष्यं लेखनं वातलं जयेत् ।

कफपित्तं गरं शूलं शोथार्शःप्लीहपांडुताः ।

भेदेमेहकृमीन्कुष्ठं तत्किट्टं तद्वदेव हि ॥ ४४ ॥

खड्गत्वकुष्ठामयमृत्युदं भवेद्बृहद्रोगशूलौ कुरुतेऽश्मरीं च ।

नानारुजानां च तथाप्रकोपं करोतिहल्लासमशुद्धलोहम् ४५

१ नागः भुजंगः इत्यादि । १ दे० मा० लोहा, फोलाद, इस्पात । वं० मा० लौह, तिगा, इसपात काल लोह । फा० आहन्, फोलाद, संगे आहन् । ३० आयरन् Iron गुंजामेकां समारम्भ यावत्स्युर्नव रक्तिकाः । तावद्लोहं सम-
स्तीयाद्यथादोषबलं नरः ॥ १ ॥

जीवहारि मदकारि चायसं चेदशुद्धिमदसंस्कृतं ध्रुवम् ।
पाटवं न तनुते शरीरके दारुणं हृदि रुजां च यच्छति ४६ ॥
कूष्मांडं तिलतैलं च माषान्नं राजिकां तथा ।
मद्यमल्लरसं चापि त्यजेल्लोहस्य सेवकः ॥ ४७ ॥
लोहसारम् ।

क्षमाभृच्छिखराकाराण्यंगान्यम्लेन लेपिते ।
लोहे स्युर्यत्र सूक्ष्माणि तत्सारमभिधीयते ॥ ४८ ॥
लोहं साराह्वयं हन्यात् ग्रहणीमतिसारकम् ।
अर्द्धं सर्वांगजं वातं शूलं च परिणामजम् ॥ ४९ ॥
छादिं च पीनसं पित्तं श्वासं कासं व्यपोहति ॥ ५० ॥
कांतलोहम् ।

पात्रे यस्मिन् प्रसरति जले तैलबिंदुर्निषिक्तो ।
विद्धं गंधं त्यजाति च निजं रूपितं निंबकल्कैः ।
तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमिं
कृष्णांगः स्यात्सजलचणकः कांतलोहं तदुक्तम् ॥ ५१ ॥
गुल्मोदरार्शः शूलाममामवातं भगंदरम् ॥
कामलाशोथकुष्ठानि क्षयं कांतमयो हरेत् ॥ ५२ ॥
प्लीहानमल्लपित्तं च यकृच्चापि शिरोरुजम् ।
सर्वान् रोगान्विजयते कांतलोहं न संशयः ॥ ५३ ॥
बलं वीर्यं वपुःपुष्टिं कुरुतेऽग्निं त्रिवर्द्धयेत् ॥ ५४ ॥
मंडूरम् ।

ध्मायमानस्य लोहस्य मलं मंडूरमुच्यते ।
लोहसिंहानिका किट्टी सिंहानं च निगद्यते ॥ ५५ ॥
यल्लोहं यद्गुणं प्रोक्तं तत्किट्टमपि तद्गुणम् ।

१ शतोद्धमुत्तमं किट्टं मध्यं चाशीतिवार्षिकम् । अधसं षष्टिर्षीयं ततो हीनं
विषोपमम् ॥

सप्तोपधातवः ।

सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम् ॥ ५६ ॥

तुल्यं कांस्यं च रीतिश्च सिंदूरश्च शिलाजतु ।

उपधातुषु सर्वेषु तत्तद्भातुगुणा अपि ॥ ५७ ॥

सन्ति किं तेषु ते गौणाः तत्तदंशाल्पभावतः ।

स्वर्णमाक्षिकम् ।

स्वच्छं माक्षिकमाख्यातं तापीजं मधुमाक्षिकम् ॥ ५८ ॥

ताप्यं माक्षिकधातुश्च मधुधातुश्च स स्मृतः ।

किञ्चित्सुवर्णं साहित्यात् स्वर्णमाक्षिकमीरितम् ॥ ५९ ॥

उपधातुः सुवर्णस्य किञ्चित्स्वर्णगुणान्वितः ।

तथा च काञ्चनाभावे दीयते स्वर्णमाक्षिकम् ॥ ६० ॥

किंतु तस्यानुकल्पत्वात् किञ्चिद्गुणं ततः ।

न केवलं स्वर्णगुणो वर्तते स्वर्णमाक्षिके ॥ ६१ ॥

द्रव्यांतरस्य संसर्गात्संत्यन्येऽपि गुणा यतः ।

सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं वृष्यं रसायनम् ॥ ६२ ॥

चक्षुष्यं वस्तिरुक्कुष्ठपांडुमेहविषोदरान् ।

अर्शः शोथं विषं कंडुं त्रिदोषमपि नाशयेत् ॥ ६३ ॥

भंदानलत्वं बलहानिमुग्रां विष्टंभतां नेत्रगदान्सकुष्ठान् ।

तथैव मालां व्रणपूर्विकां च करोति तापीजमशुद्धमेतत् ॥ ६४ ॥

तारमाक्षिकम् ।

तारमाक्षिकमन्यत्तु तद्भवेद्रजतोपमम् ।

किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥ ६५ ॥

अनुकल्पतया तस्य ततो हीनगुणं स्मृतम् ।

न केवलं रूप्यगुणा वर्तते तारमाक्षिके ॥ ६६ ॥

द्रव्यांतरस्य संसर्गात्संत्यन्येऽपि गुणा यतः ॥ पूर्ववत् ॥

तुत्थम् ।

तुत्थं वितुन्नकं चापि शिखिग्रीवं मयूरकम् ॥ ६७ ॥

तुत्थं ताम्रोपधातुर्हि किञ्च ताम्रेण तद्भवेत् ।

किञ्चित्ताम्रगुणं तस्माद्वक्ष्यमाणगुणं च तत् ॥ ६८ ॥

तुत्थकं कटुकं क्षारं कषायं वामकं लघु ।

लेखनं भेदनं शीतं चक्षुष्यं कफपित्तहृत् ॥ ६९ ॥

विषाशमकुष्ठकंडूघ्नं खर्परं चापि तद्गुणम् ।

कांस्यम् ।

ताम्रस्त्रपुजमाख्यातं कांस्यं घोषं च कांसकम् ॥ ७० ॥

उपधातुर्भवेत्कांस्यं द्वयोस्तरणिरंगयोः ।

कांस्यस्य तु गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः ॥ ७१ ॥

संयोगजप्रभावेण तस्यान्येऽपि गुणाः स्मृताः ।

गुरु नेत्रहितं रूक्षं कफपित्तहरं परम् ॥ ७२ ॥

पित्तलम् ।

पित्तलं त्वारकूटं स्यादारो रीतिश्च कथ्यते ॥ ७३ ॥

राजरीतिर्ब्रह्मरीतिः कपिला पिङ्गलापि च ।

रीतिरप्युपधातुः स्यात्ताम्रस्य यसदस्य च ॥ ७४ ॥

पित्तलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः ।

संयोगजप्रभावेण तस्यान्येऽपि गुणाः स्मृताः ॥ ७५ ॥

रीतिकायुगलं रूक्षं तिक्तं च लवणं रसे ।

शोधनं पांडुरोगघ्नं कृमिघ्नं नातिलेखनम् ॥ ७६ ॥

१ दे० मा० नीलायोथा तूतिया ब० मा० तुतिया । फा० दुदिया । इ०
आलपोढ आंफकांपर । वमने मंडले दद्रौ विषे चैव प्रशस्यते । २ दे० मा०
कांसी ब० मा० कांसा । फा० रोइन । इ० बेलमेटल Bial matal. ३ दे०
मा० पित्तल । ब० मा० कांचापित्तल । फा० विरंज । इ० ब्रास Brass

सिंदूरम् ।

सिंदूरं रक्तेणुश्च नागगर्भं च सीसकम् ।

सीसोपधातुः सिंदूरं गुणैस्तत्सीसवन्मतम् ॥ ७७ ॥

सिंदूरमुष्णवीसर्पकुष्ठकंडूविषापहम् ।

भग्नसंधानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥ ७८ ॥

शिलाजतु ।

निदाघे धर्मसंतप्ता धातुसारं धराधराः ।

निर्यासवत्प्रमुंचन्ति तच्छिलाजतु कीर्तितम् ॥ ७९ ॥

सौवर्णं राजतं ताम्रमायसं तच्चतुर्विधम् ।

शिलाजत्वद्रिजतु च शैलनिर्यास इत्यपि ॥ ८० ॥

गैरेयमश्मजं चापि गिरिजं शैलधातुजम् ।

शिलाजं कटुतिक्तोष्णं कटुपाकं रसायनम् ॥ ८१ ॥

छेदि योगवहं हन्ति कफमेदोश्मशर्कराः ।

मूत्रकृच्छ्रं क्षयं आसं वाताशौंसि च पांडुताम् ॥ ८२ ॥

अपस्मारं तथोन्मादं शोथकुष्ठोदरक्रिमीन् ।

सौवर्णं तु जपापुष्पवर्णं भवति तद्रसात् ॥ ८३ ॥

मधुरं कटु तिक्तं च शीतलं कटुपाकि च ।

ताम्रं मयूरकंठाभं तीक्ष्णमुष्णं च जायते ॥ ८४ ॥

लोहं जटायुः पक्षाभं तिक्तकं लवणं भवेत् ।

विषाके कटुकं शीतं सर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ ८५ ॥

रसः ।

रसायनार्थिभिलोके पारदो रस्यते यतः ।

ततो रस इति प्रोक्तः स च धातुरपि स्मृतः ॥ ८६ ॥

१ दे० भा० सिंदूर । वं० भा० सिंदुर । फा० सिरिनज् । २ दे० भा० शिलाजीत वं० भा० शिलाजतु । इं० आसफेळट जुझपिच । Assfaillt Jojh-pich (परीक्षा) गोमूत्रगंधवत्कृष्णं स्निग्धं मृदु तथा गुरु । तिक्तं कषायं शीतं च सर्वश्रेष्ठं तदायसम् ॥ १ ॥ विंध्याद्रौ बहुलं तत्तु तत्र लोहं यतोऽधिकम् तच्छोधनमृते व्यर्थमनेकमलमेलनात् ॥ २ ॥

पारदम् ।

शिवांगात्मच्युतं रेतः पतितं धरणीतले ॥

तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्च तत् ॥ ८७ ॥

क्षेत्रभेदेन विज्ञेयं शिववीर्य्यं चतुर्विधम् ।

श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत् क्रमात् ॥ ८८ ॥

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च खलु जातितः ।

श्वेतं शस्तं रुजां नाशे रक्तं किल रसायने ॥ ८९ ॥

धातुवेधे तु तत्पीतं खे गतौ कृष्णमेव च ।

पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारसः ॥ ९० ॥

चपलः शिववीर्य्यश्च रसः सूतः शिवाह्वयः ।

पारदः षड्रसः स्निग्धस्त्रिदोषघ्नो रसायनः ॥ ९१ ॥

योगवाही महावृष्यः सदा दृष्टिबलप्रदः ।

सर्वामयहरः प्रोक्तो विशेषात्सर्वकुष्ठनुत् ॥ ९२ ॥

स्वस्थो रसो भवेद्ब्रह्मा बद्धो ज्ञेयो जनार्दनः ।

रंजितः क्रामितश्चापि साक्षाद्देवो महेश्वरः ॥ ९३ ॥

मूर्च्छितो हरति रुजं बन्धनमनुभूय खेगतिं कुरुते ।

अजरीकरोति हि मृतः कोऽन्यः करुणाकरः सूतात् ॥ ९४ ॥

असाध्यो यो भवेद्रोगो यस्य नास्ति चिकित्सितम् ।

रसेन्द्रो हन्ति तं रोगं नरकुंजरवाजिनाम् ॥ ९५ ॥

मलं विषं वह्निगिरित्वचापलं नैसर्गिकं दोषमुशन्ति पारदे ।

उपाधिजौ द्वौ त्रपुनागयोगजौ दोषौ रसेन्द्रेकथितौ मुनीश्वरैः ।

मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण दाहोग्निना कष्टतरः शरीरे ।

१ दे०भा० पारा । वं०भा०पारा । फा० सीमाव । ई०मर्क्युर marqure.
(पारदपथ्यानि) हितं मुद्गान्दुग्धाज्यशाल्यन्नानि सदा ततः । शाके पुनर्नवा
देवि मेघनादं सवास्तुकम् ॥ १ ॥ सैधवं नागरं मुस्ता मूलकानि च भक्षयेत् ।
आत्मज्ञानं कथा पूजा शिवस्य च विशेषतः ॥ २ ॥ एतांस्तु समयान्भद्रे न
लघेद्रसभक्षकः ॥

देहस्य जाड्यं गिरिणा सदा स्या--

चांचल्यतो वीर्य्यहतिश्च पुंसाम् ॥ ९७ ॥

वंगेन कुष्ठं भुजगेन गंडो भवेत्ततोऽसौ परिशोधनीयः ॥ ९८ ॥

वह्निर्विषं मलं चेति मुख्या दोषास्त्रयो रसे ।

एते कुर्वन्ति संतापं मृतिं मूर्च्छां नृणां क्रमात् ॥ ९९ ॥

अन्येऽपि कथिता दोषा भिषग्भिः पारदे यदि ।

तथाप्येते त्रयो दोषा हरणीया विशेषतः ॥ १०० ॥

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यस्सेवते तस्य करोति बाधाम्

देहस्य नाशं विदधाति नूनं कुष्ठांश्च रोगाञ्जनयेन्नराणाम् ।

उपरसाः ।

गंधो हिंगुलमभ्रतालकशिलाः स्रोतोजनं टक्कणं

राजावर्तकचुंबकौ स्फुटिकया शंखः खटीगैरिकम् ।

कासीसं रसकं कपर्दसिकताबोलाश्च कंकुष्ठकं

सौराष्ट्री च मता अमी उपरसाः सूतस्य किंचद्गुणैः ॥ १०२ ॥

गंधकम् ।

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडन्त्या रजसाप्लुतम् ।

डुकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ ॥ १०३ ॥

प्रसृतं यद्रजस्तस्माद्गंधकः समभूतदा ।

गंधको गंधिकश्चापि गंधपाषाण इत्यपि ॥ १०४ ॥

सौगंधिकश्च कथितो वलिर्बलवसापि च ।

चतुर्धा गंधकः प्रोक्तो रक्तः पीतः सितोऽसितः ॥ १०५ ॥

रक्तो हेमक्रियासूतः पीतश्चैव रसायने ।

व्रणादिलेपने श्वेतः कृष्णः श्रेष्ठः सुदुर्लभः ॥ १०६ ॥

गंधकः कटुकस्तिक्तो वीर्योष्णस्तुवरः सरः ।

पित्तलः कटुकः पाके कंडुवीसर्पजंतुजित ॥ १०७ ॥

हन्ति कुष्ठक्षयप्लीहकफवातान् रसायनः ॥ १०८ ॥

अशोधितो गंधक एष कुष्ठं करोति तापं विषमं शरीरे ।
सौख्यं च रूपं च बलं तथौजः शुक्रं निहत्येव करोति चामम् १०९

हिंगुलम् ।

हिंगुलं दरदं स्लेच्छभिगुलं पूर्णपारदम् ।
मक्षिरंगं सुरंगं च नाम्ना कर्मारबंधनम् ॥
दरदास्त्रिविधः प्रोक्तश्चर्मरः शुकतुंडकः ॥ ११० ॥
हंसपादस्तृतीयः स्याद्गुणवानुत्तरोत्तरम् ।
चर्मरः शुक्लवर्णः स्यात्सपीतः शुकतुंडकः ॥ १११ ॥
जपाकुसुमसंकाशो हंसपादो महोत्तमः ।
तिक्तं कषायं कटु हिंगुलं स्यान्नेत्रामयघ्नं कफपित्तहारि ।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्च प्लीहामवातौ च गरं निहन्ति ११२
ऊर्ध्वपातनयुक्त्या तु डमरूयंत्रपाचितम् ।
हिंगुलं तस्य सूतं तु शुद्धमेव न शोधयेत् ॥ ११३ ॥

अभ्रकम् ।

पुरा वधाय वृत्रस्य वज्रिणा वज्रमुद्धृतम् ।
विस्फुलिगास्ततस्तस्माद्गगने परिसर्पिताः ॥ ११४ ॥
ते निपेतुर्धनध्वानाः शिखरेषु महीभृताम् ।

१ दे० भा० शिंगरफ । ब० भा० हिंगुल । फा० सिंग्रफ । ई० सल्फेरेड
ओफक्युरी । (हिंगुलनिर्माणम्) अशुद्धपारदं भागं चतुर्भागं तु गंधकम् ।
उभौ क्षिप्त्वा लोहपात्रे क्षणं मृद्वग्निना पचेत् ॥ १ ॥ कृत्वाथ खंडशस्तत्र
काचकूप्यां निरुध्य च । वस्त्रमृत्तिकया सम्यक्काचकूपीं प्रलेपयेत् ॥ २ सर्वतो
गुलमानेन च्छायाशुष्कं तु कारयेत् । बालकायंत्रगर्भे तु दिनं मृद्वग्निना
पचेत् ॥ ३ ॥ क्रमवृद्ध्याग्निना पश्चात्पचेद्विसप्तचक्रम् । सप्ताहे तु समुद्धृत्य
हिंगुलः स्यान्मनोहरः ॥ ४ ॥ २ दे० भा० अभ्रक । अभ्रख । ब० भा०
अभ्र । फा० सितारा जमीन । इ० टाल्क ग्लिमर Talk Glimmer.

तेभ्य एव समुत्पन्नं तत्ताद्विरिषु चाभ्रकम् ॥ ११५ ॥

तद्वज्रं वज्रपातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् ।

गगनात्स्खलितं यस्माद्गगनं च ततो मतम् ॥ ११६ ॥

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्तस्माच्चतुर्विधः ।

क्रमेणैव सितं रक्तं पीतं कृष्णं च वर्णतः ॥ ११७ ॥

प्रशस्यते सितं तारे रक्तं तत्तु रसायने ।

पीतं हेमनि कृष्णं तु गदेषु द्रुतयेऽपि च ॥ ११८ ॥

पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्विधम् ।

मुञ्चत्यग्नौ विनिक्षितं पिनाकं दलसंचयम् ॥ ११९ ॥

अज्ञानाद्भक्षणं तस्य महाकुष्ठप्रदायकम् ।

दर्दुरं त्वग्निनिक्षितं कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥ १२० ॥

गोलकान् बहुशः कृत्वा स स्यान्मृत्युप्रदायकः ।

नागं तु नागवद्वह्नौ फूत्कारं परिमुञ्चति ॥ १२१ ॥

तद्भक्षितमवश्यं तु विदधाति भगंदरम् ।

वज्रन्तु वज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतिं व्रजेत् ॥ १२२ ॥

सर्वाश्रेषु वरं वज्रं व्याधिवाद्धक्यमृत्युहृत् ।

अभ्रमुत्तरशैलोत्थं बहुसत्त्वं गुणाधिकम् ॥ १२३ ॥

दक्षिणाद्रिभवं स्वल्पसत्त्वमल्पगुणप्रदम् ॥ १२४ ॥

अभ्रं कषायं मधुरं सुशीतमायुःकरं धातुविवर्द्धनं च ।

हन्यान्निदोषं व्रणमेहकुष्ठं प्लीहोदरं ग्रंथिविषक्रिमींश्च ॥ १२५ ॥

रोगान् हन्ति दृढयाति वपुर्वीर्यवृद्धिं विधत्ते

तारुण्याढ्यं रमयाति शतं योषितां नित्यमेव ।

दीर्घायुष्काञ्जनयाति सुतान् विक्रमेः सिंहतुल्या-

मृत्योर्भीतिं हराति सततं सेव्यमानं मृताभ्रम् ॥ १२६ ॥

पीडां विधत्ते विविधां नराणां कुष्ठं क्षयं पांडुगदं च शोथम् ।

हृत्पार्श्वपीडां च करोत्यशुद्धमभ्रं त्वासिद्धं गुरुतापदं स्यात् ॥

हरितालम् ।

हरितालं तु तालं स्यादालं तालकमित्यपि ।
 हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राख्यं पिंडसंज्ञकम् ॥ १२८ ॥
 तयोराद्यं गुणैः श्रेष्ठं ततो हीनगुणं परम् ॥
 स्वर्णवर्णं गुरु स्निग्धं सपत्रं चाभ्रपत्रवत् ॥ १२९ ॥
 पत्राख्यं तालकं विद्याद्गुणाढ्यं तद्रसायनम् ।
 निष्पत्रं पिंडसदृशं स्वल्पसत्त्वं तथा गुरु ॥ १३० ॥
 स्त्रीपुष्पहारकं स्वल्पगुणं तत्पिण्डतालकम् ।
 हरितालं कटु स्निग्धं कषायोष्णं हरेद्विषम् ॥
 कंडुकुष्ठास्यरोगास्त्रकफपित्तकचव्रणान् ॥ १३१ ॥
 हरति च हरितालं चारुतां देहजातां
 सृजति च बहुतापानंगसंकोचपीडाम् ।
 वितरति कफवातौ कुष्ठरोगं विदध्या-
 दिदमशितमशुद्धं मारितं चाप्यसम्यक् ॥ १३२ ॥
 मनःशिला ।

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ।

नैपाली कुनटी गोला शिला दिव्यौषधिः स्मृता ॥ १३३ ॥

१ दे० भा० हरताल । वं० भा० हरिताल । हतेल ॥ शोधितं हरितालं तु
 कांतिवीर्य्यविवर्द्धनम् । कुष्ठादिकफरोगघ्नं जरा मृत्युहरं परम् ॥ १ ॥ अशीतिवा-
 तान्कफपित्तरोगान् कुष्ठानि मेहांश्च गुदामयांश्च । निहन्ति गुंजार्द्धमितं तु तालं
 षड्बलखंडेन समं प्रयुक्तम् ॥ २ ॥ पिंजरं पित्तलं तालं मनोज्ञं हरितालकम् ।
 छत्रांगकांचनरसं गोदंतं नटमंडनम् ॥ ३ ॥ तालकस्यैव भेदोस्ति मनागेव
 तदंतरम् । तालकं चातिपीतं स्याद्भवेद्रक्ता मनःशिला ॥ ४ ॥ हरितालोऽष्टधा
 प्रोक्तो गोदंतः सर्वतोधिकः । तदभावे तु पत्राख्यो वयसः स्थापनः परः ॥ ५ ॥
 हरितालं हरेर्वीर्य्यं लक्ष्मीवीर्य्यं मनःशिला । पारदं शिववीर्य्यं स्याद्बन्धकं पार्वती-
 रजः ॥ ६ ॥ २ दे० भा० मनशिल । मैनशिल । वं० भा० मनछाल ।

मनःशिला गुरुर्वर्ण्या सरोज्णा लेखना कटुः ।

तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफास्त्रनुत् ॥ १३४ ॥

मनःशिला मंदबलं करोति जंतुं ध्रुवं शोधनमंतरेण ।

मलानुबंधं किल मूत्ररोधं सशर्करं कृच्छ्रगदं च कुर्यात् ॥ १३५ ॥

अंजनं, सौवीरम् ।

अंजनं यासुनं चापि कापोतांजनमित्यपि ।

तत्तु स्रोतोऽंजनं कृष्णं सौवीरं श्वेतमीरितम् ॥ १३६ ॥

वल्मीकशिखराकारं भिन्नमंजनसन्निभम् ।

वृष्टं तु गैरिकाकारमेतत्स्रोतोऽंजनं स्मृतम् ॥ १३७ ॥

स्रोतोऽंजनसमं ज्ञेयं सौवीरं तत्तु पांडुरम् ।

स्रोतोऽंजनं स्मृतं स्वादु चक्षुष्यं कफपित्तनुत् ॥ १३८ ॥

कषायं लेखनं स्निग्धं ग्राहिच्छर्दिविषापहम् ।

सिध्मक्षयास्त्रहृच्छीतं सेवनीयं सदा बुधैः ॥ १३९ ॥

स्रोतोऽंजनगुणाः सर्वे सौवीरेऽपि मता बुधैः ।

किंतु द्वयोरंजनयोः श्रेष्ठं स्रोतोऽंजनं स्मृतम् ॥ १४० ॥

टंकणम् ।

टंकणोऽग्निकरो रूक्षः कफघ्नो वातपित्तकृत् ।

स्फुटिका ।

स्फुटी च स्फुटिका प्रोक्ता श्वेता च शुभ रंगदा ॥ १४१ ॥

दृढरंगा रंगदृढा दृढा रंगापि कथ्यते ।

स्फुटिका तु कषायोष्णा वातपित्तकफघ्नान् ॥ १४२ ॥

निहन्ति शिवत्रवीसर्पान् योनिसंकोचकारिणी ।

१ दे० मा० सुरमा, सुफेदसुरमा । वं० मा० श्वेतसुरमा, नीला सुरमा ।
फा० सुरमा अस्फहानी । इ० सल्फ्युरेट आफ् आंटीमनी । (Sulfurat of
antimony) २ दे० मा० सुहागा अयमुपरसत्वात्पुनरुक्तः ३ दे० मा०
टंकडी । लाल, सफेद । वं० मा० फटकिरी ।

राजावर्तः ।

राजावर्तः कटुस्तिक्तः शिशिरः पित्तनाशनः ॥ १४३ ॥

राजावर्तः प्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्रानिवारणः ।

चुंबकः ।

चुंबकः कांतपाषाणोऽयस्कांतो लोहकर्षकः ॥ १४४ ॥

चुंबको लेखनः शीतो भेदो विषगरापहः ।

गैरिकम् ।

गैरिकं रक्तधातुश्च गौरेयं गिरिजं तथा ॥ १४५ ॥

स्वर्णगैरिकमन्यतु ततो रक्ततरं हि तत् ।

गैरिकद्वितयं स्निग्धं मधुरं तुवरं हिमम् ॥ १४६ ॥

चक्षुष्यं दाहपित्तास्रकफहिक्राविषापहम् ।

खटी गौरखटी ।

खटिका कठिनी चापि लेखनी च निगद्यते ॥ १४७ ॥

खटिका दाहजिच्छीता मधुरा विषशोथजित् ।

लेपादेते गुणाः प्रोक्ता भक्षिता मृत्तिकासमा ॥ १४८ ॥

खटी गौरखटी द्वे च गुणैस्तुल्ये प्रकीर्तिते ।

वालुका ।

वालुका सिकता प्रोक्ता शर्करा रेतजापि च ॥ १४९ ॥

वालुका लेखनी शीता व्रणोरःक्षतनाशिनी ।

१ दे० मा० लाजवर्द । पाषाण । २ दे० मा० चुंबक प्रत्थर । ३ दे० मा० गेरी, स्वर्णगेरी । वं मा० गिरी माटो । फा० गिलेसुर्खमश्री । इ० ओकरेलंब्रस्टोन । Ocarrailamber stone. ४ दे० मा० खडाकटी, खडी, गौरखडी । वं० मा० खडिमाटी, चाखडी । फा० गिले सुफेद गिले खरिया । इ० पाइप क्ले । Piap clay. ५ दे० मा० रेत, वं० मा० वाली । फा० रेग । इ० सैंड, Sand.

खर्परम् ।

खर्परं तुत्थकं तुत्थादन्यत्तद्रसकं स्मृतम् ॥ १५० ॥

ये गुणास्तुत्थके प्रोक्तास्ते गुणा रसके स्मृताः ॥

कासीसम् ।

कासीसं धातुकासीसं पांशुकासीसमित्यपि ॥ १५१ ॥

तदेव किञ्चित्पीतं तु पुष्पकासीसमुच्यते ।

कासीसमम्लमुष्णं च तिक्तं च तुवरं तथा ॥ १५२ ॥

वातश्लेष्महरं केश्यं नेत्रकंडूविषप्रणुत् ।

मूत्रकृच्छाश्मरीश्वित्रनाशनं परिकीर्तितम् ॥ १५३ ॥

सौराष्ट्री ।

सौराष्ट्री तुवरी काली मृत्तालकसुराण्ट्जे ।

आढकी चापि सा ख्याता मृत्सना च सुरमृत्तिका ॥ १५४ ॥

स्फुटिकाया गुणाः सर्वे सौराष्ट्र्या अपि कीर्तिताः ।

कृष्णमृत्तिका ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्त्रप्रदरश्लेष्मदाहनुत् ॥ १५५ ॥

कर्पदकम् ।

कर्पदको वराटश्च कपर्दी च वराटिका ।

कर्पदिका हिमा नेत्रहिता स्फोटक्षयापहा ॥ १५६ ॥

कर्णस्रावाग्निमांद्यघ्नी पित्तास्रकफनाशिनी ।

१ दे० मा० खपरिला । वं० मा० खापर । फा० संगवसरी, इं० ब्लाक जाक Black sok. २ दे० मा० कसीस, पुष्पकसीस वं० मा० धातुकासीस पुष्पकासीस फा० जाकेसुब्ज । इं० सल्फेट औफ आयर्न । Salfet offi iron. भस्मवन्मृत्तिकाम्बुं च कासीसधातुरित्यपि । तदेव किञ्चित्पीतं तु पुष्पकासीसमुच्यते ॥ ३ दे० मा० सौरटामटी । वं० मा० सौराष्ट्रदेशीय सुगंधिमृत्तिका । ४ दे० मा० कौडी । वं० मा० कडी । इं० कवरीझ Coverijh. सार्द्धनिष्कप्रमाणासौ श्रेष्ठा योगेषु योजयेत् । निष्कप्रमाणा मध्या सा हीना पादोननिष्कका ॥ १ ॥

शंखम् ।

शंखः समुद्रजः कंबुः सुनादः पावनध्वनिः ॥ १५७ ॥

शंखो नेत्र्यो हिमः शीतो लघुः पित्तकफास्रजित् ।

बोलम् ।

बोलं गंधरसं प्राणपिंडगोपरसाः स्मृताः ॥ १५८ ॥

बोलं रक्तहरं शीतं मेध्यं दीपनपाचनम् ।

मधुरं कटुतिक्तं च दाहस्वेदत्रिदोषजित् ॥ १५९ ॥

ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

कंकुष्ठम् ।

तत्रैकं नलकारणं स्यात्तदन्यद्रेणुकं स्मृतम् ॥ १६० ॥

हिमवत्पादशिखरे कंकुष्ठमुपजायते ।

तत्रैकं रक्तकालं स्यादन्यद्वैमप्रभं स्मृतम् ॥ १६१ ॥

पीतप्रभं गुरु स्निग्धं श्रेष्ठं कंकुष्ठमादिशेत् ।

श्यामं रक्तं लघु त्यक्तसत्त्वं नेष्टं हरेणुकम् ॥ १६२ ॥

कंकुष्ठं काककुष्ठं च वरांगं रंगदायकम् ।

कंकुष्ठं रेचनं तिक्तं कटुष्णं वर्णकारकम् ॥ १६३ ॥

कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ।

रत्ननिरुक्तिः ।

धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नतीव यत् ॥ १६४ ॥

ततो रत्नमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः ।

रत्ननाम ।

रत्नं क्लीबे मणिः पुंसि स्त्रियामपि निगद्यते ॥ १६५ ॥

तत्तु पाषाणभेदोऽस्ति मुक्तादि च तदुच्यते । अमरः ।

रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ १६६ ॥

१ दे० मा० शंख । बं० मा० शंख शाक । इं० कौंच Konch. २ दे०

मा० हीराबोल । बीजाबोल । बं० मा० मधुरस । इं० मिही । Mihi. ३ दे०

मा० मुरदासंग पा० मा० मुरदासंग । ४ हिमवतः प्रत्यंतपर्वतानां शिखरे ।

रत्नं गारुत्मतं पुष्परागो माणिक्यमेव च ।

इंद्रनीलश्च गोमेदं तथा वैदूर्यमित्यपि ॥ १६७ ॥

मौक्तिकं विद्रुमश्चेति रत्नान्युक्तानि वै नव ।

विष्णुधर्मोत्तरेऽपि ।

मुक्ताफलं हीरकश्च वैदूर्यं पद्मरागकम् ॥ १६८ ॥

पुष्पराजं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा ।

प्रवाल्युक्तान्येतानि महारत्नानि वै नव ॥ १६९ ॥

हीरकम् ।

हीरकः पुंसि वज्रोऽस्त्री चन्द्रो मणिवरश्च सः ।

स तु श्वेतः स्मृतो विप्रो लोहितः क्षत्रियः स्मृतः ॥ १७० ॥

पीतो वैश्योऽसितः शूद्रः चतुर्वर्णात्मकश्च सः ।

रसायने मतो विप्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ १७१ ॥

क्षत्रियो व्याधिविध्वंसी जरामृत्युहरः स्मृतः ।

वैश्यो धनप्रदः प्रोक्तस्तथा देहस्य दार्ढ्यकृत् ॥ १७२ ॥

शूद्रो नाशयति व्याधीन् वयःस्तंभं करोति च ।

पुंस्त्रीनपुंसकानीह लक्षणीयानि लक्षणैः ॥ १७३ ॥

सुवृत्ताः फलसंपूर्णास्तेजोयुक्ता बृहत्तराः ।

पुरुषास्ते समाख्याता रेखाबिंदुविवर्जिताः ॥ १७४ ॥

रेखाबिन्दुसमायुक्ताः षडस्त्रास्ते स्त्रियः स्मृताः ।

त्रिकोणाश्च सुदीर्घास्ते विज्ञेयाश्च नपुंसकाः ॥ १७५ ॥

१ दे० भा० रत्नं--वज्रं--हीरा । गारुत्मतं--पद्मा, हरिन्मणि--पद्मरागः--लाल । पुष्परागः--पुखराज । माणिक्यं--चूनी । इंद्रनीलं--नीलम । गोमेदः--पीतरत्न । वैदूर्यं--केतुप्रहवल्लभ । रेणुकं नलकाख्यं च पाठांतरम् । २ दे० भा० हीरा ॥ वं० भा० हिरे । फा० इल्माश । इं० डाएमण्ड ॥ Diamond. वज्रं समीर-
क्षफपित्तगदांश्च हन्याद्रजोपमं च कुरुते वपुरुत्तमश्चि । शोथक्षयभ्रमभगंदरमेहमेदः-
प्राण्डूदरश्चयथुहारि च पड्रसाढ्यम् ॥

तेषु स्युः पुरुषा श्रेष्ठाः रसबन्धनकारिणः ।

स्त्रियः कुर्वन्ति कायस्य कांतिं स्त्रीणां सुखप्रदाः ॥ १७६ ॥

नपुंसकास्त्ववीर्याः स्युरकामाः सत्त्ववर्जिताः ।

स्त्रियः स्त्रीभ्यः प्रदातव्याः क्लीबं क्लीबे प्रयोजयेत् ॥ १७७ ॥

सर्वेभ्यः सर्वदा देया पुरुषा वीर्यवर्द्धनाः ।

अशुद्धं कुरुते वज्रं कुष्ठे पार्श्वव्यथां तथा ॥ १७८ ॥

पाण्डुतां पंगुरत्वं च तस्मात्संशोध्य मारयेत् ।

आयुः पुष्टिं बलं वीर्यं वर्णं सौख्यं करोति च ॥ १७९ ॥

सेवितं सर्वरोगघ्नं मृतं वज्रं न संशयः ।

ह्रीतम् ।

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ॥ १८० ॥

माणिक्यम् ।

माणिक्यं पद्मरागः स्यात् शोणरत्नं च लोहितम् ।

पुष्परागः ।

पुष्परागो मञ्जुमणिः स्याद्वाचस्पतिवल्लभः ॥ १८१ ॥

इंद्रनीलं गोमेदः ।

नीलं तथेन्द्रनीलं च गोमेदः पीतरत्नकम् ।

वैदूर्यम् ।

वैदूर्यं दूरजं रत्नं स्यात्केतुग्रहवल्लभम् ॥ १८२ ॥

मौक्तिकम् ।

मौक्तिकं शौक्तिकं मुक्ता तथा मुक्ताफलं च तत् ।

१ दे० मा० पन्ना । वं० मा० पान्ना । फा० जुमुरद ई० इमराल्ड । २ दे० मा० लाल । वं० मा० माणिक । ई० रुबी Rochi. ३ दे० मा० पुखराज । वं० मा० पुष्पराग । ई० टोयाज Toials. ४ दे० मा० नीलम । वं० मा० नीलमणि । ई० सेफायर Safiar. ५ दे० मा० गोमेद । वं० मा० औनिकस । ६ दे० मा० लहसुनिया । वं० मा० वैदूर्य । ई० फेटसआई । ७ दे० मा० मोती । वं० मा० मुक्ता । फा० मखारिद । ई० पर्ल Pearl. विद्रुमं सर्वदोषघ्नं दीपनं रुचिपुष्टिदम् ।

शुक्तिः शंखो गजः क्रोड़ः फणिर्मत्स्यश्च दर्दुरः ॥ १८३ ॥

वेणुरेते समाख्याताः तज्जैर्मौक्तिकयोनयः ।

मौक्तिकं शीतलं वृष्यं चक्षुष्यं बलपुष्टिदम् ॥ १८४ ॥

प्रवालः ।

पुंसि क्लीबे प्रवालः स्यात्पुमानेव तु विद्रुमः ।

रत्नानि भक्षितानि स्युर्मधुराणि सराणि च ॥ १८५ ॥

चक्षुष्याणि च शीतानि विषघ्नानि धृतानि च ।

मंगल्यानि मनोज्ञानि ग्रहदोषहराणि च ॥ १८६ ॥

किंत्वं कस्य ग्रहस्य प्रीतिकरमित्युत्तरं रत्नमालायाम् ।

माणिक्यं तरणेः सुजातममलं मुक्ताफलं शीतगो-

र्भाहेयस्य तु विद्रुमो निगदितः सौम्यस्य गारुत्मतम् ।

देवैज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्य्यस्य वज्रं शने-

नीलं निर्मलमन्ययोर्निगदिते गोमेदवैदूर्यके ॥ १८७ ॥

उपरत्नानि ।

उपरत्नानि काचश्च कर्पूराश्मा कर्पादिका ।

मुक्ताशुक्तिस्तथा शंख इत्यादीनि बहून्यपि ॥ १८८ ॥

—क्षयपाण्डुज्वरश्वासकासमेदोगदाजयेत् ॥ १ ॥ श्वेतं स्निग्धमतीव बंधुरतरं स्या-

त्पारसीकोद्भवं रूक्षं कांचनवर्णसंकरयुतं स्याद्धार्वरं मौक्तिकम् ॥ शौणं तूर्मजसंभवं

विदुरतिस्निग्धं तथा देशजं चातुर्वर्ण्ययुतं सुलक्षणमिति श्लक्ष्णं कविश्रीकरम् ॥ २ ॥

१ दे० भा० मुंगा, गुलियां । वं० भा० मुंगा।फा० मिरजान्, इं० रेडको-

रल् Red coral. २ उपरत्नानि, गौणरत्नानि । ३ दे० भा० कच्च । वं०

भा० काच । फा० आवगीना । इं० ग्लास Glass. काचा तु सारका लघ्वी

न्नणनेत्रहितावहा । लेखनी शूलहृत्प्रोक्ता वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ १ ॥ ४ दे० भा०

रत्नकपूर । कपूरनिभा । ५ दे० भा० मोतीवाली सीपी । वं० भा० शामुक ।

क्षितुक । इं० ओईसटरशेल, भेदजलसीपी । मुक्ताशुक्तिः कटुः स्निग्धा श्वास-

हृद्रोगनाशिनी । शूलप्रशमनी रुच्या मधुरा दीपनी परा ॥ २ ॥

उपरत्नत्वादिमौ कपर्दशंखौ पुनरुक्तौ ।

शुणा यथैव रत्नानामुपरत्नेषु ते तथा ।

किंतु किंचित्ततो हीना विशेषोयमुदाहृतः ॥ १८९ ॥

विषम् ।

विषं तु गरलं क्ष्वेडस्तस्य भेदानुदाहरे ।

वत्सनाभः सहारिद्रः शक्तुकश्च प्रदीपनः ॥ १९० ॥

सौराष्ट्रिकः शृंगिकश्च कालकूटस्तथैव च ।

हालाहलो ब्रह्मपुत्रो विषभेदा अमी नव ॥ १९१ ॥

वत्सनाभः ।

सिंधुवारसदृक्पत्रो वत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।

यत्पार्श्वे न तरोर्वृद्धिर्वत्सनाभः स भाषितः ॥ १९२ ॥

(हारिद्रः)-हारिद्रातुल्यमूलो यो हारिद्रः स उदाहृतः ।

(शक्तुकः)-यद्ग्रन्थिः शक्तुकेनेव पूर्णमध्यः स शक्तुकः १९३

प्रदीपनः ।

वर्णतो लोहितो यः स्याद्दीप्तिमान् दहनप्रभः ।

महादाहकरः पूर्वैः कथितः स प्रदीपनः ॥ १९४ ॥

(सौराष्ट्रिकः)-सुराष्ट्रविषये यः स्यात्स सौराष्ट्रिक उच्यते ।

शृंगिकः ।

यस्मिन् गोशृंगके बद्धे दुग्धं भवति लोहितम् ॥ १९५ ॥

सः शृंगिक इति प्रोक्तो द्रव्यतत्त्वविशारदैः ।

१ दे० भा० वचनाग, मीठां तेलिया । वं० भा० काटविष । फा० जहर । इ० एको नाईट । aconight. २ दे० भा० सिंगियाविष । (शुद्धिः) विषं तु खंडशः कृत्वा वस्त्रखंडेन बंधयेत् । गोमूत्रमध्ये निक्षिप्य स्थापयेदातपे त्र्यहम् ॥ १ ॥ गोमूत्रं च प्रदातव्यं नूतनं प्रत्यहं बुधैः । त्र्यहेऽतीते समुद्रतल शोषयेन्मृदुपे षयेत् ॥ २ ॥ शुभ्यत्येवं विषं तच्च योग्यं भवति चार्तिजित् । एकाष्टकं भवेद्यावदभ्यस्तं तिलमाध्रया ॥ ३ ॥ सर्वरोगहरं नृणां जायते शोधितं विषम् । अतिमात्रं यदा भुक्तं तदाज्यं टंकणं पिबेत् ॥ ४ ॥ विषं सवेगतो नाशमाशु प्राप्नोति निश्चितम् ।

कालकूटः ।

देवासुररणे देवैर्हतस्य पृथुमालिनः ॥ १९६ ॥

दैत्यस्य रुधिराजातस्तरुरश्वत्थसन्निभः ।

निर्यासः कालकूटोस्य मुनिभिः परिकीर्तितः ॥ १९७ ॥

सोऽहिक्षेत्रे शृंगवेरे कोङ्कणे मलये भवेत् ॥ १९८ ॥

हालाहलः ।

गोस्तनाभफलो गुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा ॥ १९९ ॥

तेजसा यस्य दह्यन्ते समीपस्था द्रुमादयः ।

असौ हालाहलो ज्ञेयः किष्किंधायां हिमालये ॥ २०० ॥

दक्षिणाब्धितटे देशे कोंकणेपि च जायते ।

ब्रह्मपुत्रः ।

वर्णतः कपिलो यः स्यात्तथा भवति सारतः ॥ २०१ ॥

ब्रह्मपुत्रः स विज्ञेयो जायते मलयाचले ।

ब्राह्मणः पांडुरस्तेषु क्षत्रियो लोहितप्रभः ॥ २०२ ॥

वैश्यः पीतोऽसितः शूद्रः विष उक्तश्चतुर्विधः ।

रसायने विषं विषं क्षत्रियं देहपुष्टये ॥ २०३ ॥

वैश्यं कुष्ठविनाशाय शूद्रं दद्याद्द्विधाय हि ।

विषं प्राणहरं प्रोक्तं व्यवायि च विक्राशि च ॥ २०४ ॥

आग्नेयं वातकफहृद्योगवाहि मंदावहम् ।

तदेव युक्तियुक्तं तु प्राणदायि रसायनम् ॥ २०५ ॥

योगवाहि त्रिदोषघ्नं वृंहणं वीर्यवर्द्धनम् ।

१ दे० मा० सिमलखार । संखिया । फा० निर्गवमूप । इ० ओफेसंड
ओफ आर्सेनिक (ocasiad of arsenik) २ सकलकायव्यापनपूर्वकं पाक-
गमनशीलम् । ३ विक्राशि ओजःशोषणपूर्वकं संधिवंधनशिथिलीकरणम् ।
४ आग्नेयं, अधिकाग्न्यंशम् । ५ योगवाहि । संगिगुणग्राहकम् । ६ मंदावहं
तमोगुणाधिक्येन वृद्धिविघ्नंशकम् ॥

ये दुर्गुणा विषेऽशुद्धे ते स्युर्हीना विशोधनात् ॥ २०६ ॥
तस्माद्विषं प्रयोगेषु शोधयित्वा प्रयोजयेत् ।

उपविषाणि ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लांगलीकरवीरकौ ॥ २०७ ॥

गुंजाहिफेनो धत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ २०८ ॥

एषां गुणास्तत्रतत्र द्रष्टव्याः ॥

इति धातुवर्गः ।

धान्यवर्गः ।

शालिधान्यं व्रीहिधान्यं शूकधान्यं तृतीयकम् ।

शिंबीधान्यं क्षुद्रधान्यमित्युक्तं धान्यपंचकम् ॥ १ ॥

शालयो रक्तशाल्याद्या व्रीहयः षष्टिकादयः ।

यवादिकं शूकधान्यं मुद्गाद्यं शिंबिधान्यकम् ॥ २ ॥

कंगवादिकं क्षुद्रधान्यं तृणधान्यं च तत्स्मृतम् ।

कंडनेन विना शुक्ला हैमन्तौः शालयः स्मृताः ॥ ३ ॥

शालिः ।

रक्तशालिः सकलमः पांडुकः शकुनाहतः ।

सुगंधकः कर्दमको महाशालिश्च दूषकः ॥ ४ ॥

पुष्पांडकः पुंडरीकस्तथा महिषमस्तकः ।

दीर्घशूकः कांचनको हायनो लोघ्रपुष्पकः ॥ ५ ॥

१ उपविषाणि गौणविषाणि । दोलायंत्रेण पयसि स्थापयित्वा पचेद्दिनम् ।
एतेनैव विशुध्यन्ति सर्वाण्युपविषाणि च ॥ १ ॥ चिञ्चापत्ररसे कर्षे वस्त्रपूते
पलद्वयम् । स्नुहीक्षीरं रौद्रयंत्रे भावयेद्यत्नतः सुधीः ॥ २ ॥ द्रवे शुष्के समुत्तार्य
सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ शेषाणामुपविषाणां शुद्धिस्तत्र तत्र द्रष्टव्या । १ दे० भा०
चावल । वं० भा० शालिधान्य । फा० विरज । ई० Rice,

इत्याद्याः शालयस्सन्ति बहवो बहुदेशजाः ।

ग्रंथविस्तारभीतिस्ते समस्ता नात्र भाषिताः ॥ ६ ॥

शालयो मधुराः स्निग्धा बल्या बद्धाल्पवर्चसः ।

कषाया लघवो रुच्याः स्वय्या वृण्याश्च बृंहणाः ॥ ७ ॥

अल्पानिलकफाः शीताः पित्तघ्ना मूत्रलास्तथा ।

शालयो दग्धमृज्जाताः कषाया लघुपाकिनः ॥ ८ ॥

सृष्टमूत्रपुरीषाश्च रूक्षाः श्लेष्मापकर्षणाः ।

कैदारा वातपित्तघ्ना गुरवः कफशुक्रलाः ॥ ९ ॥

कषाया अल्पवर्चस्का मध्याश्चैव बलावहाः ।

स्थूलजाः स्वादवः पित्तकफघ्ना वातवह्निदाः ॥ १० ॥

किञ्चित्तिक्ताः कषायाश्च विपाके कटुका अपि ।

वापिता मधुरा वृण्या बल्याः पित्तप्रणाशनाः ॥ ११ ॥

श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काः कषाया गुरवो हिमाः ।

वापितेभ्यो गुणैः किञ्चिद्भिन्नाः पोक्ता अवापित्ताः ॥ १२ ॥

रोपित्तास्तु नवा वृण्याः पुराणा लघवः स्मृताः ।

तेभ्यस्तु रोपिता भूयः शीघ्रपाका गुणाधिकाः ॥ १३ ॥

छिन्नरूढा हिमा रूक्षा बल्याः पित्तकफापहाः ।

बद्धविट्काः कषायाश्च लघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥ १४ ॥

रक्तशालिः ।

रक्तशालिर्वरस्तेषु बल्यो वर्ण्योऽस्रदोषजित् ।

चक्षुष्यो मूत्रलः स्वय्यः शुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ॥ १५ ॥

विषव्रणश्वासकासदाहनुद्रह्निपुष्टिदः ।

तस्मादल्पांतरगुणाः शालयो महदादयः ॥ १६ ॥

ब्रीहियान्यम् ।

वार्षिकाः कंडिताः शुक्ला ब्रीहयाश्चिरपाकिनः ।

कृष्णव्रीहिः पाटलश्च कुकुटांडक इत्यपि ॥ १७ ॥

शालामुखी जतुमुख इत्याद्या व्रीहयः स्मृताः ।

कुक्कुटांडाकृतिव्रीहिः कुक्कुटांडक उच्यते ॥ १८ ॥

कृष्णव्रीहिः स विज्ञेयो यः कृष्णतुषतंडुलः ।

पाटलः पाटलापुष्पवर्णको व्रीहिरुच्यते ॥ १९ ॥

शालामुखः कृष्णशूकः कृष्णतंडुल उच्यते ।

लाक्षावर्णं मुखं यस्य ज्ञेयो जतुमुखस्तु सः ॥ २० ॥

व्रीहयः कथिताः पाके मधुरा वीर्य्यतो हिताः ।

अल्पाभिष्यंदिनो बद्धवर्चस्काः षष्टिकैः समाः ॥ २१ ॥

कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे ।

षष्टिकम् ।

गर्भस्था एव ये पाकं यांति ते षष्टिका मताः ॥ २२ ॥

षष्टिकः शतपुष्पश्च प्रमोदकमुकुन्दकौ ।

महाषष्टिक इत्याद्याः षष्टिकाः समुदाहृताः ॥ २३ ॥

एतेऽपि व्रीहयः प्रोक्ता व्रीहिलक्षणदर्शनात् ।

षष्टिका मधुराः शीता लघ्वो बद्धवर्चसः ॥ २४ ॥

वातपित्तप्रशमनाः शालिभिः सदृशा गुणैः ।

षष्टिका प्रवरातेषां लघ्वी स्निग्धा त्रिदोषजित् ॥ २५ ॥

स्वाद्वी मृद्वी ग्राहणी च बलदा ज्वरहारिणी ।

रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्ततः स्वल्पगुणाः परे ॥ २६ ॥

यवः ।

अनुयवो निःशूकः स्यात्कृष्णारुणवर्णोयवः ।

निःशूकोऽपि यवः प्रोक्तो धवलाकृतिको महान् ॥ २७ ॥

१ दे० मा० धाई चावल । सठी चावल । २ यो व्रीहिः षष्टिरात्रेण पच्यते स तु षष्टिकः । स्निग्धो ग्राही गुरुः स्वादुस्त्रिदोषघ्नः स्थिरो हिमः ॥ षष्टिको व्रीहिषु श्रेष्ठो गौरश्चासितगौरतः । ३ दे० मा० जौ । निशूक--मुंडे । ब० मा० यव तोकम--हरित शूक । फा० जव ई० विटरवालि, पेरलवालि ।

यवस्तु शितशूकः स्यान्निःशूकोऽनुयवः स्मृतः ।
 तोक्मस्तद्वत्सहारितस्ततः स्वल्पश्च कीर्तितः ॥ २८ ॥
 यवः कषायो मधुरः शीतलो लेखनो मृदुः ।
 व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्द्धनः ॥ २९ ॥
 कटुपाकोऽनभिष्यदी स्वय्यो बलकरो गुरुः ।
 बहुवातमलो वर्णस्थैर्यकारी च पिच्छिलः ॥ ३० ॥
 कंठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः ।
 पीनसन्धासकासोरुस्तंभलोहितवृट्प्रणुत् ॥ ३१ ॥
 अस्मादनुयवो न्यूनस्तोक्मो न्यूनतरस्ततः ।

गोधूमः-

गोधूमः सुमनोऽपि स्यान्निविधः स च कीर्तितः ॥ ३२ ॥
 महागोधूम इत्याख्यः पश्चादिशात्समागतः ।
 मधुली तु ततः किञ्चिदल्पा सा मध्यदेशजा ॥ ३३ ॥
 निःशूको दीर्घगोधूमः क्वचिन्नदीमुखामिधः ।
 गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः ॥ ३४ ॥
 कफशुक्रप्रदो वल्यः स्निग्धः संधानकृत्सरः ।
 जीवनो बृंहणो वर्ण्यो व्रण्यो रुच्यः स्थिरत्वकृत् ॥ ३५ ॥
 कफप्रदो नवीनो न तु पुराणः । पुराणा यवगोधूमक्षौद्रजांगलः
 शूल्यभुगिति वाग्भटेन वसंते गृहीतत्वात् ।
 मधुली शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघुः ॥ ३६ ॥
 शुक्रला बृंहिणी पथ्या तद्वन्नदीमुखः स्मृतः ।
 शमीजाः शिबिजाः शिबिभवाः सूपाश्च वैदलाः ॥ ३७ ॥
 वैदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
 वातलाः कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रमला हिमाः ॥ ३८ ॥
 ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारिणः ।

१-२ महागोधूमः वातलगोधूमः दे० भा० वडानक इति लोके ।

मुद्गम् ।

मुद्गो रूक्षो लघुग्राही कफपित्तहरो हिमः ॥ ३९ ॥

स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो ज्वरघ्नो वनजस्तथा ।

मुद्गो बहुविधः श्यामो हरितः पीतकस्तथा ॥ ४० ॥

श्वेतो रक्तश्च तेषां तु पूर्वः पूर्वो लघुः स्मृतः ।

सुश्रुतेन पुनः प्रोक्तो हरितः प्रवरो गुणैः ॥ ४१ ॥

चरकादिभिरप्युक्तः एष ह्येव गुणाधिकः ।

माषः ।

माषो गुरुः स्वादुपाकः स्निग्धो रुच्योनिलापहः ॥ ४२ ॥

संसनस्तर्पणो बल्यः शुक्रलो बृंहणः परः ।

भिन्नमूत्रमलः स्तन्यो मेदःपित्तकफप्रदः ॥ ४३ ॥

शुद्धकीलादितथासपत्तिशूलानि नाशयेत् ।

कफपित्तकरो माषः कफपित्तकरं दधि ॥ ४४ ॥

कफपित्तकरा मत्स्या वृंताकं कफपित्तकृत् ।

राजमाषः ।

राजमाषो महामाषः चपलश्च बलः स्मृतः ॥ ४५ ॥

राजमाषो गुरुः स्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः ।

रूक्षो वातकरो रुच्यः स्तन्यो भूरिमलप्रदः ॥ ४६ ॥

श्वेतो रक्तस्तथा कृष्णस्त्रिविधः स प्रकीर्तितः ।

यो महांस्तेषु भवति स एवोक्तो गुणाधिकः ॥ ४७ ॥

१ दे० भा० मुंगी सब्ज । मुंगी काली । ब० भा० मुंग । फा० बुनु-
माष । इ० ग्रीन ग्रेन । Green Grpin. हरित पश्चमे, श्वेत, पुनैनि आग्रा-
मादौ रक्त पीत-पुरमंडल प्रांतप्रदेशे । श्याम उडदी । २ दे० भा० मांह ।
ब० भा० माषकलाय । फा० माष । इ० किडनीबीन kidni been माषस्तु
कुर्विदः स्याद्धान्यवीरो वृषांकुरः । मांसलश्च बलाट्यश्च पित्र्यश्च पितृभोजनः ।
३ दे० भा० खांह चोला । ब० भा० बोराफा० लोमिया । इ० चाईनिझडोलिकोस
Chinigh dolikas.

निष्पावः ।

निष्पावो राजशिंवी स्याद्वेल्लकः श्वेतशिंबकः ।

निष्पावो मधुरो रूक्षो विपाकेऽम्लो गुरुः सरः ॥ ४८ ॥

कषायः स्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबन्धकृत् ।

विदाह्युष्णो विषश्लेष्मशोथहृच्छक्रनाशनः ॥ ४९ ॥

मैकुष्ठम् ।

मकुष्ठो वनसुद्गः स्यान्मुकुष्ठकर्मपुष्टको ।

मकुष्ठो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ ५० ॥

वांतिजिन्मधुरः पाके कृमिकृज्ज्वरनाशनः ।

मसूरः ।

मांगल्यको मसूरः स्यान्मांगल्या च मसूरिका ॥ ५१ ॥

मसूरो मधुरः पाके संग्राही शीतलो लघुः ।

कफपित्तास्रजिद्रूक्षो वातलो ज्वरनाशनः ॥ ५२ ॥

आढकी । -

आढकी तुवरी चापि सा प्रोक्ताशनपुष्पिका ।

आढकी तुवरा रूक्षा मधुरा शीतला लघुः ॥ ५३ ॥

ग्राहणी वातजननी वर्ण्या पित्तकफास्रजित् ।

चणकः ।

चणको हरिमंथः स्यात्सकलप्रिय इत्यपि ॥ ५४ ॥

१ दे० भा० वडे मटर । राजशिंवीबीज । वं० भा० भेटरासु । २ दे०
 भा० मोठ । वं० भा० वनगुड । फा० मापहिंदी । ई० एकलिनोडे
 अड किडनीबिन । ३ दे० भा० मसर । वं० भा० मसूरिकलाय । फा०
 नोमुख । ई० लेंटल Lantil तत्पर्णशाकं तुवरं लघुतिक्तं च कीर्तितम् ।
 ४ दे० भा० हरहर अड अड श्वेत रक्त कृष्ण । वं० भा० आइरि फा०
 गाखुल । ई० पीजीअनपी Pigiampi. ५ दे० भा० छोले श्वेत कृष्ण । फा०
 वृद्ध । ई०--ग्राम Gram पत्रशाक । रुच्यं चणं कषायं स्यादुर्जरं कफवात
 नृ । अम्लं विष्टं भजनकं पित्तनुदंतशोथहृत् ॥

चणकः शीतलो रूक्षः पित्तरक्तकफापहः ।

लघुः कषायो विष्टम्भी वातलो ज्वरनाशनः ॥ ५५ ॥

स चांगारेण संभृष्टस्तैलभृष्टश्च तद्गुणः ।

आर्द्रभृष्टो बलकरो रोचनश्च प्रकीर्तितः ॥ ५६ ॥

शुष्कभृष्टोऽतिरूक्षः स्याद्वातपित्तप्रकोपनः ।

स्विन्नः पित्तकफं हन्यात्सूपः क्षोभकरो मतः ॥ ५७ ॥

आर्द्रोऽतिकोमलो रुच्यः पित्तशुक्रहरो हितः ।

कषायो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ ५८ ॥

कलायः ।

कलायो वर्तुलः प्रोक्तः सतीनश्च हरेणुकः ।

कलायो मधुरः स्वादुः पाके रूक्षश्च शीतलः ॥ ५९ ॥

त्रिपुटः ।

त्रिपुटः कंटकोऽपि स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अमी ।

त्रिपुटो मधुरस्तिक्तस्तुवरो रूक्षणो भृशम् ॥ ६० ॥

कफपित्तहरो रुच्यो ग्राहको शीतलस्तथा ।

किंतु खंजत्वपुंगत्वकारी वातातिकोपनः ॥ ६१ ॥

कुलथः ।

कुलथिका कुलथश्च कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।

कुलथः कटुकः पाके कषायः पित्तरक्तकृत् ॥ ६२ ॥

लघुर्विदाही वीर्योष्णः श्वासकासकफानिलान् ।

हन्ति हिक्काशमरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् ॥ ६३ ॥

स्वेदसंग्राहको मेदोज्वरक्रिमिहरः परः ।

१ दे० मा० मटरछोटा । वं० मा० बाटुला मटर । इ० फील्डपी
field pea २ दे० मा० दडौ । वं० मा० खेरसारिकलाय । फा० मांसंग
जलठान । इ० चिकिलिंगवेच Chikilingwich. ३ दे० मा० कुलथी । वं०
मा० कुलथीकलाय । फा० कल्वित मुखहिंदी । इ० दुपलावर्डडोलीकीस ।

तिलः ।

तिलः कृष्णः सितो रक्तः स वन्योऽल्पतिलः स्मृतः ॥ ६४ ॥

तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः ।

त्रिपाके कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः कफपित्तनुत् ॥ ६५ ॥

बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः ।

दंत्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राही वातघ्नाऽग्निमतिप्रदः ॥ ६६ ॥

कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो वै मध्यमः स्मृतः ।

अन्यो हीनतरः प्रोक्तस्तज्ज्ञै रक्तादिकस्तिलः ॥ ६७ ॥

अतसी ।

अतसी नीलपुष्पी च पार्वती स्यादुमा क्षुमा ।

अतसी मधुरा तिक्ता स्निग्धा पाके कटुर्गुरुः ॥ ६८ ॥

अतसी शुक्रवातघ्नी कफपित्तविनाशिनी ।

तुवरी ।

तुवरी ग्राहिणी प्रोक्ता लघ्वी कफविषास्रजित् ॥ ६९ ॥

तीक्ष्णोष्णा वह्निदा कंडूकुष्ठकोष्ठक्रिमिप्रणत् ।

गौरसर्वपः ।

सर्वपः कटुकः स्नेहस्तंतुमश्च कदम्बकः ॥ ७० ॥

गौरस्तु सर्वपः ब्राह्मैः सिद्धार्थ इति कथ्यते ।

सर्वपस्तु रसे पाके कटुस्निग्धः सतिक्तकः ॥ ७१ ॥

तीक्ष्णोष्णः कफवातघ्नो रक्तपित्ताग्निवर्द्धनः ।

१ दे० भा० तिल तिली । वं० भा० तिलगाच्छ । फा० कुंजद । इं०
 सिसीमनीजरसीडस् Sisimanigar seeds. तिलस्तु होमधान्यं स्यात्पवित्रः
 पेतृतर्पणः । पापघ्नं पूतधान्यं च जटिलस्तु वनोद्भवः ॥ १ ॥ २ दे० भा०
 अतसी । वं० भा० मसिनी तिसी । फा० तुखमे कतात । इं० कामन फ्ले-
 कसीड । common flax seed. ३ दे० भा० तारामीरा, तरावा ।
 ४ दे० भा० सरों, रक्तसरों पीली सरों । वं० भा० सरिषा श्वेत-सर्वे ।
 ५ दे० भा० सरिफ । इं० सिनापिस आल्वा । sinapisalwa

रक्षोहरो जयेत्कंडूकुष्ठकोष्ठक्रिमिग्रहान् ॥ ७२ ॥

यथा रक्तस्तथा गौरः किंतु गौरो वरो मतः ।

राजिका ।

राजी तु राजिका तीक्ष्णगंधा क्षुब्धनकासुरी ॥ ७३ ॥

क्षवः क्षुधाभिजनकः कृष्णिका कृष्णसर्षपः ।

राजिका कफपित्तघ्नी तीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तकृत् ॥ ७४ ॥

किंचिद्रक्षाग्निदा कंडूकुष्ठकोष्ठक्रिमीन् हरेत् ।

अतितीक्ष्णा विशेषेण तद्रक्तृष्णापि राजिका ॥ ७५ ॥

सरा हिमा गुरुर्ग्राही तत्पुष्पं प्रदरास्त्रजित् ।

क्षुद्रधान्यम् ।

क्षुद्रधान्यं कुधान्यं च तृणधान्यमिति स्मृतम् ॥ ७६ ॥

क्षुद्रधान्यमलुष्णं स्यात्कषायं लघुलेखनम् ।

मधुरं कटुकं पाके रूक्षं च क्लेदशोषकम् ॥ ७७ ॥

वातकृद्द्विदिकं च पित्तरक्तकफापहम् ।

कंगुः ।

स्त्रियां कंगुप्रियंगू द्वे कृष्णा रक्ता सिता तथा ॥ ७८ ॥

पीता चतुर्विधा कंगुस्तासां पीता वरा स्मृता ।

कंगुस्तु भग्नसंधानवातकृद्बृंहणी गुरुः ॥ ७९ ॥

रूक्षा श्लेष्महराऽतीव वाजिनां गुणकृद् भृशम् ।

चीनकः ।

चीनकः कंगुभेदोस्ति स ज्ञेयः कंगुवद् गुणैः ॥ ८० ॥

श्यामाकः ।

श्यामाकः शोषणो रूक्षो वातलः कफपित्तहतः ।

१ दे० मा० राई । ब० मा० राई सपै । इ० मसटर्डसीड्स । mustard seeds.
२ दे० मा० कंगनी । ब० मा० कानिधान । फा० गल । ३ दे० मा०
चीना । ब० मा० चिने । फा० उरजान । इ० मीलेट mitcat चीनकः
तीक्ष्णगुश्च स श्लेष्मः श्लेष्मकः स्मृतः । ४ दे० मा० सुवांक । फा० श्या-
माख । ब० मा० शामाधान ।

कोद्रवः ।

कोद्रवः कोरदृषः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः ॥ ८१ ॥

कोद्रवो वातलो ग्राही हिमः पित्तकफापहः ।

उद्दालस्तु भवेदुष्णो ग्राही वातकरो भृशम् ॥ ८२ ॥

शरबीजम् ।

चारुकः शरबीजं स्यात्कथ्यते तद्गुणा अथ ।

चारुको मधुरो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ॥ ८३ ॥

शीतो लघुरवृण्यश्च कषायो वातकोपनः ।

वंशबीजम् ।

यवा वंशभवा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ॥ ८४ ॥

बद्धमूत्राः कफघ्नाश्च वातपित्तकराः सराः ।

कुसुंभबीजम् ।

कुसुंभबीजं वरटा सैव प्रोक्ता वराटिका ॥ ८५ ॥

वरटा मधुरा स्निग्धा रक्तपित्तकफापहा ।

कषाया शीतला गुर्वी स्यादवृण्यानिलापहा ॥ ८६ ॥

गवेषुः ।

गवेषुका तु विद्वद्भिर्गवेषुः कथिता स्त्रियाम् ।

गवेषुः कटुका स्वाद्वी कार्श्यकृत्कफनाशिनी ॥ ८७ ॥

नीवारः ।

प्रसाधिका तु नीवारस्तृणान्नमिति च स्मृतम् ।

नीवारः शीतलो ग्राही पित्तघ्नः कफवातकृत् ॥ ८८ ॥

१ दे० भा० कोदो । वं० भा० कोदो धान्यम् । इ० पकचर्डपासपेलें । श्यामाकः

श्यामकः श्यामस्त्रिवीजः स्यादविप्रियः । सुकुमारो राजधान्यं तृणबीजोत्तमश्च

सः ॥ २ दे० भा० कुसुम्भेके बीज । वं० भा० कुसुमफल । फा० तुखमकाशाय ।

३ दे० भा० देवान । गरहेड्वा । गड् गड् । २ दे० भा० तिनी लंभ

रक्तकंगु । वं० भा० उडी धान्य ।

यवनालः ।

यवनालो हिमः स्वादुर्लोहितः श्लेष्मपित्तजित् ।
अवृष्यस्तुवरो रूक्षः क्लेदकृत्कथितो लघुः ॥ ८९ ॥

शणः ।

शणः प्रोक्तो मातुलानी जंतुतंतुर्महाशना ।
शणो हिमो लघुर्ग्राही तत्पुष्पं प्रदरास्रजित् ॥ ९० ॥

नवधान्यादिः ।

धान्यं सर्वं नवं स्वादु गुरु श्लेष्मकरं स्मृतम् ।
तत्तु वर्षोषितं पथ्यं यतो लघुवरं हितम् ॥ ९१ ॥
वर्षोषितं सर्वधान्यं गौरवं परिमुंचति ।
न तु त्यजति वीर्य्यं स्वं क्रमान्मुंचत्यतः परम् ॥ ९२ ॥
एतेषु यवगोधूमतिलमाषा नवा हिताः ।
पुराणा विरसा रूक्षा न तथाः गुणकारिणः ॥ ९३ ॥

इति धान्यवर्गः ।

शाकवर्गः ।

पत्रं पुष्पं फलं नालं कंदं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥ १ ॥
प्रायः शाकानि सर्वाणि विष्टंभीनि गुरूणि च ।
रूक्षाणि बहुवर्चांसि सृष्टविष्मारुतानि च ॥ २ ॥
शाकं भिनत्ति वपुरास्थि निहंति नेत्रं
वर्णं विनाशयति रक्तमथापि शुक्रम् ॥
प्रज्ञाक्षयं च कुरुते पलितं च नूनं
हंति स्मृतिं गतिमिति प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ ३ ॥
शाकेषु सर्वेषु वसंति रोगास्ते हेतवो देहविनाशनाय ।
तस्माद् बुधः शाकविवर्जनं तु कुर्यात्तथाम्लेषु स एव दो

एतानि शाकनिंदकवचनानि सामान्यानि ।

पत्रशाकं वास्तुकद्वयम् ।

वास्तूकं वास्तुकं च स्यात्क्षारपत्रं च शाकराट् ।

तदेव तु बृहत्पत्रं रक्तं स्याद्गौडवास्तुकम् ॥ ५ ॥

प्रायशो यवमध्ये स्याद्यवशाकमतः स्मृतम् ।

वास्तूकद्वितयं स्वादु क्षारं पाके कटूदितम् ॥ ६ ॥

दीपनं पाचनं रुच्यं लघु शुक्रबलप्रदम् ।

सरं प्लीहास्रपित्तार्शः कृमिदोषत्रयापहम् ॥ ७ ॥

पोतकी ।

पोतक्युपोदिका सा तु मालवे मृतवल्लरी ।

पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तनुत् ॥ ८ ॥

अकंठ्या पिच्छला निद्रा शुक्रदा रक्तपित्तजित् ।

बलदा रुचिकृत्पथ्या वृंहणी तृप्तिकारिणी ॥ ९ ॥

श्वेतरक्तमारिपः ।

मारिपो वाष्पिको मर्षः श्वेतो रक्तश्च स स्मृतः ।

मारिपो मधुरः शीतो विष्टंभी पित्तनुद् गुरुः ॥ १० ॥

वातश्लेष्मकरो रक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित् ।

रक्तमर्षोगुरुर्नाति स क्षारो मधुरः सरः ॥ ११ ॥

श्लेष्मलः कटुकः पाके स्वल्पदोष उदीरितः ।

१ दे० भा० वायू । वथुआ । भेद चिल्ली रक्त वथुआ । वं० भा० वेतुया ।

का० मुसेलेसा सरमक । इ० हाइट गुजफूट । शाकं सर्वमचक्षुष्यं चक्षुष्यं
शाकमंचकम् । जीवंती वास्तुमत्स्याक्षी मेघनादः पुनर्नवा ॥ १ ॥ २ दे० भा०

पोईसाग । वं० भा० पोईशाक । इ० रेडमल्वार नाइटझोड । Redmalba n

ight jhore. ३ दे० भा० सील । नवडा । वं० भा० श्वेतकाटनटेरशाक ।

रक्त क्षुण्ण । श्वेत । रक्त कांटानटेरशाक ।

तंडुलीयः ।

तंडुलीयो मेघनादः कांडिरस्तंडुलेरकः ॥ १२ ॥

मंडीरस्तंडुलीबीजो विषघ्नश्चाल्पमारिषः ।

तंडुलीयो लघुः शीतो रुक्षः पित्तकफास्त्रजित् ॥ १३ ॥

सृष्टमूत्रमलो रुच्यो दीपनो विषहारकः ।

पानीयतंडुलीयो यस्तत्कंचटमुदाहृतम् ॥ १४ ॥

कंचटं तिक्तकं रक्तपित्तानिलहरं लघु ।

पालिंक्या ।

पालिंक्या वास्तुकाकारा छादिका चीरितच्छदा ॥ १५ ॥

पालिंक्या वातला शीता श्लेष्मला भेदनी गुरुः ।

विष्टंभनी मदश्वासपित्तरक्तकफापहा ॥ १६ ॥

कालशाकम् ।

नाडीकं कालशाकं च श्राद्धशाकं च कालकम् ।

कालशाकं सरं रुच्यं वातकृत्कफशोथहृत् ॥ १७ ॥

बल्यं रुचिकरं मेध्यं रक्तपित्तहरं हिमम् ।

पटुशाकः ।

पटुशाकस्तु नाडीको नाडीशाकश्च स स्मृतः ॥ १८ ॥

नाडीको रक्तपित्तघ्नो विष्टंभी वातकोपनः ।

कलंबी ।

कलंबीशतपर्वा च कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥ १९ ॥

कलंबी शुक्रदा प्रोक्ता मधुरा स्तन्यकारिणी ।

दे० मा० १ चोलाई । जलचौलाई । वं० मा० क्षुदेनटे । चाश नटे । गोपालकांचडादाम । फा० सुपेजमर्ज । इं० हर्मे फ्रीडाईट, रामेरंथ । Hea-
rmifrodight amarunth. तंडुलीयकमूलं स्यादुष्णं श्लेष्मविनाशनम् । रजो-
रोधकरं रक्तपित्तप्रदरसंहरम् । ३ दे० मा० पालक । वं० मा० पालं शाक ।
फा० इस्पनाखं । इं० स्पाईनेज । sapienais. दे० मा० खाव । नरिवां ।
नलिका । नरच । ४ दे० मा० पटुशाक । वं० मा० कौसटार । लालते ।
५ दे० मा० कर्मशाक, वं० मा० कल्मी ।

लोनी (णी) बृहलोनी च ।

लोणा लोणी च कथिता बृहलोणी तु घोटिका ॥ २० ॥

लोणी रूक्षा स्मृता गुर्वी वातश्लेष्महरी पटुः ।

अशोऽघ्नी दीपनी चाम्ला मन्दाग्निविषनाशिनी ॥ २१ ॥

घोटिकाम्ला सरा चोष्णा वातकृत्कफपित्तहृत् ।

वाग्दोषघ्नगुल्मघ्नी श्वासकासप्रमेहनुत् ॥ २२ ॥

शोथे लोचनरोगे च हिता तज्जैरुदाहता ।

चांगेरी ।

चांगेरी चुक्रिका दंतशंठांबष्ठाम्ललोणिका ॥ २६ ॥

अश्मंतकस्तु शफरी कुशला चाम्लपत्रिका ।

चांगेरी दीपनी रुच्या रूक्षोष्णा कफवातनुत् ॥ २४ ॥

पित्तलाम्ला ग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ।

चुक्रा ।

चुक्रिका स्यात्तु पत्राम्ला रोचनी शतवेधनी ॥ २५ ॥

चुक्रा त्वम्लतरा स्वाद्वी वातघ्नी कफपित्तकृत् ।

रुच्या लघुतरा पाके वृंताकेनातिरोचनी ॥ २६ ॥

चिंचुः ।

चिंचुश्चुचूश्चुकी च दीर्घपत्रा सतिक्तका ।

चुचूः शीता सरा रुच्या स्वाद्वी दोषत्रयापहा ॥ २७ ॥

धातुपुष्टकरी बल्या मेघ्या पिच्छिलिका स्मृता ।

१ दे० भा० कुलफा, दूनक । वं० भा० बडणुनी, क्षुदेणुनी । फा०
खुरफा । इ० पर्सलेन Paraslain. २ दे० भा० खटकल, खट्टीमीठी अवि-
लोना । ३ दे० भा० चूक । वं० भा० चूकापालडू । फा० तुरशक् बडा
तुरेंखु रसानी छोटी । इ० ब्लेड्डडूक । bladder dock, ४ दे० भा०
मेघुना, लघु बृहत् । वं० भा० चेचको ।

हिलमोचका ।

ब्रह्मी शंखदराचारी ब्राह्मी च हिलमोचिका ॥ २८ ॥

शोथं कुष्ठं कफं पित्तं हरते हिलमोचिका ।

शित्तिवारः ।

शित्तिवारः शित्तिवरः स्वस्तिकः सुनिषण्णकः ॥ २९ ॥

श्रीवीरकः सूचीपत्रः पर्णकः कुक्कुटः शिखी ।

चांगेरीसदृशः पत्रैश्चतुर्दल इतीरितः ॥ ३० ॥

शाकी जलान्विते देशे चतुष्पत्रीति चोच्यते ।

सुनिषण्णो हिमो ग्राही मोहदोषत्रयापहः ॥ ३१ ॥

अविदाही लघुः स्वादुः कषायो रूक्षदीपनः ॥ ३२ ॥

वृण्यो रुच्यो ज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ।

मूलकम् ।

पाचनं लघु रुच्योष्णं पत्रं मूलकजं नवम् ।

स्नेहसिद्धं त्रिदोषघ्नमसिद्धं कफपित्तकृत् ॥ ३३ ॥

द्रोणपुष्पी ।

द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रूक्षं गुरु च पित्तकृत् ।

भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु ॥ ३४ ॥

यवानी ।

यवानी शाकमाग्नेयं रुच्यं वातकफप्रणुत् ।

उष्णं कटु च तिक्तं च पित्तलं लघु शूलहत् ॥ ३५ ॥

दद्रुघ्नम् ।

दद्रुघ्नपत्रं दोषघ्नमम्लं वातकफापहम् ।

कंडूकासकृमिश्वासदद्रकुष्ठप्रणुल्लघु ॥ ३६ ॥

१ दे० भा० डुलडुल । ब० भा० हिचेशोक । २ दे० भा० चौपति ।

ब० भा० सुषणी शाक । शुशुनी शाक । फा० अंजरा तुखर्षे अंजरा । इसके बीजको उटंकन बीज कहते हैं ॥

सेहुंडम् ।

सेहुंडस्य दलं तीक्ष्णं दीपनं रेचनं हरेत् ।

आध्मानाष्टीलिकागुल्मशूलशोथोदराणि च ॥ ३७ ॥

पर्पटम् ।

पर्पटो हन्ति पित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।

संग्राही शीतलस्तित्तो दाहनुद्वातलो लघुः ॥ ३८ ॥

गोजिह्वा ।

गोजिह्वा कुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरी लघुः ।

पटोलम् ।

पटोलपत्रं पित्तघ्नं दीपनं पाचनं लघु ॥ ३९ ॥

स्निग्धं वृष्यं तथोष्णं च ज्वरकासकृमिप्रणुत् ।

गुडूची ।

गुडूचीपत्रमाग्नेयं सर्वज्वरहरं लघु ॥ ४० ॥

कषायं कटु तिक्तं च स्वादु पाके रसायनम् ।

बल्यमुष्णं च संग्राहि हन्यादोषत्रयं तृषाम् ॥ ४१ ॥

दाहप्रमेहवातासृक्कामलाकुष्ठपांडुताः ।

कासमर्दम् ।

कासमर्दोरिमर्दश्च कासारिः कर्कशस्तथा ॥ ४२ ॥

कासमर्ददलं रुच्यं वृष्यं कासविषास्रनुत् ।

मधुरं कफवातघ्नं पाचनं कंठशोधनम् ॥ ४३ ॥

विशेषतः कासहरं पित्तघ्नं ग्राहकं लघु ।

चणकम् ।

रुच्यं चणकशार्कं स्यादुर्जरं कफवातकृत् ॥ ४४ ॥

अम्लं विष्टंभजनकं पित्तनुदंतशोथहृत् ।

कलायः ।

कलायशाकं भेदि स्याल्लघु तिक्तं त्रिदोषजित् ॥ ४५ ॥

सार्षपम् ।

कटुकं सार्षपं शाकं बहुमूत्रमलं गुरु ।

अम्लपाकं विदाहि स्यादुष्णं रूक्षं त्रिदोषकृत् ॥ ४६ ॥

सक्षारं लवणं तीक्ष्णं स्वादु शाकेषु निन्दितम् ।

पुष्पशाकम् अगस्तिकम् ।

अगस्तिकुसुमं शीतं चातुर्थिकनिवारणम् ॥ ४७ ॥

नक्ताध्यनाशनं तिक्तं कषायं कटुपाकि च ।

पीनसश्लेष्मपित्तघ्नं वातघ्नं मुनिभिर्मतम् ॥ ४८ ॥

कदली ।

कदल्याः कुसुमं स्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु ।

वातपित्तहरं शीतं रक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥ ४९ ॥

शिशु ।

शिशुपुष्पं तु कटुकं तीक्ष्णोष्णं स्नायुशोथकृत् ।

कृमिहृत्कफवातघ्नं विद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥ ५० ॥

मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितं रक्तपित्तप्रसादनम् ।

शाल्मली ।

शाल्मली पुष्पशाकं तु घृतसैन्धवसाधितम् ॥ ५१ ॥

प्रदरं नाशयत्येव दुःसाध्यं च न संशयः ।

रसे पाके च मधुरं कषायं शीतलं गुरु ॥ ५२ ॥

कफपित्तास्रजिद् ग्राहि वातलं च प्रकीर्तितम् ।

फलशाकं कूष्मांडम् ।

कूष्मांडं स्यात्पुष्पफलं पीतपुष्पं बृहत्फलम् ॥ ५३ ॥

१ (वरुणपुष्पं) पुष्पं वरुणसंग्राहि पित्तघ्नं चामवातजित् । कोविदारक-
वर्दारशणशाल्मलिपुष्पकं ग्राहिशाकं प्रशस्तं च रक्तपित्ते विशेषतः । २ दे०
भा० पेठा, कुलडा । वं० भा० कुमडा गाच्छ । फा० भूराकडू । इ० पंप-
कीन । Pumpkeen.

कूष्मांडं बृंहणं वृष्यं गुरु पित्तास्रवातनुत् ।
 बालं पित्तापहं शीतं मध्यमं कफकारकम् ॥ ५४ ॥
 वृद्धं नातिहिमं स्वादु सक्षारं दीपनं लघु ।
 वस्तिशुद्धिकरं चेतोरोगहृत्सर्वदोषजित् ॥ ५५ ॥

कूष्मांडी ।

कूष्मांडी तु भृशं लघ्वी कर्कारुरपि कीर्तिता ।
 कर्कारुराहणी शीता रक्तपित्तहरी गुरुः ॥ ५६ ॥
 पक्वा तित्ताग्निजननी सक्षारा कफवातनुत् ।

मिष्टतुम्बी ।

अलाबुः कथिता तुम्बी द्विधा दीर्घा च वर्तुला ॥ ५७ ॥
 मिष्टतुम्बीफलं हृद्यं पित्तश्लेष्मापहं गुरु ।
 वृष्यं रुचिकरं प्रोक्तं धातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ५८ ॥
 कटुतुम्बी ।

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्सा तुम्बी च बृहत्फला ।
 कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ॥ ५९ ॥
 तित्ता कटुर्विपाके च वातपित्तज्वरांतकृत् ।
 कर्कटी ।

एवार्ः कर्कटी प्रोक्ता कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥ ६० ॥
 कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहणी मधुरा गुरुः ।
 रुच्या पित्तहरा सामा पक्वा तृष्णाग्निपित्तकृत् ॥ ६१ ॥

१ दे० भा० काशीफल सीताफल । गोलकद् । वं० भा० विलायती कुमडा ।
 का० बादरंग । इ० दि गोर्ड् ॥ Thegord. २ दे० भा० मीठी तौवी ।
 वं० भा० लाड्ड । फा० कुदुरादरोज । इ० हाइट् गुर्ड् ॥ White gord.
 ३ दे० भा० कडवी तूम्बी । वं० भा० तितलाऊ । फा० कुदुतलख ।
 इ० बोटल्गुर्ड् । Botal gord. ४ दे० भा० तर । ककडी । वं० भा०
 काकुड । फा० स्पाट जाव, दरंज । इ० ककम्बर । Kakumber

चिचिंडा ।

चिचिंडा श्वेतराजिः स्यात्सुदीर्घा गृहकूलकः ।

चिचिंडो वातपित्तघ्नो बल्यः पथ्यो रुचिप्रदः ॥ ६२ ॥

शोषणोतिहितः किञ्चिद्गुणैर्न्यूनः पटोलतः ।

कारवेल्लम् ।

कारवेल्लं कठिलं स्यात्कारवेल्ली ततो लघुः ॥ ६३ ॥

कारवेल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तामवातलम् ।

ज्वरपित्तकफास्त्रघ्नं पांडुमेहकृमीन् हरेत् ॥ ६४ ॥

तद्गुणा कारवेल्ली स्याद्विशेषादीपनी लघुः ।

महाकोशातकी ।

महाकोशातकी ज्योत्स्ना हस्तिघोषा महाफला ॥ ६५ ॥

धामार्गवो घोषकश्च हस्तिपर्णश्च स स्मृतः ।

महाकोशातकी स्निग्धा रक्तपित्तानिलापहा ॥ ६६ ॥

राजकोशातकी ।

धामार्गवः पीतपुष्पो जालनी कृतवेधनः ।

राजकोशातकी चेति तथोक्ता राजिमत्फला ॥ ६७ ॥

राजकोशातकी शीता मधुरा कफवातला ।

पित्तघ्नी दीपनी श्वासज्वरकासकृमिप्रणुत ॥ ६८ ॥

पटोलः ।

पटोलः कूलकस्तित्तः पांडुकः कर्कशच्छदः ।

१ दे० भा० चिचिंडा । बं० भा० चिचिंगा । इं० स्नेक्गार्ड Sunkgord. २ दे० भा० करेला, करेली । बं० भा० वडाकरेला छोटा करेला । फा० करेलाह । इं० हेरीमोर्डिका Harimardika, ३ दे० भा० घीया तोरी । बं० भा० घुंदुल । फा० खियार । ४ दे० भा० कडवी तोरी । मुंगी-तोरी । बं० भा० ब्रिंगा । फा० तुरीयेतलख । इं० विटरल्युफा (Witerilieufa) ५ दे० भा० कडवे परवल । बं० भा० पलतालता । फा० मोरहडी ।

राजीफलः पांडुफलो राजेयश्चामृताफलः ॥ ६९ ॥

बीजगर्भः प्रतीकश्च कुष्ठहा कासभंजनः ।

पटोलं पाचनं हृद्यं वृष्यं लघ्वग्निदीपनम् ॥ ७० ॥

स्निग्धोष्णं हंति कासास्त्रज्वरदोषत्रयकृमीन् ।

पटोलस्य भवेन्मूलं विरेचनकरं सुखात् ॥ ७१ ॥

नालं श्लेष्महरं पत्रं पित्तहारि फलं पुनः ।

दोषत्रयहरं प्रोक्तं तद्वृत्तिकपटोलकम् ॥ ७२ ॥

बिंबी ।

बिंबी रक्तफला तुंडी तुंडकेरी च बिंबिका ।

ओष्ठोपमफला प्रोक्ता पीलुपर्णी च कथ्यते ॥ ७३ ॥

बिंबीफलं स्वादु शीतं गुरुपित्तास्रवातजित् ।

स्तंभनं लेखनं रुच्यं विबंधाध्मानकारकम् ॥ ७४ ॥

शिंवीद्वयम् ।

शिंवी शिंविः पुस्तशिंवी तथा पुस्तकशिंबिका ।

शिंवीद्वयं च मधुरं रसे पाके हिमं गुरु ॥ ७५ ॥

बल्यं दाहकरं प्रोक्तं श्लेष्मलं वातपित्तजित् ।

कोलशिंवी कृष्णफला तथा पर्य्यकपादिका ॥ ७६ ॥

कोलशिंवी समीरघ्नी गुर्व्युष्णा कफपित्तकृत् ।

शुक्राग्निसादकृद्बृष्या रुचिकृद्बद्धविट् गुरुः ॥ ७७ ॥

सौभांजनम् ।

सौभांजनं फलं स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।

शूलकुष्ठक्षरुथासगुल्महृदीपनं परम् ॥ ७८ ॥

वृंताकम् ।

वृंताकं स्त्री तु वार्ताकुः भंटाकी भंटकापि च ।

१ दे० भा० कंदूरी । तित्क, मधुर । वं० भा० तैलाकुच । २ दे० भा० महाशिंवी ॥ सुआरसेम, सेम ॥ वं० भा० शोभगाच्छ । ३ दे० भा० वैंगन, वताजं । वं० भा० वेगुनगाछ । फा० वादंगान् इ० त्रिजद्ध । Brinjal.

ततका स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम् ॥ ७९ ॥

वरवातवलासघ्नं दीपनं शुक्रलं लघु ।

तद्वालं कफपित्तघ्नं वृद्धं पित्तकरं लघु ॥ ८० ॥

वृन्ताकं पित्तलं किञ्चिदंगारपरिपाचितम् ।

कफमेदोनिलामग्नमत्यर्थं लघु दीपनम् ॥ ८१ ॥

तदेव हि गुरु स्निग्धं सतैललवणान्वितम् ।

अपरं श्वेतवृन्ताकं कुक्कुटांडसमं भवेत् ॥ ८२ ॥

तदर्शस्सु विशेषेण हितं हीनं च पूर्वतः ।

तिंडिशः ।

तिंडिशो रोमशफलो मुनिनिर्मित इत्यपि ॥ ८३ ॥

तिंडिशो रुचिकृद्रेदी पित्तश्लेष्मापहः स्मृतः ।

सशीतो वातलो रुक्षो मूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ ८४ ॥

पिंडारम् ।

पिंडारं शीतलं बल्यं पित्तघ्नं रुचिकारकम् ।

पाके लघु विशेषेण विषशांतिकरं स्मृतम् ॥ ८५ ॥

कैकोटकी ।

कैकोटकी पीतपुष्पा महाजालीति चोच्यते ।

कैकोटक्याः फलं कुष्ठहृत्तासारुचिनाशनम् ॥ ८६ ॥

श्वासकासज्वरान् हन्ति कटुपाकं च दीपनम् ।

डोंडिका ।

डोंडिका विषमुष्टिश्च डोंडीत्यपि सुमुष्टिका ॥ ८७ ॥

डोंडिका पुष्टिदा वृष्या रुच्या वह्निप्रदा लघुः ।

वातपित्तकफार्शांसि कृमिगुल्मविषामयान् ॥ ८८ ॥

१ टेंडा २ टंडे का भेद । अग्निप्रदा मारुतनाशिनी च शुक्रप्रदा शोणितवर्द्धनी च । हृत्तासारुचिनाशिनी च । वार्ताकुरेषा गुणसुप्रयुक्ता ॥ ३ दे० भा० कैकोटका, खेखसा । बं० भा० काकरोल । ४ दे० भा० जीवन्तीभेद । तिक्त जीवन्ती ।

कंटकारी ।

कंटकारीफलं तिक्तं कटुकं दीपनं लघु ।

रूक्षोष्णं श्वासकासघ्नं ज्वरानिलकफापहम् ॥ ८९ ॥

नालंशाकम् ।

तीक्ष्णोष्णं सार्षपं नालं वातश्लेष्मघ्नापहम् ।

कंडूवमिहरं दद्रुकुष्ठघ्नं रुचिकारकम् ॥ ९० ॥

मूलकम् ।

भवेन्मूलकनालं तु विष्टंभि कफकारकम् ।

वातपित्तहरं रुच्यं सुशुष्कं तद्गुणाधिकम् ॥ ९१ ॥

कंदशाकम् । सूरणम् ।

सूरणः कंद औलश्च कंडूलोर्शोघ्न इत्यपि ।

सूरणो दीपनो रूक्षः कषायः कंडुकृत्कटुः ॥ ९२ ॥

विषुंभी विशदो रुच्यः कफार्शः कृतनो लघुः ।

विशेषादर्शसां पथ्यः प्लीहगुल्मविनाशनः ॥ ९३ ॥

सर्वेषां कंदशाकानां सूरणः श्रेष्ठ उच्यते ।

दद्रूणां रक्तपित्तानां कुष्ठिनां न हितो हि सः ॥ ९४ ॥

संधानयोगं संप्राप्तः सूरणो गुणकृतपरः ।

अलुकम् ।

आरुकं वीरसेनं च वीरं वीरारुकं तथा ॥ ९५ ॥

आलुकं शीतलं सर्वं विष्टंभि मधुरं गुरु ।

सृष्टमृत्रमलं रूक्षं दुर्जरं रक्तपित्तलुत् ॥ ९६ ॥

कफानिलकरं बल्यं वृष्यं स्वल्पाग्निवर्धनम् ।

१ दे० भा० जिमीकन्द । वं० भा० ओल, फा० ओल । २ दे० भा० आलु,
 गण्डलु, काठिन्ययुक्तं, शंखालु, श्वेततायुक्तं हस्त्यालु, दीर्घतायुक्तं पिंडालु ।
 तुंडलु, सुयनी, मध्वालु, मधुरतायुक्तं, पिंडालु, कचालु । फा० जरसक् लहौरी ।
 ० स्वीटपोटाटो, Sweet potatoe रक्तालु, रोमान्वित, रतालु रतंडा ।

रक्तालुभेदः

रक्तालुभेदो या दीर्घा तन्वी च प्रथितालुकी ॥ ९७ ॥
आलुकी बलकृत्स्निग्धा गुर्वी हृत्कफनाशिनी ।
विष्टम्भकारिणी तैले तालतोऽतिरुचिप्रदा ॥ ९८ ॥

मूलकम् ।

मूलकं द्विविधं प्रोक्तं तत्रैकं लघुमूलकम् ।
शालामर्कटकं विल्वशालेयं मरुसंभवम् ॥ ९९ ॥
चाणक्यमूलकं तीक्ष्णं तथा मूलिकपोतिका ।
नेपालमूलकं चान्यत्तद्वेदजदंतवत् ॥ १०० ॥
लघुमूलं कटूष्णं स्याद्बुध्यं लघु च पाचनम् ।
दोषत्रयहरं स्वयं ज्वरश्वासविनाशनम् ॥ १०१ ॥
नासिकाकंठरोगघ्नं नयनामयनाशनम् ।
महत्तदेव रुक्षोष्णं गुरुदोषत्रयप्रदम् ॥ १०२ ॥
स्नेहसिद्धं तदेव स्याद्दोषत्रयविनाशनम् ।

गाजरम् ।

गाजरं गर्जरी प्रोक्ता तथा नारंगवर्णकम् ॥ १०३ ॥
गाजरं मधुरं तीक्ष्णं तिक्तोष्णं दीपनं लघु ।
संप्राहि रक्तपित्ताशौग्रहणीकफवातजित् ॥ १०४ ॥
कदली ।

शीतलः कदलीकंदो बल्यः केश्योऽम्लपित्तजित् ।
वह्निवृद्धाहहारी च मधुरो रुचिकारकः ॥ १०५ ॥

मानकः ।

मानकः स्यान्महापत्रः कथ्यते तद्रुणा अथ ।
मानकः शोथहृच्छीतः पित्तरक्तहरो लघुः ॥ १०६ ॥

१ दे० भा० अरबी । इ० ग्रेट लीव्ड् केलेडिअन । Great leaved caladian. २ दे० भा० मूली, बडी मूली । वं० भा० मूली, चणक मूली । फा० तुखम तुख । इ० रेडीश Radeesh. ३ दे० भा० गाजर । वं० भा० गाजर फा० जर्दक । इ० कैरट Carrot.

वैराही ।

वाराही पित्तला बल्या कटुतिक्ता रसायना ।

आयुः शुक्राग्निवृद्धमेहकफकुष्ठानिलापहा ॥ १०७ ॥

हस्तिकर्णी ।

गजकर्णी तु तिक्तोष्णा तथा वातकफौ जयेत् ।

शीतज्वरहरी स्वादुः पाके तस्यास्तु कंदकः ॥ १०८ ॥

पांडुशोथकृमिप्लीहगुल्मानाहोदरापहा ।

ग्रहण्यशौविकारघ्नो वनसूरणकंदवत् ॥ १०९ ॥

कैवुकम् ।

कैवुकं कटुकं पाके तिक्तं ग्राहि हिमं लघु ।

दीपनं पाचनं हृद्यं कफपित्तज्वरापहम् ॥ ११० ॥

कुष्ठकासप्रमेहास्त्रनाशनं वातलं कटु ।

कसेरुकम् ।

कसेरु द्विविधं तत्तु महद्राजकसेरुकम् ॥ १११ ॥

मुस्ताकृति लघुः स्याद्या तच्चिबोडमिति स्मृतम् ।

कसेरुकद्वयं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ ११२ ॥

पित्तशोणितदाहघ्नं नयनामयनाशनम् ।

ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मरुचिस्तन्यकरं स्मृतम् ॥ ११३ ॥

शालूकम् ।

पद्मादिकंदः शालूकं करहाटश्च कथ्यते ।

मृणालमूलं भिस्साडं लाजलूकं च कथ्यते ॥ ११४ ॥

शालूकं शीतलं वृष्यं पित्तास्रदाहनुद्गुरु ।

१ दे० मा० गेठी । वं० मा० चामुल चुविडआल । प० मा० कित्थी ।

२ दे० मा० केवरे । केउआ । वं० मा० केउंगाळ । फा० कलाम । ई०

कवेज । ३ दे० मा० कसेरु । वं० मा० केशुर । कैवुका । कैमुकः । कैवुः

मुपत्रा दलमालिनी । केदूटः । स्वल्पविटपः । स्वादुकंदश्च पौलिनी ॥ ४ दे० मा०

मत्तीडा । कमलकी डंडी । वं० मा० पद्मेर डांटा ।

दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलकफप्रदम् ॥ ११५ ॥

संप्राहि मधुरं रूक्षं भिस्साडमपि तद्रुणम् ।

वर्जनीयम् ।

बालं ह्यनार्त्तवं जीर्णं व्याधितं कृमिभक्षितम् ॥ ११६ ॥

कंदं विवर्जयेत्सर्वं यद्वाग्न्यादिविदूषितम् ।

अतिजीर्णमकालोत्थं रूक्षसिद्धमदेशजम् ॥ ११७ ॥

कर्कशं कोमलं चातिशीतं व्यालादिदूषितम् ।

संशुष्कं सकलं शाकं नाश्रीयान्मूलकं विना ॥ ११८ ॥

संस्वेदजम् ।

उक्तं संस्वेदजं शाकं भूमिच्छत्रं शिलीद्रजम् ।

क्षितिगोमयकाष्ठेषु वृक्षादिषु च तद्भवेत् ॥ ११९ ॥

सर्वे संस्वेदजाः शीता दोषलाः पिच्छिलाश्च ते ।

गुरवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ १२० ॥

श्वेताः श्वभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोत्रजसंभवाः ।

नातिदोषकरास्ते स्युः शेषास्तेभ्यो विगर्हिताः ॥ १२१ ॥

संस्वेदजाः छाता इति लोके ।

इति शाकवर्गः ।

वारिवर्गः ।



पानीयं सलिलं नीरं कीलालं जलमंबु च ।

आपो वार्वारिकं तोयं पयः पाथस्तथोदकम् ॥ १ ॥

जीवनं वनमंभोर्णोमृतं घनरसोऽपि च ॥ २ ॥

१ दे० भा० खुंव सांपकी छत्री । वं० भा० भूईछाती । इ० मशरूम ।
Mushroom. २ दे० भा० पानी । वं० भा० जल । फा० आब । इ०
वाटर Water.

पानीयं श्रमनाशनं क्लमहरं मूर्च्छापिपासापहं
 तंद्राच्छिदिविबन्धहृद्रलकरं निद्राहरं तर्पणम् ।
 हृद्यं गुतरसं ह्यजीर्णशमकं नित्यं हितं शीतलं
 लघ्वच्छं रसकारणान्निगदितं पीयूषवज्जाविना ॥ ३ ॥
 भेद--पानीयं मुनिभिः प्रोक्तं दिव्यं भौममिति द्विधा ॥ ४ ॥
 दिव्यं चतुर्विधं प्रोक्तं धाराजं करकाभवम् ।
 तौषारं च तथा हैमं तेषु धारं गुणाधिकम् ॥ ५ ॥
 धाराजलम् ।

धाराभिः पतितं तोयं गृहीतं स्फीतवाससा ।
 शिलायां वसुधायां वा धौतायां पतितं च तत् ॥ ६ ॥
 सौवर्णे राजते ताम्रे स्फाटिके काचनिर्मिते ।
 भाजने मृण्मये वापि स्थापितं धारमुच्यते ॥ ७ ॥
 धारानीरं त्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसं लघु ।
 सौम्यं रसायनं बल्यं तर्पणं ह्लादिजीवनम् ॥ ८ ॥
 पाचनं मतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान् ।
 तृष्णां हरति तत्पथ्यं विशेषात्प्रावृषि स्मृतम् ॥ ९ ॥
 तद्भेदौ ।

धाराजलं च द्विविधं गंगासामुद्रभेदतः ।
 आकाशगंगासंबन्धि जलमादाय दिग्गजाः ॥ १० ॥
 मेघैरंतरिता वृष्टिं कुर्वतीति वचः सत्ताम् ।

१ तत्र दिव्यमुत्तमं दिव्यस्य कालापेक्षत्वात् । तथाहि दिव्यस्य पात्रकालयो-
 र्वापेक्षा तद्यथा हि सुपात्रस्थम् । आर्तयं हितमनार्तवमहितम् । भौमस्याष्टव-
 स्त्रापेक्षा । तद्यथा--जांगले हितमहितमानूपे ॥ १ ॥ तत्रापि शुच्यादौ हितम-
 हितमशुच्यादौ २ । कृपादौ हितमहितं पल्वलादौ । ३ सुपात्रे हितमहितं
 दुष्पात्रे ॥ ४ कचिद्देहे हितं कचिदहितम् ॥ ५ शरद्व्रीष्मयोर्हितमहितम-
 न्यदा । ६ दिवा हितमहितं रात्रौ । ७ दिवाद्यन्तयोरेवम् ॥ ८ दिव्यं तु सर्वत्र
 सर्वदा सर्वेषां हितम् ।

गांगमाश्वयुजे मासि प्रायो वर्षति वारिदः ॥ ११ ॥

सर्वथा तज्जलं देयं तथैव चरके वचः ।

स्थापितं हेमजे पात्रे राजते मृण्मयेऽपि वा ॥ १२ ॥

शाल्यन्नं येन संसिक्तं भवेदङ्गेदि वर्णवत् ।

तद्गांगं सर्वदोषघ्नं ज्ञेयं सामुद्रमन्यथा ॥ १३ ॥

तच्च सक्षारलवणं शुक्रदृष्टिबलापहम् ।

विघ्नं च दोषलं तीक्ष्णं सर्वकर्मसु गर्हितम् ॥ १४ ॥

सामुद्रं त्वाश्विने मासि गुणैर्गांगवदादिशेत् ।

अगस्त्यस्य तु देवर्षेरुदयात्सकलं जलम् ॥ १५ ॥

निर्मलं निर्विषं स्वादु शुक्रलं स्याददोषलम् ।

अतएवाह-फूत्कारविषवातेन नागानां व्योमचारिणाम् १६

वर्षासु सविषं तोयं दिव्यमथाश्विनं विना ।

अनार्तवम् ।

अनार्तवं प्रमुञ्चन्ति वारि वारिधरास्तु यत् ॥ १७ ॥

तत्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परिकीर्तितम् ।

करकाजलम्-दिव्यवाय्वग्निसंयोगात्संहताः स्वात्पतन्ति याः

पाषाणखण्डवच्चापस्ताः कारक्योऽमृतोपमाः ।

करकाजं जलं रुक्षं विशदं गुरु चास्थिरम् ॥ १८ ॥

दारुणं शीतलं सांद्रं पित्तहृत्कफवातकृत् ।

तौषारम् ।

अपि नद्याः समुद्रांते वहिरापश्च तद्भवाः ॥ २० ॥

१ अनार्तवं पौषादिमासचतुष्टयविषयम् । वर्षर्तुमिन्नकाले वृष्टिमिति यावत् ॥

ज्योतिःशास्त्रेपि--अनुराधर्क्षमारम्य षोडशर्क्षेषु मास्करः । यावत् प्रवर्त्तते तावद्-
कालः परिकीर्तितः । २ दे० भा० ओले गले । ३ अपि नद्याः समुद्रांते वहिरिति
किं स्यादयम्भावः--नदीमारम्य समुद्रपर्यन्तं वहिरास्ते तद्भवा वहिभवा । धूमाव-
यवनिर्मुक्ता धूमांशरहिता आपस्तुषाराख्याः, तुष, ओस, तुस । इस इति लोके ।
पंजाबीमें तरेल कहते हैं ॥

धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तु ताः स्मृताः ।

अपथ्याः प्राणिनां प्रायो भूरुहाणां तु ता हिताः ॥ २१ ॥

तुषारांबु हिमं रुक्षं स्याद्वातलमापित्तलम् ।

कफोरुस्तंभकंठाग्रिमेदोगंडादिरोगकृत् ॥ २२ ॥

हैमजलम् ।

हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवीभूयाभर्वर्षति ।

यत्तेदेव हिमं हैमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ २३ ॥

हिमांबु शीतं पित्तघ्नं गुरु वातविवर्द्धनम् ।

हिमं तु शीतलं रुक्षं दारणं सूक्ष्ममित्यपि ॥ २४ ॥

न तद्दूषयते वातं न च पित्तं न वा कफम् ।

भामम् ।

भौममंबु निगदितं प्रथमं त्रिविधं बुधैः ॥ २५ ॥

जांगलं च तथानूपं ततः साधारणं क्रमात् ।

अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्च पित्तरक्तामयान्वितः ॥ २६ ॥

ज्ञातव्यो जांगलो देशस्तत्रत्यं जांगलं जलम् ।

वह्नुर्बुध्वहुवृक्षश्च वातश्लेष्माभयान्वितः ॥ २७ ॥

देशोऽनूप इति ख्यात आनूपं तद्वत् जलम् ।

मिश्रचिह्नस्तु यो देशः स हि साधारणः स्मृतः ॥ २८ ॥

तस्मिन्देशे यदुदकं तत्तु साधारणं स्मृतम् ।

जांगलं सलिलं रुक्षं लवणं लघु पित्तनुत् ॥ २९ ॥

वह्निहृत्कफकृत्पथ्यं विकारान् कुरुते बहून् ।

आनूपं वाय्वभिष्यंदि स्वादु स्निग्धं घनं गुरु ॥ ३० ॥

वह्निहृत्कफकृन्नित्यं विकारान्कुरुते बहून् ।

साधारणं तु मधुरं दीपनं शीतलं लघु ॥ ३१ ॥

तर्पणं रोचनं तृष्णादाहदोषत्रयप्रणुत् ।

१ और्वानलधूमेगितमंबु समुद्रस्य यदनीभूतम् । पवनानीतमुदीच्यां तद्धि-
ममिति कथ्यते मुनिभिः ॥ कुहेस वर्ष इति लोके ।

भौमनादेयम् ।

नद्या नदस्य वा नीरं नादेयमिति कीर्तितम् ॥ ३२ ॥

नादेयमुदकं रूक्षं वातलं लघु दीपनम् ।

अनभिष्यंदि विशदं कटुकं कफपित्तनुत् ॥ ३३ ॥

नद्यः शीघ्रंवहा लघ्व्यः सर्वा याश्चामलोदकाः ।

गुर्व्यः शैवलसंछन्नाः मंदगाः कलुषाश्च याः ॥ ३४ ॥

हिमवत्प्रभवाः पथ्या नद्योश्माहतपाप्यसः ।

गंगाशतद्रुसरयूयमुनाद्या गुणोत्तमाः ॥ ३५ ॥

सह्यशैलभवा नद्यो वेणीगोदावरीमुखाः ।

कुर्वति प्रायशः कुष्ठमीषद्रातकफावहाः ॥ ३६ ॥

नदीसरस्तडागस्थे कूपप्रस्त्रवणादिजे ।

उदके देशभेदेन गुणान्दोषांश्च लक्षयेत् ॥ ३७ ॥

औद्भिदम् ।

विदार्य भूमिं निम्नां यन्महत्या धारया स्रवेत् ।

तत्तोयमौद्भिदं नाम वदंतीति महर्षयः ॥ ३८ ॥

औद्भिदं वारि पित्तघ्नमविदाह्यतिशीतलम् ।

प्रीणनं मधुरं बल्यमीषद्रातकरं लघु ॥ ३९ ॥

नैर्झरम् ।

शैलसानुस्त्रवद्धारिप्रवाहो निर्झरो झरः ।

सतु प्रस्त्रवणश्चापि तत्रत्यं नैर्झरं जलम् ॥ ४० ॥

नैर्झरं रुचिकृत्रीरं कफघ्नं दीपनं लघु ।

मधुरं कटुपाकं च वातलं स्यादपित्तलम् ॥ ४१ ॥

सारसम् ।

नद्या शैलादिरुद्धाया यत्र संश्रुत्य तिष्ठति ।

तत्सरोजदलच्छन्नं तदंभः सारसं स्मृतम् ॥ ४२ ॥

सारसं सलिलं बल्यं तृष्णाघ्नं मधुरं लघु ।

रोचनं तुवरं रूक्षं बद्धमूत्रमलं स्मृतम् ॥ ४३ ॥

तडागम् ।

प्रशस्तभूमिभागस्थो बहुसंवत्सरोषितः ।

जलाशयस्तडागः स्यात्ताडागं तज्जलं स्मृतम् ॥ ४४ ॥

ताडागमुदकं स्वादु कषायं कटुपाकि च ।

वातलं बद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ॥ ४५ ॥

वापी ।

पाषाणैरिष्टकाभिर्वा बद्धः कूपो बृहत्तरः ।

ससोपाना भवेद्वापी तज्जलं वाप्यमुच्यते ॥ ४६ ॥

वाप्यं वारि यदि क्षारं पित्तकृत्कफवातहृत् ।

तदेव मिष्टं कफकृद्वातपित्तहरं भवेत् ॥ ४७ ॥

कौपम् ।

भूमौ खातोलपविस्तारो गंभीरो मंडलाकृतिः ।

बद्धोऽबद्धः स कूपः स्यात्तदंभः कौपमुच्यते ॥ ४८ ॥

कौपं पयो यदि स्वादु त्रिदोषघ्नं हितं लघु ।

तत्क्षारं कफवातघ्नं दीपनं पित्तकृत्परम् ॥ ४९ ॥

चौंड्यम् ।

शिलाकीर्णं स्वयं श्वन्नं नीलांजनसमोदकम् ।

लतावितानसंछन्नं चौंड्यमित्याभिधीयते ॥ ५० ॥

अश्मादिभिरबद्धं यत्तच्चौंड्यमिति वापरे ।

तत्रत्यमुदकं चौंड्यं मुनिभिस्तदुदाहृतम् ॥ ५१ ॥

चौंड्यं वह्निकरं नीरं रूक्षं कफहरं लघु ।

मधुरं पित्तनुद्गुच्यं पाचनं विशदं स्मृतम् ॥ ५२ ॥

पाल्वलम् ।

अल्पं सरः पल्वलं स्याद्यत्र चंद्रक्षणे रवौ ।

तत्तिष्ठति जलं किञ्चित्तत्रत्यं वारि पाल्वलम् ॥ ५३ ॥

पाल्वलं वाय्यभिष्यंदि गुरु स्वादु त्रिदोषकृत् ।

विकरम् ।

नद्यादिनिकटे भूमिर्या भवेद्बालुकामयी ॥ ५४ ॥

उद्भाव्यते यत्तोयं तु तज्जलं विकरं विदुः ।

विकरं शीतलं स्वच्छं निर्दोषं लघु च स्मृतम् ॥ ५५ ॥

तुवरं स्वादु पित्तघ्नं क्षारं तत्पित्तलं मनाक् ।

केदारम् ।

केदारं क्षेत्रमुदिष्टं कैदारं तज्जलं स्मृतम् ॥ ५६ ॥

कैदारं वाय्यभिष्यंदि मधुरं गुरु दोषकृत् ।

वृष्टिजलम् ।

वार्षिकं तदहर्वृष्टं भूमिस्थमाहितं जलम् ॥ ५७ ॥

त्रिरात्रमुषितं तच्च प्रसन्नममृतोपमम् ।

विहितजलम् ।

हेमन्ते सारसं तोयं ताडागं वा हितं स्मृतम् ॥ ५८ ॥

हेमन्ते विहितं तोयं शिशिरेऽपि प्रशस्यते ।

वसन्तग्रीष्मयोः कौषं वाप्यं वा नैर्झरं जलम् ॥ ५९ ॥

नादेयं वारि नादेयं वसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः ।

विषवद्वनवृक्षाणां पत्राद्यैर्दूषितं यतः ॥ ६० ॥

औद्भिदं चांतरिक्षं वा कौषं वा प्रावृषि स्मृतम् ।

शस्तं शरादि नादेयं नीरमंशूदकं परम् ॥ ६१ ॥

दिवा राविकैर्जुष्टं निशि शीतकरांशुभिः ।

१ राविकैर्जुष्टमित्युक्ते दिवापदं समस्तदिवसप्राप्त्यर्थम् । शीतकरांशुभिर्जुष्ट-
मित्युक्ते निशीतिपदमर्द्धरात्रप्राप्त्यर्थम् । तंडुलजलम् । तंडुलानष्टगुणिते कंडि-
तान् क्षालयेज्जले । ततुंडुलजलं ग्राह्यं योज्यं निखिलकर्मसु ॥ १ ॥ नारिकेलज-
लम् । नारिकेलोद्भवं स्निग्धं स्वादु वृष्यं हिमं लघु । तृष्णापित्तानिलहरं दीपनं
वस्तिशोधनम् ॥ २ ॥

ज्ञेयमंशूदकं नाम स्निग्धं दोषत्रयापहम् ॥ ६२ ॥

अनभिप्यंदि निदोषमांतरिक्षजलोपमम् ।

बल्यं रसायनं मेध्यं शीतं लघु सुधासमम् ॥ ६३ ॥

सुश्रुतः ।

पौषे वारि सरोजातं माघे तत्तु तडागजम् ।

फाल्गुने कूपसंभूतं चैत्रे चोड्या हिमं मतम् ॥ ६४ ॥

वैशाखे नैर्झरं नीरं ज्येष्ठे शस्तं तथोद्भिदम् ।

आषाढे शस्यते कौपं श्रावणे दिव्यमेव च ॥ ६५ ॥

भाद्रे कौपं पयः शस्तमाश्विने चोड्यमेव च ।

कार्तिके मार्गशीर्षे च जलमात्रं प्रशस्यते ॥ ६६ ॥

जलग्रहणकालः ।

भौमानामंभसां प्रायो ग्रहणं प्रातरिष्यते ।

शीतत्वं निर्मलत्वं च यतस्तेषां मता गुणाः ॥ ६७ ॥

जलपानम् ।

अत्यंबुपानान्न विपच्यतेऽन्नं निरंबुपानाच्च स एव दोषः ।

तस्मान्नरो वह्निविवर्धनाय मुहुर्मुहुर्वारि पिबेद्भूरि ॥ ६८ ॥

शीतलजलम् ।

मूर्च्छादिपित्तदाहेषु विषे रक्ते मदात्यये ।

श्रमे भ्रमे विदग्धेऽन्ने तमके क्षवथौ तथा ॥ ६९ ॥

ऊर्ध्वे रक्तपित्ते च शीतमंबु प्रशस्यते ।

तन्निषेधः ।

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे ॥ ७० ॥

आध्मानोस्तमिते कोष्ठे सद्यः शुद्धौ नवज्वरे ।

अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषु विद्रव्यौ ॥ ७१ ॥

हिक्कायां स्नेहपाने च शीतांबु परिवर्जयेत् ।

उष्णोदकम् । अर्द्धाविशिष्टं यत्तोयं तदुष्णोदकमुच्यते । उष्णोदकं सदा पथ्यं
श्वासकासज्वरार्तिजित् ॥ १ ॥ आरोग्यांबु । पादशेषं तु यत्तोयमारोग्यांबु
तदुच्यते । आरोग्यांबु सदा पथ्यं श्वासकासकफापहम् ।

अल्पजलम् ।

अरोचके प्रतिश्याये मंदेश्चौ श्वयथौ क्षये ॥ ७२ ॥

मुखप्रसेके जठरे कुष्ठे नेत्रामये ज्वरे ।

व्रणे च मधुमेहे च पिबेत्पानीयमल्पकम् ॥ ७३ ॥

आवश्यकता ।

जीवनं जीविनां जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम् ।

अतोऽत्यन्तनिषेधेऽपि न क्वचिद्भारि वाय्यते ॥ ७४ ॥

हारीतः ।

तृष्णागरीयसी घोरा सद्यः प्राणविनाशिनी ।

तस्मादेयं तृषार्तीय पानीयं प्राणधारणम् ॥ ७५ ॥

तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति ।

अतः सर्वास्ववस्थानु न क्वचिद्भारि वर्जयेत् ॥ ७६ ॥

प्रशस्तजलम् ।

अगंधमव्यक्तरसं सुशीतं तर्पनाशनम् ।

स्वच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवद्बुध्यते ॥ ७७ ॥

निर्द्विषम् ।

पिच्छिलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशैवालकर्मैः ।

विवर्णं विरसं सांद्रं दुर्गंधं न हितं जलम् ॥ ७८ ॥

कलुषं छन्नमंभोजपर्णनीलीतृणादिभिः ।

दुःस्पर्शनमसंस्पृष्टं सौरचांद्रमरीचिभिः ॥ ७९ ॥

अनार्तवं वार्षिकं तु प्रथमं तच्च भूमिगम् ।

व्यापन्नं परिहर्तव्यं सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ ८० ॥

तत्कुय्यात्स्नानपानाभ्यां तृष्णाध्मानचिरज्वरान् ।

कासाग्निमांद्याभिष्यंदकंदुग्गंडादिकं तथा ॥ ८१ ॥

दिवाशृतं पयो रात्रौ गुरुतामधिगच्छति । रात्रौ शृतं दिवा पीतं गुरु त्वमधि-
गच्छति । शृतं शीतं पुनस्तप्तं तोयं विषसमं भवेत् ।

शोधनम् ।

निद्रितं चापि पानीयं कथितं सूर्य्यतापितम् ।
 सुवर्णं रजतं लोहं पाषाणं सिकतामपि ॥ ८२ ॥
 भृशं संताप्य निर्वाप्य सतथा साधितं तथा ।
 कर्पूरजातिपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥ ८३ ॥
 शुचि सांद्रपटस्त्रावि क्षुद्रजंतुविवर्जितम् ।
 स्वच्छं कनकमुक्ताद्यैः शुद्धं स्यादोषवर्जितम् ॥ ८४ ॥
 पर्णमूलविसग्रंथिमुक्ताकतकशैवलैः ।
 गोमेदेन च वज्रेण कुर्यादंबुप्रसादनम् ॥ ८५ ॥
 पीतं जलं जीर्य्यति यामयुग्मा-
 द्यामैकमात्राच्छृतशीतलं च ।
 तद्वर्द्धमात्रेण शृतं कटुष्णं
 पयःप्रपाके त्रय एव कालाः ॥ ८६ ॥

इति वारिवर्गः ।

दुग्धवर्गः ।

दुग्धम् ।

दुग्धं क्षीरं पयः स्तन्यं बालजीवनमित्यपि ।
 दुग्धं समधुरं स्निग्धं वातपित्तहरं परम् ॥ १ ॥
 सद्यः शुक्रकरं पीतं सात्म्यं सर्वशरीरिणाम् ।
 जीवनं बृंहणं बल्यं मेध्यं वाजिकरं परम् ॥ २ ॥
 वयःस्थापनमायुष्यं संधिकारि रसायनम् ।
 विरेकवांतिवस्तीनां तुल्यमोजोविवर्द्धनम् ॥ ३ ॥
 जीर्णज्वरे मनोरोगे शोषमूर्च्छाभ्रमेषु च ।

१ दे० भा० दूध । व० भा० दूध । फा० शीरे । इ० मिल्क milk क्षीर-
 मष्टविधम्-गव्यं, महिषम्, आजं, कारभं स्त्रिणम् आविकम् । ऐभम् । ऐकशफम् ॥

ग्रहण्यां पांडुरोगे च दाहे तृषि हृदामये ॥ ४ ॥

गर्भस्त्रावे च सततं हितं मुनिवरैः स्मृतम् ।

बालवृद्धक्षतक्षीणक्षुद्रव्यवायकृशाश्च ये ॥ ५ ॥

तेभ्यः सदातिशयितं हितमेतदुदाहृतम् ।

गोदुग्धम् ।

गव्यं दुग्धं विशेषेण मधुरं रसपाकयोः ॥ ६ ॥

शीतलं स्तन्यकृत् स्निग्धं वातपित्तास्त्रनाशनम् ।

दोषधातुमलस्रोतः किञ्चित्क्लेदकरं गुरु ॥ ७ ॥

जरासमस्तरोगाणां शान्तिकृत्सेविनां सदा ।

कृष्णाया गोर्भवं दुग्धं वातहारि गुणाधिकम् ॥ ८ ॥

पीताया हरते पित्तं तथा वातहरं भवेत् ।

श्लेष्मलं गुरु शुक्लाया रक्ताचित्रातिवातहृत् ॥ ९ ॥

बालवत्सविवत्सानां गवां दुग्धं त्रिदोषकृत् ।

बैष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नं तर्पणं बलकृत्पयः ॥ १० ॥

देशविशेषेण श्रेष्ठ्यम् ।

जांगलानूपशैलेषु चरंतीनां यथोत्तरम् ।

षयो गुरुतरं स्नेहं यथाहारं प्रवर्तते ॥ ११ ॥

आहारविशेषम् ।

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातं क्षीरं गुरु कफप्रदम् ।

तत्तु बल्यं परं वृष्यं स्वस्थानां गुणदायकम् ॥ १२ ॥

पलालवृणकार्पासबीजजातं गुणैर्हितम् ।

माहिषम् ।

माहिषं मधुरं गव्यात्स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ॥ १३ ॥

निद्राकरमभिष्यंदि क्षुधाधिककरं हिमम् ।

छागम् ।

छागं कषायं मधुरं शीतं ग्राहि तथा लघु ॥ १४ ॥

रक्तपित्तातिसारघ्नं क्षयकासज्वरापहम् ।

अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ॥ १५ ॥

स्तोकांबुपानाद्व्याध्यामात्सर्वरोगापहं पयः ।

मृगीदुग्धम् ।

मृगीणां जांगलोत्थानामजाक्षीरगुणं पयः ॥ १६ ॥

मेषीणाम् ।

आविकं लवणं स्वादु स्निग्धोष्णं चाश्मरिप्रणुत् ।

अहद्यं तर्पणं वृष्यं शुक्रपित्तकफप्रदम् ॥ १७ ॥

गुरु कासेऽनिलोद्धूते केवले चानिले वरम् ।

अश्वीदुग्धम् ।

रुक्षोष्णं वडवाक्षीरं बल्यं शोषानिलापहम् ॥ १८ ॥

अम्लं पटु लघु स्वादु सर्वसैकशफं तथा ।

उष्ट्रीदुग्धम् ।

उष्ट्रीदुग्धं लघु स्वादु लवणं दीपनं तथा ॥ १९ ॥

कृमिकृष्टकफानाहशोथोदरहरं सरम् ।

हस्तिनीदुग्धम् ।

वृहणं हस्तिनीदुग्धं मधुरं तुवरं गुरु ॥ २० ॥

वृष्यं बल्यं हिमं स्निग्धं चक्षुष्यं स्थिरताकरम् ।

नारीदुग्धम् ।

नाय्या लघु पयः शीतं दीपनं वातपित्तजित् ॥ २१ ॥

चक्षुःशूलाभिघातघ्नं नस्याश्चोतनयोर्हितम् ।

धारोष्णम् ।

धारोष्णं गोः पयो बल्यं लघु शीतं सुधासमम् ॥ २२ ॥

दीपनं च त्रिदोषघ्नं तद्धारा शिशिरं त्यजेत् ।

धारोष्णं शस्यते गव्यं धाराशीतं तु माहिषम् ॥ २३ ॥

१ वृहणं जीवनं सात्त्व्यं स्नेहनं मानुषं पयः । नावनं रक्तपित्तस्य तर्पणं चाक्षिरोगिणान् ॥ १ ॥ इति चरकः ॥

शृतोष्णमाविकं पथ्यं शृतशीतमजापयः ।

आमं क्षीरमभिष्यंदि गुरु श्लेष्मामवर्द्धनम् ॥ २४ ॥

ज्ञेयं सर्वमपथ्यं तु गव्यमाहिषवर्जितम् ।

नारीक्षीरं त्वाममेव हितं न तु शृतं हितम् ॥ २५ ॥

शृतोष्णं कफवातघ्नं शृतशीतं तु पित्तनुत् ।

अर्द्धोदकं क्षीरशिष्टमामाल्लघुतरं पयः ॥ २६ ॥

जलेन रहितं दुग्धमतिपक्वं यथायथा ।

तथातथा गुरु स्निग्धं वृष्यं बलविवर्द्धनम् ॥ २७ ॥

पीयूषकिलाटक्षीरशाकतक्रपिंडमोरटाः ।

क्षीरं तत्कालसूताया घनं पीयूषमुच्यते ।

नष्टदुग्धस्य पक्वस्य पिंडः प्रोक्तः किलाटकः ॥ २८ ॥

अपक्वमेव यन्नष्टं क्षीरशाकं हि तत् पयः ।

दध्ना तन्नेन वा नष्टं दुग्धं बद्धं सुवाससा ॥ २९ ॥

द्रवभागेन रहितं यत्तक्रपिंडः स उच्यते ।

नष्टदुग्धभवं नीरं मोरटं जय्यटोऽब्रवीत् ॥ ३० ॥

पीयूषश्च किलाटं च क्षीरशाकं तथैव च ।

तक्रपिंड इमे वृष्या बृंहणा बलवर्द्धनाः ॥ ३१ ॥

गुरवः श्लेष्मला हृद्या वातपित्तविनाशनाः ।

दीताग्नीनां विनिद्राणां विद्रधो चाभिपूजिताः ॥ ३२ ॥

मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ।

लघुर्बलकरो रुच्यो मोरटः स्यात्सितायुतः ॥ ३३ ॥

संतानिका गुरुः शीता वृष्या पित्तास्रवातनुत् ।

तर्पणी बृंहणी स्निग्धा बलासबलशुक्रला ॥ ३४ ॥

खंडेन सहितं दुग्धं कफकृत्पवनापहम् ।

सितासितोपलायुक्तं शुक्रलं त्रिमलापहम् ॥ ३५ ॥

रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा ।

प्राभातिकं तदा प्रायः प्रादोषाद्गुरु शीतलम् ॥ ३६ ॥

दिवाकरकराघाताद्व्यायामानिलसेवनात् ।

प्राभातिका तु प्रादोषं लघुवातकफापहम् ॥ ३७ ॥

वृष्यं वृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्णशीतं पयो

मध्याह्ने बलदायकं कफहरं पित्तापहं दीपनम् ।

बाल्ये वह्निकरं ततो बलकरं वृद्धेषु रेतोवहं

रात्रौ पथ्यमनेकदोषशमनं क्षीरं सदा सेव्यते ॥ ३८ ॥

वदन्ति पेयं निशि केवलं पयो

भोज्यं न तेनेह सहौदनादिकम् ।

भवेदजीर्णं यदि न स्वपेन्निशि

क्षीरस्य पीतस्य न शेषमुत्सृजेत् ॥ ३९ ॥

विदाहीन्यन्नपानानि दिवा भुंक्ते हि यन्नरः ।

तद्विदाहप्रशांत्यर्थं रात्रौ क्षीरं सदा पिबेत् ॥ ४० ॥

दीप्तानले कृशे पुंसि बाले वृद्धे पयःप्रिये ।

मतं हिततमं दुग्धं सद्यः शुक्रकरं यतः ॥ ४१ ॥

क्षीरं गव्यमथाजं वा कोष्णं दंडाहतं पिबेत् ।

लघु वृष्यं ज्वरहरं वातपित्तकफापहम् ॥ ४२ ॥

गोदुग्धप्रभवं किं वा छागीदुग्धसमुद्भवम् ।

भवेदेतन्निदोषघ्नं रोचनं बलवर्द्धनम् ॥ ४३ ॥

वह्निवृद्धिकरं वृष्यं सद्यस्तृप्तिकरं लघु ।

अतिसारेऽग्निमांघ्रे च ज्वरेऽजीर्णे प्रशस्यते ॥ ४४ ॥

निंदितम् ।

विवर्णं विरसं चाम्लं दुर्गन्धं ग्रथितं पयः ।

वर्जयेदम्ललवणयुक्तं बुद्ध्यादिहृद्यतः ॥ ४५ ॥

इति दुग्धवर्गः ।

अम्लेष्वामलकं पय्यं शर्करा मधुरेषु च । पटोलं तिक्तवर्गेषु त्रिकटुकेषु महौ-
षधम् ॥ १ ॥ कपायेष्वाभया प्रोक्ता लवणेषु च सैन्धवम् । वैदलानां तथा मापाः
शाकेषु सुनिपण्णम् ॥ २ ॥ तावृळं नैव सेवेत क्षीरं पीत्वा तु मानवः । याव-
त्तस्मिन् क्षीरं मुहूर्ताद्वा प्रशस्यते ॥ ३ ॥

दधिवर्गः ।

दधि ।

दध्युण्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु ।
पाकेऽम्लं श्वासपित्तास्त्रशोथमेदःकफप्रदम् ॥ १ ॥
मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतगे विषमज्वरे ।
अतिसारेऽरुचौ काश्ये शस्यते बलशुक्रकृत् ॥ २ ॥
तद्भेदः ।

आदौ मंदं ततः स्वादु स्वाद्वम्लं च ततः परम् ।
अम्लं चतुर्थमत्यम्लं पंचमं दधि पंचधा ॥ ३ ॥
मंदं दुग्धवदव्यक्तरसं किञ्चिद्घनं भवेत् ।
मंदं स्यात्सृष्टविष्मूत्रदोषत्रयविदाहकृत् ॥ ४ ॥
यत्सम्यग्घनतां यातं व्यक्तस्वादुरसं भवेत् ।
अव्यक्ताम्लरसं तत्तु स्वादु विज्ञैरुदाहृतम् ॥ ५ ॥
स्वादु स्यादत्यभिष्यंदि वृष्यं मेदःकफावहम् ।
वातघ्नं मधुरं पाके रक्तपित्तप्रसादनम् ॥ ६ ॥
स्वाद्वम्लं सांद्रं मधुरं कषायानुरसं भवेत् ।
स्वाद्वम्लस्य गुणा ज्ञेया सामान्यदधिवर्जनैः ॥ ७ ॥
यत्तिरोहितमाधुर्यं व्यक्ताम्लत्वं तदम्लकम् ।
अम्लं तु दीपनं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ ८ ॥
तदत्यम्लं दंतरोमहर्षकंठादिदाहकृत् ।
अत्यम्लं दीपनं रक्तवातपित्तकरं परम् ॥ ९ ॥
गव्यं दधि विशेषेण स्वाद्वम्लं च रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं हृद्यं पुष्टिकृत्पवनापहम् ॥ १० ॥

उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुप्ताधिकम् ।
 माहिषं दधि सुस्निग्धं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ॥ ११ ॥
 स्वादु पाकमभिप्यादि वृष्यं गुर्वस्त्रदूषकम् ।
 आजं दध्युष्णकं ग्राहि लघु दोषत्रयापहम् ॥ १२ ॥
 शस्यते श्वासकासर्शःक्षयकार्शयेषु दीपनम् ।
 पक्कदुग्धभवं रुच्यं दधि स्निग्धगुणोत्तमम् ॥ १३ ॥
 पित्तानिलापहं सर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ।
 असारं दधि संग्राहि शीतलं वातलं लघु ॥ १४ ॥
 विष्टंभि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम् ।
 गालितं दधि सुस्निग्धं घ्रातघ्नं कफकृद्गुरु ॥ १५ ॥
 बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ।
 सशर्करं दधि श्रेष्ठं तृष्णापित्तास्त्रजित् परम् ॥ १६ ॥
 सगुडं वातनुद् वृष्यं बृंहणं तर्पणं गुरु ।
 न नक्तं दधि भुंजीत नचाप्यघृतशर्करम् ॥ १७ ॥
 नासुद्रसूपं नाक्षौद्रं नोष्णैर्नामलकैर्विना ।
 शस्यते दधि नो रात्रौ शस्तं चांबुघृतान्विमम् ॥ १८ ॥
 रक्तपित्तकफोत्थेषु विकारेषु च नैवं तत् ।
 हेमन्ते शिशरे चापि वर्षासु दधि शस्यते ॥ १९ ॥
 शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशस्तद्विगर्हितम् ।
 ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयभ्रमान् ॥ २० ॥
 प्राप्नुयात्कामलां चोग्रां विधिं हित्वा दधिप्रियः ।
 दध्नस्तूपरि यो भागो घनः स्नेहसमन्वितः ॥ २१ ॥
 स लोके सर इत्युक्तो दध्नो मंडस्तु मस्तिवाति ।

१ रात्रौ दधि न भुंजीत, भुंजीत चेत्तदा अवृतशर्करामसुद्रसूपमक्षौद्रमुष्णं
 विनामलकं च दधि न भुंजीत । तेन घृतशर्करादियुक्तं रात्रावपि दधि भुंजी-
 तेत्यर्थः ॥ २ अंबुघृतान्वितमपि ॥

सरः स्वादुर्गुरुवृष्यो वातवह्निप्रणाशनः ॥ २२ ॥
 साम्लो वस्तिप्रशमनः पित्तश्लेष्मविवर्द्धनः ।
 मस्तु क्लमहरं बल्यं लघुभक्ताभिलाषकृत् ॥ २३ ॥
 स्रोतोविशोधनं ह्लादि कफतृष्णानिलापहम् ।
 अवृष्यं प्रीणनं शीघ्रं भिनत्ति मलसंचयम् ॥ २४ ॥
 इति दधिवर्गः ।

तक्रवर्गः ।



घोलं तु मथितं तक्रमुदशिवच्छच्छिकापि च ।
 ससरं निर्जलं घोलं मथितं त्वसरोदकम् ॥ १ ॥
 तक्रं पादजलं प्रोक्तमुदशिवत्त्वर्द्धवारिकम् ।
 छच्छिका सारहीना स्यात्स्वच्छा प्रचुरवारिका ॥ २ ॥
 घोलं तु शर्करायुक्तं गुणैर्ज्ञेयं रसालवत् ।
 वातपित्तहरं ह्लादि मथितं कफपित्तनुत् ॥ ३ ॥
 तक्रं ग्राहिकषायाम्लं स्वादुपाकरसं लघु ।
 वीर्य्योष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ॥ ४ ॥
 ग्रहण्यादिमतां पथ्यं भवेत्संग्राहि लाघवात् ।
 किञ्चित्स्वादुविपाकित्वान्न च पित्तप्रकोपनम् ॥ ५ ॥
 कषायोष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ।
 कषायोष्णं विकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापि कफापहम् ॥ ६ ॥
 न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः ।
 यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः ७
 अम्लेन वातं मधुरेण पित्तं कफं कषायेण निहन्ति सद्यः ।
 उदशित्कफकृद्वल्यं आमघ्नं परमं मतम् ॥ ८ ॥

१ दे० भा० छाह, मठा, लस्सी । बं० भा० घोल । फा० मस्त, मठा ।

२ वटरमिल्क, Butter milk.

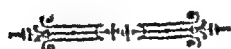
छच्छिका शीतला लघ्वी पित्तश्रमवृषाहरी ।
वातनुत्कफकृत्सा तु दीपनी लघ्णान्विता ॥ ९ ॥

उद्धृतघृतस्तोकोद्धृतघृतानुद्धृतघृतानि ।

समुद्धृतं घृतं तक्रं पथ्यं लघु विशेषतः ।
स्तोकोद्धृतघृतं तस्माद् गुरु वृण्यं कफावहम् ॥ १० ॥
अनुद्धृतघृतं सांद्रं गुरु पुष्टिकफप्रदम् ।
घातेम्लं शस्यते तक्रं शुंठीसैधवसंयुतम् ॥ ११ ॥
पित्ते स्वादुसितायुक्तं सव्योषमधिकं कफे ।
हिंशु जीरयुतं बोलं सैधवेन च संयुतम् ॥ १२ ॥
भवेदतीववातघ्नमशोतीसारहृत्परम् ।
सुरुच्यं पुष्टिदं बल्यं वस्तिशूलविनाशनम् ॥ १३ ॥
मूत्रकृच्छ्रे तु सगुडं पांडुरोगे सचित्रकम् ।
तक्रमामं कफं कोष्ठे हन्ति कंठे करोति च ॥ १४ ॥
पीनसश्वासकासादौ पक्वमेव प्रयुज्यते ।
शीतकालेऽग्निमांघ्रे च तथा वातामयेषु च ॥ १५ ॥
अरुचौ स्रोतसां रोधे तक्रं स्यादमृतोपमम् ।
तत्तु हन्ति गरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् ॥ १६ ॥
पांडुमेदोप्रहण्यशोमूत्रप्रहभगंदरान् ।
मेहं गुल्ममतीसारं शूलप्लीहोदरारुचीः ॥ १७ ॥
श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन् कुष्ठशोथतृषाकृमीन् ।
नैव तक्रं क्षते दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले ॥ १८ ॥
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपित्तजे ।
यान्युक्तानि दधीन्यष्टौ तद्गुणं तक्रमदिशेत् ॥ १९ ॥

इति तक्रवर्गः ।

नवनीतवर्गः ।



भ्रक्षणं सर्जं हैयंगवीनं नवनीतकम् ।

नवनीतं हितं गव्यं वृष्यं वर्णवलाग्निकृत् ।

संग्राहि वातपित्तासृक्क्षयाशोदितकासहृत् ॥ १ ॥

तद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः ।

नवनीतं महिष्यास्तु वातश्लेष्मकरं गुरु ॥ २ ॥

दाहपित्तश्रमहरं मेदःशुक्रविवर्द्धनम् ।

दुग्धोत्थं नवनीतं तु चक्षुष्यं रक्तपित्तनुत् ॥ ३ ॥

वृष्यं बल्यमतिस्निग्धं मधुरं ग्राहि शीतलम् ।

नवनीतं तु सद्यस्कं स्वादु ग्राहि हिमं लघु ॥ ४ ॥

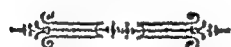
मेध्यं किञ्चित्कषायाम्लमीषत्तक्रांशसंक्रमात् ।

सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्दशःकुष्ठकारकम् ॥ ५ ॥

श्लेष्मलं गुरु मेदस्यं नवनीतं चिरंतनम् ॥ ६ ॥

इति नवनीतवर्गः ।

घृतवर्गः ।



घृतमाज्यं हविः सर्पिः कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।

घृतं रसायनं स्वादु चक्षुष्यं वह्निदीपनम् ॥ १ ॥

शीतवीर्यं विषालक्ष्मीपापपित्तानिलापहम् ।

अल्पाभिष्यंदि कांत्योजस्तेजोलावण्यबुद्धिकृत् ॥ २ ॥

१ दे० भा० मक्खन । बं० भा० माखन ननी । फा० मस्का । इं०
बटर । Butter, आजं त्रिदोषशमनं नवनीतं तयोर्वरम् ॥ २ दे० भा० घी ।
घि । बं० भा० घृत । घी । फा० रोगनजरद । इं० लोरीफाईड । बटर ।
Lorified Butter.

स्वरस्मृतिकरं मेध्यमायुष्यं बलकृद्गुरु ।
 उदावर्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान् हरेत् ॥ ३ ॥
 स्निग्धं कफकरं वृष्यं क्षयवीसर्परक्तनुत् ।
 गव्यं घृतं विशेषेण चक्षुष्यं वृष्यमग्निकृत ॥ ४ ॥
 स्वादुपाकरसं शीतं वातपित्तकफापहम् ।
 मेधालावण्यकांत्योजस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ ५ ॥
 अलक्ष्मीपापरक्षौद्रं वयसः स्थापनं गुरु ।
 बल्यं पवित्रमायुष्यं सुमंगल्यं रसायनम् ॥ ६ ॥
 सुगंधं रोचकं चारु सर्वाज्येषु गुणाधिकम् ।
 माहिषं तु घृतं स्वादु पित्तरक्तानिलापहम् ॥ ७ ॥
 शीतलं श्लेष्मलं वृष्यं गुरु स्वादु विपच्यते ।
 आजमाज्यं करोत्यग्निं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ॥ ८ ॥
 कासे श्वासे क्षये चापि हितं पाके भवेत्कटु ।
 ओष्ट्रं कटु घृतं पाके शोषक्रिमिविषापहम् ॥ ९ ॥
 दीपनं कफवातघ्नं कुष्ठगुल्मोदरापहम् ।
 पाके लघ्वाविकं सर्पिः सर्वरोगविनाशनम् ॥ १० ॥
 वृद्धिं करोति चास्थीनामश्मरीशर्करापहम् ।
 चक्षुष्यमग्निसंधुक्ष्यं वातदोषनिवारणम् ॥ ११ ॥
 कफेऽनिले योनिदोषे पित्ते रक्ते च तद्धितम् ।
 चक्षुष्यमाज्यं स्त्रीणां वा सर्पिः स्यादमृतोपमम् ॥ १२ ॥
 वृद्धिं करोति देहाग्नेर्लघु पाके विषापहम् ।
 तर्पणं नेत्ररोगघ्नं दाहलुद्रडवाघृतम् ॥ १३ ॥
 घृतं दुग्धभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगहत् ।
 निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्छाभ्रमानिलान् ॥ १४ ॥
 हविर्ह्यस्तनदुग्धोत्थं तत्स्याद्द्वयंगवीनकम् ।
 ह्यंगवीनं चक्षुष्यं दीपनं रुचिकृत्परम् ॥ १५ ॥

बलकृद्वृहणं वृष्यं विशेषाज्ज्वरनाशनम् ।
वर्षादूर्ध्वं भवेदाज्यं पुराणं तन्निदोषनुत् ॥ १६ ॥
मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारातिमिरापहम् ।
यथायथाखिलं सर्पिः पुराणमधिकं भवेत् ॥ १७ ॥
तथातथा गुणैः स्वैःस्वैराधिकं तदुदाहृतम् ।
योजयेन्नवमेवाज्यं भोजने तर्पणे श्रमे ॥ १८ ॥
बलक्षये पांडुरोगे कामलानेत्ररोगयोः ।
राजयक्ष्माणि बाले च वृद्धे श्लेष्मकृते गदे ॥ १९ ॥
रोगे सामे विषूच्यां च विबन्धे च मदात्यये ।
ज्वरे च दहने मंदे न सर्पिर्बहु मन्यते ॥ २० ॥

इति घृतवर्गः ।

सूत्रवर्गः ।

गोमूत्रम् ।

गोमूत्रं कटु तीक्ष्णोष्णं क्षारं तिक्तकफापहम् ।
लघ्वग्निदीपनं मेध्यं पित्तकृत्कफवातहृत् ॥ १ ॥
शूलगुल्मोदरानाहकंडूवाक्षिमुखरोगजित् ।
किलासगदवातामवस्तिरुक्कुष्ठनाशनम् ॥ २ ॥
कासश्वासापहं शोथकामलापांडुरोगहृत् ॥ ३ ॥
कंडूकिलासगुदशूलमुखाक्षिरोगान्
गुल्मातिसारमरुदामयमूत्ररोधान् ।
कासं सकुष्ठजठराक्रिमिपांडुरोगान्
गोमूत्रमेकमपि पीतमपाकरोति ॥ ४ ॥

१ दे० मा० मूत्र, पेशाव । वं० मा० मुत, चेना, प्रसाव । फा० बौल
इ० युरीन् । urine.

सर्वेष्वपि च सूत्रेषु गोमूत्रं गुणतोधिकम् ॥ ५ ॥
 अतो विशेषात्कथितं मूत्रं गोमूत्रमुच्यते ।
 प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोप्रहापहम् ॥ ६ ॥
 शूलगुल्मरुजानाहकामलापांडुरोगहृत् ।
 कषायं तिक्ततीक्ष्णं च पूरणात्कर्णशूलनुत् ॥ ७ ॥
 नरमूत्रं गरं हन्ति सेवितं तद्रसायनम् ।
 रक्तपामाहरं तीक्ष्णं सक्षारं लवणं स्मृतम् ॥ ८ ॥
 गोजाविमहिषीणां तु स्त्रीणां मूत्रं प्रशस्यते ।
 खरोध्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं स्मृतम् ॥ ९ ॥

इति मूत्रवर्गः ।

तैलवर्गः ।

तिलादिस्निग्धवस्तूनां स्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।
 तच्च वातहरं सर्वं विशेषात्तिलसंभवम् ॥ १ ॥
 तिलतैलं गुरु स्थैर्यवलवर्णकरं सरम् ।
 वृष्यं विकाशि विशदं मधुरं रसपाकयोः ॥ २ ॥
 सूक्ष्मं कषायानुरसं तिक्तं वातकफापहम् ।
 वीर्य्येणोष्णं हिमं स्पर्शं वृंहणं रक्तपित्तकृत् ॥ ३ ॥
 लेखनं वद्धविण्मूत्रं गर्भाशयविशोधनम् ।
 दीपनं बुद्धिदं मेध्यं व्यवायि व्रणमेहनुत् ॥ ४ ॥
 श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनं लघुताकरम् ।
 त्वच्यं केश्यं च चक्षुष्यमभ्यंगे भोजनेन्यथा ॥ ५ ॥
 छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते ।
 भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धविस्लिष्टदारिते ॥ ६ ॥

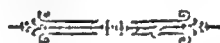
१ दे० मा० तैल । वं० मा० तल, तेल । फा० रोगनकुंजद । इ०

तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते ।
 वस्तौ पानेऽन्नसंस्कारे नस्ये कर्णाक्षिपूरणे ॥ ७ ॥
 सेकाभ्यंगावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते ।
 घृतमब्दात्परं पक्वं हीनवीर्यं प्रजायते ॥ ८ ॥
 तैलं पक्वमपक्वं वा चिरस्थायि गुणाधिकम् ।
 दीपनं सार्षपं तैलं कटुपाकरसं लघु ॥ ९ ॥
 लेखनं स्पर्शवीर्योष्णं तीक्ष्णं पित्तास्रदूषकम् ।
 कफमेदोनिलाशोघं शिरःकर्णामयापहम् ॥ १० ॥
 कंडुकुष्ठकृमिश्चित्रकोठदुष्टक्रिमिप्रणुत् ।
 तद्रद्राजिकयोस्तैलं विशेषान्मूत्रकृच्छकृत् ॥ ११ ॥
 तीक्ष्णोष्णं तुवरीतैलं लघु ग्राहि कफास्रजित् ।
 वह्निवृद्धिषहत्कंडुकुष्ठकोठक्रिमिप्रणुत् ॥ १२ ॥
 मेदोदोषापहं चापि व्रणशोथहरं परम् ।
 अतसीतैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तकृत् ॥ १३ ॥
 कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गरु ।
 मलकृद्रसतः स्वादु ग्राहि त्वग्दोषहृद्घनम् ॥ १४ ॥
 वस्तौ पाने तथाभ्यंगे नस्ये कर्णास्यपूरणे ।
 अनुपानविधौ चापि प्रयोज्यं वातशान्तये ॥ १५ ॥
 कुसुंभतैलमम्लं स्यादुष्णं गुरु विदाहि च ।
 चक्षुर्भ्यामहितं वृष्यं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥ १६ ॥

१ दे० भा० राई, कृष्ण राई, रक्तराई । ननु बृंहणलेखनयोः कथं सामा-
 नाधिकरण्यमित्याह । रूक्षादिदुष्टपवनः स्रोतः संकोचयेद्यतः । रसोऽसम्य-
 ग्वहन् कार्यं कुर्याद्रक्ताद्यवर्द्धयन् ॥ १ ॥ तेषु प्रवेष्टुं सरतासौक्ष्म्यस्निग्धत्वमार्दवैः । तैलं
 क्षमं रसं नेतुं कृशानां तेन बृंहणम् ॥ २ ॥ व्यवायसूक्ष्मतीक्ष्णेष्णसरत्वैर्मेदसः क्षयम् ।
 शनैः प्रकुरुते तैलं तेन लेखनमीरितम् ॥ ३ ॥ द्रुतं पुरीषं बध्नाति स्वलितं तत्प्रतर्ज-
 येत् । ग्राहकं सारकं चापि तेन तैलमुवीरितम् ॥ ४ ॥

तैलं तु खसबीजानां बल्यं वृष्यं गुरु स्मृतम् ।
 वातहृत्कफहृच्छीतं स्वादुपाकरसं च तत् ॥ १७ ॥
 एरंडतैलं तीक्ष्णोष्णं दीपनं पिच्छिलं गुरु ।
 वृष्यं त्वच्यं वयःस्थायि मेदःकांतिबलप्रदम् ॥ १८ ॥
 कषायातुरसं सूक्ष्मं योनिशुक्रविशोधनम् ।
 विस्त्रं स्वादु रसे पाके सतिक्तं कटुकं सरम् ॥ १९ ॥
 विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् ।
 हन्ति वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥ २० ॥
 वातशोणितविड्बंध्रध्मशोथामविद्रधीन् ।
 आमवातगजेंद्रस्य शरीरवनचारिणः ॥ २१ ॥
 एक एव निहन्तायमेरंडस्नेहकेसरी ।
 तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रणनाशनम् ॥ २२ ॥
 कुष्ठपामाकृमिहरं वातह्लेप्यामयापहम् ।
 तैलं स्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलं स्मृतम् ॥ २३ ॥
 अतः शेषस्य तैलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिवत् ।
 इति तैलवर्गः ।

मधुवर्गः ।



मधु ।

मधु माक्षिकमाध्वीकक्षौद्रसारधमीरितम् ।
 मक्षिकावरटीभृंगवातं पुष्परसोद्भवम् ॥ १ ॥
 मधु शीतं लघु स्वादु रुक्षं ग्राहि विलेखनम् ।
 चक्षुष्यं दीपनं स्वयं व्रणशोधनरोपणम् ॥ २ ॥
 सौकुमार्यकरं सूक्ष्मं परं स्रोतोविशोधनम् ।
 कषायातुरसं ह्लादि प्रसादजनकं परम् ॥ ३ ॥

१ दे० मा० शहत, मधु । वं० मा० मधु, मौ । फा० शहद, अगवीन । इ० हनी ।

वर्ण्यं मेधाकरं वृण्यं विशदं रोचनं हरेत् ।
 कुष्ठार्शःकासापित्तास्रकफमेहकुमक्रिमीन् ॥ ४ ॥
 मेदस्तृण्णावमिश्वासहिक्कातीसारविडग्रहान् ।
 दाहक्षतक्षयास्रं तु योगवाह्यल्पवातलम् ॥ ५ ॥
 माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौत्तिकं छात्रमित्यपि ।
 आर्घ्यमौदालकंदालमित्यष्टौ मधुजातयः ॥ ६ ॥
 मक्षिकाः पिंगवर्णास्तु महत्यो मधुमक्षिकाः ।
 ताभिः कृतं तैलवर्णं माक्षिकं परिकीर्तितम् ॥ ७ ॥
 माक्षिकं मधुषु श्रेष्ठं नेत्रामर्यहरं लघु ।
 कामलार्शःक्षतश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ ८ ॥
 किञ्चित्सूक्ष्मैः प्रसिद्धेभ्यः षट्पदेभ्योऽलिभिश्चितम् ।
 निर्मलं स्फटिकामं यत्तन्मधु भ्रामरं स्मृतम् ॥ ९ ॥
 भ्रामरं रक्तपित्तघ्नं सूत्रजाड्यकरं गुरु ।
 स्वादुपाकमभिष्यन्दि विशेषात्पिच्छिलं हिमम् ॥ १० ॥
 मक्षिकाः कपिलाः सूक्ष्माः क्षुद्राख्यास्तत्कृतं मधु ।
 मुनिभिः क्षौद्रमित्युक्तं तद्वर्णात्कपिलं भवेत् ॥ ११ ॥
 गुणैर्माक्षिकवत् क्षौद्रं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ १२ ॥
 कृष्णा या मशकोपमा लघुतराः प्रायो महापिंडका
 बध्नानास्तहकोटरांतरगताः पुष्पासवं कुर्वते ।
 तास्तज्जैरिह पुत्तिका निगदिताः ताभिः कृतं सर्पिषा
 तुल्यं यन्मधु तद्वनेचरजनैः संकीर्तितं पौत्तिकम् ॥ १३ ॥
 पौत्तिकं मधु रूक्षोष्णं पित्तदाहास्रवातकृत् ॥ १४ ॥
 विदाहि मेहहृच्छस्तं ग्रंथ्यादिक्षतशोथिषु ।
 वरटाः कपिलाः पीताः प्रायो हिमवतो वने ॥ १५ ॥
 कुर्वति छात्रकाकारं तज्जं छात्रं मधु स्मृतम् ।
 छात्रं कपिलपीतं स्यात् पिच्छिलं शीतलं गुरु ॥ १६ ॥
 स्वादुपाकं कृमिशिवरक्तपित्तप्रमेहजित् ।

भ्रमतृणमोहविषहृत्तर्पणं च गुणाधिकम् ॥ १७ ॥

मधूकवृक्षात्रिर्यासं जरत्कावाश्रमोद्भवाः ।

स्त्रवंत्यार्धं तदाख्यातं श्वेतकं मालवे पुनः ॥ १८ ॥

तीक्ष्णतुंडास्तु याः पीता मक्षिकाः षट्पदोपमाः ।

अर्धास्तास्तत्कृतं यत्तु तदार्धमितरे जगुः ॥ १९ ॥

आर्द्रं मध्वतिचक्षुष्यं कफपित्तहरं परम् ।

कषायं कटुकं पाके तित्तं च बलपुष्टिकृत् ॥ २० ॥

प्रायो वल्मीकमध्यस्थाः कपिलाः स्वल्पकीटकाः ।

कुर्वन्ति कपिलं स्वल्पं तत्स्यादौदालकं मधु ॥ २१ ॥

औदालकं रुचिकरं स्वय्यं कुष्ठविषापहम् ।

कषायमुष्णमम्लं च कटुपाकं च पित्तकृत् ॥ २२ ॥

संश्रुत्य पतितं पुष्पाद्यत्तु पत्रोपरि स्थितम् ।

मधुराम्लकषायं च तदालं मधु कीर्तितम् ॥ २३ ॥

दालं मधु लघु प्रोक्तं दीपनीयं कफापहम् ।

कषायानुरसं रुक्षं रुच्यं प्रच्छिदि मेहजित् ॥ २४ ॥

अधिकं मधुरं स्निग्धं बृंहणं गुरु भारिकम् ।

नवं मधु भवेत्पुष्ट्यै नातिश्लेष्महरं सरम् ॥ २५ ॥

पुराणं ग्राहकं रुक्षं मेदोघ्नमतिलेखनम् ।

मधुनः शर्करायाश्च गुडस्यापि विशेषता ॥ २६ ॥

एकसंवत्सरेऽतीति पुराणत्वं स्मृतं बुधैः ।

विषपुष्पादपि रसं सविषा भ्रमरादयः ॥ २७ ॥

गृहीत्वा मधु कुर्वन्ति तच्छीते गुणवन्मधु ।

विषान्वयात्तदुष्णं तु द्रव्येणोष्णेन वा सह ॥ २८ ॥

उष्णार्तस्योष्णकाले च स्मृतं विषसमं मधु ।

मैयनं तु मधूच्छिष्टं मधुशेषं च सिक्थकम् ॥ २९ ॥

१ लघु पाके, गुरु भारिकं तुलितम् । २ दे० भा० मोम । वं० भा० मोम ।
फा० मोमे जर्द । इ० ऐलोवेक्स ।

मध्वाधारो मदनकं मधूषितमपि स्मृतम् ।
मदनं तु मृदु स्निग्धं भूतघ्नं व्रणरोपणम् ॥ ३० ॥
भग्नसंधानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ।

इति मधुवर्गः ।

इधुवर्गः ।

इधुः ।

इधुर्दीर्घच्छदः प्रोक्तस्तथा भूमिरसोऽपि च ।
गुडमूलोऽसिपत्रश्च तथा मधुतृणः स्मृतः ॥ १ ॥
इक्ष्वो रक्तपित्तघ्ना बल्या वृण्याः कफप्रदाः ।
स्वादुपाकरसाः स्निग्धा गुरवो मूत्रला हिमाः ॥ २ ॥
पौंड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः ।
कांतारस्तापसेधुश्च काष्ठेधुः सूचिपत्रकः ॥ ३ ॥
नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽप्यकोशकृत् ।
इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥ ४ ॥
वातपित्तप्रशमनो मधुरो रसपाकयोः ।
सुशीतो बृंहणो बल्यः पौंड्रको भीरुकस्तथा ॥ ५ ॥
कोशकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ।
कांतारेधुर्गुरुवृष्यः श्लेष्मलो बृंहणः सरः ॥ ६ ॥
दीर्घपोरः सुकठिनः सक्षारो वंशकः स्मृतः ।
शतपोरो भवेत्किंचित्कोशकारगुणान्वितः ॥ ७ ॥
विशेषात्किंचिदुष्णश्च सक्षारः पवनापहः ।
तापसेधुर्भवेन्मृद्धी मधुरा श्लेष्मकारिणी ॥ ८ ॥

काष्ठेक्षुः ।

एवंगुणैस्तु काष्ठेक्षुः स तु वातप्रकोपनः ॥ ९ ॥

सूचीपत्रो नीलपोरो नैपालो दीर्घपत्रकः ।

वातलाः कफपित्तघ्नाः सकषाया विदाहिनः ॥ १० ॥

मनोगुप्ता वातहरी तृष्णामयविनाशिनी ।

सुशीता मधुरातीव रक्तपित्तप्रणाशिनी ॥ ११ ॥

बाल इक्षुः कफं कुर्यान्मेदोमेहकरश्च सः ।

युवा तु वातहृत्स्वादुरीषक्तीक्ष्णश्च पित्तनुत् ॥ १२ ॥

रक्तपित्तहरो वृद्धः क्षयहृद्बलवीर्यकृत् ।

मूले तु मधुरोऽत्यर्थं मध्येऽपि मधुरः स्मृतः ॥ १३ ॥

अग्रे ग्रंथिषु विज्ञेय इक्षुः पटुरसो जनैः ।

दन्तनिष्पीडितस्येक्षो रसः पित्तास्त्रनाशनः ॥ १४ ॥

शर्करासमवीर्यः स्याद्विदाही कफप्रदः ।

मृलाग्रजं तु ग्रंथ्यादिपीडनान्मलसंकरात् ॥ १५ ॥

किञ्चित्कालविधृत्या च विकृतिं याति यांत्रिकः ।

तस्माद्विदाही विष्टंभी गुरुः स्याद्यांत्रिको रसः ॥ १६ ॥

रसः पर्युषितो नेष्टो ह्यग्लो वातापहो गुरुः ।

कफपित्तकरः शोषी भेदनश्चातिसूत्रलः ॥ १७ ॥

पक्वो रसो गुरुः स्निग्धः सतीक्ष्णः कफवातनुत् ।

गुल्मानाहप्रशमनः किञ्चित्पित्तकरः स्मृतः ॥ १८ ॥

इक्षोर्विकारास्तृदाहसूच्छापित्तास्त्रनाशनाः ।

गुरवो मधुरा बल्याः स्निग्धा वातहराः सराः ॥ १९ ॥

वृष्या मोहहराः शीता बृंहणा विषहारिणः ।

फाणितम् ।

इक्षो रसस्तु यः पक्वः किञ्चिद्वाढो बहुद्रवः ॥ २० ॥

१ दे० भा० काठागन्ना २ दे० भा० काळपोंडा । ३ दे० भा० मुसारी मुटारी ।
४ इक्षुविकाराः । इक्षो रसस्य समलं त्र्यंशद्वयं त्रिमलमलाः । विकाराः फाणित-
गुल्मस्यंतीखड्गशर्कराः ॥ ५ दे० भा० राव । ढरका । छोवा ॥

स एवेक्षुविकारैषु ख्यातः फाणितसंज्ञया ।
 फाणितं गुर्वभिष्यंदि बृंहणं कफशुक्रकृत् ॥ २१ ॥
 वातपित्तश्रमान्हन्ति मूत्रवस्तिविशोधनम् ।
 इक्षो रसो यः संपक्वो वनः किञ्चिद्भवान्वितः ॥ २२ ॥
 मंदं यत्स्यंदते तस्मान्मत्स्यंडीति निगद्यते ।
 मत्स्यंडी भेदनी बल्या लघ्वी पित्तानिलापहा ॥ २३ ॥
 मधुरा बृंहणी वृष्या रक्तदोषापहा स्मृता ।

गुडम् ।

इक्षो रसो यः संपक्वो जायते लोष्ठवद्वटम् ॥ २४ ॥
 स गुडो गौडदेशे तु मत्स्यंडयेव गुडो मतः ।
 गुडो वृष्यो गुरुः स्निग्धो वातघ्नो मूत्रशोधनः ॥ २५ ॥
 नातिपित्तहरो मेदःकफक्रिमिवलप्रदः ।
 गुडो जीर्णो लघुः पथ्योऽनभिष्यंद्यग्निपुष्टिकृत् ॥ २६ ॥
 पित्तघ्नो मधुरो वृष्यो वातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ।
 गुडो नवः कफश्वासकासकृमिकरोऽग्निकृत् ॥ २७ ॥
 श्लेष्माणमाशु विनिहन्ति सदार्द्रकेण
 पित्तं निहन्ति च तदेव हरीतकीभिः ।
 शृंठ्या समं हरति वातमशेषमित्थं
 दोषत्रयक्षयकराय नमो गुडाय ॥ २८ ॥

खंडम् ।

खंडं तु मधुरं वृष्यं चक्षुष्यं बृंहणं हिमम् ।
 वातपित्तहरं स्निग्धं बल्यं वांतिहरं परम् ॥ २९ ॥

१ दे० भा० गुड । वं० भा० गुड । फा० कंदेस्याह । इ० टीकलमौला-
 सीस । नामानि—गुडः स्यादिक्षुसारस्तु मधुरो रसपाकजः । शिशुप्रियः सितादिः
 स्यादरुणो रसजः स्मृतः ॥ १ ॥ २ दे० भा० खांड । वं० भा० खांड । फा०
 सक्कर । इ० श्युगर । (तुरंजबीन) यवासर्करा शीता रसे स्वाद्वी कषायका ।
 वृष्या तिक्ता च मधुरा भ्रमं पित्तं तृषां जयेत् ॥ २ ॥

सिता ।

खंडं तु सिकतारूपं सुधेता शर्करा सिता ।

सिता सुमधुरा रुच्या वातपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३० ॥

मूर्च्छार्छादिज्वरान् हन्ति सुशीता शुक्रकारिणी ॥ ३१ ॥

पुष्पसिताः ।

शीता पुष्पसिता वृष्या रक्तपित्तहरी लघुः ॥ ३२ ॥

सितोपला ।

सितोपला सरा लघ्वी वातपित्तहरी हिमा ।

मधुजा शर्करा रूक्षा कफपित्तहरी गुरुः ॥ ३३ ॥

छर्द्यतीसारतृट्दाहरक्तहृत्तुवरा हिमा ।

यथायथा स्यान्नेर्मल्यं मधुरत्वं यथायथा ॥ ३४ ॥

स्नेहलाघवशेत्यानि सरत्वं च तथातथा ।

इति इक्षुवर्गः ।

संधानवर्गः ।



संधितं धान्यमंडादि कांजिकं कथ्यते जनैः ।

कांजिकं भेदि तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु ॥ १ ॥

दाहज्वरहरं स्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् ।

माषादिवटकैर्युक्तं क्रियते तद्गुणाधिकम् ॥ २ ॥

लघुवातहरं तत्तु रोचनं पाचनं परम् ।

शूलाजीर्णविवंधामनाशनं वस्तिशोधनम् ॥ ३ ॥

शोषमूर्च्छाभ्रमातार्तानां मदकंडुविशोषिणाम् ।

कुष्ठिनां रक्तपित्तानां कांजिकं न प्रशस्यते ॥ ४ ॥

१ दे० भा० बूरा मिश्री वं० भा० चिनी । मिशरी ॥ फा० खरी सकर
नवात । इ० ग्युरिफाईड्युगरकेंडी । २ फल की मिठाई हुई । गुळखंड गुल-
कन्द । ३ कुंजेकी मिशरी । ४ मधुकी बनाई हुई । शर्करा मीनिडी शुक्रा सिता
च वाटुकात्मजा । अहिच्छत्रा तु सिकता शुद्धा शुभ्रा सितोपला ॥

पांडुरोगे यक्ष्मरोगे तथा शोषातुरेषु च ।
 क्षतक्षीणे तथा श्रांते मंदज्वरनिपीडिते ॥ ५ ॥
 एतेषां त्वहितं प्रोक्तं कांजिकं दोषकारकम् ।
 तुषोदकं यवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः ॥ ६ ॥
 तुषांबु दीपनं हृद्यं पांडुक्रिमिगदापहम् ।
 तीक्ष्णोष्णं पाचनं पित्तरक्तकृद्गस्तिशूलनुत् ॥ ७ ॥
 सौवीरं तु यवैरामैः पक्कैर्वा निस्तुषैः कृतम् ।
 गोधूमैरपि सौवीरमाचार्य्याः केचिद्वाचिरे ॥ ८ ॥
 सौवीरं तु ग्रहण्यर्शःकफघ्नं भेदि दीपनम् ।
 उदावर्तांगमर्दास्थिशूलानाहेषु शस्यते ॥ ९ ॥
 आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ।
 पक्कैर्वा संधितैस्तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः ॥ १० ॥
 धान्याम्लं शालिचूर्णाच्च कोद्रवादिकृतं भवेत् ।
 धान्याम्लं धान्ययोनित्वात्प्रीणनं लघु दीपनम् ॥ ११ ॥
 अरुचौ वातरोगेषु सर्वेष्वास्थापने हितम् ।
 शंडाकीराजिकायुक्तैः स्यान्मूलकदलद्रवैः ॥ १२ ॥
 सर्षपस्वरसैर्वापि शालिपिष्टकसंयुतैः ।
 शंडाकी रोचनी गुर्वी पित्तश्लेष्मकरी स्मृता ॥ १३ ॥
 कंदमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च ।
 यत्र द्रवेऽभिषूयंते तच्छुक्तमभिधीयते ॥ १४ ॥
 शुक्तं कफघ्नं तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु ।
 पांडुक्रिमिहरं रुक्षं भेदनं रक्तपित्तकृत् ॥ १५ ॥
 कंदमूलफलाढ्यं यत्तत्तु विज्ञेयमासुतम् ।
 मद्गुच्यं प्राचनं वातहरं लघु विशेषतः ॥ १६ ॥
 मद्यं तु सीधुमैरैयमिरा च मदिरा सुरा ।
 कादंबरी वारुणी च हालापि बलवल्लभा ॥ १७ ॥

पेयं यन्मादकं लोके तन्मद्यमभिधीयते ।

यथारिष्टं सुरासीधुरासवाद्यमनेकधा ॥ १८ ॥

मद्यं सर्वं भवेदुष्णं पित्तकृद्वातनाशनम् ।

भेदनं शीघ्रपाकं च रुक्षं कफहरं परम् ॥ १९ ॥

अम्लं च दीपनं रुच्यं पाचनं चाशुकारि च ।

तीक्ष्णं सूक्ष्मं च विशदं व्यवायि च विकाशि च ॥ २० ॥

अरिष्टम् ।

पक्वौषधांबुसिद्धं यन्मद्यं तत्स्यादरिष्टकम् ।

अरिष्टं लघुपाकेन सर्वतश्च गुणाधिकम् ॥ २१ ॥

अरिष्टस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः ।

शालिषष्टिकपिष्टाद्यैः कृतं मद्यं सुरा स्मृता ॥ २२ ॥

सुरा गुर्वी बलस्तन्यपुष्टिभेदः कफप्रदा ।

ग्राहिणी शोथगुल्माशोऽग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ २३ ॥

पुनर्नवाशालिपिष्टिविहिता वारुणी स्मृता ।

संहितैस्तालवर्जैररसैर्या सापि वारुणी ॥ २४ ॥

सुरावद्धारुणी लघ्वी पीनसाधमानशूलनुत् ।

इक्षोः पक्वै रसैः सिद्धः सीधुः पक्वरसश्च सः ॥ २५ ॥

आमेस्तिरेव यः सीधुः स च शीतरसः स्मृतः ।

सीधुः पक्वरसः श्रेष्ठः स्वराग्निबलवर्णकृत् ॥ २६ ॥

वातपित्तकरः सद्यः स्नेहनो रोचनो हरेत् ।

त्रिविधमेदःशोफार्शःशोषोदरकफामयान् ॥ २७ ॥

तस्मादल्पगुणः शीतरसः संलेखनः स्मृतः ।

यदपक्वौषधांबुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ॥ २८ ॥

१ अरिष्टं मद्यमिति लोके । यथा द्राक्षारिष्टं, दशमूडारिष्टं, ववूडारिष्टम् ।

२ सुरातो भेदाय लघ्वीति । ३ यथा लोहासवादिः । आसवस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः ।

मद्यं तवमभिष्यंदि त्रिदोषजनकं सरम् ।
 अहं बृहणं दाहि दुर्गंधं विशदं गुरु ॥ २९ ॥
 जीर्णं तदेव रोचिष्णु कृमिश्लेष्मानिलापहम् ।
 हृद्यं सुगंधि गुणवल्लभु स्रोतोविशोधनम् ॥ ३० ॥
 सात्त्विके गीतहास्यादि राजसे साहसादिकम् ।
 तामसे निंदककर्माणि निद्रां च मदिरा चरेत् ॥ ३१ ॥
 विधिना मात्रया/काले हितैरन्नैर्यथाबलम् ।
 ग्रहष्टो यः पिबेन्मद्यं तस्य स्यादमृतोपमम् ॥ ३२ ॥
 गंधनाशः ।

मुस्तैलवालगुंडजीरकधान्यकैला
 यश्चर्वयन् सदासि वाचमभिष्यनाक्ति ।
 स्वाभाविकं सुखजमुज्झति पूतिगंधं
 गंधं च मद्यलशुनादिभवं च नूनम् ॥ ३३ ॥
 इति संधानवर्गः ।

द्रव्यपरीक्षा ।

सूक्ष्मास्थिमांसला पथ्या सर्वकर्मणि पूजिता ।
 क्षितांभसि निमज्जेद्या भल्लातक्यस्तथोत्तमाः ॥ १ ॥
 वाराहमूर्द्धवत्कंदो वाराहीकंदसंज्ञकः ।
 सौवर्चलं तु काचाभं संधवं स्फटिकप्रभम् ॥ २ ॥
 सुवर्णच्छविकं ज्ञेयं स्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् ।
 इंद्रगोपप्रतीकाशं मनोह्रा चोत्तमा मता ॥ ३ ॥
 श्रेष्ठं शिलाजतु ज्ञेयं प्रक्षिप्तं न विशीर्यते ।
 तोयपूर्णं कांस्यपात्रे प्रतानेन विवर्द्धते ॥ ४ ॥
 कर्पूरस्तुवरः स्निग्धः एला सूक्ष्मफला वरा ।
 श्वेतचन्दनमत्यंतं सुगन्धि गुरु पूजितम् ॥ ५ ॥

१ गुडतजीमोथा । वा गुडत्वक् । दालचीनी ।

रक्तचन्दनमत्यंतं लोहितं प्रवरं मतम् ।

काकतुंडानिभः स्निग्धो गुरुः श्रेष्ठोऽगुरुर्मतः ॥ ६ ॥

सुगंधि लघु सूक्ष्मं च सुरदारु वरं मतम् ।

सरलं स्निग्धमत्यर्थं सुगंधि च गुणावहम् ॥ ७ ॥

आतिपीता प्रशस्ता तु ज्ञेया दारुनिशा बुधैः ।

जातीफलं गुरु स्निग्धं समं शुभ्रांतरं वरम् ॥ ८ ॥

मृद्रीका सोत्तमा ज्ञेया या स्याद्गोस्तनसन्निभा ।

कैरमर्दफलाकारा मध्यमा सा प्रकीर्तिता ॥ ९ ॥

खंडं तु विमलं श्रेष्ठं चन्द्रकान्तिसमप्रभम् ।

गव्याज्यसदृशं गंधं रुच्यं मधु वरं स्मृतम् ॥ १० ॥

स्वभावतो हितानि ।

शालीनां लोहिता शाली षष्टिकेषु च षष्टिका ।

शूकधान्येष्वपि यवो गोधूमः प्रवरो मतः ॥ ११ ॥

शिविधान्ये वरो मुद्गो मसूरश्चाढकी तथा ।

रसेषु मधुरः श्रेष्ठो लवणेषु च सैन्धवम् ॥ १२ ॥

दाडिमामलकं द्राक्षा खर्जूरं च पैरूषकम् ।

राजादनं मातुलुंगं फलवर्गे प्रशस्यते ॥ १३ ॥

पत्रशाकेषु वास्तूकं जीवन्ती पोत्तिका वरा ।

पटोलं फलशाकेषु कंदशाकेषु सूरणम् ॥ १४ ॥

एणः कुरंगो हरिणो जांगलेषु प्रशस्यते ।

पक्षिणां तित्तिरी लावो वरो मत्स्येषु रोहितः ॥ १५ ॥

जलेषु दिव्यं दुग्धेषु गव्यमाज्येषु गोभवम् ।

तैलेषु तिलजं तैलमेक्षवेषु सिता हिता ॥ १६ ॥

१ दे० भा० मुनका । २ दे० भा० करौंदी दाख किसमिस । ३ दे० भा० फाटसा खिरणी । ४ दे० भा० विजौरा । ५ हरिणस्ताम्रवर्णः स्यात् एणः कृष्णतया मतः । कुरंगस्ताम्र उद्दिष्टो हरिणाकृतिको महान् ।

स्वभावादहितानि ।

शिंघ्रीषु माषान् ग्रीष्मर्तौ लवणेष्वांशरं त्यजेत् ।
फलेषु लकुचं शाकं सार्षपं न हितं मतम् ॥ १७ ॥
गोमांसं ग्राम्यमांसेषु न हिता महिषीव सा ।
मेषीपयः कुसुंभस्य तैलं त्याज्यं च फाणितम् ॥ १८ ॥

संयोगविरुद्धानि ।

मत्स्यमानूपमांसं च दुग्धयुक्तं विवर्जयेत् ॥ १
कपोतं सर्षपस्नेहमर्जितं परिवर्जयेत् ॥ १९ ॥
मत्स्यानीक्षुविकारेणः तथा क्षौद्रेण वर्जयेत् ।
सक्तून्मांसपयोयुक्तानुष्णैर्दाधि विवर्जयेत् ॥ २० ॥
उष्णैर्नभोबुना क्षौद्रं पायसं कृशरान्वितम् ॥ २१ ॥
दशाहमुषितं सर्पिः कांस्ये मधुघृतं समम् ।
कृतान्नं च कषायं च पुनरुष्णीकृतं त्यजेत् ॥ २२ ॥
एकत्र बहुमांसानि विरुध्यन्ते परस्परम् ।
मधु सर्पिर्वसा तैलं पानीयं वा पयस्तथा ॥ २३ ॥

भेषजसंकेतः ।

लवणं सैधवं प्रोक्तं चन्दनं रक्तचन्दनम् ।
चूर्णलेहासवस्नेहाः साध्या धवलचन्दने ॥ २४ ॥
कषायलेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम् ।
अंतःसम्मार्जने ज्ञेया ह्यजमोदा यवानिका ॥ २५ ॥
बहिःसम्मार्जने सैव विज्ञातव्याऽजमोदिका ।
पयःसर्पिःप्रयोगेषु गव्यमेव हि गृह्यते ॥ २६ ॥
शकृद्रसो गोमयकं मूत्रं गोमूत्रमुच्यते ।

प्रैतिनिधिः ।

चित्रकाभावतो दंती क्षारः शिखरिजोऽथवा ॥ २७ ॥

१ फाणितं, छोया, राव । २ शिखरि, अपामार्गः ।

अभावे धन्वयासस्य प्रक्षेप्या तु दुरालभा ।
 तगरस्याप्यभावे तु कुष्ठं दद्याद् भिषग्वरः ॥ २८ ॥
 मूर्वाभावे त्वचो ग्राह्या जिङ्गनीप्रभवा बुधैः ।
 अहिंसाया अभावे तु मानकन्दः प्रकीर्तितः ॥ २९ ॥
 लक्ष्मणाया अभावे तु नीलकंठशिखा मता ।
 वकुलाभावतो देयं कङ्कारोत्पलपञ्कजम् ॥ ३० ॥
 नीलोत्पलस्याभावे तु कुमुदं देयमिष्यते ।
 जातीपुष्पं न यत्रास्ति लवंगं तत्र दीयते ॥ ३१ ॥
 अर्कपर्णादि पयसो ह्यभावे तद्रसो मतः ।
 पौष्कराभावतः कुष्ठं तथा लांगल्यभावतः ॥ ३२ ॥
 स्थण्ण्यकस्याभावे तु भिषग्भिर्दायते गदः ।
 चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत् स्मृतौ ॥ ३३ ॥
 अभावे सोमराज्यास्तु प्रपुत्राटफलं मतम् ।
 यदि न स्याद्दारुनिशा तदा देया निशा बुधैः ॥ ३४ ॥
 रसांजनस्याभावे तु सम्यग् दार्वी प्रयुज्यते ।
 सौराष्ट्र्यभावतो देया स्फुटिका तद्रुणा जनैः ॥ ३५ ॥
 तालीसपत्रकाभावे स्वर्णताली प्रशस्यते ।
 भार्ग्यभावे तु तालीसं कंटकारी जटाथवा ॥ ३६ ॥
 रुचिकाभावतो दद्यात् लवणं पांसुपूर्वकम् ।
 अभावे मधुयष्ट्यास्तु धातकीं च प्रयोजयेत् ॥ ३७ ॥
 अम्लवेतसकाभावे चुक्रं दातव्यमिष्यते ।
 द्राक्षा यदि न लभ्येत प्रदेयं काश्मरीफलम् ॥ ३८ ॥
 तयोरभावे कुसुमं चन्दूकस्य मतं बुधैः ।
 लवंगकुसुमं देयं नखस्याभावतः पुनः ॥ ३९ ॥

१ सोमराजी, वाकुची । २ चक्रमर्दफटम् । ३ दारुहल्ली । ४ हरिद्रा ।
 ५ सोमदा मटी, स्फुटिका, फटकारी । ६ रुचकं, चौहार ।

कस्तूर्यभावे कक्कोलं क्षेपणीयं विदुर्बुधाः ।
 कक्कोलस्याप्यभावे तु जातीपुष्पं प्रदीयते ॥ ४० ॥
 सुगन्धिमुस्तकं देयं कर्पूराभावतो बुधैः ।
 कर्पूराभावतो देयं ग्रन्थिपर्णं विशेषतः ॥ ४१ ॥
 कुंकुमाभावतो दद्यात्कुसुंभकुसुमं नवम् ।
 श्रीखंडचन्दनाभावे कर्पूरं देयमिष्यते ॥ ४२ ॥
 अभावे त्वेतयोर्विद्यः प्रक्षिपेद्रक्तचंदनम् ।
 रक्तचन्दनकाभावे नवोशीरं विदुर्बुधाः ॥ ४३ ॥
 मुस्ता चातिविषाभावे शिवाभावे शिवा मता ।
 अभावे नागपुष्पस्य पद्मकेसरमिष्यते ॥ ४४ ॥
 मेदाजीवककाकोली ऋद्धिद्वंद्वेऽपि चासंति ।
 वरीविदार्यश्वगंधावाराहीश्च क्रमात् क्षिपेत् ॥ ४५ ॥
 वाराह्याश्च तथाभावे चर्मकारालुको मतः ।
 वाराहीकंदसंज्ञस्तु पश्चिमे गृष्टिसंज्ञकः ॥ ४६ ॥
 वाराहीकंद एवान्यश्चर्मकारालुको मतः ।
 अनूपे स भवेद्देशे वाराह इव लोमवान् ॥ ४७ ॥
 भल्लातकासहत्वे तु रक्तचंदनमिष्यते ।
 भल्लाताभावतश्चित्रं नलश्चेक्षोरभावतः ॥ ४८ ॥
 सुवर्णाभावतः स्वर्णमाक्षिकं प्रक्षिपेद्बुधः ।
 श्वेतं तु माक्षिकं ज्ञेयं बुधैराजतवद्भुवम् ॥ ४९ ॥
 माक्षिकस्याप्यभावे तु प्रदद्यात् स्वर्णगौरिकम् ।
 सुवर्णमथवा रौप्यं मृतं यत्र न लभ्यते ॥ ५० ॥
 तत्र कांतेन कर्माणि शिष्यकुर्याद्विचक्षणः ।
 कांताभावे तीक्ष्णलोहं योजयेद्द्वैद्यसत्तमः ॥ ५१ ॥
 अभावे मौक्तिकस्यापि मुक्ताशुक्तिं प्रयोजयेत् ।
 मधु यत्र न लभ्येत तत्र जीर्णगुडो मतः ॥ ५२ ॥

मत्स्यं ड्यभावतो दद्युर्भिषजः सितशर्कराम् ।

असंभवे सितायास्तु बुधः खंडं प्रयोजयेत् ॥ ५३ ॥

क्षीराभावे रसो मौद्गो मासूरो वा प्रदीयते ।

अत्र प्रोक्तानि वस्तूनि यानि तेषु च तेषु च ॥ ५४ ॥

योज्यमेकतराभावे परं वैद्येन जानता ।

रसवीर्यविपाकाद्यैः समं द्रव्यं विचिंत्य च ॥ ५५ ॥

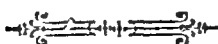
युज्याद्विविधमन्यद्वा द्रव्याणां तु रसादिवित् ।

योगे यदप्रधानं स्यात्तस्य प्रतिनिधिर्मतः ॥ ५६ ॥

यत्तु प्रधानं तस्यापि सदृशं नैव गृह्यते ॥

इति द्रव्यपरीक्षादिवर्गः ।

अनेकार्थवर्गः ।



अश्मंतकः । अम्लाणिका । कोविदारश्च ॥ कुलकः ।
पटोलः । कुपीलुः । कोशातकी । महाकोशातकी । राज-
कोशातकी च ॥ चुक्रिका । अम्लिका । चांगेरी च ॥ तित्ति-
डीकम् । वृक्षाम्लाम्लिका च ॥ दीप्यका । यवान्यजमोदा
च ॥ मरुवकः । फणिज्जकः । पिंडीतकश्च ॥ रुचकम् ।
सौवर्चलम् । बीजपूरकं च ॥ लोणिका । लोणीशाकं-
चांगेरीशाकं च ॥ बाह्लीकम् । कुंकुमम् । हिंशुं च ॥ स्वादु-
कंटकः । गोक्षुरोविकंकितश्च ॥ अग्निमुखी । भल्लातकी
लांगली च ॥ अग्निशिखम् । कुंकुमम् । कुसुंभश्च ॥ अजशृंगी ।
मेषशृंगी । कर्कटशृंगी च ॥ प्रियंगुः । फलिनी । कंगुश्च ॥
भृंगः । भृंगराजस्त्वक् च ॥ समंगा । मंजिष्ठा । लज्जालुश्च ॥
अमोघा । विडंगम् । पाटला च ॥ मोचा । कदली । शाल्म-
लिश्च ॥ कुटन्नटः । स्योनाकः । केवती । मुस्तं च ॥ कनटी ।

धनिका । मनःशिला च ॥ घोंटा । पूगः । बदरी च ॥ त्रिपुटा ।
 त्रिवृत् । बृहदेला च ॥ शटी । कर्चूरः । गंधपलाशी च ॥
 दंतशठः । जंवीरः । कपित्थश्च ॥ दंतशठा । अम्लिका । चां-
 गेरी च ॥ अरुणा । मंजिष्ठा । अतिविषा च ॥ कर्णा पि-
 प्ली । जीरकं च ॥ तालपर्णी । मुसली । मुरा च ॥ पीलु-
 पर्णी । मूर्वा । बिंबी च । ब्राह्मी । भार्गी । स्पृक्षा च ॥
 अपराजिता । विष्णुक्रांता । शालपर्णी च ॥ आस्फोता ।
 अपराजिता । शारिवा च ॥ पारावतपदी । ज्योतिष्मती ।
 काकजंघा च ॥ शारदी । शारिवा । जलपिप्पली च । उग्रगंधा ।
 वचा । यवानी च ॥ परिव्याधः । कर्णिकारः । जलवेतसश्च ॥
 अंजनम् । स्रोतोंजनम् । सौवीरं च ॥ अग्निः । चित्रकः । भ-
 ह्मातकश्च ॥ क्रिमिघ्नः । विडंगः । हरिद्रा च ॥ तेजनः शरः ।
 वैणुश्च । तेजनी । तेजोवती । मूर्वा च ॥ रोचना । गोरोचना ।
 रक्तोत्पलं च ॥ राजादनम् । क्षीरिका । प्रियालश्च ॥
 शकुलादनी । कटुका । जलपिप्पली च ॥ गोलोमी श्वेतदूर्वा ।
 वचा । पद्मा । पद्मचारिणी । भार्गी च ॥ श्यामा । सारिवा ।
 प्रियंगुश्च ॥ उत्तमा । त्रिफला । सर्वतोभद्रा च ॥ धान्यं धान्याकं
 शाल्यादि च ॥ सहस्रवीर्या । नीलदूर्वा । महाशतावरी च ॥
 सेव्यम् । उशीरम् । लामजकं च ॥ उदुंबरः । जंतुफलः ।
 ताम्रं च ॥ ऐंद्री । इंद्रवारुणी । इंद्राणी च ॥ कटुभरा ।
 कटुका । स्योनाकं च । क्षारः । यवक्षारः । स्वर्णिका च ॥
 गांधारी । डुरालभा । गंधपलाशी च ॥ चित्रा । इंद्रवारुणी
 बृहदंती च ॥ तुंडकेशी । कर्पासी । बिंबा च ॥ धारा । गुडूची ।
 क्षीरकाकोली च ॥ बालपत्रः । खदिरः । यवासश्च ॥ वारी । बालकम् ।
 उदकं च ॥ अंगारवल्ली । भार्गी । गुंजा च ॥ अमृणालम् । उशीरम् ।
 लामजकं च ॥ कुंडली । गुडूची । कोविदारश्च ॥ गंधफली ।

प्रियंगुः। चंपककलिका च ॥ दीर्घमूलः। यवासः। शालपर्णी च॥
 पुष्पफलः। कपित्थः। कूष्मांडश्च ॥ पोटगलः। नलः। कासश्च ॥
 यवफलः। कुटजो। वंशश्च ॥ विश्वा। शृंठ्यातिविषा च ॥
 शीतशिवम्। सेंधवम्। मिश्रेया च ॥ कर्कशः। कं पिह्लः।
 कासमर्दश्च ॥ चर्मकषा। शातला। मांसरोहिणी च॥ नंदिवृक्षः।
 अश्वत्थभेदः। तुणिश्च। पयः। क्षीरमुदकं च॥ स्पृहा। दूर्वा। मां-
 सरोहिणी च॥ सिंही। बृहती वासा च ॥ कतकम्। विडलवणम्
 निर्मलीफलं च ॥ कंटकाढ्यः। कुञ्जकः। शाल्मली च ॥ यक्ष-
 धूपः। सरलानिर्यासः रालश्च॥ द्राविडी। शटी। सूक्ष्मैला च ॥
 हृद्रविलासिनी। हरिद्रा। नखी च॥ तिलपर्णः। रक्तचंदनम्।
 ग्रंथिपर्णं च ॥ मधुरः। जीवकः। जीवनीयगणश्च ॥ लोह-
 द्रावणी। गंडदूर्वा। अम्लवेतसश्च ॥ नागिनी। तांबूली।
 नागपुष्पी च ॥ मृदुरेचनी। त्रिवृत्। मार्कंडिका च ॥ नटः।
 श्योनाकः। अशोकश्च ॥ वनस्पतिः। वटः। नंदिवृक्षश्च ॥
 मंदारः। श्वेतार्कः। महानिंबश्च ॥ अंबुजः। कमलम्। इज्जलश्च ॥
 कवरी। वर्वरी। हिं गुपत्री च ॥ कुमारी। घृतकुमारिका।
 शतपत्री च ॥ वरतिक्तकः। पाठा। पर्यटश्च ॥ चित्रकः। पाठा।
 अनलनामा च ॥ यज्ञियः। खादिरः। पलाशश्च ॥ रक्तबीजः।
 अरिष्ट कः। कंदूरी च ॥ क्षारश्रेष्ठः। पलाशः। मोक्षकश्च॥ श्वेत-
 पुष्पः। श्वेतार्कः। इंद्रवारुणी च ॥ तुवरी। सौराष्ट्री। आढकी
 च ॥ कुंभिका। पृगफला। वारिपर्णी च॥ राजपुत्रिका। रेणुका।
 जाती च॥ रक्तपुष्पः। रक्तार्कः। कंदूरी च ॥ सतला शातला।
 वासंती च ॥ विषमुष्टिकः। महानिंबः। विषतिंदुकश्च ॥ रक्त-
 फला। स्वर्णवल्ली। वचश्च॥ चंद्रहासा। गुडूची। लक्ष्मणा च ॥

त्रयर्थकम् ।

क्रमुकः । पूगः । तूदः । पट्टिकालोघ्रश्च ॥ क्षुरकः । कोकि-
लाक्षः । गोक्षुरः । तिलकपुष्पं च॥प्रियकः। प्रियंगुः । कदंबोऽ-
सनश्च॥पृथ्वीका । कालाजाजी।बृहदेला । हिंगुपत्री च॥ भती-
कम् । भूनिंबः। कचृणम् । भूस्तृणाश्च ॥ सोमवल्कः। कट्फलः ।
खदिरः।घृतपूर्णकरंजश्च॥सौगंधिकम्।कह्लारम्। कचृणम्। गंधकं
च ॥ भृंगः । भृंगराजः।त्वक्भ्रमरश्च॥अरिष्टः। निंबः। रसोनम्।
मद्यं च ॥ मर्कटी । कपिकच्छूः। अपामार्गः।करंजी च॥कृष्णा।
पिप्पली।कालाजाजी।नीली च॥क्षीरिणी।दुग्धिका काकोली।
श्वेतसारिवा च ॥ मधुपर्णी । गुडूची । गंभारी नीली च ॥
मंडूकपर्णः । स्योनाकः । मंजिष्ठा । ब्रह्ममंडूकी च ॥ श्रीपर्णी ।
गंभारी । गणकारिका । कट्फलश्च ॥ अमृता।गुडूची । हरीत-
की। धात्री च॥अनंता।दुरालभा।नीलदूर्वा । लांगली च॥रिप्य-
प्रोक्ता।अतिबला महाशतावरी । कपिकच्छूश्च ॥ कृष्णवृंता ।
पाटला । गंभारी । माषपर्णी च ॥ जीवंती।गुडूची।शाकभेदः ।
वंदा च॥लता।सारिवा।प्रियंगुः।ज्योतिष्मती च ॥ समुद्रान्ता।
दुरालभा।कर्पासी।स्पृक्षा च॥हैमवती।हरीतकी।श्वेतवचा।पीत-
दुग्धसेहुंडः॥अव्यथा।हरीतकी। महाश्रावणी।पद्मचारिणी च॥
षट्ग्रंथा।वचा।गंधपला । शीकरंजी च ॥ ताम्रपुष्पी। धातकी ।
पाटला।वरदा च॥वरदा । अश्वगंधा । सुवर्चला । वाराही च।
इक्षुगंधा । काशः।कोकिलाक्षः।क्षीरविदारी च॥कालस्कंदः ।

तमालः। तिंदुकः । कालखदिरश्च॥ महौषधम् ॥ शुंठी। रसोनो ।
 विषं च॥ मधु क्षौद्रम्। पुष्परसः। मद्यं च॥ कपीतनः। आम्रातकः ।
 शिरीषः । गर्दभांडश्च॥ मदनः। पिंडीतकः। धनूरः। सिकथकं च॥
 शतपर्वा । वंशः । दूर्वा । वचा च ॥ सहस्रवेधी । अम्लवेतसः।
 नृगमदः । हिंशु च ॥ ताम्रपुष्पी । धातकी । पाटला । श्यामा ।
 त्रिवृच्च ॥ सदापुष्पः । श्वेतार्कः । रक्तार्कः । कुंदश्च ॥ सुरभिः ।
 शल्लकी । सुरेलवालुकं च ॥ लक्ष्मीः । ऋद्धिर्वृद्धिः । शमी च॥
 कालानुसार्यम्। कालीयकम्। तगरम्। शैलेयं च॥ चांपेयः। चंपकः।
 नागकेसरः । पद्मकेसरश्च॥ नादेयी । गणकारिका । जलजंबूः ।
 जलवेतसश्च॥ पाक्यम् । विडम् । सौवर्चलम् । यवक्षारश्च॥ विश-
 ल्या । लांगली । गुडूची। लघुदंती च ॥ इंद्रदुः । ककुभः । देवदा-
 रुः । कुटजश्च ॥ काश्मीरम् । कुंकुमम् । पुष्करमूलम् (स्त्री) गं-
 भारी च ॥ गुंद्रः । पटेरकः । मुंजः। शरश्च॥ गुंद्रा। प्रियंगुः। फलि-
 नी भद्रसुस्तकश्च॥ लुक्कम् । शुक्तकम्। अम्लवेतसम् । वृक्षाम्लः॥
 पारिभद्रः। निंबः । पारिजातः देवदारु च॥ पीतदारु। हरिद्रा
 देवदारु । सरलश्च ॥ वीरिः। ककुभः । वीरणम् काकोली च ॥
 वीरतरुः । ककुभावीरणम् । शरश्च ॥ मयूरः । अपामार्गः ।
 अजमोदा । तुत्थं च॥ रक्तसारः। रक्तचंदनम् । पतंगः। खदिरः ।
 वदरा । सुवर्चला । अश्वगंधा । वाराही च ॥ वशिरः ।
 रक्तापामार्गः । गजपिप्पली । समुद्रलवणं च ॥ सौवीरम् ।
 अंजनभेदः । वदरम् संधानभेदश्च ॥ वंजुलः । अशोकः ।
 वेतसः । तिनिशश्च ॥ शिला । मनःशिला । शिलाजतु ।

गैरिकं च ॥ सोमवल्ली । वाकुची । गुडूची । ब्राह्मी च ॥ अक्षी-
 वः । सौभांजनः । महानिंबः । समुद्रलवणं च ॥ धामार्गवः ।
 रक्तापामार्गः । राजकोशातकी । महाकोशातकी च ॥ दुःस्प-
 र्शः । यवासः । कंटकारी । कपिकच्छुश्च ॥ पलाशः । किंशुकः ।
 गंधपलाशीपत्रं च ॥ कालमेषी । मंजिष्ठा । वाकुची । श्यामा ।
 त्रिवृच्च ॥ पलंकषः । गुग्गुलुर्गोधुरः । लाक्षा च ॥ मधुरसा ।
 द्राक्षा । मूर्वा । गंधारी च ॥ रसा । रासना । शल्लकी । पाठा
 च ॥ श्रेयसी । हरीतकी । रास्ना । गजपिप्पली च ॥ लोहम् ।
 अथः । कांस्यमगुरु च ॥ सहा । मुद्गपर्णी । बलाभेदः । शत-
 पत्री ॥ सुवहा । रास्ना । नाकुली । सिंदुवारः ॥ कठिल्लकः ।
 कारवेल्लम् । रक्तपुनर्नवा । कृष्णवर्वरी च ॥ मधूलिका । मूर्वा ।
 यष्टी मधूकश्च ॥ वितुन्नकम् । धान्यकम् । तुत्थकम् । गोनर्दश्च ॥
 देवीरुष्टका । मूर्वा कर्कोटी च ॥ वसुकः । शिवमल्ली । श्वे-
 तार्कः रोमकं च ॥ गंडीरः । शाकविशेषः । मंजिष्ठा । गंड-
 दुर्वा च ॥ लांगली कालिहारी । जलपिप्पली । नारिकेलश्च ॥
 पिच्छिला । शिशिपा । शाल्मलिः । भूतवृक्षश्च ॥ महासहा ।
 माषपर्णी । अम्लातकः । कुब्जकश्च ॥ चंद्रिका । मेथी । चंद्र-
 शूरः । श्वेतकंटकारी च ॥

चतुरर्थकम् ।

श्वेतपुष्पा । इंद्रवारुणी । सिंदुवारः । श्वेतार्कः । सैरेयकश्च ॥
 कारवी । पृथ्वीका । शतपुष्पा । कालाजाजी । अजमोदा च ॥
 अंबष्ठपाठा । चांगेरी । माचिका । यूथिका च ॥

वह्मर्थम् ।

अक्षशब्दः स्मृतोऽष्टासु सौवर्चलविभीतके । कर्षपद्मा-
क्षरुद्राक्षशकटेंद्रियपाशके ॥ १ ॥ काकाख्यः काकमाची च का-
कोली काकण्तिका । काकजंघा काकनासा काकोदुंबरि-
कापि च ॥ २ ॥ सतस्वर्येषु कथितः काकशब्दो विचक्षणैः ।
सर्पद्विरदमेषेषु सीसके नागकेसरे । नागवल्यां नागदंत्यां
नागशब्दश्च युज्यते ॥ ३ ॥ मांसे द्रवे चक्षुरसे पारदे मधुरादिषु ।
चोले रागे विषे नीरे रसो नवसु वर्तते ॥ ४ ॥

वैद्यानामुपकाराय निघंटोरुपरि कृता ।
टिप्पणी वैद्यराजेन गंगापूर्वकविष्णुना ।

संवत् १९६० माघ शुक्ल ५

इतिभावप्रकाशनिघंटुः समाप्तः ।



परिशिष्टनामानि ।

—D-04833-00—

संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
अलकं ।	आलू बुखारा	उरगः ।	नीसा
अफलं ।	बीहफल	उत्कटः ।	ऊटकटारा
अवरोहकः ।	असगंध	उष्णपत्रिका ।	चाह
अंगभेदनं ।	कुलत्थी	ऋषिका ।	कसई
अर्द्धचंद्रिका ।	कालीनसोथ	ऐशमूलं ।	ईसरमूल
अग्निकः ।	कलहारी अजमोद	कर्णपूरः ।	सिरस अशोक
अहिपुष्पं ।	नागकेसर		नीलोत्पल
अमृतफलं ।	नासपाती	कपोतवंका ।	हुलहुल
अवाक्पुष्पी ।	मीठी सौंफ	कंदपालिका ।	आकंद सूरण
अश्वकर्णः ।	ईसबगोल	कटंभरा ।	भद्राणिका
अजगंधा ।	छोटीजवैन	कंचुकी ।	क्षीरिवृक्ष
आजं ।	थूहरदूध	ककुंदरमेचकं ।	गौरक्षचाकुल्या
आरुकं ।	आडू	कांतपाषाणः ।	चुंबक
आलू ।	धनिआ	काछी ।	सौराष्ट्रिका
आलुपाषाणं ।	संखिया	कालपर्णी ।	कालीनिसोत
इत्कटा ।	सूक्ष्म पत्रिका दीर्घलोहित	काकांडीला ।	(सेम) कोलशिबिः
	यष्टिका धान्यविशेष वा	कालमारिषः ।	कालीसील
	ओकण्ड ॥	कालावकरकः ।	कालावाडा
ईश्वरं ।	वित्तल	कीलालः ।	सल्ल की रस
ईषद्गोलं ।	ईसबगोल	कुलिजरं ।	चिरपोटी
उपोदिका ।	पुदीना	कुची ।	कुचाई बीज

संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
कुलिशं ।	काउज । वं	गोधावती ।	गोहालिया
कुरंगनी ।	मुद्गपर्णी		शोणाल
कुंभी ।	यवासवाका फल	चतुरंगुलं ।	अमलतास की जड
कुंदरः ।	खोटी मस्तकी	चर्मचटा ।	अजिनपत्रा
कुंदरः ।	तीक्ष्णगंधः	चक्राकः ।	शल्लगम
कूटर वाहिनी ।	सर्पदन्त्रिणी	चंडालिनी ।	लसुन, उल
कृष्णवीजं ।	कालादाना	चंडी ।	महिषी, मैस
कृमिघ्नी ।	तमाकू	चंडाली ।	उमा औषधिभेद
कोटिवल्कलं ।	गुडत्वक्	चंद्रलेखा ।	वाकुची
खगः ।	सोना माखी	चावटी ।	कुंभाडु वा ब्रह्मी
खंडितकर्णं ।	खारकोल कनफोडा	चावषा ।	चौपकला मूल
गेरुत्वान ।	सोनामाखी	चेलकं ।	गुवाकत्वक्
गजचिर्मटं ।	कचरीचिन्मड	जतुका ।	चामचिरैया
गंधपर्णी ।	भडंगी	जलजा ।	मधुयष्टी
गंगापुत्रः ।	गंगारईल वं०	जामातृ ।	सूर्यावर्त
गंडीरः ।	शमटशाक	जीवन्ती ।	दौडीतिगुर्जरदेशे
गंगावती ।	वटगंधारी	जुंगा ।	वृद्धदारुक
गारुडी ।	गरुड चूडामणि	जूर्णः ।	ज्वारधान्य
गंगेयी ।	मुस्ता, सुथगं	ज्वालामरीचं ।	लाळमिर्च
गिलोडयं ।	गल्होट	जोंगकं ।	अगुर
ग्रीष्म सुंदरं ।	गीभाशाक	टंगः ।	राजभास्र
गुंठः ।	वृंततृण	टिडिणिका ।	डिडैन
गुतस्नेहः ।	अंकोल	तरुंगं ।	एरंड
		तरंगः ।	मैनफल
		ताम्रवल्ली	चित्रकूट

संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
ताम्रकूटं ।	तमाकू	नक्तम् ।	करंजबीज
तिक्तं ।	चिरायता	नागविन्ना ।	नागदंती
तिक्ता ।	कौड	नागार्जुनी ।	दूधी
तिक्तका ।	हिंगोट	नांगा ।	वल्मीकमृत्तिका
दंडोत्पलं ।	श्वेतवला	निकुंभः ।	क्षुद्रदंती
दारमूषा ।	दारुमूसी वा	निर्विघ्नी ।	त्रलचारिणी
	अतीस	पयस्या ।	क्षीरकाकोली
द्विवृतः ।	मैहदी	प्रत्यक्पुष्पी ।	अपामार्ग
दीर्घमूला ।	श्यामलता		अपुठकंडा
दीर्घपिटपी ।	लांगली	पंचतृण ।	कुशा, काश, शालि,
दूरमूलं ।	जुवाह		शर, इक्षु,
देवदत्तः ।	निव	प्रग्रहः ।	शोणालुफल
देवपुष्पी ।	देवहुली	पाषाणजित् ।	कुलत्थी
देवदानी ।	धीयातोरी	पातालनृपतिः ।	सीसा
धन्वजं ।	जांगल मांसरस	पार्वती ।	वेंगामृत्तिका
धवला ।	श्वेतापराजिता	पाशी ।	वरणा
धन्वंतरीबीजं ।	ढांगढहेला	पिंडारकम् ।	पेढरी
धावनी ।	चाकुल्या	पुलहः ।	मुरदासंग
ध्यामकम् ।	गंधतृण	पुंश्चकम् ।	रसौत
धुनकः ।	लोबान	पुरुषः ।	गुग्गुल
धूम्रपत्रिका ।	तमाकू	पेरुकम् ।	अमरुद
नदीजम् ।	सैधानमक		
नखरंजकः ।	मैहदी		
नवनीतम् ।	लाडयागंधक वं०		

(१) सौराष्ट्री पार्वती मृत्स्ना तथा कांबोज-
पर्वतीति शब्दाप्रकाशा ।

(२) शोभाजनं च सौवीरं तांतिकं
पुष्पकं तथा ।

संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
प्रौष्टिका ।	मच्छी	मायाफलम् ।	माजू
फणी ।	सुफैद चंदन	मारिषा ।	माठा
फणिज्जकः ।	पन्हास	मालुकापत्रम् ।	अश्मंतक
वटपत्री ।	पापाणभेद	माद्री ।	अतीस
बहुपुत्रा ।	(जवांह) यवासा	मूलवीरम् ।	पोहकरमूल
वालपत्रम् ।	पठानीलोध	मोरटः ।	अंकोट
वालान्त्रिः ।	झाणा	यज्ञनेता ।	सोमलता
वृहत्पत्रम् ।	हस्तिकंद	यमचिंचा ।	कच्चीइंवली
वृश्चीवम् ।	सुफैद इटसिट	रक्तबीजा ।	मृंगफली
वृश्चकाली ।	बिलुआवृटी	रात्रिहासकः ।	हारशिगार
वोटा ।	अलंबुपा	राजावर्त ।	गोविंदमणि
वोलम् ।	फुलसत्व	राजा ।	राजपलांडु
भद्रः ।	देवदारु	राक्षसी ।	राई, मुरा
भग्नम् ।	जीवंती कर्मरंग	रुद्रजटा ।	लटूपरि
भद्रोत्कटा ।	भादांवतक	रुधिरम् ।	गेरी, तांवा
भारवाहिनी ।	(वसमा)	रेणुका ।	नेगवीज
	नीलिनी	रोहिणी ।	बडीअरणी
भूचणका ।	मृंगफली	लक्ष्मी ।	लोहा
भूनागः ।	गंडोआ	वैसुः ।	गंधक
भूषणम् ।	हडताल	वराहक्रांता ।	लज्जालु
भूलता ।	चुंचत्वक्	वलद्वारम् ।	सूखामांस
भयूरजंवा ।	अरल्ल	वण्डंगतानः ।	शांता
महावृक्षम् ।	थोहर		
महारान्त्री ।	मरहटी		
महापुरुषदेवता ।	शंतावर		

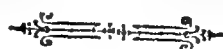
(१) रक्तं रविस्तु म्लेच्छाख्यमिति विश्वः ।

(२) दोलाथ गंधपाषाणः पामारिर्गन्धको

वमुसिति ॥

संस्कृत	भाषा	संस्कृत	भाषा
वसिवः ।	श्वेतबला	शूकरी ।	वृद्धदारक
वराहः ।	मुथरां	पडंगः	भखडा
वसुकः ।	सांभरनमक	सप्तला ।	सातला
वज्रवह्नी ।	हाडजोड	सर्जकः ।	लोवान
वज्रकर्णं	} शकरकंदी	समनृपति ।	सुहांजना
वज्रिकंदः		सीताफलम् ।	सरीफा
घाषिका ।	हिंगुपत्री चौलाई	सुदर्शना ।	तानीवेल
वेत्राग्रम् ।	वंशसदृशाग्रं	सुरंगी ।	टालसुहांजना
शकारिः ।	कचनार	सुरभिः ।	कुंदरु
शनकंदः ।	चर्मकपाकंद	स्पृक् ।	पृक्ता
शंतसुता ।	शतावती	झहवृक्षम् ।	देवारु
शाकं ।	पटोळ	स्थविरः ।	शैलेयं
शालिच ।	शमठशाक	स्वरसः ।	पन्हासः
शार्ङ्गेश ।	करंजी	सौगंधिकम् ।	अनन्तमूल
श्यामा ।	नीलिनी	हैरिः ।	गुग्गुलु
शावरकंदः ।	लसुन	हंसपादी ।	थानकुनी
श्यामलम् ।	रोहिष	हस्वांगः ।	जीवक
शिखंडिनी ।	जूही रतियां	हिंसा ।	गुडकाडायि हींस
शीतपाकी ।	अतिबला	हिंगुपत्रा ।	काकादनी
श्याहः ।	सरलस्राव	हिंगुपत्री ।	हिंगुवती वाबांरुली
शुक्तिः	झिनाजि	त्र्यष्टिका ।	राई
श्रीवासः ।	देवदारु	त्रायमाणा ।	वालोयालता वा देवबला
शुकमाता ।	भडंगी	त्रिकत्रयं ।	त्रिकटु, त्रिफला त्रिमद
शुंठकम् ।	सूखीमूली	त्रिपादी ।	काटमारिका
शूराहा ।	क्षीरकाकोली	वुटिः ।	छोटी-इलाची
शृगालविन्ना ।	क्रोधविन्ना		

पारिशिष्टभाषानामानि ।



मात्रा	संस्कृत	भाषा	संस्कृत
अम्लवेद ।	अम्लवेतसम्	आंधीझाड ।	अपामार्गः
अग्निझाड ।	दीर्घजीरकम्	इंद्राणी ।	इंद्रवारुणी
अरहड ।	आढकी	उदपर्णी ।	मापपर्णी
असाल्यू ।	चंद्रशूरम्	उमजिनी ।	ज्योतिष्मती
अतारकीदवा ।	अंजरुद	ऊंदर ।	मूषिकम्
	गोश्तखोरा	कछंजी ।	उपकुंची
अरंडोली ।	एरंडबीजम्	कठवर ।	कपित्थम्
अंधाहुली ।	अवाक्पुष्पी	कणगूगली ।	गुग्गलकणा
अंगेथु ।	गणकारिका	कटूंवर कठोडी ।	कपित्थमज्जा
अंरुप ।	भिषगमाता	कवीटफल ।	कपित्थफलम्
अंकोट ।	दीर्घकालः	कपूर चीनिया ।	पक्ककपूरम्
अंजरुत ।	निर्ध्यासविशेषः	कटैली ।	कंटकारी
अंतर ।	पुष्पसत्त्वम्	कचूर ।	कर्चूरम्
आरणे ।	वन्यकरीपम्	कलकप ।	कपिकच्छुः
आमी हल्दी ।	आम्रगंधी हरिद्रा	कवैया ।	काकमाची
आदों ।	आर्द्रिका	कनगच ।	करंजम्
आककनपान ।	अर्कपत्रम्	कल्हारी ।	लांगली
	मूळम्	कडाका ।	लंघनम्
आसी ।	आसवम्	करेले ।	कारवल्लीलता
आमलीकाचिया ।	अम्लिका बीज	कपास्या ।	कर्पासीबीजम्
		कवारपाठा ।	कुमारी

भाषा	संस्कृत	भाषा	संस्कृत
कचलून ।	काचलवणम्	खपरिया ।	खर्परम्
कहुवावकल ।	धववल्कलम्	खीप ।	प्रसारिणी
कस्स ।	वीरणमूलम्	गवार ।	कुमारी
कसौंदी ।	कासमर्दम्	गजपिप्पली ।	वृहत्पिप्पली
कागो ।	रक्तमृत्तिका	गडूवा ।	इंद्रवारुणी
कागण ।	ज्योतिष्मती	गिलवे ।	निंबोऽमृता च
कालाअभ्रक ।	कृष्णाभ्रम्	गुडहुल (गुलतुरा) ।	जपाकुसुमम्
कांचली ।	सर्पत्वक्	गोलकाकडी ।	कुलकम्
किरमाल ।	आरग्वथः	गंगेरणा ।	} नागचला
किसोह्या ।	पक्षिविशेषः	गुलशकरी ।	
किरायता ।	कैरातः	चव ।	चव्यम्
कास ।	पीयूषम्	चकवड ।	चक्रमर्दः
कुमेरपाठ ।	पाटली	चंदलेई ।	तंडुलीयः
कुलंजन ।	तांबूलीजटा	चारोली ।	उपकुंची
कुचिला ।	विषतिंदुकः	चिंचरीविहना ।	अपामार्गः
कुंदरुः ।	मुकुंदः	चिरपोटन ।	काकमाची
कूठ ।	कुष्ठम्	चिरमटी ।	गुंजा
कूट ।	शात्मली	चीलवो ।	वास्तुकम्
कूचकी फली ।	कपिकच्छुः	चूक ।	चांगेरी
केली माहिली ।	कदलीसार	छड ।	शिलापुष्पम्
केसूलोका चून ।	पलाशपुष्पम्	छीला ।	चित्रकं, पलाशम्
कोअल ।	विष्णुक्रांता	जलकुंभी ।	वारिपर्णी
कंडीर ।	करवीरः	जाल ।	पीलुः
खस ।	उशीरम्	जीयोपोता ।	पुत्रजीवः

भाषा	संस्कृत	भाषा	संस्कृत
झाऊ ।	झावुकः	नागकेसर ।	नागपुष्पम्
ढेरा ।	अंकोलम्	नागदौण ।	नागदमनी
डासरया (डांसरा) ।	तित्तिडीकम्	नादवाण ।	कर्पासी
डाम ।	दर्भम्	नागरखेल ।	तांबूलवल्ली
ढोडां ।	खसफलम्	निसोत ।	त्रिवृत
तस्तुंवा ।	इंद्रवारुणी	निर्मली ।	कतकम्
ताल ।	हरितालम्	नीलटांच ।	गरुडः
तिलकंठी ।	विष्णुक्रांता	नेगड ।	निर्गुडी
तिलवाणी ।	सूर्यभक्ता	पद्माक ।	पद्माकपत्रम्
तिंदुकी ।	तिंदुवृक्षः	पत्रज ।	तमालपत्रम्
तूण ।	तुणि	पतंग ।	कुचन्दनम्
तेवगसी ।	त्रिवृत	पंचांगुल ।	एरंडः
तोहं ।	कोशातकी	पठानीलोध्र ।	श्वेतलोध्रम्
त्रायमाणा	देववला	पत्थरफोडी ।	पाषाणभेदः
सोमलता		पाडल ।	पाटल
चहुला		फटकडी ।	स्फुटिक
दडगल ।	द्रोणपुष्पी	फूलफिरंग ।	प्रियंगु
दात्यूणी ।	लघुदंती	फरहिंद ।	पारिभद्र
धमासा ।	धन्वयासकः	वाधापरो ।	बृद्धदारुका
धव ।	धवः	वंदा ।	त्र
धनयहेर ।	राजवृक्षः	वदहल ।	लिकुच
धोली गुंद ।	धातकीनिर्यासः	वमनेटी	भाग
नरसल ।	पोटगलः	वावची ।	अवलगुज
नरकचूर ।	वैधमुख्यः	वांझककोटी ।	वंध्याककोटी
नखिया ।	नखी	विजयसार ।	वीजव

भाषा	संस्कृत	भाषा	संस्कृत
विसखपरा ।	रक्तपुनर्नवा	मोचरस ।	शालमलीनिर्यासः
बिजौरा (तुरंज) ।	अम्लवेतसम्	मोरसिखा ।	गयूरशिखा
वैद ।	वेतसम्	रास्ना ।	पलापर्णी
बोल ।	गंधरसम्	राल ।	शालनिर्यासः
बौली ।	बंभूलः	रांग ।	त्रयु
बौलसिरी ।	बकुलः	रुदंती ।	रुदंती
भरहंडा ।	कंटकारी	रेवदचीनी ।	पीतकाष्ठम्
मसूर ।	मसूरिका	रोहीत ।	गंधनूणम्
महलोठी ।	मधुयष्टी	लटजीरा ।	अपामार्गः
मटर ।	कलायः	लाजेरी ।	लज्जालः
महदी ।	नखरंजकम्	लख ।	तित्तिरिः
मगरेला ।	उपकुंची	वरी ।	शतावरी
मंडुआ ।	निर्गुडी	सर्पाक्षी ।	नाकुली
मंडूर ।	लोहकिङ्कम्	सहदेई ।	महाबला
मालकंगुनी ।	ज्योतिष्मती	सतोन्युं ।	सप्तपर्णी
मुनक्का ।	द्राक्षा	सरकडा ।	मुंजः
माजू ।	मायाफलम्	सरपुंखा ।	प्लीहशत्रुः
मुर्वा ।	मधूलिका	सरिव ।	शालपर्णी
मुर्दासंग ।	कंकुष्ठम्	सरवन	मापपर्णी
मुचकुंद ।	क्षमवृक्षः	संखाडुली ।	शंखपुष्पी
मेवड ।	निर्गुडी	सामर ।	शाकंभरीयम्
मैडलं ।	मदनफलम्	सामरा ।	न्यंकुःमृगः
मोरचूत ।	तुथुकम्	सांठा ।	इक्षुः
मोठ ।	मकुष्ठकम्	साखोट ।	शाखोटम्

(२२२) भावप्रकाशनिघण्टुपरिशिष्टभाषानामानि ।

भाषा	संस्कृत	भाषा	संस्कृत
सिरम	शिरीषम्	सोमल ।	आखुपापाणः
सिद्धरणी ।	दधिशर्करा	संभाद्र ।	निर्गुडी
सिंवाडा ।	जलफलम्	सांटी ।	पुनर्नवा
सरीका ।	सीताफलम्	सौचरत्न ।	सौवर्चलम्
सिण ।	धणः	हरफारेवडी ।	लवली
सिंगी मौहरा ।	शृंगकम्	हारशृंगार ।	रात्रिहासकः
सीधा ।	सैधवम्	हुलहुल ।	सुवर्चला सूर्यभक्तः
सस्या ।	शशः	हिंगोरा ।	इंगुदी
सुफददोव ।	श्वेतदूर्वा	हिंगुल ।	हिंगुद्धः
श्वेतसर्ज ।	धुनकः	हिंगोटा ।	इंगुदी
सुफदवावर्ची ।	श्वेतवर्वरी	निउजे ।	निकोचकम्
सुफदकंडी ।	श्वेतकरवीरः	सरदा ।	सदाफलम्
सुफद किरसार ।	शुद्धखादिरसारः	गंगेरुआ ।	गांगेरुकीफलम्

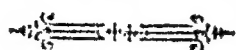
इति परिशिष्टभाषानामानि समाप्तानि ।

पुस्तक मिलनेका पता—

भानुदत्त गुरुदत्त,
श्रीकृष्ण पुस्तकालय सैठ मीठावाजार.
लाहोर.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
“श्रीवेङ्कटेश्वर” स्टीम् प्रेस,
चंयई.

विक्रय्य वैद्यक-ग्रन्थाः ।



नाम.

को. रु. आ.

अष्टाङ्गहृदय--(वाग्भट) मूल मोटा अक्षर वाग्भट विरचित.	२--८
अष्टाङ्गहृदय--(वाग्भट) वाग्भटविरचित तथा पं० रविदत्तकृत भाषा-टीकासहित ।	०--८
अमृतसागर--हिन्दीभाषामें--विना गुरु छोटे नगरमें दवाखाना कर-सकते हैं । इसमें सर्व रोगोंका वर्णन और यत्नलिखेगयेहैं । ग्लेज कागज.....	२--४
” तथा रफ कागज.	२--०
अर्कप्रकाश--(रावणकृत) भाषाटीकासमेत । इसमें--नानाप्रकारके यन्त्रोंसे औषधियोंका अर्क खींचना और गुणवर्णन भलीप्रकार कियागयाहै. ग्लेज. कागज.	१--०
” तथा रफ कागज	०१४
आयुर्वेदचिन्तामणि--भाषाटीकासहित । पं० बलदेवप्रसादमिश्र संगृ-हीत.	१--१२
आरोग्यशिक्षा--पं०. मुरलीधरशर्मा राजवैद्यसंकलित (भाषामें)	०--६
इलाजुल्लगुरवा--नूतन मथुराका छपाहै	१--४
कारिकल्पलता--छन्दोबद्ध--हिन्दीभाषामें । केशवसिंहजी तअल्लुकेदार रचित । इसमें--हाथियोंके शुभाशुभ लक्षण व उनके रोगनाशार्थ अनेक औषधिविधान चित्रोंसमेत वर्णितहै.	१--०
कामरत्न--योगेश्वर नित्यनाथप्रणीत और विद्यावारिधि पं० ज्वाला-प्रसादजी मिश्रकृत भाषाटीकासमेत ।	१--१२
चर्याचन्द्रोदय--भाषाटीकासमेत । इसमें--व्यंजन बनानेकी क्रिया लिखीहै.	१--८
चक्रदत्त--भाषाटीकासहित । इसमें और चिकित्साओंके अलावा तैल साधनादि प्रकार बहुत अच्छा लिखाहै	३--०

नाम.

को. रु. आ.

चरकसंहिता--उकसाळ निवासी वैद्यपञ्चानन पं० रामप्रसाद वैद्योपा-	
ध्यायकृत प्रसादनी भाषाटीकासहित । सुन्दर सुनहरी दो जिल्द	
बंदी हैं.	९--०
जर्जरप्रकाश--चारोंभाग । जर्जरहीके उपकारार्थ जर्जरही संबंधि-	
संस्कृत, उर्दू तथा डाक्टरों आदि अनेक ग्रन्थोंके आधारसे	
विभूषित.	१--८
ज्वरतिमिरनाशक--भाषाटीका--सर्व प्रकारके दवाइयोंका संग्रह है.	१--०
डाक्टरोंचिकित्सासर्व-बड़ा--हिन्दीभाषामें--प्रत्येक रोगोंका डाक्टरों	
मतसे और साथ और साथ २ देश वैद्यक मतसे नाम, लक्षण,	
रोगनिदान, और उपाय आदि लिखेगयेहैं ।	१--८
मुश्रुतसंहिता--सान्ध्य सटिप्पणसपरिशिष्ट भाषाटीका सहित संपूर्ण	१२--०
मुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत सूत्रस्थान प्रथमभाग	३--०
मुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत निदान--शारीरस्थान द्वितीय-	
भाग	२--८
मुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत चिकित्सा व कल्पस्थान तृतीय-	
भाग	३--८
मुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत उत्तरतन्त्र चतुर्थभाग	३--८
मुश्रुतसंहिता--उपरोक्त अलंकारोंसमेत केवलशारीरस्थान	१--०
हंसराजनिदान--भाषाटीकासमेत । इसमें रोगोंकी पहिचान, नाडी-	
परीक्षा, साध्य असाध्यका ज्ञान इत्यादि अनेक विषय वर्णित हैं.	१--०
ज्ञानमैत्रयमंजरी- भाषाटीकासहित । इसमें--प्रत्येक रोगोंपर एक २	
औषधिका वेदान्तमतानुसार वर्णन कियागयाहै । ग्रन्थ छोटाहै	
किन्तु मिषवृत्तोंके देखनेयोग्यहै	०--३

पुस्तक मिलनेका पता--

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” स्ट्रीम प्रेस--बंबई.

